CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

THE

AMBĀDĀS CHAWARE

DIGAMBARA JAIN GRANTHAMĀLA

OR

३५०९६

७.२

KARANJA JAIN SERIES

Volume I

९४०८

JASAHARACARIU

OF

PUṢPADANTA

CRITICALLY EDITED

With an Introduction, Glossary and Notes

BY

Dr. P. L. VAIDYA

M.A. (CAL.); D.LITT. (PARIS)

Professor of Sanskrit and allied languages

Fergusson College, Poona

PUBLISHED BY

Karanja Jain Publication Society

Karanja, Berar, India

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन०१५

...णेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
१५०९
नरिया, (का. हि. वि. (व.) ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला

सम्पादक

हीरालाल जैन, एम्. ए., एल्एल्. बी.

संस्कृताध्यापक, किंग एडवर्ड कॉलेज, अमरावती

सहायक

सिद्धान्तशास्त्री पं. देवकीनन्दनजी

महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, कारंजा

ग्रन्थ १

पुष्पदन्ताचार्यकृत यशोधरचरित

भूमिका, शब्दानुक्रमणिका व अंग्रेजी टिप्पणसहित

परशुराम लक्ष्मण वैद्य, एम्. ए., डी. लिट

संस्कृत-प्राकृत-भाषाओं के अध्यापक

फर्ग्युसन कालेज, पूना

द्वारा

सम्पादित

वि. सं. १९८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

THE

Ambādās Chaware Digambara Jain Granthamālā

OR

KARANJA JAIN SERIES

EDITED

With the Co-operation of Various Scholars

BY

HIRALAL JAIN, M. A.; LL. B.
King Edward College, Amraoti

Volume I

PUBLISHED BY

Karanja Jain Publication Society
Karanja, Berar, India

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

JASAHARACARIU

OF

PUṢPADANTA

an Apabhraṃśa work of the 10th Century

CRITICALLY EDITED

With an Introduction, Glossary and Notes

BY

Paraśurāma Lakṣmaṇa Vaidya

M. A. (Cal.); D. LITT (Paris)

Professor of Sanskrit and allied languages
Fergusson College, Poona

1931

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

A copy of this volume, postage paid, may be obtained directly by sending a Postal Order of Rupees Six and annas Eight or Ten Shillings and six pence from the Secretary, Karanja Jain Publication Society, Karanja, Berar, India.

We have great pleasure in announcing that the following Apabhraṃśa works are under preparation and we hope to issue them soon in the forthcoming Volumes of this Series. Orders for Copies may be registered now with the Secretary.

1. *Karakaṇḍucariu of Kanakāmara.*
2. *Sudaṁsaṇacariu of Nayanandi.*
3. *Mahāpurāṇa of Puṣpadanta.*
4. *Apabhraṃśa-kathā-saṃgraha.*

Printed from type at the
Shri Ganesh Printing Works, 495-496, Shanwar Peth, Poona
and Published by
Seth Gopal Ambadas Chaware, Karanja, Berar.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

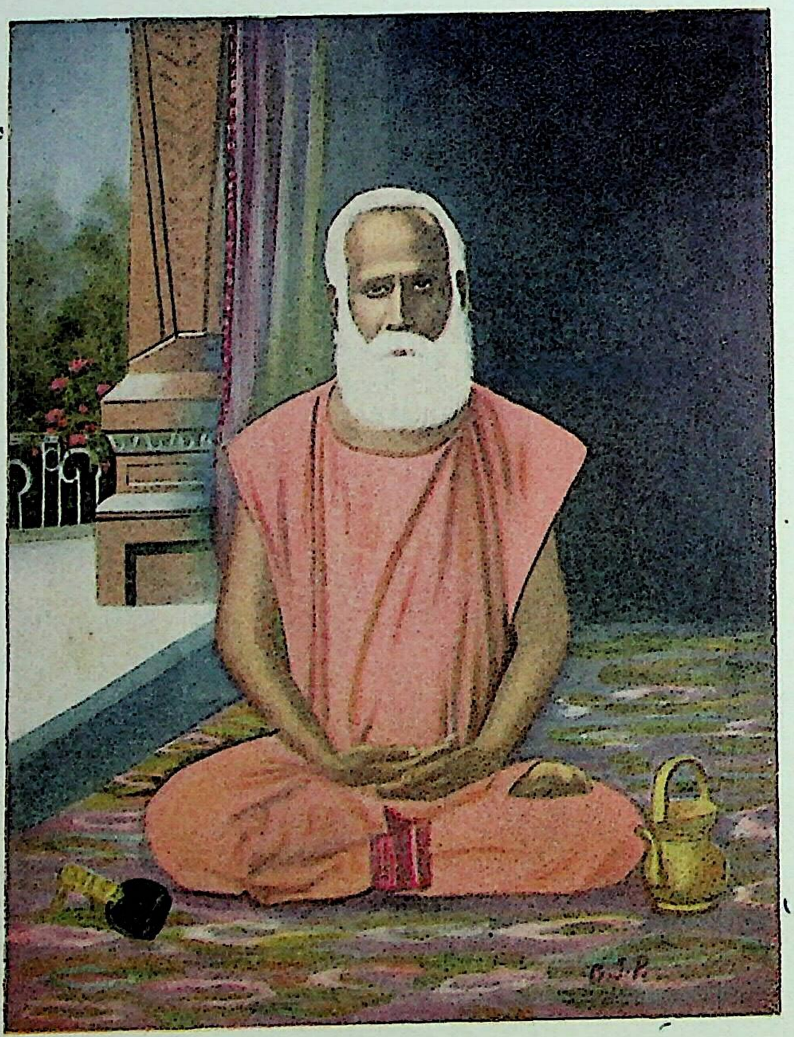

श्री १०८ भट्टारक वीरसेनजी स्वामी,
सेनगण, कारंजा (वरार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण-पत्रिका

प्रातःस्मरणीय, अध्यात्मविद्याविशारद, सद्गुरु, श्री १०८ भट्टारक श्री वीरसेनजी स्वामी—

आपकी श्रेष्ठ अध्यात्मविद्यापर मुग्ध होकर तथा आपके उपदेशा-[illegible] पान करके मैं जिस प्रकार आपका अतिशय कृपा व [illegible] हुआ हूं उसी प्रकार अनेक विद्वान् पंडित व मुमुक्षु लोकों के [illegible] में भी आपने चिरस्थायी स्थान प्राप्त किया है। हमारे अहो-भाग्य से मुझे आप जैसी [illegible] विभूति प्राप्त हुई है।

[illegible] कल्याण किया है [illegible] राशि [illegible] पूज्य [illegible] 'यशोधर चरित' आपको अर्पण करता हूं।

आपका विनम्र शिष्य

गोपाल अम्बादास चवरे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

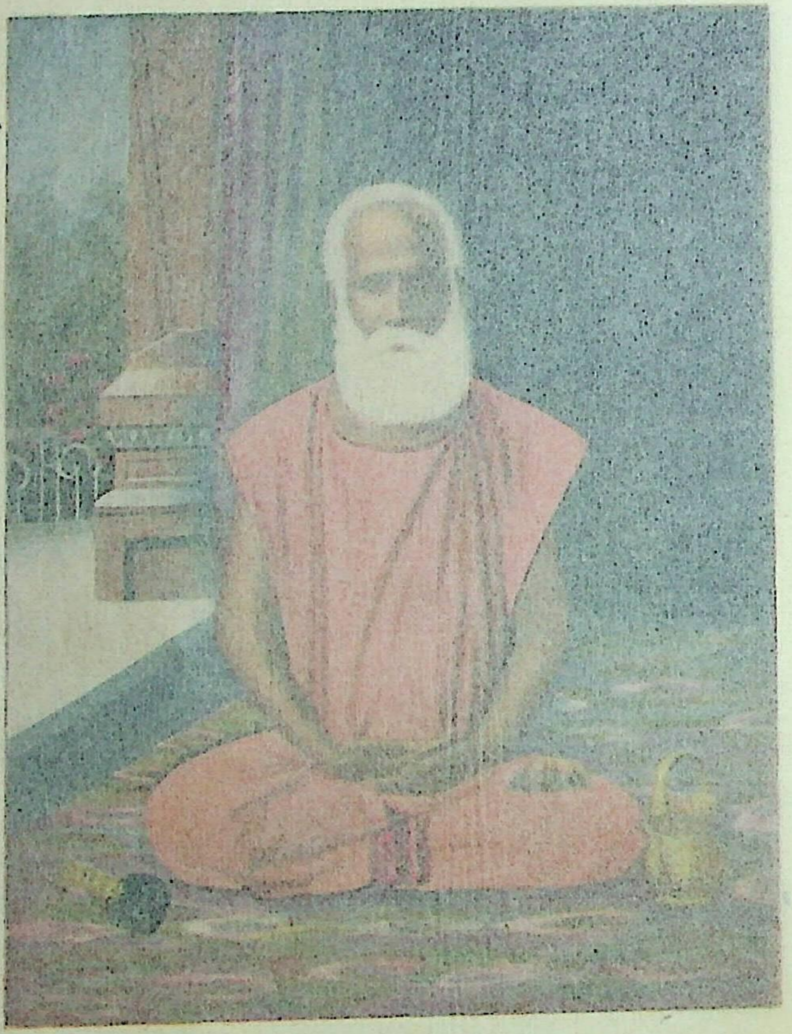

श्री १०८ भट्टारक वीरसेनजी स्वामी,
सेनगण, कारंजा (बरार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण-पत्रिका

प्रातःस्मरणीय, अध्यात्मविद्याविशारद, सद्गुरु, श्री १०८ भट्टारक श्री वीरसेनजी स्वामी—

आपकी श्रेष्ठ अध्यात्मविद्यापर मुग्ध होकर तथा आपके उपदेशामृत का आकंठ पान करके मैं जिस प्रकार आपका अतिशय ऋणी व धन्य हुआ हूं उसी प्रकार अनेक विद्वान् पंडित व मुमुक्षु लोकों के अंतःकरण में भी आपने चिरस्थायी स्थान प्राप्त किया है। हमारे अहोभाग्य से हमें आप जैसी अद्वितीय विभूति प्राप्त हुई है।

अपने धर्मोपदेश से आपने जो मेरी आत्मा का कल्याण किया है उसके लिये मैं आपका चिर ऋणी हो चुका हूं। उसी अनन्त ऋणराशि के अल्पांश परिशोधनार्थ आपके ही सदुपदेश के फल-स्वरूप मेरे पूज्य पिताजी की स्मृति में स्थापित ग्रंथमाला का यह प्रथम पुष्प 'यशोधर चरित' आपके अर्पण करता हूं।

आपका विनम्र शिष्य

गोपाल अम्बादास चवरे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राथमिक वक्तव्य

जैन धर्म भारतवर्षके सबसे प्राचीन धर्मोंमें से है। इस धर्म ने देशकी सभ्यता व आचार, कलाकौशल्य और विज्ञान पर चिरस्थायी छाप लगा दी है। इस धर्म का प्राचीन साहित्य बहुत विस्तीर्ण तथा सर्वांगपरिपुष्ट है। किन्तु खेद है कि यह साहित्य अभीतक पूर्णरूप से प्रकाशित नही हुआ। बम्बई की माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला इस ओर प्रशंसनीय कार्य कर रही है, किन्तु सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य को शीघ्र प्रकाश में लाने के लिये एक नही अनेक ग्रंथमालाओं की आवश्यकता है।

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि कारंजा के उदार तथा धर्मिष्ठ श्रीमान् सेठ गोपाल साहुजी चवरे ने अपने पूज्य पिता अम्बादास साहुजी चवरे की पुण्यस्मृति में उनके नाम से एक 'जैन धर्मोन्नति फंड' खोला है, जिसमें उन्होंनें वीस हजार रुप्या प्रदान किया है। धर्म की उन्नति के लिये प्राचीन जैन ग्रंथोंका सुचारु रूप से प्रकाशन व प्रसार आवश्यक जान सेठजीने इस द्रव्य के व्याज से 'अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रंथमाला' प्रकाशित करने का निश्चय किया है व इस हेतु एक समिति भी बना दी है। इस ग्रंथमाला में मूल प्राचीन संस्कृत व प्राकृत ग्रंथ उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा वैज्ञानिक शैली से सम्पादित कराकर प्रकाशित किये जायंगे जिससे उन ग्रंथो का देश व विदेश में आदर हो सके, वे विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकें नियुक्त की जा सकें तथा उनके द्वारा विद्वान लोग पुरातत्त्व की खोज कर सकें। कारंजा तथा अन्यस्थानों के शास्त्रभंडारों में जो बहुसंख्यक ग्रंथरत्न छिपे हुए हैं उनकी जगमगाती हुई ज्योति को इस ग्रंथमाला द्वारा संसार के सन्मुख प्रस्तुत करनेका उक्त समिति प्रयत्न करेगी।

इस ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प 'यशोधर चरित' प्रस्तुत है। इसके कर्ता विक्रमकी ग्यारहवीं शताब्दि के महाकवि पुष्पदन्ताचार्य है। ग्रंथ की कथा वही यशोधर महाराज का पवित्र चरित्र है जिसका वर्णन सोमदेवादि अनेक आचार्यों ने संस्कृत में किया है। भाषा की दृष्टि से यह ग्रंथ बडा महत्वपूर्ण है। उसकी भाषा वह अपभ्रंश प्राकृत है जो आज की प्रचलित हिन्दी, गुजराथी, मराठी आदि भाषाओं की जननी है तथा जिसके ग्रंथों के लिये विद्वत्समाज लालायित हो रहा है।

इस ग्रथ का सम्पादन फर्ग्युसन विद्यामंदिर के संस्कृत व अर्धमागधी आदि प्राकृत भाषाओं के अध्यापक तथा अनेक प्राकृत संस्कृत जैन ग्रंथो के सम्पादक डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य, एम्. ए.; डी. लिट्. द्वारा हुआ है। आपने अनेक हस्तलिखित प्रतियों परसे संशोधन करके ग्रंथ को प्रचुर पांडित्यपूर्ण तथा विद्वानों द्वारा संग्राह्य बनाया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनकी अनुमतिसे गोपाल साहुजीने उक्त उदार कार्य किया है तथा जिनके सदुपदेशके फल-स्वरूप आज कारंजा में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, चवरे दि. जैन बोर्डिंग, जे. डी. चवरे, ए. व्ही. स्कूल, तथा जे. जी. चवरे, हायस्कूल नामक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थायें दृष्टि पडती हैं उन्ही अध्यात्मप्रेमी श्री १०८ वीरसेन स्वामी भट्टारकको यह ग्रंथ समर्पित किया गया है। उक्त कार्योंके लिये जैन समाज स्वामीजीका चिर ऋणी रहेगा।

हमे यह प्रकट करते हुए असह्य दुःख होता है कि गोपाल साहुजीके बन्धु, बरार दि. जैन समाजके आधार ओर आभूषण तथा हमारी समितिके एक मान्य सदस्य व इस ग्रंथमालाको जन्म देनेमें भारी प्रयत्न करनेवाले श्रीयुक्त जयकुमार देवीदासजी चवरे वकीलका ग्रंथमालाका यह प्रथम पुष्प प्रस्फुटित होनेके पूर्वही हमसे वियोग हो गया। आपके वियोगसे हमारी समिति तथा जैन समाजको जो क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति होना कठिन है!

विद्वत्समाज से प्रार्थना है कि आगे संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश भाषाके चुने हुए ग्रंथोंको सर्वांगसुंदर और पूर्ण बनाकर प्रकाशित करने में हमे सहयोग प्रदान करें।

हीरालाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्गवासी श्रीमान् अंबादास गंगासावजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म २३-८-१८५६ | स्वर्गवास २४-९-१९२३

श्रीमान् गोपाल अंबादासजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म २७-२-१८८९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

A NOTE

BY THE GENERAL EDITOR

JAINISM is one of the most ancient religions of India. It has played a great part in the cultural development of the Indian people. "Ahimsā paramo dharmah" or "Non-violence is duty par excellence" is the sine-qua-non of this faith which has always stood for universal peace and brotherhood. It has sought to accommodate the different view-points in the domain of thought as well as of action by its philosophy of Anekānta. It has attempted to afford equal opportunities of material and spiritual advancement to all irrespective of the incident of birth and it has tried to avoid clashes of worldly interests by placing spiritual well-being above material gain.

It may appear from this that a faith so pre-eminently spiritual would be unsuited for the development of art and science. But the contributions of Jainism to these departments are also by no means small. Building temples and setting up images for worship forms an important item of the faith amongst the Jain laity and this brought about the introduction of some special features in the architecture and sculpture both in Northern and Southern India where their numerous temples and statues still excite the devotion and admiration of the worshippers and the scholars alike. Books have also been produced on these as well as on the other fine arts such as painting and music. With still greater attention and success have the Jains cultivated the highest of the fine arts—poetry, which is fully represented in their literature in all its branches. Hand in hand with poetry they have produced numerous important works on such technical subjects as grammar, lexicography, poetics, law and polity as well as on sciences such as astronomy, mathematics and medicine, and treatises are [illegible] in their literature even on subjects like war-carriages, bows and arrows, [illegible] and horses, erotics, astrology and magic.

Thus important as the Jain literature is for the study of Indian philosophy and religion, art and science, it is of a still greater importance for the study of the development of Indian languages. It may even be said that the importance of Jain literature is, in this respect, unique. The sacred language of the Brahmins was Sanskrit and they did not, at first, take any important part in the development of the languages of the people—the Prakrits. Lord Buddha gave his preachings in the language of the people but the Buddhist literature confined itself to one language only—Pali, and at a later date it adopted Sanskrit. But Lord Mahāvīra gave a permanent impetus to the development of the popular languages and his followers adopted these both for preaching and writing in their religious propaganda. They gave literary shape to many languages even for the first time and took a prominent part in the early development of

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्गवासी श्रीमान् अंबादास गंगासावजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म
२१-८-१८५६

स्वर्गवास
२४-९-१९२२

श्रीमान् गोपाल अंबादासजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म
२७-२-१८८९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

A NOTE

BY THE GENERAL EDITOR

JAINISM is one of the most ancient religions of India. It has played a great part in the cultural development of the Indian people. "Ahiṃsā paramo dharmaḥ" or 'Non-violence is duty par excellence' is the sine-qua-non of this faith which has always stood for universal peace and brotherhood. It has sought to accommodate the different view-points in the domain of thought as well as of action by its philosophy of Anekānta. It has attempted to afford equal opportunities of material and spiritual advancement to all irrespective of the incident of birth and it has tried to avoid clashes of worldly interests by placing spiritual well-being above material gain.

It may appear from this that a faith so pre-eminently spiritual would be unsuited for the development of art and science. But the contributions of Jainism to these departments are also by no means small. Building temples and setting up images for worship forms an important item of the faith amongst the Jain laity and this brought about the introduction of some special features in the architecture and sculpture both in Northern and Southern India where their numerous temples and statues still excite the devotion and admiration of the worshippers and the scholars alike. Books have also been produced on these as well as on the other fine arts such as painting and music. With still greater attention and success have the Jains cultivated the highest of the fine arts–poetry, which is fully represented in their literature in all its branches. Hand in hand with poetry they have produced numerous important works on such technical subjects as grammar, lexicography, poetics, law and polity as well as on sciences such as astronomy, mathematics and medicine, and treatises are not wanting in their literature even on subjects like war-carriages, bows and arrows elephants and horses, erotics, astrology and magic.

Thus important as the Jain literature is for the study of Indian philosophy and religion, art and science, it is of a still greater importance for the study of the development of Indian languages. It may even be said that the importance of Jain literature is, in this respect, unique, The sacred language of the Brahmins was Sanskrit and they did not, at first, take any important part in the development of the languages of the people–the Prakrits. Lord Buddha gave his preachings in the language of the people but the Buddhist literature confined itself to one language only–Pali, and at a later date it adopted Sanskrit. But Lord Mahāvīra gave a permanent impetus to the development of the popular languages and his followers adopted these both for preaching and writing in their religious propaganda. They gave literary shape to many languages even for the first time and took a prominent part in the early development of

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

even the Dravidian vernaculars of South India. The ancient Prakrits, Māgadhī, Ardha-Māgadhī, Śauraseni and Māhārāṣṭrī are extensively preserved in the Jain books whose study is very essential for their adequate knowledge.

Of a very special interest are the Jain works written in what is called the Western Apabhraṃśa. This language is the immediate forrunner of at least three important vernaculars, Hindi, Gujarati and Marathi. All the works in this language that have so far come to light are the productions of the Jains. Till very recently, not a single complete work of this language was available in print, on account of which the study of history and philology of the modern vernaculars could not make any appreciable progress. It was only in the year 1918 that the first complete and systematically edited work of this language appeared. This was the Jain work Bhavisayatta-kahā of Dhanapāla edited by Professor Hermann Jacobi of the University of Bonn. This same work was again published in the Gaekwad Oriental Series in 1923. This was all and nothing definite or much was known about the other works of this language till I had the occasion in 1924 of examining the Jain manuscript stores at Kāranjā in the Akolā district of Berar, being deputed to that task by my learned patron and benefactor Rai Bahadur Hiralal, B. A., M.R.A. S., Deputy Commissioner who, in his retirement, was entrusted by the Government with the work of compiling a Catalogue of Sanskrit MSS. in the Ceneral Provinces and Berar. Here I discovered a dozen works in Apabhraṃśa, including three Purāṇas of more than one hundred chapters each, the other works being of a more modest size. Information about these works will be found embodied in the Catalogue mentioned above which was published in 1926.

It is a great pity that a very large part of the Jain literature of which I have spoken so far, remains yet unpublished. A few Granthamālās have recently been started with the chief object of making these works available to the scholarly world in the original, and the Manikchand Digambara Jain Granthamālā of Bombay deserves special mention in this connection. It has so far issued thirty volumes containing about fifty ancient Sanskrit and Prakrit works. The work is however, too vast to be adequately handled in a single series and hence the need of fresh efforts to speed up the work of publication.

Two years ago, Seth Gopal Ambadas Chaware of Kāranjā sought my advice in the matter of utilising certain funds which he had set apart for some religious or charitable purpose in the memory of his late father. I suggested to him that the best and most lasting memorial that he could raise to his father and at the same time do a great service to the cause of Jainism was the institution of a book-series for the publication of Jain works that remain yet unpublished, particularly those from MSS. deposited at his own place, Kāranjā. This suggestion of mine was discussed at a meeting of the leading Jains of Berar and was ultimately adopted in preference to other suggestions put forward for the utilisation of the funds. A committee was formed for starting the work of the series to be known at the Ambādās Chaware Digambara Jain Granthamālā or the KARANJA JAIN SERIES of which I was elected General Editor.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

BY THE GENERAL EDITOR

We had decided to open the Series with one of the Apabhraṃśa work recovered from the Kāranjā MSS. when Dr. P. L. Vaidya, M.A.,D. Litt, sought my help in obtaining facilities for consulting some of those MSS. I learnt from him that he had already secured some MSS. of the Jasaharacariu of Puṣpadanta and was engaged in preparing the text for the Press. I told him about our Series and offered to open the Series with that work if he would edit it for us. To this Dr. Vaidya readily agreed and he has spared no pains in presenting the text as accurately and critically as was possible with the apparatus that he had before him.

We are very thankful to Dr. Vaidya for his valuable contribution to the Series as well as for the help he gave in making arrangements for the printing of the book, all this work being undertaken by him merely as a labour of love.

It is our great sorrow that one of the members of our committee who was also a cousin of Seth Gopal Ambādās Chaware and a leading Jain citizen of Berar, Mr. J. D. Chaware, B. A., LL. B., to whose efforts the inaguration of this Series owes a good deal, did not live to see even the publication of its first volume. By his death our committee has suffered an irreparable loss.

I can hardly adequately thank Seth Gopal Ambadasji to whose munificence this Series owes its inception. I pay my humble respects to Svāmī Vīrasenji Bhaṭṭāraka who is the custodian of the manuscript-store of the Sena Gaṇa temple at Kāranjā and who encouraged Seth Gopal Ambadasji in his laudable munifiicence. I also thank the members of my committee for their co-operation in the work.

I take this opportunity to invite the co-operation of all scholars interested in the study of Jain literature in making the future volumes of this Series as suitable for study and research as possible. With their co-operation we hope to publish soon the remaining Apabhraṃśa works at Kāranjā.

King Edward College
Amraoti
20th March 1931

HIRALAL JAIN

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

TABLE OF CONTENTS

1.	Portrait of Swami Virasena Bhattaraka Facing page	5
2.	समर्पण पत्रिका	5
3.	प्राथमिक वक्तव्य	7–8
4.	Photos of Shet Ambadasji and Gopaldasji facing page	9
5.	A Note by the General Editor	9–11
6.	Table of Contents	12
7.	Introduction	13–32
8.	TEXT OF JASAHARACARIU	१–१००
	Pariccheda I	१–२३
	Pariccheda II	२४–४६
	Pariccheda III	४७–७४
	Pariccheda IV	७५–१००
9.	शब्दकोशः	१०१–१७४
10.	Notes	175–185
11.	Addenda et Corrigenda	187–188

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

INTRODUCTION

1. GENESIS OF THE UNDERTAKING

WHILE working as Springer Research scholar of the Bombay University during 1926–28 I occupied myself with the surveying work of the Prakrit literature in general and of the Apabhraṃśa works in particular. In the course of my labours in that direction I commenced examining the Bhandarkar Institute MS. of Puṣpadanta's Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra, of which the late Dr. P. D. Gune included a short notice in his introduction to the Bhavisayattakahā, published in the Gaekwar Oriental Series at Baroda. It came to my knowledge that the Bhandarkar Institute Library of MSS. contained a few more MSS. of this work and also a MS. of another work, JASAHARACARIU, by the same author. Just at this juncture Rai Bahadur Hiralal published his Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Central Provinces and Berar and, on going through it, I discovered, to my delight, that the Kāranjā Jain Bhandars contained several MSS. of the two works mentioned above, and in addition, one more work, Nāgakumāracariu, by the same author.

While I was studying the Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra and the Jasaharacariu at the Bhandarkar Institute, which works were composed at Mānyakheṭa, the modern Malkheḍ in the Nizam's territory, another idea struck me, how far would these works of Puṣpadanta, written in the Apabhraṃśa language and composed in the province of Mahārāṣṭra proper, throw light on the origin and growth of the Marathi language. For, it is a well known fact that a very large number of works in the old Marathi were composed or revised within a radius of about a hundred miles from Mānyakheṭa, the capital of later Rāṣṭrakūṭas. The discovery of Puṣpadanta's works at Kāranjā in Berar, therefore, particularly delighted me, as I thought, I would find therein pre-Marathi Apabhraṃśa records composed, and also preserved, in Mahārāṣṭra which would be of great value to the history of the Marathi language. Consequently I made up my mind to visit the Kāranjā Jain Bhandars for this purpose during the Christmas holidays of 1927 It was on that occasion that I made acquaintance of Prof. Hiralal Jain, M. A., LL.B., of the King Edward College, Amroati, who, within a few days of my visit, made a proposal to me that I should edit the Jasaharacariu of Puṣpadanta before undertaking the bigger work, Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra, and that I should allow it to be included in the Kāranjā Jain Series as its first volume, which proposal I readily accepted.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. THE CRITICAL APPARATUS

The critical apparatus on which this edition of the Jasaharacariu is based consists of four manuscripts collated in full and three more MSS. partially collated in cases of doubt. I also used pretty frequently the printed edition of the Hindi translation, which here and there gives the ghattā lines in the original Apabhraṃśa. The details of this apparatus are given below:—

S. This is a paper manuscript deposited in the Sena Gaṇa Bhāṇḍāra of Kāranjā in Berar. The MS. is written in good hand, consists of 78 leaves with 11 lines to a page and about 37 letters to a line, has voluminous notes in the margin in mixed Hindi and Sanskrit. It is dated Wednesday, the auspicious 13th of the dark half of Āśvina of 1656 of the Śaka era, or 1790 of the Vikrama era, i. e., 1734 A. D., as can be seen from the following colophon:—

शके १६५६ मिति आसो वदि मंगलात्रयोदश्यां बुधवारे श्रीमूलसंघे सूरस्थगणे पुस्करगछे ऋषभसेणगणधरान्वये पारंपर्यागते भट्टारकश्री १०८ सोमसेन तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनसेन तत्पट्टे भट्टारकसमंतभद्र तत्पट्टे भट्टारकश्री १०८ छत्रसेन तत्पट्टोदयाद्रिवर्तमान भ० नरेंद्रसेनैर्लिखितोयं जसोधरचरित्रं संपूर्णं स्वपठनार्थं वा अन्येषां ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं श्रीसूरतबंदरे श्रीआदिनाथचैत्यालये सं० १७९०.

It will be seen from the colophon that the copy was made at Surat and then it travelled to the Kāranjā temple of the Sena Gaṇa. There is another MS. of this work in the same temple, but it was so old and its condition so delapidated that it could not be safely used. I however consulted it occasionally and found that it generally agrees with the above as regards omission of certain passages for which see below. As the MS. is prepared at Surat, there is no consistency as regards the use of initial ṇ.

T. This is another MS. of the Sena Gaṇa group now deposited in the Terāpanthī Jain Mandir of Bombay. It was secured for my use by the kindness of Pandit Nāthūrām Premi of Bombay. It seems to be the oldest MS. of the work now extant, as it is dated 1390 of the Vikrama era, i. e., 1333 A. D. It is a paper MS. consisting of 98 leaves with 8 lines to a page and about 30 letters to a line. The colophon runs as follows:—

मंगलमस्तु। संवत् १३९० वर्षे आषाढशुद्धत्रयोदशी भानौ अद्येह श्रीमहाराजाधिराजश्रीसुरत्राणमहंमदराज्ये दुर्गामंडपपडिगनामागे (?) पगडीनामनि प्राग्वाटवंशीयसाभावडसंतान मह्लौ पुत्र रामा......

This MS. seems to have been copied from another older MS. The copyist seemed to be unable to read some lines and letters of his original and put dots and dashes where he was not able to decipher them. As T is now nearly 600 years old, its latter part has become considerably worn out and indistinct to read. It is however striking that the readings of T agree with those of S oftener than with those in A and P. I have used T throughout my work.

P. This MS. belongs to the Deccan College Library, now deposited in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1192 of 1891-95. It consists

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

of 84 leaves with 11 lines to a page and about 29 letters to a line. It has the following colophon :—

संवत् १६१५ वर्षे भादव सुदि ५ वीसप्तवारे पुष्यनक्षत्रे तोडागढमहादुर्गों महाराजाधिराजराउश्री-कल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नये बलत्करगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्येन्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदि-देवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीश्रुतचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्र.........

It will be seen that this MS. is dated Thursday, the 5th of the bright half of Bhādrapada of 1615 of the Vikrama era, i. e., 1558 A. D. It is a carefully prepared paper MS. belonging to the Balātkāra Gaṇa group, and, what is striking is the consistency with which it uses the initial ṇ except in one or two places only. See also under H below.

A, This is another MS. of the Balātkāra Gaṇa group. It was secured for me, when the printing of the text had already considerably advanced, by my friend, Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, from Pandit Jugal Kishore Mukthar of Sarasawa and now of Samantabhadrāśrama, Delhi. It consists of 73 leaves of which the first leaf is missing, with 11 lines to a page and about 38 letters to a line. It is also a carefully written paper MS. but is slightly inferior to P. Its colophon runs as follows :—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२१ वर्षे श्रावणवदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीसिंहकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीशील-भूषणदेवा तदाम्नाये आर्याश्रीचारित्रश्रीतत्सिष्यणित्रतगुणसुंदरी एकादशप्रतिपालिका तपगुणराजीमती शीलतोय-प्रक्षालितपापपटलाः । बाई हीरा तथा चंदा पठनार्थं इदं यशोधरचरित्रं लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं ॥ छ ॥ लिखितं पंडितवीणासुतगरीवा अलवरवासिनः ॥ छ ॥ शुभं वो भूयात् ॥

It will be seen that this MS. is dated Monday, the 2nd of the dark half of Śrāvaṇa of 1621 of the Vikrama era, i. e., 1564 A. D., i. e., about six years after P. As P was prepared in Toḍā gaḍh or Toḍā fort and A in Alwar, and as the genealogies of teachers mentioned therein agree so far as they are available, it can well be presumed that they belong to the same group. The text and the readings in them agree closely except in one detail, viz., P omits the portion IV. 29. 9—IV. 30. 13. which is given only in B and A. A is also almost consistent in the use of initial ṇ.

In addition to these four fully collated MSS. described above, I have used the following meterial at times:—

(*a*) B. This is a MS. deposited in the Balātkāra Gaṇa Jain Bhāṇḍāra at Kāranjā. I personally examined this MS. on the spot, but had no time at my disposal to fully collate it. A copy of this MS. was recently prepared for the Ailak Pannalal Jain Bhandar of Bombay. Through the kindness of Professor H. D. Velankar of the Wilson College, Bombay, I was able to collate a portion of it, i.e., to the end of the first pariccheda, when I thought that the text there agreed with P, a better and more reliable

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

MS., in all essential points, and that it was no use further to collate a secondary MS. like this. On the discovery, however, of the additional passage in A, viz., IV. 29. 9—IV. 30. 13, I wanted to ascertain whether the original MS. B also contained the same. Professor Hiralal Jain got it examined for me again and sent me collation of which I made full use.

(*b*) H. This is a printed Hindi translation of our text which I purchased in a Bombay bookseller's shop. This printed translation usually gives in the original Apabhraṃśa the ghattā portion with its Sanskrit rendering, and translates the rest in Hindi calling the translation as Ṭīkārtha. I was not able to discover the name of the translator nor the year of its publication. On the last page I find the following:—

लाला गिरिनारीलाल ने जैनी भाईयों के हितार्थ लाला जैनीलाल के "जैनीलाल प्रिंटिंगप्रेस" देवबन्द जिला सहारनपुरमें छपाकर प्रकाशित किया।

I consulted this translation throughout for what it was worth, and have come to the conclusion that the translator used a MS. of the text identical with the one in P and not with the same in A or B, as the absence of translation of IV. 29. 9—IV. 30. 13 clearly shows.

The relationship of all the material described above will be clear from the following diagram:—

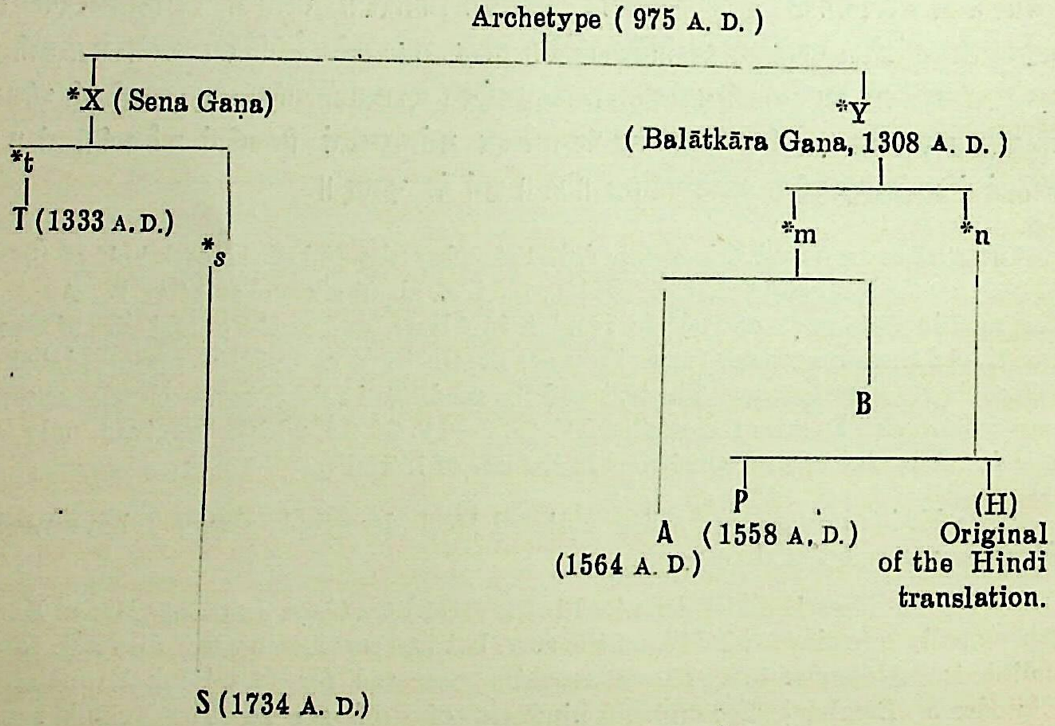

* The asteriç indicates conjectural MSS.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

It will be clearly seen from above that there are two recensions‡ of the text of Jasaharacariu, of which the older one belongs exclusively to the Sena Gaṇa and is represented in my material by S and T. This group of MSS., in my opinion, presents almost the original text as composed by the author himself. The original of my T, i. e., t of the diagram, is irrecoverable, being already worn out in 1333 A. D., and so it may have been two or three centuries older, which is approximately the age of Puṣpadanta. Copies of this recension, however, were being made from time to time in the Sena Gaṇa tradition, and I saw s, a copy of which, S, I have fully collated. This Sena Gaṇa recension omits the following passages from the printed text:—

(*a*) Verses in Sanskrit in praise of the poet's patron, Nanna, at the beginning of the 2nd, 3rd and 4th paricchedа; and,

(*b*) (i) A Passage from I. 5. 3 to I. 8. 17. (Bhairava's visit),

(ii) A Passage from I. 24. 9 to I. 27. 23. (Jasahara's marriage; and

(iii) A Passage from IV. 22. 17.b to IV. 30. 15. (The various subsequent births of several persons in the story).

Of these additions to the Sena Gaṇa recension, I think, those mentioned under (*a*) may have been made by the author himself during his life-time in *some* of the copies of his work. For, in the poet's other work, e. g., in his Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra, there are similar verses in Sanskrit in parise of Bharata, Nanna's father, which verses also are found only in *some* of the MSS. of that work.

As regards additions under (*b*) all of which (except IV. 29. 9. IV. 30. 13 which passage is found in A and B only), appear in the second recension of the Balātkāra Gaṇa, there is only one conclusion to be drawn, viz., that these additions were made by Gandhavva (Sk. Gandharva), son of Kaṇhaḍa (or Kṛṣṇa), in the Saṃvat year 1365, on Sunday, the 2nd tithi of the bright half of Vaiśākha, i. e, in 1308 A. D, at the request of Vīsalasāhu, the son or pupil of Khelāsāhu and grandson or grand pupil of Changesāhu of Paṭṭaṇa. Now, as the passage IV. 29. 13–IV. 30. 15 tells us, this Vīsala once asked the poet Gandharva to fill up the deficiency in Puṣpadanta's work by adding passages relating to (i) the visit of Bhairava to the royal household; (ii) the marriage of Jasahara; and (iii) the wanderings of the various persons through several subsequent births. Accordingly the poet Gandharva composed these passages, inserted them at appro-

‡ When my work on the text and on the introduction was completed I had the good luck of securing another MS. from Kolhapur through my pupil and friend Prof. A. N. Upadhye of the Rajaram College. This MS. belongs to Mr. Tatyasaheb Patil of Nandni near Kolhapur. It is of the Balātkāra Gaṇa group and presents the text as in P and (H). I am glad to see that my classification of MSS. as given above and my remarks on the additions to the original text by Gandharva are fully borne out and confirmed by the discovery of this additional MS., which consists of 100 leaves of which the second and third are missing. The MS. was completed in Ṭodā (Ṭodāgad?)on the 11th day of the bright half of Āśvina of the Saṃvat year 1699 and Śaka year 1564, i. e., 1642 A. D.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

priate places and read them on the above mentioned date to Vīsala, who was then staying at Yoginīpura or Delhi The poet says that he borrowed the material of the above mentioned passages from an older poet on the subject, Vatsarāja by name, and the material for the description of Jasahara's marriage from Vāsavasena's work for which see below. It is a noteworthy thing here that Gandharva makes mention of his own name at the end of all the three passages. Thus we have:—

(१) गंधव्वु भणइ मइं कियउ एउ णिवजोईसहो संजोयभेउ ।
घत्ता—अग्गइ कइराउ पुप्फयंतु सरसइणिलउ ॥
देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ ॥
I. 8. 15-17.

(२) जं वासवसेणिं पुव्वि रइउ तं पेक्खिवि गंधव्वेण कइउ ।
I. 27.23.

(३) गंधव्वें कण्हडणंदणेण आयहं भवाइं किय थिरमणेण ।
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्विं कइउ कइवच्छराइं तं सुत्तु लइउ ।
IV. 30. 14-15.

Now it may be asked: How is it that the passage IV. 29. 9–IV. 30-13 came to be omitted in P and in the original of (H)? My explanation is that the clever and learned copyists of P and the original Apabhraṁśa of H did not like that the passage in question, giving the history of these additions to Puṣpadanta's work, should continue to remain, as they thought the deficiency would do little credit to the poet, and hence they suppressed it. The retention of IV. 30- 14–15 in all the recensions of the Balātkāra Gaṇa has, however, misled several scholars like Pandit Nāthūrām Premi in the *Jain Sāhitya Saṁśodhaka*, Vol. II. i. page 62, and Pandit Jugalkishore Mukhtar in the *Jain Jagat* of October of 1926. They interpreted that गंधव्वें कण्हडणंदणेण meant Puṣpadanta, as Kaṇhaḍa, they said, was only another name of Keśava, the real name of Puṣpadanta's father (See iv. 31. 2).

It will be seen from the above discussion that the text in the present edition represents the secondary and amplified version of MSS. A, B and P. If the origin of the additions had been discovered in earlier stages of my labours on the printing of this edition, it would not have been difficult for me to give the smaller, and, should I say, the original, version of the text. I must confess that the externals of P impressed me so much that I thought I had discovered the best version, though the roughness of language, expressions and versification of the additional passages made me frequently pause. It is, however, quite easy from the critical apparatus of the present text, to ascertain what the original version of S and T must have been.

There is only one more point to which I should like to draw the attention of the reader. The date of these additions is 1308 A. D, while the date of my oldest MS. T is 1333 A. D. The additions, thus, did not influence the copies that were made in the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

quarter of the century that followed their composition. Besides, my MS. T is, as pointed out above, a faithful copy of a still older and worn out MS. prepared at least two centuries before which in the diagram I have called *t*.

3. THE POET AND HIS DATE

The author of this small work in Apabhramśa is Pupphayamta, Sk. Puṣpadanta. Besides Jasaharacariu he wrote two other works, both in Apabhraṁśa, viz., (i) Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra, better known by its shorter title Mahāpurāṇa, divided into two parts, Ādipurāṇa in 37 chapters and Uttarapurāṇa in 65 chapters; (ii) Nāgakumāracariu in 9 chapters, both of which are contemplated to be iucluded in the Kāranjā Series. In all these works the poet gives some account of himself. I give below a tentative sketch based upon the available material in the crude form, reserving a fuller and more accurate information to a future volume of the Series when I hope to have the material cirtically edited.

Puṣpadanta was a Brahmin by caste and belonged to Kāśyapa gotra. His father's name was Keśavabhaṭṭa and mother's name was Mugdhādevi. He was at first follower of Śaivism but later was converted to Digambara Jainism. He seems to have secured several titles and birudas for his poetic genius, such as Ahimāṇameru, Kavvarayaṇāyara Kavvapisalla, Kavvarakkhasa, Kaikulatilaa, Sarasaiṇilaya, Vāesarighara and others. He had a lean body and dark complexion, but a smiling face, and seems to have no wife nor children. We do not know what his native land was, where he studied and who patronised him before he migrated to Mānyakheṭa. It is however clear that he had some bitter experience in life, was probably insulted at the court of his patron, whose name, according to Prabhācandra's notes to the Mahāpurāṇa, seems to be Vīrarāja kāvīpati or kāncīpati (?) *alias* Śūdraka. After this humiliation at the court of his patron he left his native land, came to a garden in the outskirts of Mānyakheṭa, where two persons persuaded him to see their patron Bharata, the minister of king Śubhatuṅgarāya, Tuḍiga or Kṛṣṇarāja III of Mānyakheṭa, and assured him that he would be well received by the Minister. Puṣpadanta thereupon saw him and was at once offered patronage. After a few day's stay Bharata requested the poet to write on the theme of the Mahāpurāṇa, a theme already made popular in Sanskrit by the work of the same name of Jinasena and Guṇabhadra a century before—, as a prāyaścitta for the sin that the poet committed in writing poems in praise of his former patron Vīrarāja.

पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ उप्पण्णउ जो मिच्छत्तभाउ ।
पच्छित्तु तासु जइ करहि अज्जु ता घडइ तुज्झ परलोयकज्जु ।

The poet was at first reluctant to take up the proposal as he was very much depressed at that time and thought that the age of poetry was gone, but after a good deal of persuasion he agreed to commence the work. Even in the middle of his undertaking

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

the poet was once more in depressed mood when the goddess in a dream asked him to wake up and finish his labours. In the introduction to his Tisaṭṭhimahāpurisagunālaṃkāra Puṣpadanta mentions a long list of well-known literary figures which were his predecessors. I give below the passage in full :—

अकलंक-कविल-कणयर-मयाइं   दिय-सुगय-पुरंदर-णयसयाइं ।
दतिलविसाहिलुद्धारियाइं   णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं   इइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारहभासि वासु   कोहलु कोमलगिरु कालिदासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु   णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।
णउ धाउ ण लिंगु ण गण समासु   णउ कम्मु करणु किरियाविसेसु ।
णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति   णउ जाणिय मइं एक्क वि विहत्ति ।
णउ बुज्झिउ आयमु सद्दधामु   सिद्धंतु धवल जयधवल णामु ।
पडु रुद्दडु जडणिण्णासयारु   परियच्छिउ णालंकारसारु ।
पिंगलपत्थारु समुद्दि पडिउ   ण कयाइ महारइ चित्ति चडिउ ।
जसइंधु सिंधु कल्लोलसित्तु   ण कलाकोसल हियवइ णिहित्तु ।

In addition to those mentioned in the passage above he mentions a few more persons prominent amongst them being Pravarasena, the author of Setubandha.

It appears that Puṣpadanta completed his Mahāpurāṇa during the life-time of Bharata. After Bharata's death the poet continued to enjoy the favour of Nanna, Bharata's son, under whose patronoge he composed his two other works known to us. It appears that besides these three he composed a few more works prior to his arrival at Mānyakheṭa ; at any rate one such work in praise of Vīrarāja seems to have been alluded to in the lines already quoted above, but is probably lost.

As regards the date of Puṣpadanta we have the following evidence in his works : (i) The mention of his predecessors, particularly of Rudraṭa whose date is fixed by Mr. P. V. Kane of Bombay and Dr. S. K. De of Dacca to lie between 800 and 850 A. D.; (ii) the reference to the death of the Cola king in the war waged by Śubhatuṅga or Tuḍiga or Kṛṣṇarāja III, which event, in my opinion, took place at about 940 A. D. ; (iii) the mention of the name of the year Siddhārtha (of the Śaka era) in which he commenced his Mahāpurāṇa, and of Krodhana of the same era in which he completed it, which, in my opinion, are 959 A. D. and 965 A. D. ; for I think Puṣpadanta commenced his work in the same Siddhārtha year in which Somadeva completed his Yaśastilaka which year is 881 of the Śaka era, i. e. 959 A. D. ; (iv) mention by the poet in a verse of the plunder of Mānyakheṭa by Harṣadeva of Dhārā which event took place about the year 1029 of the Vikrama era, i. e , 972 A. D. in the reign of Khoṭṭigadeva, the successor of Kṛṣṇarāja III. The *terminus a quo* therefore would be the date of Rudraṭa, say 850 A. D., and the *terminus ad quem*, the plunder of Mānyakheṭa in the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

year 972 A. D. Now within these limits the Siddhārtha Saṃvatsara of the Śaka era would occur in 899 A. D. and 959 A. D; but of these two years we cannot accept the first as the defeat of the Cola king by a Rāṣṭrakūṭa king could not have been effected before 940 A D., the probable year of the accession of Kṛṣṇarāja III. In fact the event took place, according to V. Smith, in the year 949 A. D. We therefore have to accept 959 A. D. as the year in which Puṣpadanta commenced his Mahāpurāṇa. Puṣpadanta's patron Bharata lived to see the completion of this work, but may have perhaps lost his life in defence of the city in the year 972 A.D. Puṣpadanta mentions or refers to, I think, this event in the last line of following verse at the opening of the 50th chapter of his Uttarapurāṇa MS. of Kāranjā:—

*दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

As I have already remarked above, the Sanskrit verses in praise of the poet's patron are found only in some of the MSS. of his works, which shows that they were inserted by the poet at his leisure after some of the copies of his work had already gone out. It is not necessary to argue therefore that the plunder of Mānyakheṭa must have taken place before the Mahāpurāṇa was completed in 966 A. D. Shortly after this event, in 972 A. D., Puṣpadanta once more secured the patronage of Bharata's son Nanna, and resumed his poetic activity which gave to the world two more works, the Jasaharacariu and the Nāgakumāracariu.

In order to make clear the above arguments as to the date of Puṣpadanta, I quote below a long extract from Rai Bahadur Hiralal's Introduction to his Catalogue, page xliv *ff*.

" As for the date of the author, we have the following verses towards the end of the Uttarapurāṇa :—

पुप्फयंतकइणा धुयपंकें जइ अहिमाणमेरुणामंकें ।
कयउ कव्वु भत्तिइ परमत्थें ‡जिणपयपंकयमउलियहत्थें ।
कोहणसंवच्छर आसाढइ दहमइ दियहे चंदसंइरूढइ ।

These verses convey that Puṣpadanta completed the Purāṇa on the 10th of the bright fortnight of Āṣāḍha in Krodhana saṃvatsara. Apparently there is no mention of the year in the verses, and hence we have to look for other data in the work to determine the year. Puṣpadanta tells us that he was the protege of Bharata, the minister of king Śubhatuṅgarāya of Mānyakheṭa. The same king at other places in the work has been

* The Kolhapur MS. of the Uttarapurāṇa does not give this verse at all.

‡ The Kolhapur MS. of the Uttarapurāṇa confirms this reading in the text as against another reading given below from the Poona MS.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

referred to as Vallabharāya. On both these names we have in the manuscripts a marginal explanatory note "Kṛṣṇarāja," which proves that the note-maker thought Subhatuṅgarāya and Vallabharāya to be only different names of "Kṛṣṇarāja". History tells us that there have been three kings bearing the name of Kṛṣṇarāja in the Rāṣṭrakūta dynasty of the South. In the time of Kṛṣṇarāja I, the Rāṣṭrakūṭa capital was not at Mānyakheṭa but near Nasik. Amoghavarṣa I whose reign began in 815 A. D., established Mānyakheṭa as a capital town and Kṛṣṇarāja II and III sat on the throne there. Kṛṣṇa II reigned from about 722 to 788 and for Kṛṣṇa III we have epigraphical and literary records of years ranging from Śaka 861 to 881 (A. D. 939 to 959). In order to decide as to which of these two kings has been referred to by Puṣpadanta, we should examine some other data deducible from his Epic. Quite at the beginning of the great work we have a line in which we are told that the king of Mānyakheṭa who is here called "Tuḍiga" killed the king of the Colas.

उवबद्धजूडु भूभंगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।

We read in Dr. Smith's Early history of India (pp. 424–430) that "The war with the Colas in the reign of Kṛṣṇa III, the Rāṣṭrakūṭa king, was remarkable for the death of Rājāditya, the Cola king, on the field of battle in 949 A. D." Again in the Imperial Gazeteer, Vol. II, page 332, we read, " The Rāṣṭrakūṭa Kṛṣṇa III (940—971) had great success in the Cola country and inscriptions in that tract show that he exercised sovereign rights over parts of it. . . . An inscription at Atkūr, also in Mysore, of the year 949—50 relates that at a time when the Rāṣṭrakūṭa king Kṛṣṇa III was warring against the Cola king Rājāditya, son of Pārantaka I, the former's ally Būṭuga II of the Western Ganges of Talkāḍ (who had married Kṛṣṇa's sister), murdered the the Cola sovereign at a place called Tatkola, not far west of modern Madras. . . . " Somadeva also in the colophon to his Yaśastilaka refers to the conquests of Cola by Kṛṣṇa III. Thus it is probable that the line quoted from Puṣpadanta refers to this very event.

Continuing our search we find at the beginning of the 50th chapter of Uttarapurāṇa a verse of some importance for our inquiry. This verse is —

दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेंद्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

In this verse Puṣpadanta refers to the raid of Mānyakheṭa by some king of Dhārā that took place in his time. Dhanapāla in his Pāiyalacchīnāmamālā (verse 276) says that he composed the work " when one thousand years of the Vikrama era and twenty nine besides had passed, when Mānyakheṭa had been plundered in consequence of an attack made by the lord of Mālava." A reference to this plunder occurs in the Udaipur Praśasti as well (Ep. Ind., Vol. I, p. 226), the 12th verse of which runs as follows :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्मात् [वैरिसिंहात्] अभूदरिनरेश्वरसंघसेवा-
गर्जद्गजेन्द्ररवसुन्दरतूर्यनादः ।
श्रीहर्षदेव इति खोट्टिगदेवलक्ष्मीं
जग्राह यो युधि नगादसमप्रतापः ॥ १२ ॥

Khoṭṭigadeva was the successor of Kṛṣṇa III, and we have a stone inscription of his date in the Śaka year 893 ; while Harṣadeva was a Paramāra King of Dhārā contemporaneous with Kṛṣṇa III and Khoṭṭigadeva. It is quite possible that Puṣpadanta in the above quoted verse refers to this plunder of Mānyakheṭa. by Harṣadeva. The identifications irresistibly lead us to the conclusion that Puṣpadanta wrote in the time of Kṛṣṇa III. It has been said above that Puṣpadanta refers to the king contemoraneous with him by the names of Vallabharāya and Śubhatuṅga. As for the first of these terms, it is known to have been the general title of the Rāṣṭrakūṭa princes. Dr. V. Smith tells us : " All these writers (Arab) agree in stating that they regarded the Balhara as the greatest sovereign in India. They called the Rāṣṭrakūṭa kings Balhara, because those princes were in the habit of assuming the title of Vallabha (Beloved, *Bien aime'*) which in combination with the word Rai (prince) was easily corrupted into the form Balhara".

Jinasena in his Harivaṃśa-Purāṇa-Praśasti calls the Rāṣṭrakūṭa king Indra (son of Kṛṣṇa I,) as Śrī Vallabha.—

पातीन्द्रायुधनाम्नि कृष्णनृपतौ श्रीवल्लभे दक्षिणाम् ।

As for the second name Śubhatuṅga it is well known that it was an alternative name of Kṛṣṇa I, but probably that was also a general title of the Rāṣṭrakūṭa kings. Tuṅga was certainly their common name (cf. Deoli plates). These proofs are, I think strong enough to justify the conclusion that Puṣpadanta wrote in the time of Kṛṣṇa III. But we have still to determine the year in which Puṣpadanta completed his Mahāpurāṇa. We have quoted above six lines from the work, expressing the date without any mention of the year. Mr. Nāthūrām Premī, on the strength of many manuscripts of this work seen by him reads the third and fourth lines of these as follows :—

कयउ कव्वु भत्तिइ परमत्थें छसय छडुत्तर कयसामत्थें ।

This gives the year 606 for the completion of the work. Referred however to the Vikrama, Śaka, Kalacūri or Gupta era, the year does not agree with the facts disclosed above, nor does it prove to be a Krodhana Saṃvatsara as required. Therefore this reading must be held to be erroneous, unless and until it is shown to have reference to an era other than the four mentioned above.

At the beginning of the work Puṣpadanta tell us that he began writing it in Siddhārtha Saṃvatsara :—

तं कहमि पुराणु पसिद्धणामु सिद्धत्थवरिसे भुवणाहिरामु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Somadeva, in the colophon to his Yaśastilaka, tells us that he completed the work in the Śaka year 881 (Siddhārtha Saṃvatsara) when Kṛṣṇa III was reigning (cf. Peterson's III Report, 156). Astronomical calculations also confirm the statement that the Śaka year 881 was Siddhārtha. Krodhana follows Siddhārtha after six years and thus the Śaka year 887 was Krodhana. Hence the Mahāpurāṇa may be taken to have been begun in the Śaka year 881 and completed on the 10th of the bright fortnight of Āśāḍha of Śaka year 887. This according to Swami Kannu Pillai's Indian Ephemeris is equivalent to Sunday the 11th June, 965 A.D. This date, however, raises a question of some historical importance. If we accept that this Mahāpurāṇa was completed in A. D. 965 = V. S. 1022, and also that the raid of Mānyakheṭa mentioned in it refers to the plunder of the city by Harṣa of Dhārā, it *prima facie* follows that the latter event took place at least not later than V. S. 1022. But as we have seen, the author of Pāiyalacchīnāmamālā refers to the same event in a way as to make us understand that it occurred in V. S. 1029. This would make a difference of seven years. I take it that the event in fact took place about the year 1022 V. S. The mention oi Dhanapāla may be explained by the probability that King Harṣadeva returned to his capital Ujjain seven years after the plunder of Mānyakheṭa, spending the interval in conquering other parts of the country. In V. S 1029 the memorable plunder of Mānyakheṭa must have been still fresh and hence Dhanapāla referred to it in that manner.

Though it is difficult to say how long after the completion of Mahāpurāṇa, the Yasodhara-carita and Nāgakumāra-carita written written, this much is certain that they were written after the Mahāpurāṇa, because during the composition of the latter, Bharata was the minister of the King, but when the other two works were composed, his son Nanna is said to have occupied that office. The king has been referred to by the name of Vallabharāya in these two works also, and on their manuscripts we find the marginal note "Kṛṣṇarāja." This is a mistake. As we have seen Khoṭṭigadeva had already succeeded Kṛṣṇarāja even before the completion of Mahāpurāṇa."

4. POPULARITY OF JASAHARA WITH THE JAIN WRITERS

Jasahara or Yaśodhara, the hero of the present work, seems to be highly popular with both the sects of the Jains. Well-known literary figures like Haribhadra handled the theme, and works bearing the title Yaśodharacarita are found in Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa, old Gujarati, old Hindi, old Tamil and old Kannaḍa. I have been so far able to collect over twentyfive authors on the theme, and I do not feel confident that my list is exhaustive.

1. Somadeva composed his Yaśastilakacampū, a huge work in Sanskrit prose and verse. He completed the work in 881 of the Śaka era, i. e., in 959 A. D. It is printed and published by the Nirṇayasāgara Press, Bombay, together with the commentary of Śrutasāgara.

2. Vāsavasena composed in Sanskrit a Yaśodharacarita in eight cantos. It is in verse and the predominent metre is anuṣṭubh. It is this poet who is mentionod in the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

passages added to Puṣpadanta's work and therefore must be earlier than 1308 A. D. There are two MSS. of this work, No. 550 of 1884–86 and No 307 of 1883–84 at the Bhandarkar Institute. At the opening of his work Vāsavasena mentions Prabhañjana and Hariṣeṇa as his predecessors in writing on Yaśodaracarita :

सर्वशास्त्रविदां मान्यैः सर्वशास्त्रार्थपारगैः ।
प्रभञ्जनादिभिः पूर्वं हरिषेणसमन्वितैः ॥ ३ ॥
यदुक्तं तत्कथं शक्यं मया बालेन भाषितुम् ।
तथापि तत्क्रमाम्भोजप्रणामार्जितपुण्यतः ॥ ४ ॥
प्रोच्यमानं समासेन संसारासारसातनम् ।
पठतां शृण्वतां यत्तत्सन्तस्तच्छृणुतादरात् ॥ ५ ॥

The description of the marriage of Yaśodhara which Gandharva added to Puṣpadanta's work and which, he says, is based upon Vāsavasena's work is found in the second canto of the work.

3. Sakalakīrti composed a Yaśodharacarita in Sanskrit, probably after the model of Vāsavasena's work. It is also written in anuṣṭubh metre and in eight cantos. There are two MSS. of this work, No. 1469 of 1886–92 and No. 1051 of 1887-91 at the Bhandarkar Institute. One of these MSS. is dated Saṃvat 1806 but is itself copied from an other old MSS. dated Saṃvat 1776, i. e., 1719 A. D. Sakalakīrti, however, must have lived about 1450 A. D., as his grand-pupil Jñānabhūṣaṇa wrote his Tattva Jñanataraṅgiṇī in Saṃvat 1560, i. e., in 1503 A. D. See Rai Bahadur Hiralal's Catalogue, Introduction, page xxxviii.

4. Vādirāja, otherwise known as Kanakasena Vādirāja composed a Yaśodharacarita in Sanskrit in four cantos. There is published an edition of this work in Tanjore in 1912. According to that editor, the poet Vādirāja lived in the second half of the 10th century A. D. This work therefore must be regarded as almost contemporaneous with our work. Vādirāja calls himself to be the author of the Ekībhāvastrotra and Pārśvanāthacarita which are published, and of Kākutsthacarita :—

श्रीपार्श्वनाथकाकुत्स्थचरितं येन कीर्तितम् ।
तेन श्रीवादिराजेनारब्धा याशोधरी कथा ॥ ६ ॥

5. Somakīrti composed a Yośodharacarita in Sanskrit. The work is divided into eight cantos as in Sakalakīrti's. There are two MSS. of this work, No 549 of 1884-86 and No. 167 of 1872-73 at the Bhandarkar Institute. The author gives the date of the composition as saṃvat(?) 1536, i. e., 1479 A. D. in the colophon which runs as follows : —

नन्दीतटाख्यगच्छे वंशे श्रीरामदेवसेनस्य ।
जातो गुणार्णवौकः (काः) श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥ १३ ॥
निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञिकम् ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याधीयतां बुधाः ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरिगाणिना युक्तसंवत्सरे वै
पञ्चम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तराभे हि चन्द्रे ।
गौढिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये
सोमादीकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निमितं शुद्धभक्त्या ॥ ९५ ॥

6. Māṇikyasūri or Māṇikyadevasūri composed a Yaśodharacarita in Sanskrit verse. It is divided into fourteen cantos and the Granthasaṃkhyā is 1350. There are two MSS. of this work, No. 1308 of 1884-87 and No. 1332 of 1887-91 at the Bhandarkar Institute. There is no mention of the date of the work or of MSS. Māṇikyasūri, however, mentions Haribhadra as his predecessor on the theme.

7. Padmanābha composed a Yaśodharacarita in Sanskrit in nine cantos. There is one MS. of this work, No. 1161 of 1891–95 at the Bhandarkar Institute which does not give any indication as to the date of the composition or of the MS. Is he the same as Padmanātha, author of MS. No. 7805 in Rai Bahadur Hiralal's Catalogue ? He must however be older than Pandit Lakhmīdāsa who composed his Yaśodharacarita in old Hindi in Saṃvat 1781, i. e., in 1724 A. D., after the model of Padmanābha.

8. Pūrṇadeva composed a small work in 311 Sanskrit stanzas on Yaśodhara, of which there is a MS. No. 548 of 1884–86 at the Bhandarkar Institute. I could not get any clue to fix the date of the author.

9. Kṣamākalyāṇa composed a Yaśodharacarita in Sanskrit prose and in eight chapters. There is one copy of the MS., No. 394 of 1880-81, of this work at the Bhandarkar Institute. In the introduction to his work, Kṣamākalyāṇa mentions Haribhadra as a writer of a Prakrit Yaśodharacarita:—

श्रीहरिभद्रमुनीन्द्रैर्विहितं प्राकृतमयं तथान्यकृतम् ।
संस्कृतपद्यमयं तत्समस्ति यद्यपि चरित्रमिह ॥ ८ ॥
तदपि तयोर्विषमत्वादर्थावगमो हि तादृशो न भवेत् ।
तदहं गद्यमयं तत्कुर्वे सर्वावबोधकृते ॥ ९ ॥

Kṣamākalyāṇa wrote his work in Saṃvat 1839, i. e., in 1782 A. D., as is clear from the following colophon to his work :—

वर्षे नन्दकृशानुसिद्धिवसुधासंख्ये नभस्ये सिते
पक्षे पावनपञ्चमीसुदिवसे श्रीजेसलाद्रौ पुरे ।

10. There is, at the Bhandarkar Institute one more MS. of the Yośdharacarita' No. 804 of 1892–95. A few pages at the beginning are missing and the colophon also does not mention the name of the author. The work, however, is divided into four cantos, and the MS. is dated Saṃvat 1581, i. e., 1524 A. D.

Besides these writers in Sanskrit on Yaśodharacarita whose works I could examine at the Bhandarkar Institute, the following are mentioned in Rai Bahadur Hiralal's Catalogue :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

11. Mallibhūṣaṇa, No 7788.

12. Brahmanemidatta, No. 7800.

13. Śrutasāgara, No. 7804. Is he the same as the commentator on Somadeva's Yaśastilaka ?

14. Padmanātha, No 7805, probably the same as Padmanābha above.

The Jain Granthāvali adds one more name to the list :—

15. Hemakuñjara, whose work consists of 370 ślokas only.

The following writers, presumably in Sanskrit, on the theme are referred to in works already examined :—

16. Prabhañjana, mentioned by Vāsavasena.

17. Hariṣeṇa, mentioned by Vāsavasena.

18. Vatsarāja, referred to by Gandharva in passages added to Puṣpadanta's work.

The following writers wrote on the theme in Prakrit and Apabhraṃśa respectively :—

19. Haribhadra, on the authority of Kṣamākalyāṇa and Māṇikyasūri.

20. Puṣpadanta, the author of the present work.

Besides these I have discovered the names of the following writers in vernaculars on the theme :—

21. Janna composed his Yaśodharacarita in Kannaḍa in 1209 A. D., in the reign of Vīra Ballāḷ (1173–1220 A. D.). His work is in prose and verse and is divided into four avatāras. In the introductory portion of his work he says that the story was already narrated in Sanskrit, Prakrit and kannaḍa by former poets. (See karṇātaka-kavi-carite, Vol. I, by R. B. R. Narasimhācārya).

22. Lakhmīdāsa or Pandit Lakhmīdāsa wrote a Yaśodharacarita in Hindi, of which there is a copy at the Bhandarkar Institute and bears No.681 of 1895-98. The Pandit says that he wrote the work after the model of Padmanābha in the year 1781 of the Vikrama era, i. e., in 1724 A. D.

23. Jinacandrasūri of Kharatara Gaccha wrote a Yaśodharacarita in old Gujarati, a MS. of which, No 1489 of 1887–91, is deposited at the Bhandarkar Institute. I think he belongs to 16th century.

24. Devendra composed in old Gujarati a Yaśodhararāsa, a MS. of which, No. 1468 of 1886–92, is deposited at the Bhandarkar Institute. Both Jinacandra and Devendra have not been mentioned by Mr. M. D. Desai in his Jain Gurjara Kavio vol. 1. He however mentions four more poets of old Gujarati on the theme :—

25. Lāvaṇyaratna composed a Yaśodharacarita in Gujarati which is dated Saṃvat 1573, i. e., 1516 A. D.

26. Manoharadāsa composed a similar work in Gujarati dated Saṃvat 1676, i. e., 1619 A. D.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

27. Brahmajinadāsa composed a Yaśodhararāsa in Saṃvat 1520, i. e., 1463 A. D.

28. Jñānadāsa composed a Yaśodhararāsa in Saṃvat 1670, i. e. 1613 A. D.

29. An unknown author, perhaps Vādirāja. composed in Tamil a Yaśodhara-carita in the 10th century (See Introduction to Vādirajā's Sanskrit work, page 6).

It will be clear from the above list of writers to what extent Jasahara was popular with the Jains from the time of Haribhadra down practically to the close of the 18th century. Of this vast literature on the hero, only two works, Somadeva's Yaśastilaka and Vādirāja's Yaśodharacarita are made known to the world and the present work is the third. Its special interest is not thus the narrative, but the language, the Apabhraṃśa larguage of Mahārāṣtra of the 10th century. I am reserving for my introduction to Puṣpadanta's Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra, a detailed examination of all his works from the linguistic point of view, their vocabulary and metre, as the present work is only one-twentieth of his extensive literary activity. I have however added to the present text an Apabhraṃśa-Sanskrit Glossary and a few notes to help the reader.

---

5. THE STORY OF JASAHARA

There was on this earth a prosperous and beautiful country named Yaudheya, the capital of which was Rājapura. King Māridatta ruled over this country and spent most of his time in the full enjoyment of princely pleasures. One day there came on a visit to the capital, a Kāpātikācārya, named Bhairavānanda. He used to wander in the city for begging alms and also for the purpose of initiating people in the faith of the Kāpālika school. He himself proclaimed that he possessed supernatural powers of visualising things of all times, that he had the power of remaining young for ever and that he could even check the movements of heavenly bodies like the sun and the moon. The news of the visit of Bhairavānanda reached the king's ears, and he sent one of his elderly minister for him. On his arrival at the court the king respectfully bowed down to him and begged of him the favour of the power of moving into the air. Upon this Bhairavānanda said that he would certainly secure for him that power if goddess Caṇḍamārī is worshipped with the offering of pairs of all living beings including a human pair. The king immediately ordered his officers to secure such pairs. The officers accordingly brough these pairs except a human pair. The king again ordered one of the officers to secure one and he began to search various places for it.

At this junctures there came on a visit to the town a Jain monk called Sudatta, accompanied by his two pupils in the stage of kṣullaka, named Abhayaruci (boy) and Abhayamati (girl). He at first halted at a garden adjoining the town, but finding that place unsuitable, he went to the cemetery. The two kṣullakas under training with him asked their teacher's permission to go for begging into the town ; when they were moving into the town, the king's officers caught them and brought them to the temple of goddess Caṇḍamārī. The pair of kṣullakas blessed the king in grave tone which attracted his attention. The king was greatly impressed by their figure and

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

asked them whether they came from a royal family and how it was that they took the vow of ascetic life in so tender an age. The boy kṣullaka thereupon said to the king that a pious narrative like his own would be wasted on an assembly of impious men; but the king stopped all the noise of drums and other musical instruments and pressed him to give the narrative. Thereupon the kṣullaka said :—

There is a country in this Bhārata Varṣa called Avanti with Ujjayini as its capital. There ruled at this place a king, Yaśobandhura by name. His son Yaśorha succeeded him to the throne. He married princess Candramati, daughter of king Ajitāṅga. I was the son of this couple and was named Yaśodhara. I was trained in all the princely arts and crafts of the age, and, when in youth, was married to the princess of Krathkaiśika and to a few more princesses. In due course of time king Yaśorha saw his hair turning grey and immediately decided to place his son Yaśodhara on the throne and lead the life of an ascetic. The young king Yaśodhara firmly established his rule on the earth in a short time.

II

King Yaśodhara was so much addicted to pleasures of youth that he felt even the responsibility of his kingship an obstacle to the full enjoyment of life. Now one day in full moon-light, the king Yaśodhara went to the palace of his queen Amṛtamati. At about midnight, when the king was in bed and apparently asleep, the queen gently got herself free from the king's arms and quietly went out to meet her paramour who was an ugly figure of a hump-back. The king was astonished at this conduct of the queen and followed her sword in hand. The queen, on approaching the hump-back, pressed his feet to win him, but he got angry as she was late, and even kicked her. The queen however declared her helplessness and said that she would indeed be glad and worship the goddess if her husband was dead. The king on watching this behaviour of the queen was at one moment about to strike them both with his sword but he thought that he could not with propriety kill a woman and a mean fellow like her paramour. So he returned home in disgust. The queen also returned to her bed before dawn.

Disgusted with what he saw the previous night the king at first thought of leaving the worldly life and becoming an ascetic. Accordingly he declared in the court the next morning to his mother that he saw a bad dream the previous night to the effect that he must at once be a monk or he would die. The mother however proposed that she would rather offer an animal victim to the goddess to counteract the effects of the evil dream. The king proposed that, instead of an animal, a cock made of flour be offered which was done accordingly. The flour was eaten by all as flesh of a cock. But the king, returning home, placed his son on the throne and made preparations to go to the forest. On hearing this the queen came to him and told him that she had arranged a feast after which she also would accompany him to the forest. The king was tempted to wait and partake of the feast, at which the queen poisoned both the king and his mother. The king fell on the ground under the effect, of the poison when the queen, apparently wailing, threw her body on him and strangled him in the neck to death.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

His mother also died as a result of the poison. His son Jasavai came to the scene and in grief performed all the funeral rites with due pomp so that his father and grand mother might have good life in the future. But on account of the offering as a victim of the artificial cock, king Yaśodhara was born a peacock and Candramati a dog in a forest. The peacock was brought to Ujjayini and presented to king Jasavai by a forester. Yaśodhara in his birth as peacock saw his queen still leading a vicious life with her paramour and in anger attacked them both. The queen struck the peacock with her girdle and thus broke one of its legs. Her maids persued the peacock, when the dog, queen mother Candramati of the previous life, came there and killed it. King Jasavai came there and with the stroke of a sped killed the dog. In their next birth Yaśodhara and Candramati respectively became a mangoose and a snake. Both these met their death in the forest, the snake being devoured by the mangoose and the mangoose by a boar.

III

Resuming the narrative, Abhayaruci said Jasahara was born a fish in his next birth in the river Śiprā, and his mother's soul a crocodile. While this crocodile attempted to catch the fish, one of the maids of the palace fell on them in the course of their water-sport, and the crocodile caught her. The fish thus escaped from the clutches of the crocodile who was caught by the royal order and so also the fish. The crocodile died on being placed on the ground, while the fish was taken to the royal kitchen, was cut and fried and served to Brahmins by Jasavai in the name of his father Jasahara. In their next life Candramati was born a she-goat and Jasahara a he-goat to her. While in youth the he-goat the son was enjoying sexual pleasures with the she-goat, the he-goat was killed. Jasahara's soul passed into the womb of the she-goat again. One day king Jasavai caught the she-goat and cut her when he saw the child in the womb still alive. The young one was brought up in the palace, but one day Amṛtamati ordered it to be killed. Next Candramati and Jasahara passed through successive births of buffalo, cock and hen. While in this last birth they were placed in a cage under the charge of an officer of Jasavai. This officer met a monk who delivered to him a long discourse on Jainism. The officer was, as a result of the conversation, converted to Jainism and the cocks recollected their previous births. But at this very juncture the cocks in the cage were killed by an arrow of king Jasavai who wanted to show his skill in archery to his queen, Kusumāvali, and the souls of Jasahara and Candramati then passed into the womb of the queen as twins, the boy Abhayaruci and the girl Abhayamati. In course of time the twins attained youth. King Jasavai went to the forest to hunt with five hundred dogs. He met there a Jain monk named Sudatta; and thinking his presence to be a bad omen, he discharged all his dogs against the monk. But by the prowess of the monk they all stood before him with bent heads. The king thereupon thought of killing the monk with his sword, when the merchant-friend of the king intervened and asked him to prostrate before the monk who, as the merchant said, renounced his kingdom of the Kaliṅga country because he punished an innocent person by mistake. King Jasavai was moved by this narrative, bowed down to the monk, and thought in his mind to cut off his head in order to expiate his

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

sins. The monk knew the king's thoughts and asked him not to do such a rash act. The king was again surprised to see that the monk possessed the power of knowing the thoughts of others and asked him further to tell him where his father, mother and grand-mother were born. The monk thereupon narrated to him their various births, saying in conclusion that his father and grand-mother were born to him as his son Abhayaruci and daughter Abhayamati, while his mother was born in the fifth hell.

IV

On hearing this narrative king Jasavai was moved, and decided, despite the gentle persuasions of his harem, to live the life of a monk. Abhayaruci and Abhayamati also recollected their previous births and fainted. When they were brought round they at first thought of becoming monks, but being too young and being advised on the principles of Jainism by Sudatta, postponed the project for some time, and became kṣullakas, novices. Abhayaruci concluded his narrative by saying to king Māridatta that they were, while wandering as kṣullakas, caught by his men and brought to the temple of Caṇḍamārī.

On hearing this account both the goddess Caṇḍamari and king Māridatta repented and requested the ksullaka to initiate them into the fold of Jainism. The kṣullaka however replied that he could not do that, but his teacher alone could admit them into Jainism At this juncture Sudatta came there, narrated the past lives of king Māridatta and others. Bhairavānanda also became disgusted with his mode of life and all the three were converted to Jain faith. At this stage Abhayaruci became a monk and Abhayamati a nun, and after having lived a pious life, were born as gods in the Īśāna heaven.

---

6. ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or the other, assisted me in the production of the present work. I must thank in the first place Rai Bahadur Hiralal, who, through the kindness of my friend Mr. V. K. Deshpande B. A.; LL B., Additional District and Sessions Judge in the C. P. and Berar, put me in communication with the late Mr. Jaykumar Devidas Chaware, Pleader of Akola. It was late Mr. Chawre who made all the necessary arrangements for my inspection of the two Bhandars at Kāranjā.

The lovers of Indian scholarship owe a special debt of gratitude to the generosity and munificence of Shet Gopal Ambadas Chaware, Banker and Merchant of Kāranjā in Berar, who has set apart a large sum of money for the purpose of starting the Series Ambadas Chaware Digambar Jain Granthamālā, to perpetuate the momory of his late father. It is through this Series that the valuable treasures of the Kāranjā Jain Bhandars will be made known to the world of scholars. I am particularly indebted to him for the courtesy he showed me during my stay at Kāranjā and for the honour he did me in entrusting the edition of the present work.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

INTRODUCTION

To Professor Hiralal Jain, M. A., LL. B., of King Edward College, Amraoti, and the General Editor of the Series, I owe a special debt of gratitude. It was Professor Jain who did me the honour of entrusting the editorship of this first volume, and bore through patiently with me in my protracted labours of editing and printing. It was he, as Rai Bahadur Hiralal had already said in his introduction to the Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in C. P. and Berar, who first inspected the Kāranjā Jain Bhandars and made their precious treasures known to the world. Professor Jain helped me in other ways also. He procured for my use a valuable MS. from Pandit Jugal Kishore Mukhtar of Samantabhandrāśrama, Delhi, and sent me from time to time any piece of information that he might have come across. His articles on the Apabhraṃśa literature in the Allahabad University Journal, Vol. I and on Puṣpadanta in the Jain Sāhitya Samśodhak, Vol. II. iii. and others, have been of great use to me.

To Pandit Nāthūrām Premi and to Professor H. D. Velankar of the Wilson College, Bombay, I convey my thanks for respectively procuring for my use the MSS from the Bhandars at the Terapanthi Jain Mandir and the Ailak Pannalal Sarasvati Bhuvan in Bombay.

Nor should I forget to mention the deep obligations on me of my friend Mr. G. K. Gokhale, Secretary, Shri Ganesh Printing works, Poona, who, as Printer, did his best to produce the work with utmost care and promptitude, and never minded the troubles and inconveniences of the rather exacting editor. His staff, I am glad to note, cheerfully co-operated with him and with me in looking even to the minute details of printer's technicalities.

Fergusson College, Poona
January 1931

P. L. VAIDYA

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanaśi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जसहरचरिउ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1

तिहुवणसिरिकंतहो अइसयवंतहो अरहंतहो हयवम्महहो ॥
पणविवि परमेट्ठिहि पविमलदिट्ठिहि चरणजुयल णयसयमहहो ॥ ध्रुवकं ॥
कोंडिल्लगोत्तणहदिणयरासु वल्लहणरिंदघरमहयरासु ।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु अहिमाणमेरु कइ पुप्फयंतु ।
चिंतइ यें हो धणणारीकहाए पज्जत्तउ कयदुक्कियपहाए ।
कह धम्मणिबद्धी का वि कहमि कहियाइ जाइ सिवँ सोक्खु लहमि ।
पंचसु पंचसु पंचसु महीसु उप्पज्जइ धम्मु दयासहीसु ।
धुउँ पंचसु दससु विणासु जाइ कप्पंघिवखइ पुणु पुणु वि होइ ।
कालावेक्खइ पढमिल्लु देउ इह धम्मवाइ सियवसहकेउ ।
पुरुएउ सामि रायाहिराउ आणंदिउ चउसुरवरणिकाउ ।

घत्ता—वत्ताणुट्ठाणें जणु धणदाणें पइं पोसिउ तुहुं खत्तधरु ॥
तवचरणविहाणें केवलणाणें तुहुं परमप्पउ परमपरु ॥ १ ॥

2

जय रिसह रिसीसरणवियपाय जय अजिय जियंगयरोसराय ।
जय संभव संभवकयविओय जय अहिणंदण णंदियपओय ।
जय सुमइ सुमइसम्मयपयास जय पउमप्पह पउमाणिवास ।
जय जयहि सुपास सुपासगत्त जय चंदप्पह चंदाहवत्त ।
जय पुप्फयंत दंतंतरंग जय सीयल सीयलियवयणभंग ।
जय सेय सेयकिरणोहसुज्ज जय वासुपुज्ज पुज्जाणुपुज्ज ।
जय विमल विमलगुणसेढिठाण जय जयहि अणंताणंतणाण ।
जय धम्म धम्मतित्थयर संत जय संति संतिविहियायवत्त ।
जय कुंथु कुंथुपहुअंगि सदय जय अर अरमाहर विहियसमय ।
जय मल्लि मल्लियादामगंध जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध ।

---

1. १. STB read तिहुयण. २. SB चलण. ३. T अइसयमहहो ४. S कोंडिण्ण ५ STB चिंतइ हो ६. ST लहु मोक्खु. ७. T धुवु. ८. STB पुरुदेवसामि. ९. T चउविहसुरणिकाउ.

2. १. STB णमिय. २. STB सीयल. ३. S अणंत अणंतणाण. ४. S सुदय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जय णमि णमियामरणियरसामि जय णेमि धम्मरहचक्कणेमि ।
जय पास पासछिंदणकिवाण जय वड्ढमाण जस[5]वड्ढमाण ।

घत्ता—इय जाणियणामहिं दुरियविरामहिं परि[6]हिवि णवियसुरावलिहिं ॥
अणिहणहिं अणाइहिं समियकुवाइहिं पणविवि अरहंतावलिहिं ॥ २ ॥

3

पुणु पभणमि जसहरणिवचरित्तु वइयरविचित्तु जं जेम वित्तु ।
बहुदीवमहण्णवमंडलिल्लि इहं[1] तिरियलोइ मयसंकडिल्लि ।
वित्थिण्णए जंबु[2]दीवि भरहे खरकिरणकरावलिभूरिभरहे ।
जोहेयउ णामिं अत्थि देसु णं धरणिए धरियउ दिव्ववेसु ।
जहिं चलइं जलाइं सविब्भमाइं णं कामिणिकुलइं सविब्भमाइं ।
भंगाल[3]इं णं कुकइत्तणाइं जहिं णीलणेत्तणिद्ध[4]इं तणाइं ।
कुसुमियफलियइं जहिं उववणाइं णं महिकामिणिणवजोव्वणाइं ।
गोवालमुहालुंखियफलाइं जहिं महुरइं णं सुकय[5]हो फलाइं ।
मंथररोमंथणचालियगंड जहिं सु[6]हि णिसण्ण गोमहिसिसंड ।
जहिं उच्छुवणइं रसदंसिराइं णं पवणवसेण पणच्चिराइं ।
जहिं कणभरपण[7]विय पिक्क[8] सालि जहिं दीसइ सयदलु सदलु सालि ।
जहिं कणिसु कीररिंछोलि चुणइ गहवइसुयाहि पडिवयणु भणइ ।
छोक्करणरावरंजियमणेण पहि पउ ण दिण्णु पंथियजणेण ।
जहिं दिण्णु कण्णु वणि मयउलेण गोवालगेयरंजियमणेण ।
जहिं जण[9]धणकणपरिपुण्ण गाम पुर णयर सुसी[10]माराम साम ।

घत्ता—रायउरु मणोहरु रयणंचियघरु तहिं पुरवरु पवणुद्ध[11]यहिं ॥
चलचिंधहि मिलियहिं णहयलि घुलियहिं छिवइ व सग्गु सयंभु[12]अहिं ॥ ३ ॥

---

५. S जयवड्ढमाण. ६. B परहवि.

3. १. ST इय. २. ST जंबुदीवभरहे. ३. P भंगालय. ४. T णिद्धंतणाइं. ५. T सुक्कय. ६. SB सुहु-णिसण्ण; T सुहणिसण्ण. ७. SB पणमिय; T विणामिय. ८. P पक्क. ९. T कणधणभर. १०. SB सणीलाराम. ११. PB पवणुध्दुएहि. १२. P सयंभुएहिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4

जं छण्णउं सरसहिं उववणेहिं — णं विद्धउं वम्महमग्गणेहिं।
कयसद्दहिं कण्णसुहावएहिं[1] — कणइ व सुरहरपारावएहिं।
गयवरदाणोल्लिय वाहियालि — जहिं सोहइ चिरु[2] पवसियपियालि।
सरहंसइं जहिं णेउररवेण — मउ चि कमंति[3] जुवईपहेण।
जं णिवभुयासिवरणिम्मलेण — अण्णु वि दुग्गउ परिहाजलेण।
पडिखलियवइरितोमरझसेण — पंडुरपायारिं णं जसेण।
णं वेढिउ वहुसोहग्गभारु — णं पुंजीकय संसारसारु।
जहिं विलुलिय मरगयतोरणाइं — चउदारइं णं पउराणणाइं[4]।
जहिं धवल मंगलुच्छवसराइं — दुतिपंचसत्तभोमइं[5] घराइं।
णवकुंकुमरसछडयारुणाइं — विक्खित्तदित्तमोत्तियकणाइं।
गुरुदेवपायपंकयवसाइं — जहिं सव्वइं दिव्वइं माणुसाइं।
सिरिमंतइं संतइं सुत्थियाइं — जहिं कहिमि ण दीसहि[6] दुत्थियाइं।
जहिं णिच्च[7] विजयदुंदुहिणिणाउ — तहिं मारिदत्तु णामेण राउ।

घत्ता—कोवग्गि जलियहिं परमंडलियहिं जो खंडइ अहिमाणसिह ॥
जसु णिहिघडधारिणि आणाकारिणि वियरइ सिरि घरदासि[8] जिह ॥ ४ ॥

5

चाएण कण्णु विहवेण इंदु — रूवेण कामु कंतीए चंदु।
दंडें जसु दिण्णपयंडघाउ — परदुमदलण[1] बलेण वाउ।
सुरकरिकरथोरपयंडवाहु[2] — पच्चंतणिवइमणि दिण्णदाहु।
भसलउलणीलधम्मिल्लसोहु — सुसमत्थभडह गोहाण गोहु।
गोउरकवाडअइविउलवच्छु — सत्तित्तयपालणु दीहरच्छु।

---

4. १. T सुहावणेहिं. २. ST णं. ३. S चिक्कमंति; T विक्कवंति. ४. ST पवराणणाइं. ५. S भउमइं; T भूमी ६. S दिट्ठइं. ७. T णिच्चु. ८. S घरि दासि.

5. १. STB परबलदलणबलेण वाउ. २. Portion beginning with this line and ending with कडवक 8, is, curiously enough, omitted in S. as well as in T.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लक्खणलक्खंकिउ गुणसमुद्दुँ[3] सुपसण्णमुत्ति घणगहिरसद्दुँ[4]।
विण्णाणणाणतेएण तरणि परणिवइ ण बुज्झइ धम्मसरणि।
तहो वुड्ढवजससेस सव्व संठिय जे तरुणसरंतगव्व ।
हिंडइ समवयसभडेहि जुत्तु परिपक्कबुद्धि एक्कु वि ण पत्तु।
जोव्वणमउ सिरिमउ जेत्थु फार वट्टंति तेत्थु बहलंधयार।
कहिं दीसइ तहिं सुहमग्गु सारु बुहरवियरेहिं विणु विहिय चारु।
कइया वि तुरइ आरुहिवि भमइ घर खुंदिवि खरखुरखण्णु कमइँ[5]।
कइया वि हत्थि चडिर मइरंगि अंकुसेण भमाडइ विविहभंगि।
वणि भमइ कीलउच्छल्लचित्तु रमणीहिं पउहर णियइ चित्तु।
वल्लीमंडवि कामिणिसमाणु रइसुहुँ[6] भुंजइ रइबद्धठाणु।
पुणु कक्खि जाइ सुणहहिं समग्गु अवलोयइ मयसूयरह मग्गु।
कइया वि पुरउ गिज्जं व गीउ अप्पुँणु[7] गायइ रहसिं अभीउ।
णच्चावइ घरिणिं[8] धरेवि तालु वज्जउ वज्जावइ पुणु णिवालु।
छंदें विरज्जइउ करइ कम्मु विणु बुहयणेहिं कहिं लहइ धम्मु।

घत्ता--तहो रज्जु करंतहो जणु पालंतहो मंतिमहल्लिहिं परियंरिउ[9]॥
एत्तहिं रायउरहो घणकणपउरहो संपत्तउ कउलायरिउ ॥ ५॥

6

ताहँ जगहँ[1] भयाउलु अलियरासि भइरउ अहिहाणिं[2] सव्वगासि।
तहि भमइ भिक्खअरु देइ सिक्ख अणुगयहं जणहं कुलमग्गदिक्ख।
बहुसिक्ख हिंसाहियउ डंभधारि घरि घरि हिंडइ हुंकारँ[3]कारि।
सिरि[4] टोप्पी दिण्णरवण्णवण्ण सा झंपवि संठिय दोण्णि कण्ण।
अंगुलदुतीसपरिमाणु दंडु हत्थें उप्फाँलिवि[5] गहइ चंडु।
गलि जोगवट्टु सज्जिउ विचित्तु पाउँडियजम्मु[6] पइ दिण्णु दित्तु।
तँडतडतडतडताडियासिंगु[7] सिंगग्गु छेवि किउ तेण चंगु।

३. B समूहु. ४. B सोहु. ५. B करइ ६. B रइसुह. ७. B अप्पणु. ८. B घराणिहिं. ९. B परिवरिउ.
6. १. PA जगडइ राउलु. २. PA अहिणामि. ३. B हुंकारिकारि ४. B सिरटोप्पी. ५. B अप्फालिवि.
६. B पावड़िय. ७. AB add before this line बहुवियपासियउवएसदुट्ठु चलघुम्ममाणु परलोयभट्ठु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अप्पि अप्पहो माहप्पु दप्पु अणउंछिउ जंपई थुणइ अप्पु ।
महु पुरउ पसंप्पिय[9] जुयचयारि हउं जरइं ण घिप्पमि कप्पधारि ।
णल णहुस वेणु मंधाय जेवि महि भुंजिवि अवरइं गयइं तेवि ।
मइं दिट्ठ रामरावण भिडंत संगामरंगि णिसियर पडंत ।
मइं दिट्ठु जुहिट्ठिलु बंधुसहिउ दुज्जोहणु ण करइ विण्हुकहिउ ।
हउं चिरंजीविउ[10] मा करहु भंति हउं सयलहं[11] लोयहं करमि संति ।
हउं थंभमि रविहि[12] विमाणु जंतु चंदस्स जोण्ह छायमि तुरंतु ।
सव्वउ विज्जउ महु विप्फुरंति वहु तंत मंत अग्गइ सरंति ।
इय जंपंतहो तहो जाय वत्त सा मारिदत्तकण्णंतु[13] पत्त ।
जायउ कोऊहलु रहसजुत्तु दीसइ झडत्ति परिसउ पत्तु ।
पेसियउ महल्लउ गुणवरिट्ठु गउ तेण भइरवाणंदु दिट्ठु ।
आएसु करेविणु भणइ मंति तुह दंसणि रायहो होइ संति ।
सिग्घउ गउ जहिं ठिउ णरवरिंदु सहमज्झि परिट्ठिउ णं उविंदु ।
दिट्ठउ जोईसरु णरवरेण सीहासणु मेल्लिउ रहसिरेण ।
संमुहु जाएविणु धरणि पडिउ दंडु व्व दंडपणिवाइ णडिउ ।
आसीसिउ णरवइ भइरवेण हउं भइरउ तुट्ठउ णियमणेण ।
उच्चासणि वइसाविवि तुरंतु सलहणहं लग्गु तहो पइं[14] पडंतु ।
तुहुं देव सिट्ठिसंहारकारि तुहुं जोईसरु कुलमग्गचारि ।
तुहुं चिरंजीविउ[15] जं हुवउ किं पि पयडहि जं होसइ कज्जु तं पि ।
तुहुं महु उप्परि साणंदभाउ वियरहि[16] हो सामि महापसाउ ।

घत्ता--जोईसरु मणि तुट्ठउ चिंतइ दुट्ठउ इंदियसुहु महु पुज्जइ ॥
जं जं उद्देसमि तं भुंजेसमि आएसहु संपज्जइ ॥ ६ ॥

7

ता चवइ जोइ महु सयल रिद्धि विप्फुरइ खणंतरि विज्जसिद्धि ।
हउं हरणकरणकारणसमत्थु हउं पयडु धरायलि गुणपसत्थु ।

---

८. B जं सइ. ९. B समंप्पिय. १०. P चिरु. ११. B सव्वहं. १२. B रविह. १३. B. कण्णंति. १४. B पय. १५. PB चिरु. १६. B विरयहि.
7. १. PA राय.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जं जं तुहुं म[2]ग्गहि किं पि वत्थु तं तं हउं देमि महापयत्थु ।
पप्फुल्लवयणु ता चवइ राउ महु खेयरत्तु करि विहियछाउ ।
तुह खेयरत्तु हउं करमि बप्प परमोवएसु जइ णिव्वियप्प ।
भो भो णिवकुलकुवलयमयंक दुव्वारवइरिवारण असंक ।
मा[3] णिसुणहि णियपरिवारवयणु णिस्सं[4]किं लब्भइ गयणगमणु ।
जइ देवि पुज्ज आगमिण उत्त जइ जुयलजु[5]यल जीवेहि जुत्त ।
णहयर थलयर जलयर अणेय पसुपक्खिमिहुण बहु[6]वण्णभेय ।
जइ णरमिहुणुल्लउ अवयँपुण्णु देवीमंडउ तुहुं करहि पुण्णु ।
तुह एम करंतहो बलिविहाणु हउं तूस मित्तु हँ चंडियसमाणु ।
ता तुज्झ होइ खेयरियसत्ति विज्जाहर सेवहिं अतुलसत्ति ।
तुह खग्गि वसइ जयसिरि सछाय अमरत्तु होइ तह अजर काय ।

घत्ता—इउं सयलु सुणेवि कउलायरिएं जं भणिउं ॥
खगविज्जालाहु अवँ[10]सिं होसइ मइं मुणिउं ॥ ७ ॥

8

ता[1] रायहो चित्ति चमक्कु जाउ दिढु होएप्पिणु[2] कज्जाणुराउ ।
णिच्छउ अणेण जं कहिउ मज्झु तं करमि जइ वि करणहं असज्झु ।
आढत्तु तलारहं किंकराहं वलियहं जमदू[3]अभयंकराहं ।
पसुपक्खिमिहुण आणेहु सज्ज देवीमंडउ पुरेहु अज्ज ।
आहियारियाहं कहियउ विसेसु पयहो जोईसहो घणु असेसु ।
सुपयच्छहु भत्तिभरेण णवहु उप्परि आयहो सियछत्तु तडहु ।
जं किं पि चवइ तं करहु आसु जिह होइ मज्झु पुण्णाहिलासु ।
रहसिल्लु राउ हिंसाहिणंदु उवएसिं कउँ[4]लहो हुवउ णंदु ।
अइकूरदुरग्गहगहिउ जेण कज्जु व अकज्जु वावरइ तेण ।
जो होइ मिच्छमयगहिउ सहिउ ण वि मण्ण[5]इ सो बुहयणहिं कहिउ ।

२. B मंगहि. ३. B omits मा. ४. B णिस्संकें. ५. B जुवलजुयल. ६. B बहुवण्णि. ७. B अवइपुण्णु. ८. B हं. ९. B इय. १०. B अवसें.

8. १. AB तो. २. B. होएविणु. ३. B. जम इव. ४. B. कवलहो. ५. B. जाणइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जह अंधु ण णियइ कुमंग्गमग्गुं[६] जहँ[७] जलु घोरणिकिउ तँहिं[८] विलग्गु।
जह करिहि सुंडं[९] चउदिसिहि वलइ तह णरवइमणु पेरियउ चलइ।
इम मारिदत्तु परिहरिवि सव्वु जोईसहो वयणिं विलग्गु भव्वु।
हिंसाजीवहं संसारसरणि जीवहं अहिंस सुहकम्मधरणि।
गंधव्वु भणइ मइं कियउ एउ णिवजोईसहो संजोयभेउ।

घत्ता–अग्गइ कइराउ पुप्फयंतु सरसइणिलउ॥
देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ॥ ८॥

9

वेयालकालमग्गियमिसाहि तं[१]णयरदाहिणु[२]ल्लियदिसाहि।
तहो रायहो केरी वइ[३]रिमारि कुलदेवय णामिं चंडमारि।
उरयँ[४]लि विलुलिय णर[५]रुंडमाल सिसुससिसमुद्दाढाकराल।
फणिबद्धदीहलंबिरथणाल तइयच्छिविणिग्गयजलणजाल।
लल[६]ल्लियजीह रुहिरोलवोल वसकद्दमचँ[७]च्चिक्कियकवोल।
घोणसकडिसुत्तयलिहियपाय पिउवणधूलीधूसरियकाय।
णिम्मंस भीम चम्मट्ठिसेस सिहिसिहसंणिहफ[८]रुसुद्धकेस।
पेयंतावलिभूसियभुअं[९]ग्ग तासियपासियबहुजीववग्ग।
णिरासिय दूसिय जइ णिंदमग्ग णग्गी दुच्चार वियारभग्ग।
गुंजारुणदारुणचवलणयण पलकवलगिलणपायडियवयण।
कंकालकवालतिसूलधारि किं वण्णमि जा पच्चक्खमारि।
अण्णा[१०]णु कुलिंग[११]कुदेवभत्तु मारणसीलउ सो मारिदत्तु।

घत्ता—पिच्छिवि कंचाइणि रुहिरंचाइणि चक्कसूलअहिखग्गधरि॥
जयकारियभाविं विमलसहाविं महु परमेसरि दुरिउ हरि॥ ९॥

---

६. B. कुमग्गु मग्गु. ७. B. जिह जालिं. ८. B. ताहिमि लग्गु. ९. P. सुंडु.

9. १. T तं नयरह. २. T दाहिणिल्लिय. ३. T वेरिमारि. ४. AB उरयल. ५. ST मुंड. ६. T ललुलिय ७. A चच्चंकिय. ८. T फुरिसुद्धकेस; S फलरुद्धकेस. ९. A भुवग्ग; PT भुयग. १०. T अण्णाण ११. S कुदेवकुलिंगि.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10

छेलमिहुणसूयरा रोज्झहरिणकुंजरा ।
वालवसहरासहा मेसमाहिसरोसहा ।
घोडकरहभल्लुया सीहसरहगंडया ।
वग्घससयचित्तया एवं बहु चउप्पया ।
कंककुररमोरया हंसवलयचउरया ।
घूयसरंढकाउला कोडिपूसकोइला ।
कुम्ममयरगो .या गाहझसयरोहया ।
जीव सयल जाणिया तीए पुरउ आणिया ।

घत्ता--णियजीविउ वंछइ संति समिच्छइ परु मारेप्पिणु मूढमइ ॥
णाणाविहमिहुणइं रोज्झइं हरिणइं मारइ तहि अग्गइ णिवइ ॥१०॥

11

विसभोयणेण किं णर जियंति गोसिंगइं किं दुद्धइं सवंति ।
घण्णाइं सिलायलि किं हवंति णीरसभोज्जि कहिं कायकंति ।
उवसमविहीणि कहिं होइ खंति परु मारंतहं कहि होइ संति ।
करकमलुग्गिण्णकिवाणएण अवियाणएण तें राणएण ।
मेल्लाविय बहु मिहुणुल्लयाइं अवलोइवि चिण्णतणुल्लयाइं ।
रत्तत्तणेत्तजुयलिं पउत्तु भो चंडयम्म तलवर तुरंतु ।
आणहि णरमिहुणुल्लउ पसत्थु तं मइं मारेव्वउ पढमु एत्थु ।
आएसु लहेवि मउलियकरेण पेसिय णियकिंकर किंकरेण ।
जोयंति णयरि वहावयासि ते तं सरितरुवेल्लीणिवासि ।

घत्ता—तहिं तेहइ अवसरि हिंसावासरि पत्तु सुदत्तु ससंघु मुणि ॥
पत्थिवणंदणवणि दुमसाहाघणि कीरमोरकुररउलझुणि ॥ ११ ॥

---

10. १. ABS एव बहु. २. B सरह. 3. PTS कोइला. ४. AB पुंसकोइला; PS पूसकाउला. ५. ST गोह. ६. S झसय. ७. ST णाणामय; B णाणाविहु. ८. S सव्वइं सउणइं.

11. १. B सिलाइलि. २. T भोयणिं. ३. T रायएण. ४. S मेसाइयाइं मिहुणुल्लयाइं; T मेसाइय बहु. ५. A लइवि. ६. PBT सुसंघ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

12

ज[1]त्थ चूयकुसुममंजरिया सुयचंचूचुंबणजज्जरिया।
हा सा मुहरत्तेण व खद्धा कहिमि विडेण व वेसा लुद्धा।
छप्प[2]यंछित्ता कोमलललिया वि[3]यसइ माल[4]इ मउलियकलिया।
दंसणफंसणहिँ रसयारी मउ[5]उ को अ ण वहुमणहारी।
वायंदोयणलीलासारो तरुसाहाए हल्लइ मोरो।
सोहइ घोलिरपिंछसहासो णं वणलच्छीचमरविलासो।
जत्थ सरे पोसियकारंडं सरसं णवभिसाकिसलयखंडं।
दिण्णं हंसेणं हंसीए चंचू चंचू चुंबंतीए।
फुल्लामोयवसेणं भग्गो केयइकामिणियाए लग्गो।
खरकंटयणहँणिग्भि[6]ण्णंगो ण चलइ जत्थ खणं पि भुयंगो।
जत्थासण्णवयम्मि णिसण्णो णारीवीणारवहियकण्णो।
ण चरइ हरिणो दूवाँ[7]खंडं ण गणइ पारद्धियकरकंडं।
जत्थ गंधविसप्पणं खविओ जक्खीतणुपरिमलवेहविओ।
हत्थी परिअंचइ णग्गोहं फंसइ हत्थेणं पारोहं।
संकेयत्थो ज[8]त्थ सुहद्दं सो[9]ऊणं मंजीरयसद्दं।
अहमं तीए तीए सामी ए[10]वं भणिउं णच्चइ कामी।

घत्ता—तं वणु जोयंतिं मयणकयंतिं भणिउं पत्त[11]फलु भिज्जइ॥
समदमजमवंतहं संतहं दंतहं एत्थु णिवासु ण जुज्जइ॥१२॥

13

उग्गदित्ततवतावभासुरो ता गओ मसा[1]णं मुणीसरो।
तं [2]च केरिसं कालगोयरं सिवसियालदारियमओयरं।
करयरंतकायउलसंकुलं ढंख[3]ढक्खसुक्खेहिँ णिप्फलं।
रक्खसीमुहामुक्कणीसणं सूलभिण्णचोरउलभीसणं।
पक्खिपक्[4]खलक्खेहि छाइयं किलिकिलंतणिसियराणिणाइयं।

---

12. १. S जत्थ य. २. S छप्पइ. ३. ST विहसइ. ४. AS मउलियमालइ. ५. ST मउयउ को ण ६. T णिव्विण्णंगो. ७. ST दूवाकंडं. ८. T एत्थ. ९. ST सोऊण य. १०. AB एउं. ११. SBT पत्तु फलु.

13. १. S मसाणे. २. P तत्थ. ३. S सुक्करुक्खेहिं. ४. ST पक्खिलक्खपक्खेहिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भीयरं चियाचिच्चिजालयं   धित्तवालपूलोलिणीलयं ।
धूमगंधधावंतसाणयं   सव्वदेहिदेहावसाणयं ।
पवणपेल्लणुल्ललियभप्परं   भग्गभाणविक्खित्तखप्परं ।
इंदचंदणाइंदसंथुओ   चउविहेण संघेण संजुओ ।
फासुए विसाले धरायले   उज्जले पवित्ते सिलायले ।
सुद्धसुक्कलेसो अदुम्मई   तम्मि संणिसण्णो महाजेई[5] ।

घत्ता—पालियजिणदिक्खहिं गच्छहु भिक्खहिं भणिवि णवेवि णियच्छियउ ॥
तहिं[6] गुरु परमेसरु हयवम्मीसरु खुल्लयजुयलिं पुच्छियउ ॥१३॥

14

णाणालक्खणचच्चियगत्तं   पहसियवत्तं कयकरपत्तं ।
पंकयणेत्तं[1] पालियवित्तं   जिणपयभत्तं विसयविरत्तं ।
कलिमलचत्तं सुयणविरत्तं   दयसंजुत्तं उत्तमपत्तं ।
धम्मासत्तं गुरुणामुक्कं   सगुणगुरुक्कं जियमयचक्कं ।
अहिमाणिक्कं रुइरहियक्कं   पुरवहिढुक्कं कम्मविमुक्कं ।
बालयजुयलं दट्ठुं विमलं   धुणियं कमलं लवियंसमलं ।
णरणियरेणं खग्गकरेणं   पावपरेणं कडुयसरेणं ।
एयं मिहुणं परमं गहणं   सुहसंगहणं दुहणिम्महणं ।
चारुकरग्गं रूवसमग्गं[2]   विहिवसभग्गं मारणजोग्गं ।
मयउलविलए णंचियविलए[3]   महियलतिलए देवीणिलए ।

घत्ता—इय तेहिं भणेप्पिणु भिउडि करेप्पिणु सयणु किरणमालाफुरिउ ॥
तं सिसुजुयलुल्लउ तिहुवणि भल्लउ रूसिवि करपल्लवि धरिउ ॥ १४ ॥

---

५. T महामई. ६. T ता.

14. 1. This line and the two following ones are arranged in Mss in various ways, the wording being the same. २. T भावसमग्गं. ३. T णिच्छियणिलए.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15

तं जणभयजणणं सि[1]रणिल्लणणं णाऊणं ।
कयजीवविमद्दं मारणसद्दं सोऊणं ॥
अभयरुइकुमारो णिज्जियमारो थिरु चवइ ।
सु[2]क्कियदलवेल्ली णियबहिणुल्ली संठवइ ॥
मा बीहसु कण्णे अ[3]ज्जु पवण्णे मरणदिणे ।
हिययं अविवंकं गयखयसंकं ठवसु जिणे ॥
छिंदउ तणुचम्मं भिंदउ वम्मं रसवसउ ।
भक्खउ जंगलयं चं[4]पउ गलयं रक्खसउ ॥
घुट्टउ कीलालं खंडउ सीलं जइण मुणी ।
ता होइ पसिद्धो देवो सिद्धो अट्ठगुणी ॥
किं कुणइ रउद्दो राओ खुद्दो असुहरणं ।
अम्हाण अछम्मो जिणवरधम्मो सहि सरणं ॥
ता भणियं तीए चंदमुहीए कयपुलयं ।
प[5]इं उत्तं जुत्तं जं जिणसुत्तं णिम्मलयं ॥
अवरोप्परु खंतइं सं[6]तइं दंतइं दमियाइं ।
दुद्दमि भवकद्दमि जं चिरु णिरं[7]समि भमियाइं ॥
मइं हियए[8] धरियं ण हु वीसरियं तं खणु वि ।
एवहिं अवगण्णमि जीविउ मण्णमि ण उ तणु वि ॥

घत्ता—इय बे वि चवंतइं जिणु सुमरंतइं कउलकुडुंबाणंदिरहो ॥
एक्कलपाइक्कहिं जमलल्लक्कहिं णियइं तिसू[9]लिणिमंदिरहो ॥१५॥

16

जहिं रसियसिंगाइं उद्धरियकंडाइं　　भुअदंडदक्खवियकोअं[1]डदंडाइं ।
लंबंतमाऊ[2]रपिंछोहणिवसणइं　　मसिधातुमंडियइं पित्तलविहूसणइं ।

---

15. १. AB सिरु. २. T. सुक्कय. ३. STB अज्ज. ४. AS चप्पउ. ५. T तइ. ६. ST दइवें होतइं. ७. AB णिस्समि; S णिसमे. ८. B हियइ पधरियं. ९. ST तिसूलणि.

16. १. ST कोअंडचंडाइं. २. T माल्लर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कडिबद्धचलचीरियाचिंधजालाइं करधरियविप्फुरियकत्तियकवालाइं ।
पायडियणियगुरुकमारूढलिंगाइं कुलघोसमयचम्मपच्छाइयंगाइं ।
मुद्दाविसेसेण दूरं णमंताइं पयघग्घरोलीहिं घवघवघवंताइं ।
कहकहकहंताइं सवियारवेसाइं मुक्कट्टहासाइं झंपडियकेसाइं ।
जहिं विविहभेयाइं कउलाइं मिलियाइं कीलंति ढड्ढरइं अट्टंगवलियाइं ।
जहिं करडपडहाइं वज्जंति वज्जाइं इट्टाइं मिट्ठाइं पिज्जंति मज्जाइं ।
छिज्जंति सीसाइं णिवडंति भीसाइं रसवसविमीसाइं खज्जंति मासाइं ।
गिज्जंति गेयाइं चामुंडचंडाइं गहिऊण तुंडेणं रुंडस्स खंडाइं ।
दुप्पेच्छरत्तच्छविच्छोहदाइणिउ णच्चंति जोइणिउ साइणिउ डाइणिउ ।
पसुरुहिरजलसित्तपंगणपएसम्मि पसुदीहजीहादलच्चणविसेसम्मि ।
पसुअट्ठिकयपिट्ठिरंगावलिल्लम्मि पसुतेल्लपज्जलियदीवयजुइल्लम्मि ।
पसुकत्तिउल्लोवयंचियणहंतम्मि मारीए देवीए देवालए तम्मि ।

घत्ता—सीहु व करितासणु दाढाभीसणु मेहु व विज्जुविराइयउ ॥
दंति व दंतग्गिं उग्गयखग्गिं सहुं णरणाहु पलोइयउ ॥ १६ ॥

17

ता भासियं तेहिं भाविप्फुरंतेहि ।
भो सुद्धवरवंस सिरिपोम्मिणीहंस भो रायराएस संगहियजससेस ।
गुणसेढिठाणेण जोइ व्व णाणेण णेहु व्व दाणेण पाणि व्व पाणेण ।
गिरि विव सिलोहेण तरु विव फलोहेण ससि विव कलोहेण जलहि व जलोहेण ।
हयकूरकम्मेण तं वड्ढ धम्मेण इय महुरघोसेण पसमंतरोसेण ।
दट्ठूण डिंभाइ भयमयणिसुंभाइं संचिंतियं तेण पहुमारिदत्तेण ।
लच्छीपियल्लेहिं सरलंगुलिल्लेहिं पाएहिं रत्तेहिं णक्खेहिं दित्तेहिं ।
गूढेहिं गुंफेहि णं मंतगुंफेहिं सोहामहग्घाहिं मसिणाहिं जंघाहिं ।

३. T omits सवियार...मिलियाइं. ४. B दड्ढ. ५. T तुंडाइ. ६. AP पट्ठि ७. S विसेसम्मि. ८. ST कित्ति. ९. ST उल्लोयअंचिय. १०. ST उक्खय.

17. १. S भाविच्छुरंतेहि. २. ASTB पोमिणी. ३. ST गुप्पेहिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिविडेहिं जाणूँहिं[4] करिकरसमोरूहिं[5] सुविउल[6]कडिल्लेहिं तुच्छोअरिल्लेहि ।
गंभीरणाहीहिं वट्टियसमाहीहिं दयवेल्लि[7]राहाहिं ललियाहिं बाहाहिं ।
अविलास[8]वंकेहिं रेहातियंकेहिं गलकंदलुल्लेहिं तिल्लोक्कमोल्लेहिं ।
छणयंद[9]वयणेहिं आयंबणयणेहिं संगयपलंबेहिं कण्णेहिं दिव्वेहिं ।
बिंबीहलाहेहिं अहरेहिं तंबेहिं उज्जुवहिं णासाहिं कुडिलाहिं भउहाहिं ।
उड्डुवइ[10]पभालेहिं पत्तलकवोलेहिं णिवपट्टभालेहि अलिणीलवालेहिं ।
घत्ता—काहिं आयहिं बालइं णिरु सोमालइं हा खल विहि हयसुयणसुह ॥
एए सामुद्दिं समउ समुद्दें पयहिं[11] किं ण भुत्त वसुह ॥ १७ ॥

18

अणिंदो खगिंदो दिणिंदो फणिंदो सुरिंदो उविंदो महारुंद[1]चंदो ।
सिसूरूवधारी मुरारी पुरारी अणंगो असंगो अभंगो अलिंगो ।
इमो को वि देवो सुअव्वत्त[2]भावो दिही कंति कित्ती सिरी संति सत्ती ।
मही बुद्धि सिद्धी सुहाणं[3] व लद्धी जसाणं व सेणी गुणाणं व खाणी ।
सुहाणं व जोणी तवाणं व खोणी दुहाणं व हाणी कवीणं व वाणी ।
पसण्णा कुमारी इमा चंडमारी समाया समाया धरादिण्णपाया ।
णिंदउं गहीरं महं भत्तिभारं किमं भायणेयं महं कहिमि एयं ।
जिणं[5] दिक्खपत्तं भवाणंतपत्तं पमोत्तूण चोज्जं पपुच्छामि कज्जं ।
मणे मंतिऊणं इमं चिंतिऊणं तिणाणं पउत्तं अहो हो णिरुत्तं ।
सवित्तोपउत्तं पर्वाहेह[6] वत्तं मुसावायचत्तं अयं[7] इत्थ पत्तं ।
सरज्जाय भट्ठो पुराओ पणट्ठो रिऊणं भयाओ पमोत्तुं पयाओ ।
तुमं रायउत्तो ण किं को वि धुत्तो पुरं मज्झ पत्तो सढो गूढगत्तो ।
इमी कस्स धूया कुलाणंदभूया अमाणं णवाणं जुवं माणवाणं ।
घराओ पउत्थं किमत्थं वउत्थं सिसूणं पि सिक्खा सिसूणं पि भिक्खा ।
सिसूणं पि दिक्खा गुणेसुं परिक्खा महाअब्भुयं भो महाअब्भुयं भो ।

---

४. AB जण्णूहि; ST जण्हूहि. ५. AS समूरूहि. ६. ST सुपिहुल. ७. AB दयवेल्लिसाहाहि. ८. AP अवलास. ९. STB छणइंदु. १०. ST omit उड्डुवइ...पट्टभालेहि. ११. ASTB. एयहि भुत्त किं ण वसुह.

18. १. S पहारुंद, T महारुद्द. २. AP सुआवत्तभावो. ३. S सुयाणं. ४. T omits this and the following line. ५. ST जिणे. ६. T पवाहेह. ७. ST omit अयं इत्थ पत्तं.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—अम्हारउ पुरवरु छुहपंकियघरु किं आयउ [८]कुमरीए सहुं ॥
भणु दुरियखयंकरु सवणसुहंकरु सकहंतरु भो कुमर महुं ॥ १८ ॥

19

ता ण[1]रवइणो हरिसं जणियं उत्तमसावयवइणा भणियं ।
अंधे णट्टं बहिरे गीयं ऊसरछेत्ते [2]ववियं बीयं ।
संढे लग्गं तरुणिकडक्खं लवणविहीणं विविहं भक्खं ।
अण्णाणे तिव्वं तवचरणं बलसामत्थविहीणे सरणं ।
असमाहिल्ले सल्लेहणयं णिद्धणमणुए णवजोव्वणयं ।
णिब्भोइल्ले संचियदविणं णिण्णेहे वरमाणिणिरमणं ।
अवि य [3]अपत्ते दिण्णं दाणं मोहरयंधे धम्मक्खाणं ।
पिसुणे भसणे गुणपडिवण्णं रण्णे रुण्णं विय[4]लइँ सुण्णं ।

घत्ता—जो जिणपडिकूलहो भत्थइ सूलहो गुरु परमागमु भासइ ॥
सो वयणइं सुद्धइं णं घयदुद्धइं सप्पहो [5]ढोइँवि णासइ ॥ १९ ॥

20

मुच्छं गइ दिज्जइ सलिलु पवणु उवसंतहो किज्जइ धम्मसवणु ।
किं सुक्कें रुक्खें सिंचिएण अविणीयं किं संबोहिएण ।
कह राय महारी धम्मविज्ज उत्तमपुरिसहं सवणिज्ज पुज्ज ।
तं णिसुणिवि मणि उवसंतु राउ वारिउ भंभाभेरीणिणाउ ।
चामुंडचंड डिंडिमु रसंतु वारिउ किलिकिलिकलयलु महंतु
णिम्मुक्कु भीमु हिंसाविणोउ थिउ णिच्चलु णिहुयउ स[1]यलु लोउ ।
ण च[2]लइ ण वलइ णं ले[3]प्पँ विहिउ णं भित्तिहिं चित्तयरेण लिहिउ ।
ता पभणइ अभयरुइ सुवाय देवाणं पिय भो णिसुणि राय ।
दिट्ठउ णिसुणउ अणुहूउ [4]जं पि आयण्णहि णरवइ कहमि तं पि ।
एत्थत्थि अवंती णाम विसउ महिवहु भुंजाविय जेण विसउ ।

---

८. AB कुमरीहि.
19. १. S महिवइणो. २. BT चइयं. ३. S अवत्ते; B अवित्ते ४. T वियलियसुण्णं. ५. S ढोयवि.
20. १. ABST सव्वु. २. S चवइ. ३. P णं लेवविहिउ. ४. S किं पि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—णंदंतहिं गामहिं विउलारामहिं सरवरकमलहिं लच्छिसहि ॥
गलकलकेकारहिं हंसहिं मोरहिं मंडिय जेत्थु सुहाइ महि ॥ २० ॥

21

जहिं चुमुचुमंति केयारकीर वरकलमसा[1]लिसुरहियसमीर ।
जहिं गोउलाइं पउं[2] विक्किरंति पुंड्रुच्छुदंडखंडइं चरंति ।
जहिं वसहमुक ढें[3]कार धीर जीहाविलिहियणंदिणिसरीर ।
जहिं मंथरगमणइं माहिसाइं दहरमणुड्डावियसारसाइं ।
काहलियवंसरवरत्तियाउ वहुअउ घरकम्मि गुत्तियाउ ।
संकेयकुं[4]डुंगणपत्तियाउ जहिं झीणउ विरहिं तत्तियाउ ।
जहिं हालिणिरूवणिवद्धचक्खु सीमावडु ण मुअइ को वि जक्खु ।
जिम्मइ जहिं पवहि पवासिएहिं दहि कूरु खीरु घिउ देसिएहिं ।
पवपालियाइ जहिं बालियाइ पाणिउ भिंगारपणालियाइ ।
दिंतिए मोहिउ णिरु पहियविंदु चंगउ दक्खा[6]लिवि वयणचंदु ।
जहिं चउपयाइं तोसियमणाइं धण्णइं चरंति ण हु पुणु तिणाइं ।
उज्जेणि णाम तहिं णयरि अत्थि जहिं पाणि पसारइ मत्त हत्थि ।

घत्ता—मरगयकरकालियहिं महियलि घुलियहिं फुरियहिं हरियहिं मूढमइ ॥
विणडिउ वासँइं[7] रसविण्णासइं णीणिउ मिट्ठि मंदगइ ॥ २१ ॥

22

जहिं चंदकंति माणिक्कदित्ति उल्ललइ गयणि णं धवलकित्ति ।
जहिं पोमरायराएण लित्त णउ लायइ कुंकुमु हरिणणेत्त ।
जहिं इंदणीलघरि कसँ[1]णकंति वहु णज्जइ सियदंतहिं हसंति ।
सुपहायकालि जोयंतियाहिं मणिभित्तिहि चिरु पवसियपियाहिं ।
अमलियमंडणु मुहु दिट्ठु जेत्थु हा पिय विणु मंडणु हुंउ[2] णिरत्थु ।
अप्पाणउं जूरिउ तियहिं जेत्थु डिं[3]भपडिबिंबहो देइ हत्थु ।
[4]जँहिं छडयघित्तकुसुमावलीउ मोत्तियरइयउ रंगावलीउ ।

21. १. S कसिण. २. SP पिउ. ३. T ढुक्कार. ४. T कुडंगण; AS कुडंगुण. ५. T विभावियाइ. ६. T दक्खालिउ. ७. ST दुव्वासएं.

22. १. T कासिण. २. ST गउ. ३. AS डिंभउ. ४. S omits this line.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहिं णंदइ जणु जणजणियसोक्खु णिच्चोरमारि णिल्लुत्तदुक्खु ।
जहिं गयमयसित्तउ रायमग्गु हयलालाजलपंकेण दुग्गु ।
मुहचुअतंबोलरसेण रत्तु णिवडियभूसणमणियरविचित्तु ।
कप्पूरधूलिधूँसरियचमरु[5] मयणाहिपरिमलुब्भमियभमरु[6] ।
घत्ता—जहिं णरवइ णाएं मंति उवाएं ववहारु वि सच्चें वहइ ॥
कुलु कुलवहुसत्थें पुरिसु वि अत्थें अत्थु वि जहिं दाणिं सहइ ॥ २२ ॥

23

तहिं उज्जेणिहिं महिवइ[1] पसिद्धु[2] जसबंधुर णामिं जससमिद्धु ।
तहु कुलमंडणु णंदणु जसोहु णं खत्तधम्मु थिउ होवि गोहु ।
णं गुणमेलउ णं तवपहाउ णं पुण्णपुंजु णं कलकलाउ ।
णं कुलभूसणु णं जसणिहाणु णं णायमग्गु णं भुवणभाणु ।
पा[3]वग्गहगहविज्जामणि व्व दीणा[4]णाहहं चिंतामणि व्व ।
रिउसेल्लसिहर[5]सोदामणि व्व मंडलियमउलचूडामणि व्व ।
णं कामजुत्ति णं कामदित्ति णं कामकित्ति णं कामसत्ति ।
णं कामहो केरी बाणपंति णं कामहत्थिवीणाय तंति ।
अजियंगजाय णवणलिणणयण चंदमइदेवितह चंदवयण ।
हउं जणियउं ताइ महासईए तणुरुहु कव्वत्थु व कइमईए ।
घत्ता—बहु वं[6]णिणउ सयणहिं भूँ[7]सिउ रयणहिं हउं जायउ जणणीइ किह ॥
णवमयणरासिल्लि जायउ फुल्लि जोव्वणदुमफलगुंछु[8] जिह ॥ २३ ॥

24

सिसुलीलइं कीलइं सुहु[1] रमंतु गुणि पेरिउ वारिउ दोसि थंतु[2] ।
उज्झाएं ताएं पढमि[3] खविउ सुवसिल्लइ भल्लइ विणइ ठविउ ।
मइं लिहियइं गहियइं अक्खराइं गेयइं सरिगमपधणीसराइं ।

---

५. S हरचलिय. ६. B भसलु.

23. १. AB भूवइ; T णरवइ. २. ST omit पसिद्धु…णंदणु. ३. T reads णं पावग्गहविज्जामणि व्व. ४. S omits दीणाणाहहं…सोदामणि व्व. ५. ABT सिहरि. ६. S मण्णिउ. ७. T मंडिउ. ८. AB गोच्छु; T गुच्छु.

24. १. ST घरि भमंतु. २. T दोसदित्तु. ३. A पढण.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फलफुँ[४]ल्लपत्तछिज्जंतराइं सिललेपकट्ठकम्मंतराइं ।
वै[५]यरणइं णट्टइं णवरसाइं छंदालंकारइं जोइसाइं ।
मायंगतुरं[६]गारोहणाइं मइं मुणियइं गुणियँइं पहरणाइं ।
दिव्वइं कव्वइं उवलक्खियाइं सव्वइं विण्णाणइं सिक्खियाइं ।
तारुण्णउं लायण्णउं णिबद्धु णउ जाणउं विहिणा किह णिबद्धु ।
पोढत्तणि पुट्ठिपलं[८]ट्ठियंगु अंगें[९] सहुं हउं णावइ अणंगु ।

घत्ता—सं[१०]यलकलासंपुण्णउ विणिहयदुण्णउ जसहरु कुमरु विसा[११]लइं ॥
समवं[१२]यसहिं जुत्तउ णिम्मलचित्तउ कीलइ णयरि सुसालइं ॥ २४ ॥

25

ता एत्थउ कथकोसाउ णित्तु देसाउ मंति वाहिवि स पत्तु ।
कइं[१]वयदिणेहिं गउ रयणधाम तोरणमंडिय उज्जेणि णाम ।
पडिहारहो सच्छिकरेवि चारु सहमंडवि पत्तउ विहियचा[२]रु ।
जयकारिउ राउ जसोहु तेण विणएण विणयभूसियमणेण ।
तंबोलजुत्तु संमाणु विहिउ कुसलत्तु कुसलु ता तेण कहिउ ।
पुच्छिउ राएं भो मंति एत्थु पयडेहि कज्जु तुहुं आउ जेत्थु ।
ता भणइ मंति महियलि पसिद्धु वइराडणयरु जणधणसमिद्धु ।
तहिं णरवइ णियकुलकमलभाणु णामेण विमलवाहणु पहाणु ।
तहो भज्जा देवी णाम साम लक्खणलक्खंकिय मज्झ[३]खाम ।
सुअ अभयमहाएवी सउण्ण णं अच्छर णावइ णायकण्ण ।
सा जोव्वणरूढ णिएवि ताउ धूवहि परिणावमि हुवउ भाउ ।
मेलाविय सुयण विसिट्ठ इट्ठ जे वुड्ढ वियक्खण सुइ वरिट्ठ ।
भो पुत्तिहि कारणि वरु णिएहु को वि रायउत्तु गुणमहियदेहु ।
मंतेप्पिणु कहियउ सज्जणेहि उज्जेणि णयरि णिम्मलमणेहि ।
जसहरु तहिं रायजसोहपुत्तु कण्णाकारणे वरु एहु जुत्तु ।

---

४. ST omit this line. ५. P omits this line. ६. A तुरंगम. ७. T सव्वइं. ८. B पलिट्ठियंगु. ९. ST अंभोरुहु. १०. Portion beginning with this line and ending with कडवक 27, line 23, is omitted in S and T. ११. A विसालमइ. १२. A वइसहिं.

25. १. B कयवय. २. AB सारु. ३. B मज्झि खाम.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रायण मज्झु आएसु दिण्णु चालेवि पत्तु हउं इह पवण्णु ।
पडिहारु लेवि तुह सह पइट्ठु जणसंकुलु रायट्ठाणु दिट्ठु ।
सीहासणत्थु पेक्खेवि राय सीसेण णमंसिय तुज्झ पाय ।
संभासणु करि पुच्छियउ कज्जु मइं तुम्हहं कहियउ सामि सज्जु ।
संभालिवि किज्जइ कज्जु एहु परसप्पर वट्टइ जेम णेहु ।
राएं संतुट्ठिं कहिउ सव्वु जं कहिउ पइंमि तं भव्वु भव्वु ।
को णेच्छइ घय पयमज्झि सारु सक्करपएँसु वण्णेण चारु ।
रायहो जं पिउ णिसुणेइ जाम हरिसें गउ मंती हुवउ ताम ।
सुपयच्छियकण्णावरहो सज्जु इह आणिवि कण्ण विवाह कज्जु ।
किज्जइ सुहदिणि सुहजोइँ लग्गि आएसहं एत्थु वहेवि मग्गि ।
ता राएं मणिमुद्दी अणग्घ कण्णाकारणें तहो दिण्ण सिग्घ ।

घत्ता—जणवयकयसंति ता सो मंति हरिहिं चडेविणु णिग्गउ ॥
राएं सम्माणिउ सज्जणु जाणिउ वइराडइ संपत्तउ ॥ २५ ॥

26

तहिं दिट्ठु विमलवाहणु णरिंदु सहमज्झि परिट्ठिउ णाइ इंदु ।
पयकमलु णविउं मंतीवरेण इल लाइवि सिरु भत्तीभरेण ।
अमयमइ कण्ण जसहरहो देव दिण्णी जसोहतणयहो सुसेव ।
उज्जेणिहिं जाइवि पुण्णलाहु लिज्जइ किज्जइ कण्णहे विवाहु ।
किउ मंतु सयलसज्जणहं जुत्तु उज्जेणिहिं जाइज्जइ णिरुत्तु ।
बंधव सुअ णियपरिवाँरु लोउ अंतेउरु भुंजियदिव्वभोउ ।
चल्लिय हय गय रह सुहड जेत्थु जगि पयड णयरि उज्जेणि तेत्थु ।
तहिं णंदणवणि णिवसेइ जाम वणवालिं रायहो कहिउ ताम ।
उच्छाहु जाउ णयरीहिं मज्झि वणि उच्छउ हुउ वइरियदुसज्झि ।
मंडउ विचित्तु विरइउ तुरंतु वरपंचवण्णधयवडफुरंतु ।
बहुथंभहिं बहुतोरणहिं घडिउ बहुकलसहिं मंडिउ रयणजडिउ ।
बहुणरणारिहिं सेविउ विचित्तु वणि मंडउ दीसइ हरियचित्तु ।

---

४. AB सिंहासणत्थु. ५. AB पवेसु. ६. B जोगि.

26. १. B नहमज्झि. २. B कण्णाविवाहु. ३. A परिवारलोउ. ४ B किउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहिं वज्जहिं मंदल पडह ताल   णच्चंति विलासिणि लडह बाल ।
सुललियउ गीउ गायंति के वि   मंगलु पढंति थुइवयणु के वि ।
कलघोसु पवट्टिउ तहिं वणम्मि   णयरीजणु तुट्ठउ णियमणम्मि ।
णयरिहिं वज्जहिं वर संख पडह   बहुभेय विलासिणिणडहिं लडह ।
मंगलु गाइज्जइ रायगेहि   उच्छवरसु वट्टिउ देहि देहि ।
दोहिमि कुलेहिं उच्छाहु जाउ   दोहिमि कुलेहिं आणंदभाउ ।
दोहिमि कुलेहिं वरपत्तदाणु   धणु धण्णु सुवण्णउं अप्पमाणु ।
आयउ विवाहदिणु उच्छवेण   हरिसिउ जसोहु णिउणियमणेण ।
चंदमइमायहि तोसु जाउ   रहसिं पूरिउ थीयणहं काउ ।
कंचणमयपट्टि णिवेसियंगु   कलसेहिं ण्हाविउ[5] उत्तमंगु ।
आहरणहिं भूसिउ कुमरु[6] तत्थ   परिहाविय सियणिम्मलसुवत्थ ।
चंदणि चच्चंकिउ सुद्धभाउ   सिरि सेहरु किउ जणदिण्णराउ ।
कप्पूररेणुमयणाहिगंधु   फुल्लेहिँ[7] हुउ भमरोहु अंधु ।

घत्ता—ता कंकणहत्थु रहसपसत्थु अस्सरयणि आरूढउ ॥
भरभेरीसद्दहिं तूरणिणद्दहिं जणु जायउ मणमूढउ ॥ २६ ॥

27

समवयस कुमर सहुं चलिउ जाम   पारंभिय थुइ णंगुडिहिं[1] ताम ।
णच्चंति विलासिणि गीउ रम्मु   गायण गायंतिहिं सुकियकम्मु ।
गय णंदणवणि मंडवदुवारु   वरतोरणमंडिउ रयणफारु ।
तहिं किउ जं जोग्गु पुरोहिएण   आयारु[2] कुमग्गणिरोहिएण ।
सुपइट्ठउ मंडवमज्झि जाम   वरु दिट्ठउ सज्जणजणिहिं ताम ।
चउरिइ णिविट्ठु[3] कंदप्पमुत्ति   पासेहि णिवेसिय ता सुपत्ति ।
अग्गइ पयक्खु किउ धूमकेउ   किउ होमु हुणेप्पिणु तिव्वतेउ ।
अमयमइ[4] पाणि कुमरेण गहिउ   सीयारु पमेल्लिउ ताइ अहिउ ।
तहो दिण्ण कण्ण विरइउ विवाहु   सव्वेहिं उच्चरिय साहु साहु ।
णवयारि वि मायरि कण्णसहिउ   णिग्गउ वरु पहु विवाहु कहिउ ।

---

५. B ण्हवियउ तहु. ६. B कुंवरु ७. B फुल्लेहिं हिंडइ.

27. १. B णागुंडिहिं. २. B omits this line. ३. A णिबद्धु. ४. P अमयमइकुमरि पाणेण गहिउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अण्णहिँ वासरि संतुट्ठु राउ विणयहो पणयहो भरणवियकाउ ।
तंबोलवत्थआहारदाणु सव्वहं विरइउ संमाणदाणु ।
जं जासु जोग्गु तं तासु दिण्णु सियजसिण दिसामुहु जाइ भिण्णु ।
परसप्पर णेहु करेवि दोण्णि दिंतहं घणु धण्णु सुवण्णु दोण्णि ।
ण खलेइ चित्तु दोण्णि वि णरिंद णं गिल्लगंड दोण्णि वि गइंद ।
वरु गयउ ताम वइरियदुगेज्झि उज्जेणिणामणयरीहि मज्झि ।
णयरीतवंगि थिउ हरिसजुत्तु णारीयणु पेक्खइ एयचित्तु ।
सलहइ किं रइ किं मयणु एहु जसहरु संपत्तउ मायँगेहु ।
सीसेण णविय पुत्तेण माय अमयमइ देवि तहँ णवइ पाय ।
सुण्हा पेक्खेप्पिणु रूवजुत्त चंदमइ तुट्ठ इहँ चंदवत्त ।
जसहरु परिणेविणु दिव्वभोउ भुंजइ भज्जइ सहुं जणियमोउ ।
चिंतइ जसोहु हउं रायकण्ण परिणाविसमि सयपंच अण्ण ।
जं वासवसेणिं पुव्वि रइउ तं पेक्खिवि गंधव्वेण कईउ ।
परिणाविउ सुललियतणुभुआउ राएण पंच पत्थिवसुआउ ।
गयकाले पइहरि तहिं णिवेण दप्पणयलि मुहु जोवंतिएण ।

घत्ता--ससहरकिरणुज्जलु पिक्खिवि कुंतलु चिंतिउ रइसवत्तिमहणु ॥
दोहग्गहं रासिए महु जरदासिए हा किं किउ केसग्गहणु ॥ २७ ॥

28

तारुण्णि रण्णि दट्ठिं खलेण उग्गिं लग्गिं कालाणलेण ।
सियकेसभारु णं छारु घुलइ थेरहो बल सत्ति व लाल गलइ ।
थेरहो पावि णं पुण्णसिट्ठि वयणाउ पयट्टइ रयणविट्ठि ।
जिह कामिणिगइ तिह मंद दिट्ठि थेरहो लट्ठी वि ण होइ लट्ठी ।
हत्थहो होंती परिगलिवि जाइ किं अण्णविलासिणि पासि ठाइ ।
थेरहो पयाइं ण हु चि क्कमंति जिह कुकइहिं तिह विहडेवि जंति ।
थेरहो करपसरु ण दिट्ठु केम कुत्थियपहु विणिहयगासु जेम ।
थेरहो जरसरिहि तरंगएहिं धोइउ तणुलोणु अहंगएहि ।

५. PB रायगेहु. ६. AB तहो. ७. AB मणि. ८. A कहिउ. ९. PBT अणुहुंजियसिवेण.
28. १. ST अण्णणियंविणि.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता--सत्त वि रज्जंगइं तणुअट्ठंगइं कासु वि भुवणि ण सासयइं ॥
तउ करिवि[२] असंगइं दह धम्मंगइं पालमि पंचमहव्वयइं ॥ २८ ॥

29

इय भणिवि मज्झु किउ पट्टबंधु णं बंधुसहासें णेहबंधु ।
णं दीणहं चामीयरणिबंधु णं परणरणाहहं बाहुबंधु ।
कंदप्पसप्पदप्पावहारि हुउ जणणु परमजिणमग्गचारि ।
मइं मुणिउं करणविज्जुल्लियाइं[१] अप्पउ विज्जाइ पहिल्लियाइं ।
चउवण्णु चारु तइयाइ सिट्ठु दंडिं दंडिउ उद्दंडु दुट्ठु ।
मइं वत्तइं वित्तइं संचियाइं सत्त वि वसणइं आउंचियाइं ।
मइं कोहु लोहु[२] मइं माणु चत्तु कामु वि सेवियउ विणोयमित्तु ।
हरिसंगइं णिरु दूरुज्झियाइं मंतिं परकज्जइं बुज्झियाइं ।
विग्गहु संधाणु सजाणु ठाणु संसउ मणदोहीयरणणाणु ।
सव्वइं पच्चक्खइं महु फुरंति भिच्चउलइं भइयइं थरहरंति ।
जे महु णमंति ते सुहि जियंति जे णट्ठा ते काणणि वसंति ।
खल णडिय भिडिय जे मच्छिच्छियाइं ते सरल तरल तडिसंणिहाइं ।
घत्ता—आहवि दुव्वारए असिवरधारए परमंडलवइ तज्जिय ॥
तेएण[३] फुरंतिं दिसि पसरंतिं पुप्फयंत मइं णिज्जिय ॥ २९ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे जसहररायपट्टबंधो णाम पढमो संधी[४] परिच्छेउ समत्तो ॥ १ ॥

---

२. S चरमि; A चरिवि.

29. १. ST विजइल्लियाइ. २. S मोहु. ३. BT वेएण. ४. ASB omit संधी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

II

नि*त्यं यो हि पदारविन्दयुगलं भक्त्या नमत्यर्हता-
मर्थं चिन्तयति त्रिवर्गकुशलो जैनश्रुतानां भृशम् ।
साधुभ्यश्च चतुर्विधं चतुरधीर्दानं ददाति त्रिधा
स श्रीमानिह भूतले सह सुतैर्नन्नाभिधो नन्दतात् ॥ १ ॥

1

कामालसु रइलालसु पेम्मपरव्वसु मत्तउ ॥
हउं घ[1]रिणिहि वणकरिणिहि वणकरिंदु जिह[2] रत्तउ ॥ ध्रुवकम् ॥

अमयमईए सच्छमईए हंसगईए सुद्धसईए ।
पियपत्तीए मज्झं तीए ।
सिढिल[3]विलासो गरुयपवासो णयण[4]णिमेसो विरहकिलेसो ।
करउं सयज्जं महिवइपुज्जं डज्झउ रज्जं णिवडउ वज्जं ।
अवि य हिरीए रायसिरीए परए पुत्तं गुणगणजुत्तं ।
जयजसधामं जसवइणामं णिवसासणए सीहासणए ।
जय भणिऊणं इह[5] ठविऊणं [6]भूमी दाउं इट्ठं काउं ।
संपिच्छामो तं गच्छामो वड्ढियणेहं कंतागेहं ।
सह णिवसामो सह विलसा[7]मो सह भुंजामो सह कीलामो ।
उज्जलियाए पत्तलियाए सामलियाए कोमलियाए ।
सुह[8]ललियाए पियमहिलाए ।
सह वणवासो वणयरभीसो मह संतोसो लच्छिविलासो ।
तीए रहिओ ण मए महिओ ।
जणभारेणं वावारेणं दुक्खजुएणं सुक्खचुएणं ।
हो पज्जत्तं रमणासत्तं अमलियं[9]वत्तं तरुणीवत्तं ।
जत्थ ण दिट्ठं णियणयणिट्ठं ।

---

*This verse is omitted in S and T.

1. १ S घरघरणिहि. २. T जिम. ३. ST सिढिलासेसो. ४. T णयणणित्रासो. ५. T इय. ६. ST भूमिं ७. T विहसामो; P वियसामो. ८ ST मुह. ९. ST अमलिण.

घत्ता—ता दिणयरु पसारियकरु अत्थहो उप्परि रत्तउ ॥
थिउ दीसइ किं सीसइ अत्थु केण परिचत्तउ ॥ १ ॥

2

अत्थासिउ रत्तउ मित्तु जहिं दिसिणारि वि रज्जइ बप्प तहिं ।
रणवीरु[1] वि सूरु वि किं तवइ बहुपहरिहिं णिहणु जि संभवइ
रवि उग्गु अहोगइणं[2] गमउ णं रत्तउ कंदउ णिक्खियउ ।
तहिं संझावेल्लि वणीसरिय जगमंडवि सा णिरु वित्थरिय ।
तारावलिकुसुमिहिं परियरिय संपुण्णचंदफलभरणविय[3] ।
णं रत्तगोवि छाइय हरिणा सा खद्धी बहल[4]तिमिरकरिणा ।
णं चक्कु तमोहविहंडणउ णं सुरकरिसियमुह[5]मंडणउं ।
णं कित्तिए दाविउ णियमुद्दु णं अमयभवणु जण[6]दिण्णसुहु ।
णं जसु पुंजिउ परमेसरहो णं पंडुर छत्तु सुरेसरहो ।
णं रयणीवहुहि णिलाँ[7]डतिलउ उग्गउ ससि णं सइरिणिविलउ ।

घत्ता—णहयलखले उडुकणवले[8] बारह रासिउ पेच्छइ ॥
ससिलग्गउ अच्छइ मउ तेणं[9] ण अत्थें गच्छइ ॥ २ ॥

3

ससिघडगलिएं जोण्हाखीरिं भुवणं ण्हायं पिव गंभीरिं ।
दीसइ धवलं रुप्पयरइयं णं तुसारहारावलिछइयं ।
ताम विसज्जिय[1]परिवारेणं कंठविलंबियमणिहारेणं ।
कणयलयाजुइ[2]पिंगकरेणं अहयं णवियउ पडिहारेणं ।
विण्णवियउ सुरहरसंकासं गच्छेसु[3] महएवीए णिवासं ।
णरकरदीवयविणिहयतिमिरो ता हं चलिओ णिवडियचमरो ।
कलरवगायणगाइज्जंतो कइवय[4]सेवयसेविज्जंतो ।
जंतो जंतो पत्तो रम्मं मणिमयसिहरं रमणीहम्मं ।

---

2. १. ST रणधीरु. २. T अहोगयणं. ३. ST णमिय. ४. ST बहुल. ५. A मुहसिय. ६. ST जणु. ७. ST णिडाल; A णिलाडि. ८. A चले. ९. T तेणत्थवणु ण गच्छइ.

3. १. ST विवज्जिय. २ T जुय. ३. AST वच्चसु. ४. ST कयवय.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भित्तिचित्तरेहारमणिज्जं वज्जमाणणाणाविहवज्जं ।
पंगणवावीसारससारे कामिणिवीणा[5]रवझंकारे ।
लंबियमोत्तियमालासोहे कुसुमदामरंजियभमरोहे ।
घत्ता—तहिं पेच्छमि किर गच्छमि सुद्धफलिहआविद्धी ॥
पढमुज्जल रयणुज्जल महि णं गयणविसुद्धी ॥ ३ ॥

4

वीय[1]भूमि मोत्तियहिं सुखंचिय णं मालइकुसुमोहिं अंचिय ।
वारि रायसोवाणविसेसिय पउमरायमणि तइय विहूसिय ।
मरगयचारुरयण[2]संसिद्धी भूमि चउत्थी तेयाविद्धी ।
णीलरयणजालेहिं पसाहिय पंचम महि [3]बहुसोहासोहिय ।
विद्दुमजालसिलायलि घट्ठी णं विसयम्मे कय महि छट्ठी ।
जंबूणयकयकीरविसेसिं जहिं ठिय हंस मोर सविसेसिं ।
पउमरायमणिणियरिं [4]बद्धी सत्तम महि कय कम्मविसुद्धी ।
चंदकंतिसिलरयणिहिं धामं[5] अट्ठम महि गहचक्का णामं[6] ।
घत्ता—तहिं मंदिरे अइसुंदरे सत्त वि भूमिउ दिट्ठउ ॥
[7]महु कंपइ मइ पवहिं मइं णं णरएसु पइट्ठउ ॥ ४ ॥

5

संपत्तउ अट्ठमु घरणियलु महु तो वि ण णट्ठउ कम्ममलु ।
हउं पावयम्मु मयणिं णडिउ सव्वंगु घरिणिणेहिं घडिउ ।
सव्वंगु मज्झु रोमंचियउ सव्वंगु सेयसंसिंचियउ ।
सव्वंगु बप्प वेवइ वलइ णं [1]सविससप्पदट्ठउं चलइ ।
पेच्छिवि तहिं पियघरपंगणउं णं लद्धउ मइं आलिंगणउं ।
अद्धद्धदुवारविणिग्गयए भासाकुसलइ सविणयणयए ।
चामीयरदंडयधारियए जयकारिउ हउं पडिहारियए ।
णं फणि पिहियउ णव[2]कमलु सियचीरिं ढंकिउ पाणियलु ।

---

५. AST करवीणा.

4. १. T दुविध. २. ST संसुद्धी. ३. ST वसुसोहें. ४ ST विद्धी. ५. AP धामा. ६. AP णामा. ७. T एवहु जंपइ तणु कंपइ णं णरएसु पइट्ठउ.

5. १. P सविसु सप्पु. २. T णवकमलदलु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हउं तहिं अवलंबमाणु गयउ णउ[3] जाणमि हयदइविं हयउ[4]।
मुहसासवासवासिउ सुरहि आलाउ घाणु सुइसुक्खणिहि।
अच्छिउडहिं पीयउ रूवरसु मुहरसु लद्धउ जीहइ सरसु।
तणु[5]फंसिं देहहो जाय दिहि पियथम पंचिंदियसुक्खणिहि।
दिट्ठी सुंदरि सवडंमुहिय छणवासररयणीयरमुहिय।
घत्ता—आलोयणु[6] संभासणु दाणु संगु वीसासु वि ॥
पियमेलणु रइकीलणु जं महु तं णउ कासु वि ॥ ५ ॥

6

तं मम्मणु सीणिउं[1] सणिउं भणिउं तं गहिरु[2] महुरु मणहरु मणिउं।
तं हावभावविब्भमफुरिउं तं हसिउं रमिउं रइरसभरिउं।
सो मज्झु[3] खीणु ते तुंग थण ते दीह णयण हयमणुयमण।
सो सामवण्णु तं मुद्धमुहुं सुमरंतहो णावइ णिद्दं[4] महुं।
मउलियणयणुल्लउ विंभियउ[5] जामच्छमि कामग्गहिं लियउ।
ता महु भुयपंजरणिग्गमणु किउ पारद्धउ कत्थइ गमणु।
भज्जइ मइं भरिउं सकुंतलिय पयइ वेलइ कहिं संचलिय।
एँवि[6] चिंतिवि हं[7] करवालकरु संजायउ तहि अणुमग्गयरु।
सुपसत्थि णरत्थि अणुज्जयहो गय ढुंठ[9] पासि सा खुज्जयहो।
जं पेच्छिवि णिंदइ सव्वु जणु दवदड्ढथाणुसंकासतणु।
जो दीहदंतदंतुरवयणु कद्दमबुब्बुअसंणिहणयणु।
अइअड्डवियड्डहड्डविसमु णिरु फुट्टपाय कयणयविरमु।
कुप्परसमाणणिम्मंसकडि जो कट्ठु पियामणघरणहडि।
उरु[10] संकडु कढिणट्ठियहियउ[11] पलहत्थियपीढुं[12] व जसु हियउ।
जो विरलकविलकेसुब्भडउ जो परउच्चिट्ठयलंपडउ।
जो परदिण्णउ घाउ वि सहइ जो परपयउच्चोलिउ[13] वहइ।
घत्ता–सो देविए सियसेविए चलण मलिवि उट्ठावियउ ॥
धवलच्छिए णं लच्छिए वेयालउ[14] गउरवियउ ॥ ६ ॥

---

३. S किं. ४. A खालिउ. ५, T तणुफासें. ६. ST अवलोयणु.

6. १. T सणियं सणियं. २. A महुरु गहिरु. ३. S मज्झु खामु. ४. AP णिंद. ५. ST विंभइउ. ६. ST इय; A इउ. ७. AST हउं. ८. T सुपसत्थु णरत्थु. ९. AST पासिदुट्ठ. १०. S उरि ११. S पयउ. १२. ST पिढरु. १३. ST उच्चोलिय. १४. T वेयालउ जिह गउरविउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

7

सो रूसिवि[1] भासइ दिण्णदुहु भूभंगुरभीसणु करिवि मुहुं ।
तुहुं हलि हलि खलि सब्भावचुए किं णागय तुहुं लहु दासिसुए ।
इय गरहिवि सालंकारवह पिसुणेण व ताडिय सुकइकह ।
अच्छोडिय चिहुरभारे धरिवि हय पायपहारें हुंकरिवि ।
ता भणइ देवि पणवेवि पय हउं घरवासेण जि खयहो[2] गय ।
तुहुं देउ भडारउ[3] कुसुमसरु तुहुं सामि महारउ हिययहरु ।
पइं विणु महु छत्तइं चामरइं हे णाह सत्तभोमइं[4] घरइं ।
हरि करि रहवरें विविहासणइं देवंगइं भूसणणिवसणइं ।
पयइं अवरइमि णिवेण सहुं पइं विणु सव्वइं पंजलंति[6] महुं ।
जं विहिणा दुट्ठें तुह ण कय कुलउत्ती तं हउं किं ण मुय[7] ।
जं जिज्जइ[8] पइं विणु दइय दिणु तं दिज्जइ संचियदुरियरिणु ।

घत्ता—जइ जसहरु जमपुरघरु पावइ तो[10] हउं णच्चमि ॥
चरुगासिं महुमासिं सइं कंचाइणि अंचमि[11] ॥ ७ ॥

8

इय जारहो माणु विहंडियउ पुणु[1] गाढु गाढु अवरुंडियउ ।
पुणु पियवयणेहि संमाणियउं अण्णोण्णु तेहिं पुणु माणियउं ।
ता मइं रूसेवि णं विज्जुलिय रणरुहिरपवाहिं विच्छुलिय ।
अरिकरिसिरमोत्तियदंतुरिय करि असिवरलट्ठि समुद्धारिय ।
पहरंतिं णियमणि चिंतियउ मइं आसि जेण परबलु खविउ ।
खग्गेण तेण पुणु परिगणमि तिय मइं काउरिसु वि किह हणमि ।
इय चिंतिवि खमसलिलिं दमिउं णियरोसहुयासणु[2] उवसमिउं ।
गउ चारुचित्तकुट्टोअरए अप्पउ घल्लिउ सयणोअरए ।
सुमरमि तं पणइणिवावरिउ[3] हा एक्कु वि णउ हियवइ धरिउ ।
णउ कुलु णउ सिरि णउ हउं ण सुउ हा देविहि किह मइभंसु हुउ ।

---

7. १. ST रूसवि. २. A खयहुगय; T खवह णय. ३. T भराडउ. ४. ST सत्तभउमइं. ५. ST भडड. ६. T पिय जलंति; S वि जलंति. ७. S मय. ८. ST णिज्जइ. ९. A वरु. १०. ST तो. ११. AST अंचमि.

8. १. T अइगाढु. २. A हुवासणु. ३. T वागरियं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता–साहारहो [४]तरुसाहारहो उवरि चडेविणु लंबइ ॥
कंटयतरु अवरु वि खरु वेल्लिणिहीणु वि चुंबइ ॥ ८ ॥

9

चंदु वि चंडालु वि मणहरिहे   दीसइ पडिबिंबिउ सुरसरिहे ।
जिह बालु मरालु सलीलगइ   तिहं दुमसाहहो कंकु वि रमइ ।
जिह पउमिणि पाएं हय रविण   तिह [१]खालूरेण वि णिच्छविण ।
संझाइ व मेल्लइ रंगु लहुं   घणुलट्ठि व कुडिल गुणेण सहुं ।
विससत्ति व मारणसीलणिय   सिहिधूमोलि व घरमइलणिय ।
जिह णइ तिह तियमइ णीयरय   णारीरूवइ किर के ण [२]हुंय ।

[३]तथा चोक्तम् ।
गोवइयइ पडिवहुसिरु लुणिवि   घित्तउ पइपत्ति खाहि भणिवि ।
णासंतु सो वि छुरियइ हणिवि   दारिउ मारिउ वम्मइं लुणिवि ।
वीरवइए गाढालिंगणउं   दिण्णउं चोरहो [४]मुँहे चुंबणउं ।
णिव्वूढपोढसिंगारयहो   सूलारूढहो अंगारयहो ।
अहरुल्लउ खंडिउ तिं मरिवि   गय गेहि मुहुल्लउ संवरिवि ।
घरु आइवि कूआरउ करिवि   खंडिउ विंबाहरु वज्जरिवि ।
माराविइ किर वरइत्तु सइं   [५]णामेण दत्तु वरवीरवइ ।
ता केण वि पहिएं रक्खियउ   णिसिचारु जेण उवलक्खियउ ।
राणउ पुरयणु संबोहियउ   पुण्णालिहि साहसु साहियउँ[६] ।
णीसेसु वि साहिणाणु कियँउ[७]   [८]णियमित्तहो सगुणु पयासियउ ।
घत्ता–रुहिरावलिछिण्णंगुलि तरुतलि असिपहरुल्लउ ॥
तक्करमुहिं णं जममुहि दिट्ठु असइअहरुल्लउ ॥ ९ ॥

10

णइसंगमि दुट्ठइ वइरिणिए   उवयारविमुक्कइ सइरिणिए ।
उज्झाहिउ देवरइ त्ति मूढु   पंगुलणिमित्तु रत्ताइ छूढु ।

---

४. AST फलसाहारहो.
9. १. T साहारेण. २. T कय. ३. AST omit तथा चोक्तम्. ४. AT मुहुचुंबणउं ५. ST णामिं सुदत्तु.
६. ST add after this line जं दिट्ठउं सयलु वि तहिचरिउ. ७. ST कहिउ. ८. ST omit this line.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हा तियमइ साहसु जं करइ कइवइ वि ण वण्णहुं तं तरइ ।
आवेप्पिणु सुपुरिसियसेयवह णं मुक्किय माणिय विउससह ।
परपुरिसु रमेप्पिणु पाणपिय महु भुयपंजरि पइसरिवि ठिय ।
सा दुट्ठ सविस णं णाइणिय महु मडयहु सा णं साइणिय ।
जह कंडूकंडूअणेण सुहु तिह रइरमणिं पुणु जणइ दुहु ।
तणुसंघट्टणु समु सव्वु जहिं सोक्खहो अवसरु किर कवणु तहिं ।
आहरणभारु देहहो दमणु णच्चणु आहारहो जीरवणु ।
लावण्णु सरीरहो असुइरसु बहुदुक्खहं कारणु णेहवसु ।
गेय[1]हो छलेण विरहिउ रडइ पियसंभासणु वम्मइं[2] खुडइ ।
पेच्छंतहं वड्ढइ कामजरु अवरुंडणु पिंडहं पीडकरु ।
अणुबंधिं तिव्वु पेम्मु तवइ[3] पेम्मिं ईसासिहि संभवइ ।
तिं कामुउ डज्झइ कलय[4]लइ उब्भुब्भउ णं जालहि जलइ ।
तिय मारइ पुणु अप्पुणु मरइ घोरइं संसारइं संसरइ ।

घत्ता–जीवहु परु दुक्कियघरु विच्छिण्णउ वाहाय[5]रु ॥
इंदियसुहु गरुयउ दुहु किह सवइ पंडियणरु ॥ १० ॥

11

माणुससरीरु [1]दुहपोट्टलउ धोयउ धोयउ [2]अइविट्टलउ ।
वासिउ वासिउ णउ सुरहि मलु पोसिउ पोसिउ णउ धरइ बलु ।
तोसिउ तोसिउ णउ अप्पणउ मोसिउ[3] मोसिउ धरभायणउ ।
भूसिउ भूसिउ ण सुहावणउ मंडिउ मंडिउ भीसावणउं ।
वोल्लिउ वोल्लिउ दुक्खावणउं च[4]च्चिउ चच्चिउ चिलिसावणउं ।
मंतिउ मंतिउ मरणहो तसइ दिक्खिउ दिक्खिउ साहुहुं भसइ ।
सिक्खिउ सिक्खिउ वि ण गुणि रमइ दुक्खिउ दुक्खिउ वि ण उवसमइ ।
वारिउ वारिउ वि पाउ करइ पेरिउ पेरिउ वि ण धम्मि चरइ ।
अब्भंगिउ अब्भंगिउ फरिसु रुक्खिउ रुक्खिउ आमई[5]सरिसु ।
मलियउं मलियउं वाएं घुलइ सिंचिउ सिंचिउ पिच्चि जलइ ।

10. १. S गेयच्छलेण. २. T मम्मइं. ३. S हवइ; T वहइ. ४. S कलमलइ. ५. T वाहाकरु.
11. १. ST रुय. २. S णिरु. ३. ST omit this line. ४. ST omit this line. ५. S आमयसरसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोसिउ सोसिउ सिंभि गलइ पच्छिउ पच्छिउ कुड्डहं मिलइ ।
चम्में बद्धु वि कालिं सडइ रक्खिउ रक्खिउ जममुहि पडइ ।

घत्ता–इय माणुसु कयतामसु जाइ मरिवि तंवारहो ॥
तरुणीवसु अम्हारिसु जडु लग्गउ घरँदारहो ॥ ११ ॥

12

पुरुं परियणु मिल्लिवि रायसिरि कल्लइं आसंघमि गहण गिरि ।
पय पाडिय णरफणिसुरवरइं तउ करमि धरमि मुणिवरवयइं ।
इय महु चिंतंतहो अरुणयरु णवपल्लव णं कंकेल्लितरु ।
उग्गमिउ दुमणि जणु रंजियउ सिंदूरपुंजु णं पुंजियउ ।
अरुणायवत्तु णं णहसिरिहि णं चूडारयणु उदयगिरिहि ।
लोहियलुद्धें जगु फाडियउ णं कालिं चक्कु भमाडियउ ।
कुंकुमपिंडु व दिसिकामिणिहिं रत्तुप्पलु संझापोमिणिहिं ।
ता जयमंगलतूरहं रवेहिं पडिवुद्धउ फंफावयसरेहिं ।
कयकायसुद्धि मइं तक्खणेण ढोइयउ पसाहणु परियणेण ।
तहिं अवसरि मइं चिंतिउ मणेण किं रज्जें किं महु भूसणेण ।
जो अंगराउ सो मयणमूलु तहो फलु मइं रयणिहिं दिट्ठु सयलु ।
अहवा जइ मइं आहरण चत्त ता जणहं मज्झि वित्थरइ वत्त ।
किं अंतेउरु अमणोज्जु जाउ अइदुम्मणु दीसइ जेण राउ ।
जे महु सण्णा विउस के वि परचित्तुवलक्खहिं सयलु ते वि ।
पउ मण्णिवि मइं किउ अंगराउ णं अंगि विलग्गउ दुहणिहाउ ।
जइ कह व देवि इह वत्त सुणइ सइं मरइ मइं वि तक्खणि हणइ ।
जाणियइ सुहासुहु सयलु राय जीविय मरणु वि अरिदिण्णघाय ।
लाहालाहु वि जं मुट्ठिगहिउ णट्ठउ पवसिउ विसुहिउ दुहिउ ।
जाणंति जोइ जे विउलबुद्धि जहुं हत्थगिज्झ ठिय सयल सिद्धि ।
इय पत्तिउ णार्णिं मुणंति जे वि तियचित्तइं णउ जाणंति ते वि ।

---

६. S कोट्टहो. ७. S घरवारहो.

12. १. S पुरपरियणु. २. T उग्गउ उडुमणि. ३. A संझापोमणिहि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—करि बज्झइ हरि रुज्झइ संगरि परबलु जिप्पइ ॥
कुकलत्तहि अण्णासत्तहि चित्तु ण केण वि घिप्पइ ॥ १२ ॥

13

अत्थाणभूमिगउ मणि विसण्णु कणयमयरयणविट्ठरि णिसण्णु ।
दोवासइं चमरइं महु पडंति बहुदुक्खसहासइं णं घडंति ।
सहमंडवि खुज्जयवावणाइं णच्चंतइं णिरु कोड्डावणाइं ।
वीणावंसइं गेयइं झुणंति वेयालिय फंफावय थुणंति ।
पयाइं जइ वि णिरु सुहयराइं महु पुणु सुविरत्तहो दुहयराइं ।
पोत्थयवायणु आढत्तु सरसु मणसवणहं जं जाणि जणइ हरिसु ।
तहिं अवसरिं पडिहारिं वरेण कणयमयदंडमंडियकरेण ।
पइसारिय भड सामंत मंति अणवरय भमइ जागि जाहं कित्ति ।
पयजुयलु णविउ महु णरवरेहिं मउडग्गकोडिचुंबियधरेहिं ।
अवलोइय णरवइ मइं णवंत पडियावयाइं णावइ कुमित्त ।
गोविट्ठिणिविट्ठ णरिंद सव्व णिविडत्थवंत णं सुकइकव्व ।
ताँ जणणि महारी ढुक तहिं सीहासणि हउं आसीणु जहिं ।
तवचरणउवाउ चित्ति धरिउ मइं मिच्छासिविणउ वज्जरिउ ।
सीसेण चिहुरणीलिं णविय मइं माई महारी विण्णविय ।
हउं अज्जु माइ णिसि पीणभुउ सिविणइं सउहयलहो झत्ति चुउ ।
ता दिट्ठु जोहु दाढाकरालु दंडयकरु णं पच्चक्खकालु ।
दुद्दरिसणु भीसणु दुण्णिरिक्खु रत्तुप्पलदलसारिच्छचक्खु ।
सो भणइ अम्मि लहु लेहि दिक्ख जिणणाहहो केरी परमसिक्ख ।
णं तो सपरिग्गहु खामि अज्जु कहो तणिय पुहवि कहो तणउं रज्जु ।
मइं तुंडु वि मुंडु वि मुंडियउ दूसहु इंदियबलु दंडियउ ।

घत्ता—सुउ जसमइ णिच्चलमइ ठविवि रज्जि तं किज्जइ ॥
णिसि दिट्ठउ णिकिट्ठउ सउंणु माइ मंण्णिज्जइ ॥ १३ ॥

---

13. १. ST सीह. २. ST पप्फावय. ३. ST णिवसुहयराइं. ४. S मणिकणय. ५. T बहु. ६. S सुणइ कव्व T सुकयकव्व. ७. S ता अम्माएवी पढुक्क तहिं. ८. A माय. ९. T सिविणु. १०. ST माणिज्जइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14

तं णिसुणिवि [1]भासिउ जणणियए अण्णो[2]णइ मुणिगुणहणणियए ।
कुलदेविहि आसाऊरियहे चिंतवियमणोरह[3]गारियहे ।
बहुभेय जीव दिज्जंति बलि पसमिज्जइ दुक्ख किलेस कलि ।
तुह संति होउ महु णंदणहो सज्जणमणणयणाणंदणहो ।
हियउल्लउ करुणिं कंपियउ तं णिसुणिवि मइं पडिजंपियउं ।
पाणिवहु भडारिए अप्पवहु किं किज्जइ सो दुक्कियणिवहु ।
[4]कहिं चुक्कइ माणउ पसु हणिवि पावेण पाउ खज्जइ खणिवि ।
जं चिंतिज्जइ विप्पिउ परहो तं पइ खणद्धि णियघरहो ।
मारउ परु [5]मारिउ पुणु मरइ कहिं विग्घमहाणइ उत्तरइ ।
घत्ता—इहलोयहो परलोयहो जीवहिंस भयगारी ॥
दुणिरिक्खए आउक्खए किं किर करइ भडारी ॥ १४ ॥

15

किं णत्थि चरुउ किं मेसउलु किं णत्थि देउ किं देवउलु ।
किं णत्थि मज्जु भक्खु वि [1]सरसु किं जणु ण जाउ सिवसत्थवसु ।
किं चिरणर सयल वि खयहो गय किं तेहिं ण जोइणिपुज्ज कय ।
किं होइ हिंस जगि संतियरि सिलणावइ मूढ तरंति सरि ।
जं मुणिगणणा[2]हहिं पिसुणियउ तं कहमि माइ पइं [3]ण सुणियउ ।
परमत्थु अहिंसाधम्मु जए मारिज्जइ जीउ ण जीवकए ।
तं णिसुणिवि अम्मइ बोल्लियउ जिणवयणु णिसुंभिवि घल्लियउ ।
जगि वे[4]उ मूलु धम्मंधिवहो वेएण मग्गु भासिउ णिवहो ।
तं किज्जइ वेएं महिउ पसुमारणु परम[5]धम्मु कहिउ ।
घत्ता—पसु हम्मइ पलु जिम्मइ सग्गहो मोक्खहो गम्मइ ॥
जिह दियगुरु तिह कुलगुरु चवइ एम [6]पवित्तलमइ ॥ १५ ॥

16

इय मुणिवि पसु हणिवि करि संति तुह कंति ।
तुह तुट्ठि तुह पुट्ठि जयलच्छि धवलच्छि ।

---

14. १. AST जंपिउ. २. ST णिण्णाणइ. ३. ST पूरियहे. ४. T किं. ५. T मारइ; A मारिवि.
15. १ T सरिसु. २. ST णाइहिं. ३. T णिसुणियउ. ४. A वेय. ५. ST परमपुण्णु. ६. T पविमलमइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उरि वसउ रिउ तसउ कम णमउ जसु भमउ ।
महिवलइ पविउलइ ।
तं सुणिवि सिरु धुणिवि मणि मुणिउं मइं भणिउं ।
अहो जणणि घरिसमणि पइं उत्तउं ण वि जुत्तउं ।
हिंसाहिवत्तार कत्तार णेयार मायार सोयार सूणार ते घोर ।
मलहेउ जो वेउ सो खग्गु णिसियग्गु जे धिट्ठ णिक्किट्ठ दप्पिट्ठ पाविट्ठ ।
बंधंति रुंधंति हिंसंति धंसंति भयउलइं मयउलइं भक्खंति चक्खंति ।
जंगलइं महुजलइं
घुम्मंति णच्चंति वायंति गायंति सरयम्मि णरयम्मि ते होंति दीसंति ।

घत्ता—रयणप्पहि सक्करपहि वालुयपहि पंकप्पहि ॥
धूमप्पहि पुणु तमपहि होंति पुणु वि तमतमपहि ॥ १६ ॥

17

वाहिल्ल ते भिल्ल ते मूअ ते लल्ल ते पंगु ते कुंट बहिरंध ते मंठ ।
ते काण काणीण धणहीण ते दीण दुहरीण बलखीण ।
णिक्काम णिद्धाम णिच्छाम णिण्णाम णित्तेय णिप्पाण चंडाल ते पाण ।
ते डोंब कल्लाल मच्छंधिणीवाल दाढाल ते कोल ते सीहसद्दूल ।
ते सिंगि वियराल ते णहरपहराल ते पक्खि पिंछाल ।
ते सप्प रत्तच्छ मंसासिणो मच्छ छिंदणइं रुंधणइं बंधणइं वंचणइं ।
लुंचणइं खंचणइं कुंचणइं लुट्टणइं कुट्टणइं घट्टणइं वट्टणइं ।
पउलणइं पीलणइं हूलणइं चालणइं तलणाइं दणलाइं मलणाइं गिलणाइं ।
तिरिएसु णरएसु मणुएसु रुक्खेसु दुक्खाइं भुंजंति सग्गं कहं जंति ।

घत्ता-पसुणासइ जहिं हिंसइ परमधम्मु उप्पजइ ॥
ता बहुगुणि मेल्लिवि मुणि पारद्धिउ पणविज्जइ ॥ १७ ॥

---

16. 1. PST omit this line.

17. 1. ST arrange the wording of this line and the following in a different way
२. ST जइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

18

मंतिं हुणउं खग्गिं लुणउं दिसिबलि कुणउं हुअवहि हुणउं ।
पियरहं ठवउं देवहं थिवउं कासायपडु लइ धरउ जडु ।
रत्तउ अंबरु चीवरु पवरु पक्खालियउ उद्धूलियउ ।
दप्पुब्भडउ चप्पेउ जडउ अप्पउ दमउ णग्गउ भमउ ।
मुंडउ ससिरु आमिसगसिरु लोहियगसिरु गुरुयणभसिरु ।
सेवउ वणइं आयावणइं चंदायणइं सुद्धोयणइं फलभोयणइं अत्तावणइं ।
उद्धरउ वउ चिरु चरउ तउ हयमरणभय जो जीवदय ।
ण करइ कुमणु सो देउ घणु मणि आहरणु गोउल भवणु ।
दुब्भविं भमइ तहु णत्थि गइ ।

घत्ता—इय संतिं भयवंतिं अरहंतिं णउ ईरिउ ॥
ण करंतिं मयवंतिं जेण जीउ संघारिउ ॥ १८ ॥

19

सो जम्मि जम्मि बहुरोयहरु सो जम्मि जम्मि भूभारु णरु ।
सो जम्मि जम्मि अणुहवइ दुहु सो जम्मि जम्मि कहिं लहइ सुहु ।
महु जीवियव्वु धुउ अम्मि जइ मारिज्जइ जीउ ण जीव तइ ।
ता मइं असि कड्ढिवि णिययसिरि लाइउ वरकुंडलमउडधरि ।
महु जणणिए हाहाकारु किउ पासत्थिहिं णरवरेहि धरिउ ।
ता थेरिए पयवडियइ लविउ मइं पुत्त असच्चउ सच्चविउ ।
जइ जीउ ण देहिं सचेयणउ ता दिज्जउ अवरु अचेयणउ ।
जो पहरिउ ण मुणइ वेयणउं तो हउं ठिउ मउलियलोयणउ ।
अम्माएविए गंग्गिरगिरए जं भासिउ दिट्ठपरंपरए ।
तं जइ वि अहम्मु तो वि करमि पडिसिविणमिसिं पुणु वउ धरमि ।

घत्ता—अम्हारउ लिप्पारउ विहसिवि अम्मइं भाणिउ ॥
तिं कुक्कुडु वण्णुक्कडु पिट्ठिं णिम्मिवि आणिउ ॥ १९ ॥

---

18. १. ST हणउं. २. T चंपउ. ३. ST omit this line. ४. T मइमत्तें.
19. १. T ण जीवकए; ण अण्णु तए. २. S हाहारउ. ३. S सो. ४. ST पयगयासिरए. ५. A वउ उद्धरिसि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

20

सो सरइ व फुरइ व उड्डइ व सो वलइ व चलइ वड्ढइ व ।
सो सज्जीउ व दइविं घडिउ महु तणियहिं दिट्ठिहिं आवडिउ ।
सो पडहहिं संखहिं मद्दलिहिं वज्जंतिहिं टिंविलिहि[1] काहलिहिं ।
णाणातरुकुसुमसमच्चियउ दहिवंदणचंदणचंच्चियउ[2] ।
सो परिवारेइ[3] विणिवेइयउ कुलदेविहि अग्गइ घाइयउ ।
मायइ कुंकुमजलु घत्तियउ तं रत्तु गलंतु विचिंतियउ[4] ।
पिट्ठु वि जंगलु मण्णिवि गसिउ संपुण्णु अपुण्णु समब्भसिउ ।
जिह वंभणव्वउ[5] महु वज्जरिवि ढिड्ढिसु गिलंति पलु संभरिवि ।
पवियप्पिउ किं ण होइ सहलु तिह अम्हह जायउ पावमलु ।
घत्ताः--पुणु जोइणि भयदाइणि मइं पणविय सब्भाविं ॥
पइं दिट्ठइं संतुट्ठइं जणु मुच्चइ संताविं ॥ २० ॥

21

जंघाबलु दढयरु[1] बाहुबलु महु देहि देवि जीविउ अचलुं[2] ।
दुत्तरि कंतारि विहुरि घरहि परिरक्ख सुरेसरि महु करहि ।
इय देविहि हउं पइट्ठु सरणु णउ[3] जाणमि आसण्णउं मरणु ।
घरु[4] जाइवि सिरिकलसेहिं[5] ण्हविउ णियणंदणु रज्जि परिट्ठविउ ।
अप्पुणु किर वणवासहु चलिउ तउ करहुं[6] णवर दइवें खलिउ ।
पियतणयहो रज्जु समप्पियउ कंतइ णियकज्जु[7] वियप्पियउ ।
जं मइं जारिं सहुं कीलियउ तं रयणिहि पण णिहालियउ ।
इयरह कह कंखइ तवयरणु सामंतमंतिमहिपरिहरणु ।
णिच्छउ मइं एउ परिक्खियउ तणुलिंगिं मणु उवलक्खियउ ।
घत्ता--सुदलिल्लिं जिह फुल्लिं फलु होही जाणिज्जइ ॥
अविहंगिं तणुलिंगिं तिह परहियउं[8] मुणिज्जइ ॥ २१ ॥

20, १. T तिविलहिं॰ २. S अच्चियउ॰ ३. S reads दोहिं वि भावें परिवारियउ. ४. T पिच्छियउ. ५ S वंभणाघिउ; T वंभणघिय; A वंभणघउ.

21, १. T दियवलु. २. T सबलु. ३. S णवि. ४. T घरि. ५. T हउं कलसिहि॰ ६ S चरहुं; T करिमि. ७. T कम्मु . ८. AST परि हियउ.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

22

जइ पुण रिसित्तु ण परिग्गहइ तो वसुहाहिउ मइं णिग्गहइ ।
इय चिंतिवि हउं पिर्म्मि तविउ [1]पयवडियइ देविए विण्णविउ ।
मइं तुज्झु सुमंगलु चिंतियउ अंतेउरु पुरु आमंतियउ ।
भो अज्जु भोज्जु देवायरिउ भुंजिवि जोइणिभुत्तुव्वरिउ ।
सुविहाणइं धम्में लइयाइं होसहिं विण्णि वि पव्वइयाइं ।
पइं विणु हउं जीविउ [2]णउ धरमि [3]परमेसर पइं सहुं तउ चरमि ।
जिम कामहो रइ सुरवरहो सइ जिह परममुणिंदहो सुद्धमइ ।
सिरि हरिहि सीय रहुवइहि जिह हउं अणुगामिणि पिय तुज्झु तिह ।
घत्ता--तवचरणु वि जमकरणु वि पइं सहुं मरणु वि भावइ ।
[4]पिय पइं विणु महु जोव्वणु जणु अंगुलियइ दावइ ॥ २२ ॥

23

[1]परपुरिसु रमिवि रइविब्भलए जं रयणिहि दुक्किउ किउ खलए ।
तं मइं सिविणयसमाणु गणिउं मोहंधिं तं कलत्तु भणिउं ।
उट्ठु देवि [2]अइरुइरहिउ किं पणयभंगु मइं तुह विहिउ ।
ता उट्ठिय सुंदरि चंदमुहि कित्तिमु हसंति रंजंति सुहि ।
[3]सोयारवयणविहि णंदियउ ता हउं बंदियणहिं वंदियउ ।
णियकयकम्मेण व पेल्लियउ जणणिइ समउं तहिं चल्लियउ ।
जहिं पंचवण्ण मरुहयधयउ महएविणिकेयहु तहिं गयउ ।
उवविट्ठउ पडपिहियासणइ मणिकिरणजालभाभूसणइ ।
परियलु वित्थारिउ कणयमउ [4]णं उग्गमिउ णवदिणयरउ ।
कच्चोल थाल सोहंति किह गयणयलवडिय णक्खत्त जिह ।
[5]जेवणवेलइ महमहइ सह बहुरसरसोइ णं सुकइकह ।
घत्ता—अइकोमलु सरलामलु धवलु कूरु किह सीसइ ॥
तं भोयणु गुणमोयणु पिसुणसमाणउं दीसइ ॥ २३ ॥

---

22. १. T पइवाडियइ; A पयवडिइ. २. S किम. ३. ST पइं सहुं परमेसर. ४. S प्रिय.

23. १. S परपुरिसरइपरइ; T परपुरिसरायरइ. २. ST अइरइरहिउ. ३. S सूयार. ४. S णउ. ५. T जेमण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24

दोफालियाइ हउं फालियउ णं वट्टमि जमपुरचालियउ ।
दालिइ णवकंचणवण्णियइ ताडिउ णं विरइयकण्णियइ ।
डड्ढउ चोप्पडु पुणु मइं डहइ णं दुट्ठघरिणिसंगमु वहइ ।
पुणु मंडय ढोइय मंडलिय मारंति वँ मइं परमंडलिय ।
पुणु दिण्णइं तिक्खइं तिम्मणइं णावइ मुक्कइं रिउपहरणइं ।
पुणु लड्डुय सँविस विइण्ण किह मडु णिहणणसीलउ भिच्च जिह ।
पडिसवणु ण कासु वि दिंतियए बोल्लिउ देविइ विहसंतियए ।
मोयय महु मायइ पट्ठविय मइं तुम्हहं णिरु विणएं ठविय ।
णउ कंतहि वयणु अइक्कमिउं अम्हइं मायासुपहिं समिउं ।
तं सविसु भोज्जु दोहिं मि जिमिउं अंगउं विसवेएं परिभमिउं ।
णिवडंतहिं विज्जु विज्जु चविउ भज्जए हा णाह णाह लविउ ।

घत्ता—घरपडियए उँरि चडियए केसभारु वित्थारिउ ॥
हउं कोमले गलकंदले दंतिहिं पीलिवि मारिउ ॥ २४ ॥

25

जो सइरिणिवयणहिं पत्तियइ सो माणउ मइं जिह किह जियइ ।
सुय झत्ति वत्त महु णंदणिण सज्जणमणणयणाणंदणिण ।
णिवडिउ महिमंडलि थरहरंतु णं वज्जणिहाएं गिरि महंतु ।
उम्मुच्छिउ धाहावंतु राउ हा पइं विणु जगु अंधारु जाउ ।
सोयणइं लग्गु हा ताय ताय पइं विणु महुँ भग्गी छत्तँछाय ।
पइं विणु सुण्णउं घरवीढु जाउ एवहिं को सामि अवंतिराउ ।
विणु ताएं रज्जहो पडउ वज्जु विणु ताएं महु ण सुहाइ रज्जु ।
बालि किउ महु रज्जु दुहोहखाणि जं झत्ति परत्तहो करइ हाणि ।

---

24. १. ST read this line after the next. २. AS दड्ढउ. ३. T वम्मइं. ४. AS सविस य दिण्ण. ५. AST पणएं. ६. S वरि; T परि. ७. S उप्परिचडियए; T उप्परिपडियए. ८. S पीडिवि; T चंपिवि.

25. १. ST जगि. २. T विलवणह. ३. A भग्गी महुं. ४. T बप्प छाय. ५. ST घरवट्ट; A घरपीढु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंतिहिं पडिवोहिउ घरणिणाहु मेल्लंतु सदुक्खउ अंसुवाहु ।
संसारि असारइ जेत्तियाइं वोलीणइं अक्खमि केत्तियाइं ।
णल णहुस वेणुँ मंधायँ होंत ते वि महियले कालवसिं समत्त ।
इह णरवइ होंतउ जगि पसिद्धु अइबलु वि महाबलु कालि खद्धु ।
आलेहिवि जो मारंतु वेणु कालाणलि दड्ढउ जेम वेणु ।
हरि हलहर कुलयर चक्कणाह ते कालिं कवलिय बलसणाह ।
इय जाणिवि किज्जइ सोउ केव संसारहो पहावत्थ देव ।
तं णिसुणिवि उच्छाइयइं बे वि पडुपडहसंखकाहलइं देवि ।
उब्भियचंदो वा केलिदंड विच्छाय जाय बंधवइ तुंड ।

घत्ता—विवर्णस्मणु पहु दुस्मणु वारवार मुंच्छिज्जइ[10] ॥
मणि तप्पइ पुणु जंपइ तापं विणु किंहँ[11] जिज्जइ ॥ २५ ॥

26

उद्धंतपडंतइं णिग्गयाइं अंतेउराइं दुहवसगयाइं ।
रायहो पच्छइ गच्छंति केम छंणयंदहो[1] ताराणियरु जेम ।
रसंवरधारिणि[2] जुवइ काइ णं सूरहो पच्छइ संझ जाइ ।
वहुयाउ मुयउ सहुं राणएण पयपालणधम्मवियाणएण ।
काहिं मि लइयउ तवचरणु घोरु परिसेसिवि कंकणु हारु डोरु ।
अमयमइ ण णिग्गय कलुसभाव खुज्जय आसत्ती दुट्ठ पाव ।
कयउद्धहत्थणारीणरेहिं धाहाविउ बहुदुक्खाउरेहिं ।
अण्णत्तहिं वेलपडिच्छिपहिं छिण्णइं सीसइं कयणिच्छपहिं ।
केण वि णवखंडइं कियउ देहु सुमरेप्पिणु सामिहि[3] तणउं णेहु ।
कु वि विच्चि[4] विलग्गउ गुणमहंतु असिधेणुयाइ उयरइं[5] हणंतु ।
कि वि कुंतहिं हिंदोलंति वीर कि वि अप्पउ हुयवहि हुणहिं[6] धीर ।
महयालहो दाहिण मुत्ति णेवि संकाराविययइं सुपण वे वि ।

---

६. ST सयर. ७. A जेवि महि भुंजिवि अवरइं गयइं तेवि. ८. ST पयापालु. ९, S विमणम्मणु. १०. ST मोहिज्जइ
११. ST किं किज्जइ.

26. १. ST बीयंदहो; A छणइंद. २. ST read this line before रायहो...जेम. ३. T सामियतणउं
४. ST ाचीच्चि (note: चितायां) ५ A उरयलु. ६. A कुणइ धार.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कयसंसयारसेसाइं लेवि खित्तइं सुरसरि अट्ठियइं णेवि ।
महु णामिं दिण्णइं गोहणाइं महुं तणएं अइणिद्दसोहणाइं ।
दिण्णइं अंगहारइं कंचणाइं वरचेलइं लण्हइं अइघणाइं ।
दिण्णइं धयछत्तइं भूसणाइं दियवरहं लिहाइवि सासणाइं ।
रोरत्तणु रोरहं हरहिं जाइं महु णामिं दिण्ण सुवण्ण ताइं ।
जच्चंधहं अंधहं भुक्खियाहं घणघण्णइं दिण्णइं दुक्खियाहं ।
गोसुयहं विवाहइं कयइं तेण णरवइ महु णामिं महु सुएण ।
तो वि लद्धु ण उत्तमु मणुयजम्मु बलवंतउं जीवहं राय कम्मु ।

घत्ता—संसारए अइघोरए हिंडहिं विसयासत्तइं ॥
जीवइं णउ पावहिं जाम ण भावहिं दंसणणाणचरित्तइं ॥ २६ ॥

27

सीयल्लवेल्लितरुवरगहणि हिमवंतहो दाहिणगिरिगहणि ।
जहिं वग्घसीहगयगंडयाइं मयदुग्गहकरिभल्लूसयाइं ।
संवरवेउल्लइं रोहियाइं एणइं जहिं पुलिंहिं छोहियाइं ।
जहिं संचरंति बहुमुग्गसाइं गत्ताइं जाहं णिरु घुग्घुसाइं ।
जहिं परडा कोकंता भमंति झिल्लिरि खचेलइं गुमुगुमंति ।
जहिं भिल्लपुलिंदइं णाहलाइं वीणंतइं तरुवेल्लीहलाइं ।
जहिं कुक्करंति साहामयाइं झुल्लंतइं तरुसाहागयाइं ।
उड्डुणसीला तंबोललग्ग जहिं हरि खज्जंता कहिं मि भग्ग ।
जहिं घुरहुरंत दाढाकराल सूलच्छहिं सहुं जुज्झंति कोल ।
कंदुल्लगहर गइब्भु जेत्थु हरिछुल्लिहिं जहिं दूसियउ पंथु ।

७. ST धित्तइं ८. S हे णरवइ. ९. S अंगहारइं T अंगहारइं. १०. P adds before this line in second hand: सीयलवल्लीतरुवरघणाइं दिण्णइं विउलइं णंदणवणाइं. ११. S छत्तइं हरिभूसणाइं. १२. S कणधणाइं.

27. ST read this line as हिमवंतहो दाहिणि गिरिगहणे (T दाहिणगिरिसिहरे गहणे) अवइण्णु मऊरिहि गब्भि खणे. २. S omits मयदुग्गह...रोहियाइं. ३, S छेप्पाइं; T छित्ताइं. ४. S मुग्गससरढा परिभमंति; T महिसा सरढा. ५. T फुक्करंति. ६. S adds before this line: जहिं आरइं घोरइं बुक्करंति घोरप्पड दीवड संचरंति । उड्डुणमयदुंगइं णिरु भल्लयसयाइं संवरवेउल्लुइं रोहियाइं. ७. S कुंदुल्लगहिरु; A कंदुल्लगुहिर. ८. T वासियउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचाससहिं थूणइं दारियाइं जहिं भिल्लिहिं हरिणइं मारियाइं ।
जहिं गहिरइं घारइं परिभमंति णिरु वायडउल चुमुचुमंति ।
जहिं वेल्लिहिं वेढिय तरुवराइं णं कीलहिं अवरुंडणपराइं ।

घत्ता—तहिं काणणि तरुवरघणि असुहकम्मपरियम्मि ॥
बरिहंणकुलि[1] दुहसंकुलि आणिवि घित्तु कुकम्मि ॥ २७ ॥

28

अइ[1]दारुणभीसणवण[2]गहणि अवइण्णु मऊरिहि गब्भि खणि ।
उयरग्गि[3] दड्ढउ बप्प किह खलवयणिहिं सज्जणु पुरिसु जिह ।
तहिं दुक्खहिं पत्तउ कहमि केम तत्तइ कडाहि णारइउ जेम ।
छुडु उयरहो[4] हुंतउ णीसरिउ छुडु पक्खिणिपक्खवाउ धरिउ ।
कंटयतरुखरसक्कर[5]खरहे छुडु पाउ ण देमि देमि धरहे ।
काणणि विसदंसहं हउं डरमि छुडु मायइ परिरक्खिउ चरमि ।
छुडु किमिउलु चंचुइ चूरियउ पोट्टुल्लउ[6] छुडु मइं पूरियउ ।
कीलंती विणिहय[7] वणभमिणि ता वाहिं मारिय महु जणणि ।
सा लइय णिबंधिवि चेल्लियहिं[8] हउं पुणु घल्लियउ उच्चोलियहिं[9] ।
लइ रडइ मोरु पारद्धियहो किं पूसइ मासालुद्धियहो ।
घत्ता—तहिं गिम्हइ देहुण्हइं[10] हउं संताविउ जेहउ[11] ॥
वापसरि परमेसरि वण्णहुं तरइ ण तेहउ[12] ॥ २८ ॥

29

आणिय गामहो छुडु णिट्ठविय[1] मायरि तलवरहो परिट्ठविय ।
विणिवारियमंदिरमंजरए हउं आणिवि घित्तउ पंजरए ।
हियउल्लउ दुक्खें सल्लियउ ता वणयरघरिणिए बोल्लियउ ।

---

१. A बरहिणकुलि.

28. १ S इय. २. S वणगहणि. ३. T omits this line. ४ S जढरहं. ५ A कक्कर. ६ S पेट्टलउ; T पेट्टुल्लउ; A पुट्टल्लउ ७. ST विणिहय; A बरहिणि. ८. T वेल्लियए. ९. ST उच्चेलियहे. १०. ST देहुम्हइ. ११. S केहउ. १२. S जेहउ.

29. १. S अवट्ठाविय; T पट्ठविय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मइु छुहइ कलेवरु थरहरइ सिसुमोरिं कवलु वि णउ भरइ ।
डिंभाइं काइं खाहिंति तणु तुहुं किं खापसहि भिल्ल भणु ।
पइं गरुय मोरि दिण्णी परहो हो जाहि समेर[2] मावहि घरहो ।
णिसुणिवि णियकंतहि वयणगइ सहसत्ति चिलायहो जाय मइ ।
णिउ हउं वग्गुरियइ विक्किणिउं सत्तु व पत्थें तेण जि किणिउं ।
आर[3]क्खिएण णउ भक्खियउ घोरहं मज्जारहं रक्खियउ ।

घत्ता--तलवरघरि हंसु व सरि हउं[4] सुच्छायउ जायउ ॥
कणु भुंजमि जणु रंजमि सुमहुरमुक्कणिणायउ ॥ २९ ॥

30

जीवाहारें परिवड्ढियउ पावें सहुं देहु वि वड्ढियउ ।
महु जायउ पिंछकलाउ किह वरपंचवण्ण मणिमाल जिह ।
अवलोइवि मेरी रूवसिरि तलवरु पभणइ उज्जेणिपुरि ।
जायवि इंहु[1] ढोयमि जसवइहि जसहरतणयहो कीला[2]रइहि ।
ता पत्तु[3]हिं महु पियपत्तियहे महुमहपयपंकयभत्तियहे ।
दियखद्धसेसमासासणिहे मुक्कग्गहारदियसासणहे ।
अणवरयइं पुज्जियदेवयहे बलिदिण्णछिं[5]ण्णमिंढय[6]सयहे ।
गंगासरिसलिलपवित्तियहि सीसें[7]ण णवियगहसोत्तियहि ।
अयहरिणधवियपियरुल्लियहिं णिंदियमुणिवरचरणुल्लियहि ।

घत्ता—उज्जेणिहिं सुहजोणिहिं विसरसमुच्छियकायहि ॥
मंदमइहे चंदमइहे गयउ जीउ महु मायहि ॥ ३० ॥

31

बलवंतहि पवणजउद्धरिहि सा केण वि कम्में कुक्कुरिहि ।
चलकुडिलकुलिसकक्कसणहरु हरिणयणुग्गामियकरपस[1]रु ।

---

२ ST सवर. ३ T आरण्णिएण. ४. T हंसच्छायउ (हं सच्छायउ;) S हउं सच्छायउ.

30. १. ST इह. २ AST कीलणरइहि. ३. A एत्तहु. ४ S omits मुक्कग्गहार…देवयहे. ५ A छेल. ६. ST समुहे. ७ T omits सीसेण णविय…पियरुल्लियहे.

31. १. ST पहरु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिर वलइ य चलवालहि चवलु दीहररोमावलिजडिलगलु ।
उरि गरुयउ पच्छइ वित्थरिउ णं विहिणा मज्झि मुट्ठि धरिउ ।
पिंगलविलोलभासुरणयणु बहुसूअरकुलघंघलवयणु ।
जमपुरकरवत्तदंतडसणु हूई करहाडणयरि भसणु ।
राणी वि पवण्णी सुणहं भउ परु किं पि ण मण्णइ लच्छिलउ ।
सो आणिउ पाहुडु जसवइहे जिहँ तिह हउं मि पावमइहे ।
बिण्णि वि एक्कहि दिणि दरिसियइं महु सुयहु सुअंगइं हरिसियइं ।
हत्थें परमत्थें जोइयइं पुणु दो वि तेण पोमाइयइं ।

घत्ता—णिउणउ विहि एहउ सिहि किह विरइउ मणरावउ ॥
कमलच्छिहि वणलच्छिहि णावइ केसकलावउ ॥ ३१ ॥

32

भलु वि भॅल्लउ महु आवडइ कंचाइणिसीहहु अब्भिडइ ।
एहु वाँउवेउ हरिणु वि छिवइ वेएं धावेप्पिणु मुहुं घिवइ ।
एयहो हरिकिडि वि ण उव्वरइ किं अण्णु को वि अग्गइ सरइ ।
हउं घरमंडणु पवियप्पियउ सोणइयहो सो वि समप्पियउ ।
तिं सो अकंडमचुं गलए बद्धउ चामीयरसंखलए ।
हउं पुणु हिंडँमि घरपंगणइ खेल्लमि उड्डमि गयणंगणइ ।
ता एक्कहि दिणि उड्डं गएण सउँहयलसिंगि रंगंतएण ।
दिट्ठउ जलहरु गज्जंतु किह गिंभारिहि रुट्ठउ सुहडु जिह ।
दिट्ठउ सुरचाउ पीउँ हरिउ णं णहमंदिरि तोरणु धँरिउ ।

घत्ता—विज्जुलियए कंचुलियए भूसियदेहए सुरधणु ॥
घणमालए णं बालए किउ विचित्तु उप्परियणु ॥ ३२ ॥

---

२. S मुट्ठिमज्झि; T मज्झु मुट्ठिधरिउ. ३. ST जिह तिह णिव हउं वि; A जिह सो तिह हउं मि. ४ ST परिमहइं.

32. १. ST महु भल्लउ. २ ST वाउदेव. ३ ST घरासिहरइ पंगणइ. ४. S सियसउहसिंगि; T सियसउ. हयलसिरि; A सउहयलसिहरि. ५. T पीयहरिउ: ६. S भरिउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

33

पाउसु णिएवि रोमंचियउ हउं परमाणंदिं णच्चियउ ।
पुणु रुण्णउं मइं थोरंसुयहिं णं जम्मासुहसुमरणचुयहिं ।
पुणु दिट्ठउ खुज्जउ खोणियहि आसत्तउ पियरमराणियहि ।
ईसावसेण विसमिं णडिउ रूसिवि दोहि मि उप्परि पडिउ ।
चलपक्खणक्खचंचूहयइं पेहुणयझडप्पणमहिगयइं ।
णीसारइ जारइ हासरइं बिण्णि वि णिहयइं उड्डियकरइं ।
रुहिरुल्लउ धारहि परियलिउ मिहुणुल्लउ विहलंघलु घुलिउ ।
मणिरसणादामिं ताडियउ कंताइ चरणु महु मोडियउ ।

घत्ता—जइयहुं पहु तइयहुं सहु असमाणउ णउ घायमि ॥
एवहिं डहु मोरउ लहु तेण तीइ करु लायमि ॥ ३३ ॥

34

उट्ठंतु पडंतु पधाइयउ पच्छइ परिवारु पराइयउ ।
तहिं एक्कइ कोवाऊरियए पाउय महुं मुक्की दारियए ।
अण्णेक्कइ चामरदंडएण आहउ कप्पूरकरंडएण ।
अण्णेक्कइ तट्टउ एंतियए चट्टुयफलेण पहरंतियए ।
अण्णेक्कइ हउ हारावलिए अण्णेक्कएक्ककुसुमंजलिए ।
अवरइ वीणादंडेण हउ हउं कह व कह व रंगंतु गउ ।
घे घे पभणंतिउ खुज्जियउ पच्छइ लग्गउ घरलंजियउ ।

घत्ता—सुरउद्दहो तहु सद्दहो ओएं जणणीसाणिं ॥
गलि धरियउ थरहरियउ हउं णिम्मुक्कउ पाणिं ॥ ३४ ॥

35

जसवइराएं पीडिय गलउ आबद्धदीहदढसंखलउ ।
मेल्लविउ ण मेल्लइ णिट्ठुरउ पासयफलहें हउ कुक्कुरउ ।

33. १. ST पियरायाणियहि. २ ST रोसें. ३. AT मेहुणय.

34. १. A पाडव. २. ST णहुउ. ३. S चड्डुयफणेण. ४. S धाविवि.

35. १. A दिढ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिरु दोहाविउ गउ सो वि मुउ विहिकम्मवियाइँ[2] विचित्तु कउ ।
मइं सोअइ[3] पहु चिरजम्मसुउ हा सिहि घरसिरि भूसणउं चुउ ।
हा मोर मज्झु घरपुत्तलिय पइं चाडियइ होइ सकुंतलिय ।
तुहुं जाम सिहरि थिउ पायडउ घरि ताम ण सोहइ धयवडउ ।
हा पइं विणु को हियवउ हरइ घरवावीहंसि सहुं चरइ ।
पइं विणु पवहिं रंगावलिय छज्जइ विचित्तकुसुमावलिय ।
कामिणिपयणेउरसरु सुणिवि पइं विणु को णच्चइ तणुं धुणिवि ।
हा जसहरु राणउ अज्जु मुउ हा दइव काइं मइं सुणहु हउ ।
हा सूअर अज्जु कसेरदलु भक्खंतु पिअंतु सुसच्छ जलु ।
करवंदजालवणि वसियमए सुहु अणुहवंतु सरकद्दमए ।

घत्ता—कयदुग्गइं सारंगइं रणि भवंतु सइच्छइं ॥
को सारउ मिगमारउ पयहो कविलहो पच्छइ ॥ ३५ ॥

36

इय सोइवि दिण्णउ तेण सिहि किउ विहिमि मरणसंकारविहि ।
जिह पिउपिउजणणिए चिरु णिहिउ तिह पाणिउं पिंडदाणु विहिउ ।
जणुं पियरहं जलु भोयणु ठवइ पियरुल्लउं किं पि ण अणुहवइ ।
णिक्खज्जरुक्खपत्थरपउरे उग्गयसामरि वंबुल[2]खयरे ।
णिज्जले मरुहयगयधूलिरए काणणि सुवेलगिरिपच्छिमए ।
काणिहिं पसविहिं दइवें वणिउ हउं कुंटिं पसविएण जणिउ ।
मिगि भुक्खिय दुक्खिय सुक्खथणि थणु जीहइ लिहमि ण लहमि घणि ।
दुद्धि विणु जढराणलु जलिउ मइं एक्क सप्पु कत्थइ गिलिउ ।
लैंहि साउ अणेयणायसयइं णं धम्महो मूलइं उक्खयइं ।
खद्धइं विवरहो कड्ढेवि किह अइभुक्खिएण गरुडेण जिह ।
सो सुणहु मरिवि तहिं हुउ उरउ दुद्धरसरदुंदुर[4]भक्खिरउ ।

---

२. A विवाउ. ३. S सोइय; A सोवइ. ४. ST सिरु. ५. ST चरंतु.
36. १. ST पुणु किउ. २ AST वब्बुल. ३. ST साउ लहिवि. ४. S दुंदुर; T डिंदुर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—वणि विलसइ बिलि पविसइ जाम ताम मइं लद्धउ ॥
मुहलग्गए पुच्छग्गए धरिवि खाहुं पारद्धउ ॥ ३६ ॥

37

पल्लट्टेवि मुह विससिहि मुयइ दढवियडफडं[1]प्फडु फुप्फुवइ ।
सो हउं भक्खमि सो मइं डसइ महु पलु तर[2]च्छु पच्छइ गसइ ।
तोडइ तडत्ति तणुबंधणइं मोडइ कडत्ति हड्डइं घणइं ।
फाडइ चडत्ति चम्मइं चलइं घुट्टइ घडत्ति सोणियजलइं ।
हउं एम तरच्छि खयहो णिउ मइं मायाविसहरु कवलु किउ ।
को लंघइ महियलि कम्मवसु अण्णोण्णाहार मरंति पसु ।
बहु थावर जंगम जीवउलु णर तिरिय गिलंति णिच्चु सयलु ।
वियलिंदिय बहु पंचिंदिय वि अवरोप्परु खंति ण भंति क वि ।
हउं कूरतरच्छें मारियउ मइं कालसप्पु संघारियउ ।
भो मारिदत्त णिव दिट्ठु सइं दूसहु अणुहवियउ दुक्खु मइं ।

घत्ता-- इय पिसुणिउ पइं णिसुणिउ जइ तो हिंस विवज्जहि ॥
हयदप्पउ परमप्पउ पुप्फयंतु पडिवज्जहि ॥ ३७ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे जसहरचंदमइभवंतरवण्णणो णाम बीओ संधी परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥

87. १. T फणफ्फडु. २ ST पच्छइ तरच्छु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

III

*नक्षत्राधीशरोचिःप्रचयशुचितरोद्दामकीर्त्यां निकेतो
निर्णीताशेषशास्त्रस्त्रिदशपतिनुताशेषवित्पादभक्तः ।
त्राता भव्यप्रजानां सततमिह भवाम्भोधिसंसारभीरु-
र्नीतिज्ञो निर्जिताक्षः प्रणयविनयवान्नन्दतां नन्ननामा ॥ १ ॥

1

पुणु रायहो भासइ अभयरुइ णियभवभवणकिलेसकह ॥
उज्जेणिहि सिप्पा णाम णई अत्थि सच्छ गंभीरदह ॥ ध्रुवकम् ॥
दुवई—तडं[1]तरुपडियकुसुमपुंजुज्जल पवणवसा चलंतिया ।
दीसइ पंचवण्ण णं साडी महिमहिलहि घुलंतिया ॥
जलकीलंततरुणिघणथणजुयवियलियघुं[2]सिणपिंजरा ।
वाँ[3]याहयविसालकल्लोलगलच्छियमत्तकुंजरा ॥
कच्छवमच्छपुच्छसंघट्टविहॆ[4]ट्टियसिप्पिसंपुडा ।
कूलपडंतधवलमुत्ताहलजललवसित्तफणिफडा ॥
ण्हंतणरिंदणारितणुभूसणकिरणारुणियपाणिया ।
सारसचाँ[5]सभासकारंडविहंडिरहंसमाणिया ॥
परिघोलिरतरंगरंगंतरमंततरंतणरवरा ।
पविमलकमलपरिमलासायणरुंजिय[6]भमिरमहुयरा ॥
मंठुवयंठपसतवसंठियतावसवासमणहरा ।
सीयलजॅं[7]लसमीरणासासियणियरकुरंगवणयरा ॥
जुज्झिरमयरकरिकरुप्फालणतासियतडत्थवाणरा ।
पॅ[8]डियफुलिंगवारिपुण्णाणणचाययणियरदिहियरा ॥
खयचिक्खिल्लखोल्लखणिखोलिरं[9]लोलिरं[10]कोलसंकुला ।
असइसत्थणिच्चसंसेवियबहलतमालमहुयॅ[11]ला ॥

---

* This verse is omitted in S and T.

1. १. T तडितरु. २. T कुसुमं. ३. S पवणाहय. ४. T विसट्टिय. ५. S भासचास. ६. T गुंजिय. ७. S सीयलवायवीयणासासियणियडकुडंगवणयरा. ८. T तडियपुडिंग; S पडियपुडिंग. ९. ST खेलिर. १०. A लोलिय. ११ AT महुयरा; S महुलया.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—हउं तासु तरच्छहु णिट्ठुरहो दाढाघायहिं णिट्ठियउ ॥
आवेप्पिणु तासु तरंगिणिहि मीणिहि गब्भि परिट्ठियउ ॥ १ ॥

2

दुवई—हउं संजाउ पोढपाढीणसरीरवियारणक्खमो ॥
गयणुल्ललणवलणपरियत्तणलंघियवारिविब्भमो ॥ १ ॥

उज्जलम्मि कोमलम्मि तत्थ सच्छविच्छुलम्मि संचरंतु हं तरंतु मीणमंडलं गिलंतु ।
ताउं माउपण्णएण दंतपंतिभिण्णएण पुव्वयालि मे हएण तम्मि रण्णए मएण ।
बद्धघोरकम्मएण लद्धवारिजम्मएण सुंसुवारहूयएण सुंसुवारियासुएण ।
दंतएहिं पीलिऊण णक्खएहिं फालिऊण जाव हं णियच्छिओ मि खाइउं समिच्छिओ मि ।
ता णईसमागयाइं सोमउंजुअंगयाइं घग्घरावलीरवाइं णीरकीलणुच्छवाइं ।
चारुचीरसोहियाइं संपयाविलोहियाइं दिव्वगंधवासियाइं हारदोरभूसियाइं ।
साविणोयभूसियाइं खुज्जयाइं वावणाइं तोयमज्झए तरंति णिव्वुडेवि उच्छलंति ।
जा रमंति ण्हंति थंति पंति जंति संभवंति एक्कमेक्क सिंचयंति पंजलीहिं कं धिवंति ।

घत्ता—ता तेत्थु तरंतु तरंतु जले एक्के एक्कु णिसुंभियउ ॥
खुज्जुल्लिय अम्ह उवरि पडिय दिट्ठउ दइयवियंभियउ ॥ २ ॥

3

दुवई-सा धरिया गलेण जलवंइणा हउं मुक्कउ पणट्ठउ ॥
जममुहरकुहरणित्तुं भयवेविरु सरिविवरं पइट्ठउ ॥ २ ॥

गोमिणीसामिणीमाणिणीमाणउ धाविया किंकरा बोल्लिओ राणउ ।
मज्जमाणा समाणा तए पुज्जिया देवकीलाविलासुज्जिया खुज्जिया ।
घित्त गाहेण गाहेण णिव्वट्टिया आमिसालुद्धएणं मुहावट्टिया ।
ता रुसा कंपियं राइणा जंपियं एरिसं विप्पियं कस्स होही पियं ।

---

१२. ST ताहि.

2. १. ST ताव. २. A सुंसुमारओ हुएण; ST संसुआरहूयएण ३. T सिंसुमारिया. ४. A जाम हं णियच्छिऊण...समिच्छिऊण. ५ ST भाइणाइं. ६ PST omit तोय...उच्छलंति. ७ PST omit एक्कमेक्क सिंचयंति ८. T खुज्जल्लिय.

3. १ AST बलेण. २. S जलबालिणा with note जले बलं यस्य. ४ T णियंतु. ४. AT विलासुजया,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूअरा संवरा मुक्कदोसा वणे मेसया मारिया भूर्यं भीसावेण ।
रुद्धसिप्पासरो खद्धणारीणरो एस दोसायरो णेमि वारीयरो ।
दंडिणो मंदिरं लोयणासुंदरं अग्गिजालाघरं भासुरं भीयरं ।
वुत्तुमेयं सकोहो सजोहो सरिं झत्ति पत्तो णिवो वाहिऊणं हरिं ।
तेण केवट्टविंदं समाणत्तयं तस्स सद्देण फुट्टं व लोयत्तयं ।
तं दहंतं महंतं पि संखोहियं बाहुदंडेहिं चंडेहि कंडोहियं ।
देहसंदोहसंमद्दणुप्पेल्लियं तेण जंतेण रूहत्थलं रेल्लियं ।
उट्ठिए रुंदुमच्छंधिकोलाहले भंगुरेणं गलेणं विभिण्णो गले ।
उच्छलंतो वलंतो चलंतो गले कड्ढिओ सुंसुवारो णिहित्तो थले ।
राइणो दाविओ चिच्चिणा ताविओ चंडदंडेण सो णिग्गहं पाविओ ।

घत्ता—हउं वियरहो होंतउ णीसरिउ जावच्छमि माणंतु सरु ॥
ता कयमारणकलयलचवलु आयउ पुरधीवरणियरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—जालं तत्थ तेहिं मज्झोवरि घित्तु महाघणसुत्तसंकडं ॥
हत्थपहत्थएहिं धरिऊण णिओ महाणईतडं ॥ ६ ॥

णं रणि सुहडु रइयरिउवूहिं णं कोसियकिमि तंतुसमूहिं ।
णं घरत्थु दुग्घरवावारिं पुत्तकलत्तमोहवित्थारिं ।
जेम जीउ मोहेण विसालिं तेम राय हउं वेढिउ जालिं ।
पायपहारहिं हउं अवियड्ढहिं जा समरट्टथोट्टकेवट्टहिं ।
ता कंचुइ मच्छंधिउ घोसइ मह णोहं मुए दुग्गंधु पहोसइ ।
पुंजियबहुसिप्पिउडकवाडइं कच्छवझसकुलीरहड्डालइं ।
ता हउं तेहिं धम्म णिद्धाडइ णेवाँविउ मच्छंधियवाडइ ।
जलयरु होइवि थलयरदुक्खइं संपत्तउ विणिवारियसोक्खइं ।

---

५. A भूरि. ६. S खद्धणारीणरो रुद्धसिप्पासरो. ७. S अग्गिजालाहरं; A अग्गिजालाउलं. ८. S सुहु. ९. ST कलयलु चवलु.

4. १. ST तेहि तत्थ. २. ST वित्तमहो. ३. ST णिउम्मि; A णिऊवि. ४. ST वेढिय. ५. S णहोमुउ; T णहोयलहु; A णहमुए. ६. ST कवालइं. ७ ST णेवि ठविउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गय महुं तहिं कह कह व विहावरि उग्गउ सूरु तिमिरकरिकेसरि ।
दाविउ मीणधरोहिं णरिंदहु चिरभवतणयहु कुवलयचंदहु ।
ता भट्टें महु लक्खणु उत्तउ जं विप्पागमि कहिउ णिरुत्तउ ।
घत्ता--एहु मच्छउ पंडुरु रोहियउ णइवाहहो संमुहु तरइ ॥
बहुहव्वकव्वजोग्गउ भणिवि वेउ भडारउ वज्जरइ ॥ ४ ॥

5

दुवई—कड्ढिय सायराउ मुररिउणा रोहियमच्छरूविणा ॥
चत्तारि वि सडंगवरवेय जगुब्भवभावभाविणा ॥ ६ ॥

ता हउं तेहिं पवित्तु विहाविउ अमयमईहि भवणि णेवाविउ ।
सा विण्णविय कयंजलिहत्थें भाइ माइ णिसुणहि परमत्थें ।
रोहियमच्छु एहु जाणिज्जइ एएं पियरवग्गु पीणिज्जइ ।
बप्पहो णामिं विप्पइं दिज्जइ पयहो पुंछु लुणेवि पइज्जइ ।
ता कंतइ महु पुंछु लुणाविउ सिहिणा संभारेण पयाविउ ।
भट्टभडारएहिं तं खद्धउ मइं तहिं देहदुक्खु आलद्धउ ।
अण्णु खाइ अण्णुहु किं पावइ वेयमूढु जणु किं पि ण भावइ ।
पुणु हउं जलणजालसंतत्तइ उक्कलियहिं वलियहिं परियत्तइ ।
तेल्लकडाहि कढंति णिहित्तउ तियडुयतोयझलक्कि सित्तउ ।
णियघरु पुरु परियणु परियाणिउ माणसदुक्खु भीमु मइं माणिउ ।
देहदुक्खु पुणु केहउ सीसइ जो वण्णहुं सक्कइ ण सरासइ ।
घत्ता-सिज्झंतहो महु वउ सिमिसिमइ चालुय चट्टुय चूरियउ ॥
बहुजीरमरियलवणहो जलिण णिव्वाइउ मुहुं पूरियउ ॥ ५ ॥

6

दुवई—तं गिलिऊण झत्ति गलणालिवहेण डहेइ अंगयं ॥
तमतमणारयस्स सारिच्छमहो मह दुह पसंगयं ॥ १ ॥

---

८. S णरचदंहो. ९. T. भराडउ.

5. १. S जुय. २. S रोहिउ एहु मच्छु. ३. S reads एयहो पुंछु लुणेवि पइज्जइ बप्पहो णामें तिणहे दिज्जइ; T reads बप्पहो कारणि विप्पह विज्जइ. ४. ST णियपुरु घरु. ५ T जाणिउं. ६ T. सरस्सइ. ७ ST लवणजलेण; A लवणसहिउ.

6. १. A गलिऊण. २. A गलणालिवहेइ; T गलणालीवहेण. ३. S डहेय. ४. T दुक्ख संगयं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्छल्लिवि उच्छल्लिवि तलियउ　　　एम बप्प दुक्खें णिद्दलियउ ।
लुणिवि लुणिवि तणुकंटय वीणिवि　　　भक्खिउ बंभणेहिं पुत्तेण वि ।
भक्खिउ पणइणीइ जारेण वि　　　भक्खिउ सयलिं परिवारेण वि ।
महु णामेण हउं जि संपासिउ　　　एम लोउ अण्णाणिं दूसिउ ।
हिंसाकम्मु धम्मु पडिवज्जइ　　　णिग्घिणु सोत्तियवाएं भिज्जइ ।
जा चंदमइ सुणहं फणिभवचुअ　　　सुंसुयारु होइवि पुणरवि मुअ ।
माय महारी विहँव[5]विहूई　　　छाली[6] पासँगामि[7] सा[8] हूई ।
मरिवि मीणु संजायउ छेलउ　　　ताहि गब्भि लंबिरकण्णालउ ।
बोक्कडएण जूहपरिपालिं　　　हउं जुवाणु हूवउ गयकालिं ।

घत्ता—णियजणणिहि मेहुणसण्णसुहुं अणुहवंतु सिंगि हयउ ॥
जूहेसिं ताएं अइंय[9]एण वम्मुल्लरिउ हउं मुअउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—सत्तमधाउ जीउ विण्णि वि सह थक्कइं माउँ[1]पोट्टए ॥
अप्पउं अप्पएण मइं जणियउं दुविहभवे पयट्टए ॥ १ ॥

णउ तहिं लज्ज ण णिवसणेचली　　　पसुयहं जणणि वि होइ महेली ।
तइयहं हउं काइं मि ण बुज्झमि　　　एवहिं अंतो अंतो डज्झमि ।
गब्भि णिसण्णउं हउं संपुण्णउ　　　अच्छमि जाम कुजम्मि पवण्णउ ।
आसि जेण जायउ जा मायरि　　　जा मइं रमिय अएण मणोहरि ।
जाहि वि पुणु हउं गब्भि णिलीणउ　　　अच्छमि णिग्गमकंखिरु रीणउ ।
कामाउरु मायापियरुल्लउ　　　तं कीलंतउ अयमिहुणुल्लउ ।
पारद्धिउँ[2] जाइवि मलु संचिवि　　　काणणु णिरवसेसु परियंचिवि ।
मिगु[3] ण लहंति पडिआवंतिं　　　तं जोइवि कुसुमावलिकंतिं ।
तिक्खखुरुप्पिं खणि दोहाविउ　　　छाँवउ[4] जीवमाणु अवलोइउ ।

घत्ता—दोण्णिवि दोखंडी हूयाइं ताइं मयाइं रुवंताइं ॥
गब्भासइ महुं अवलोइयहं अट्ठंगइं कंपंताइं ॥ ७ ॥

५. AST विहयविहूई. ६. T छालिय. ७. A पासिगामि. ८. T संभूई. ९. A अयवइणा.
7. १. A मायपोट्टए. २. A पारद्धिहिं. ३. S मउ; T मृगु. ४. AST पुणु णियडीहूएं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8

दुवई—उअरं फालिऊण विंभइयं हउं राएण कड्ढिउ ॥
अप्पिउ अयवइस्स सुणु ससिमुह कालेण वड्ढिउ ॥ १ ॥

तहिं सेवमि अण्णाणपवित्तिउ मायाससुआउ णियणत्तिउ ।
पइ झडवि हडाविय जूहाहिउ हउं जावच्छमि ता वसुहाहिउ ।
देविहि अग्गइ भणइ भडारिए महिसासुरवरदेहवियारिए ।
करि पारद्धिलाहु महु भयवइ तुह बलि महिस देमि हरिवरगइ ।
ता तहु वणि संपण्णउ मयवहु घरि आयउ पुणु पुण्णमणोरहु ।
तहिं थिर थोर महिस मारेप्पिणु पुज्जिय मासरसोइ करेप्पिणु ।
ता हउं आणाविउ सूआरिं मासखंडु जं सुणहिं घोरिं ।
उच्छिट्ठउं जं तं मइं सुंघिउ सुज्झइ णासापवणिं लंघिउ ।
अच्छमि बद्धउ दीहें डोरें णं भवभयकयकम्में घोरें ।
बंभण भुंजाविय महिणाहिं मासरसयघयखीरपवाहिं ।

घत्ता—परमेसरि सूलकवालधरि माहिसामिसवसरुहिरपिय ॥
कंचाइणि पीणिज्जउ भणिवि राएं परिवारें वंदिय ॥ ८ ॥

9

दुवई—अण्णेक्कहिं हयारिपलकवलपथिप्पिरतुप्पधारयं ॥
दाउं भोज्ज मज्ज सुअ बहुरस विणिहयछुहवियारयं ॥ १ ॥

कंकणाइं णाणापरिहाणइं दिण्णइं गोदाणइं भूदाणइं ।
पुणु भासिउ राएण पसत्थहु पावउ महु बप्पहो सग्गत्थहु ।
दढरज्जुअपरिवेढियगत्तिं भुक्खातण्हासिहिपरितत्तिं ।
मइं संचितिउ णिरलंकारिं विहवत्तणवज्जियसिंगारिं ।
अंतेउरणारियणें सव्वें दिण्णु पिंडु पुत्तेण विगव्वें ।
पासत्थहु जं किं पि वि णावइ सग्गत्थहु तं किरि कहिं पावइ ।

---

8. १. A विंभइयं; T चिंतइयं. २. T पुणु; S मुणि. ३. T omits this line; P gives this line and the following in second hand. ४. S भवभवकयकम्में. ५. T. परिवारें वंदिय.

9. १. S संतत्तें. २. S कहिं किर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[3]सहुं माउच्छियाहिं तहिं भुंजइ   पुत्तु महारउ सयणइं रंजइ ।
हउं अंतेउरु सयलु णियच्छमि   अमयमइं पियघरिणि ण पेच्छमि ।
णियणासउडि करग्गु णिउत्तउ   ता पक्कइ लंजियइ पउत्तउ ।
अज्जु जि मारिय महिसयजंगलु   बाइ दुगंधउ सुट्ठु अमंगलु ।
भणइ अवर झसभोज्जि णट्ठउ   अंगुवाइ देविहि णिक्किट्ठउ ।
[4]अण्णेक्क जि भासइ णउ पहउ   हउं आहासमि दिट्ठउ जेहउ ।
मायइ सहुं गरलुल्लउ चारिउ   खुज्जयकारणिं णियपइ मारिउ ।
पावें तेण [5]सडियणासोट्ठइं   पूइवाइ राणी हय कुट्ठइं ।
घत्ता—हउं जाणामि आमिस पुंजियउ भोयणवेलइ ढोइयउ ॥
आयण्णिवि [6]कामिणिजंपियउ देविहिं [7]वयणु पलोइयउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—सव्वावयवरूवफुड[1]वत्तिविवज्जियअइअलक्खणं ॥
सुइरु वि पिच्छमाणु णउ लक्खमि तिमहमहु पडिक्खणं ॥ १ ॥
विहि परयारहो अवसिं रूसइ   कोढिं लुणियउ णक्कु ण दीसइ ।
जो जारहो दिट्ठिइ आवडियउ   बिंबाहरु सो सडियउ पडियउ ।
जाइं जारवच्छयलि प[3]ईट्ठइं   णक्खइं ताइं पहट्ठइं णट्ठइं ।
तारइं तरलइं जारासत्तइं   वणसंकासइं जायइं णेत्तइं ।
जे थण जारकरग्गें भूसिय   गंडसरिस ते पूएं दूसिय ।
जो जारिं करेण अच्छोडिउ   केसभारु सो विहिणा तोडिउ ।
पाणिहिं जेहिं जारु परिमट्ठउ   ठाउ वि ताहं ण केण वि दिट्ठउ ।
जारणिवे[4]इयाइं संघायहं   स[5]यलंगुलियउ सडियउ पायहं ।
इय तणुणिग्गह दुण्णयगारी   पावें पाविय भज्ज महारी ।
मइं सकलत्तु दुचित्तु वि[6]यप्पिउ   तहिं अवसरि ता तेण जि जंपिउ ।
घत्ता—लइ अच्छउ देवहं वंभणहं परिवाइउ [7]धरि पुंजियउ ॥
ण सुहाइ मज्झु चिलिसावणउं महिसयमासु णिउंजियउ ॥ १० ॥

---

३. T सहिमाउलियाइं; A सहुं माउच्छएहिं. ४. S अण्ण का वि. ५. A सरिय. ६. A कामिणिवयणगइ. ७. S रूवु.

10. १. A पडिवत्ति; S फुडविति. २. A अइअइअलक्खणं; ST विलक्खणं. ३. ST पघिट्ठइं. ४. T णिवेसियाइं. ५. ST अंगुलि एक्क वि दिट्ठ ण पायहं. ६. S वियाक्किउ. ७. S परिपुंजियउ. ८. T मंसु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

11

दुवई—हरिणं[1] सूयरं पि सूयारय सज्जो मारिअल्लयं ॥
आणहि गंपि कहिं मि अवलोइवि जीहिंदियरसिल्लयं ॥ १ ॥

तं णिसुणिवि जसवइणरणाहिं भणिउं होउ हरिणेण वराहिं ।
मिट्ठु पवित्तु वि भट्टहिं गिज्जइ बोक्कडु अंम्मि[2] वियारिवि खज्जइ ।
अच्छइ बद्धउ मेम्मायंतउ[3] महिसयमासु समुग्घायंतउ ।
पयहो पच्छिमु पाउ लुणेविणु अम्महिं ताम देहि पउ लेप्पिणु ।
ता तं णिसुणिवि तेण दइच्चिं आणालंघणभीएं भिच्चिं ।
लहु महुं पच्छिउ[4] सत्थि छिण्णउ करिवि भडित्तउ कंतहि दिण्णउ ।
कोढिणितणु वणपूएं लित्ती तो वि ण मासहो उवरि विरत्ती ।
वेयधम्मवेहावियमाणसु[5] तमतमपहमहि जाइ सतामसु ।
तिव्वइ वेयणाइ हउं कंपमि जाणंतु वि पसु काइं पयंपमि ।
तिहिं पायहिं उब्भुब्भउ अच्छमि मेकरंतु[6] दस दिसउ णियच्छमि ।
को आसंघमि किह किर गच्छमि सरणु ण को वि बप्प तहिं पेच्छमि ।
एत्थंतरि अण्णेक्कु कहाणउं आयउ णिसुणहुं दुक्खणिहाणउं ।

घत्ता—जा छाली होइवि तत्थ[7] मुय भुंजिवि मायरि पावफलु ॥
सा सिंधुविसइ महिसिहि उअरि हूई[8] महिसउ भीमबलु ॥ ११ ॥

12

दुवई—सो वणि भंडभारु पवहंतु पुरं पुणरवि समागउ ॥
सिप्पासरिसरम्मि जा मज्जइ दीहरपहसमाहउ[1] ॥ १ ॥

असिधररायपुरिसपरिरक्खिउ[2] सीयलु सलिलु पियंतु णिरिक्खिउ ।
खुरिहिं हणंतु वारि परिओसिं जाइसहावसमुब्भवरोसिं ।
उट्ठिवि सिंगग्गेण वियारिउ रायतुरंगु तेण तहिं मारिउ ।

11. १. S हिरणं. २. AP अंबि. ३. S मेमावंतउ. ४. A पच्छिमु. ५. ST वेयधम्मवेहाविउ माणुसु. ६. ST बेकरंतु. ७. ST पुणु वि मुय. ८. ST महिसउ हूयउ.
12. १. T समागउ. २. ST read असिधर...रक्खिउ after सीयलु...णिरिक्खिउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो किंकरेहिं धरिवि णिउ तेत्तहिं   अच्छइ [3]णरवइ जसवइ जेत्तहिं ।
सविसाणेहिं देव णिद्दारिउ   एण तुहारउ हरि [4]संघारिउ ।
एहु सदोसउ [5]पहु मारिज्जइ   राएं भाणिउं सणिउं मारिज्जइ ।
जेम ण जाइ जीउ लहु पयहु   [6]तुरयणिहणयारिहि कुविवेयहु ।
तेम जियंतु जियंतु अमित्तउ   पयसु पयसु सूवारु पउत्तउ ।
तं णिसुणेवि सूवारिं घोरिं   णासारंधि [7]विणिग्गयदोरिं ।
[8]पुरहुंतउ बद्धउ मुहुं कड्ढिवि   पच्छाहोंतउ पुंछु [9]समोडिवि ।
संखलाहिं चउपासहिं तालिउ   पेट्टहु हेट्ठि हुआसणु जालिउ ।
चलसिहिजालावालिहि जलंतहु   णीणियजीहहु विरसु रसंतहु ।
खारउं तिक्खउं कडुयउं आणिउं   अग्गइ [10]ठवियउ तियडुयपाणिउं ।

घत्ता—तं पीयउं तण्हासोसिएण [11]विरसंतइं वम्मइं हयइं ॥
तेणंतइं बहुमलपूरियइं पच्छिमद्दारिं णिग्गयइं ॥ १२ ॥

13

दुवई—जहिं जहिं सिज्झमाणु सोसिज्जइ तहिं तहिं बप्प छिज्जए ॥
णामेणज्जियाहि सपउच्चं वरसोत्तियहं दिज्जए ॥ १ ॥

कंदंतु वेयणइ णिम्मुक्कताणाइ   दासेण गहिऊण भूमीसराणाइ ।
अहमवि णिहित्तो वि पाणे हरंतम्मि   इंगालपुंजम्मि धगधगधगंतम्मि ।
[1]दब्भंकहत्थेण घित्तूण घित्तूण   तिक्खेण सत्थेण छित्तूण छित्तूण ।
भत्तेण पुत्तेण सिहिणा विसण्णो मि   भो मज्झ णामेण हं चेव दिण्णो मि ।
अम्हे हया पीणिया वंभणा जाम   धुत्तेहि लोएहि जड वंचिया ताम ।
अण्णम्मि जिमियम्मि अण्णो कहं धाइ   अण्णस्स णामेण विप्पो पलं खाइ ।
अण्णम्मि खलियम्मि अण्णस्स णक्खाइं   भज्जंति किं भद्द [2]दिण्णंगदुक्खाइं ।
माहिंदतिरियस्य मज्झम्मि अद्दयस्स   लग्गग्गिजालाकलावेण लद्दयस्स ।
दोण्हं पि सह चेव जीवो गओ ताम   उज्जेणिमायंगणरवाडओ जाम ।
गोमुंडवड्डुहड्डुविच्छिड्डवंतम्मि   पसुपेयप[3]रियलियकिमिसिमिसिमंतम्मि ।

३ S जसवइ णरवइ. ४. ST संहारिउ. ५. AST भणु किं किज्जइ. ६. A तुरयारिहि एयहि. ७. T विणिग्गयडोरिं. ८. A उरुहुंतउ. ९. ST मुसट्टिवि. १०. ST ढोइउ. ११. ST विरसंतहो.

13. १. A दब्भंगहत्थेण २. ST दिण्णुग्गदुक्खाइं. ३. S परिगलिय; T परिघलिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिप्पंतपवहंतलोहियरसिल्लम्मि विच्छिण्णघणचम्मछाइयकुडिल्लम्मि ।
मयमहिससिंगावलीसंकडिल्लम्मि फरुसुद्धकेसम्मि धूसरेंकडिल्लम्मि ।
कियवाउपयपहयधूलीरयालम्मि विक्खित्तकंकालमालाकवालम्मि ।
सिहिसिण्हमंडलरसासायकायम्मि आमिसवसामीसउद्दंतधूमम्मि ।

घत्ता—कुँकुडियहि जायइं गब्भि तहिं अम्हइं बिण्णि वि पिल्लाइं ॥
छुडु छुडु तत्तियहि विणिग्गयइं उक्कुरुडम्मि णवल्लाइं ॥ १३ ॥

14

दुवई—ता गहिया गलम्मि मज्जारिं जणणी कंपमाणिया ॥
खद्धा कसमसत्ति मुडियट्ठिरवेण जमाणणं णिया ॥ १ ॥

ता चंडालिइ रइयउ भल्लउ घित्तउ घरकयारपिडउल्लउ ।
णाणाहड्डुखडंततुडियउं णं दुक्किउ अम्हहं सिरि पडियउं ।
दोहिं मि कुक्कुत्तिए आरडियउ ताहिं मि तहिं हियउल्लउ घुलियउ ।
मं छुडु अट्ठिएहिं संवलियउ तंबचूलसिसुजुयलउ घल्लिउ ।
णं णियसत्तिसमूहिं पेल्लिउ समउं कयारें इह मइं घल्लिउं ।
अम्हहं सदु ताइ अवहारिउ पुणु कयारु चरणिं ओसारिउ ।
लग्गइं पायग्गइं मँहु अंगइं हत्थें लेवि णियाइं विहंगइं ।
कुहियकलेवरि ठवियइं णियघरि विलसियकम्मविवायसुदुद्धरि ।
हउं जो णिवें णिववंदिउ होंतउ सो चंडालिइ पायएं छित्तउ ।

घत्ता—सीउण्हें वाएं पीडियइं छुहँतण्हासंतत्ताइं ॥
चंडालणिलइ णिवसंताइं दुक्खपरंपर पत्ताइं ॥ १४ ॥

15

दुवई—दूसहविहुरवडणसुढियंगइं घरणियले पलोट्टइं ॥
तहिं पाणहरि खद्धपरपाणइं पाणिवहे पयट्टइं ॥ १ ॥

४. T कुडिलम्मि. ५ AT कुकुडियहि. ६. ST उक्करडम्मि.

14. १. S घल्लिउ. २. S adds after this : पुव्वजम्मि (T जम्म) किउं णावइ घडियउं. ३. S omits णं णियसत्तिसमूहिं पेल्लिउ. ४. S मउयंगइं. ५. S णिउ णिववंदिउ; T जो णिवपइवंदिउ. ६. P छुहतण्हासिहिसंतत्ताइं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्तपिच्छचित्तलाइं चंचुचारुचंचलाइं भूरिपावभारयाइं उक्खयावणीरयाइं ।
जीवरासिखंडिराइं एत्थ तत्थ हिंडिराइं चोरमारए रएण राइणो तलारएण ।
दूरमुक्कसंमे[1]एण दो वि चंडयम्मएण दिट्ठयाइं आणियाइं हत्थफंसमाणियाइं ।
ढोइयाइं पत्थिवस्स पुव्वजम्मणंदणस्स रूवरिद्धिभायणेहिं णेहणिद्धलोयणेहिं ।
वारवार जोइयाइं तेण तं णिरूवियाइं उत्तिमाइं लक्खियाइं मे[2]मणे परिक्खियाइं ।
तंबचूलडिंभयाइं पीय[3]यंगणंभयाइं ताम तुज्झ मंदिरम्मि संवसंतु सुंदरम्मि ।
एयए[4]हिं जायएहिं दिण्णणक्खघायएहिं रोसिरेहिं पत्तिएहिं पुत्तएहिं णत्तिएहिं ।
वाहियंघियारएहिं भू[5]घुलंतगत्तएहिं उद्धकंठकेसरेहिं रत्तणेत्तभासुरेहिं ।
उड्डिरेहिं रंगिरेहिं विब्भमं पयासिरेहिं जुज्झिरेहि कीलिहीमि जुज्झयाइं पिच्छिहीमि ।
घत्ता—ता णिसुणिवि णरवइणियमाविहिं भिच्चँ[6]इ ठवियइं णियभवणे ॥
गय रयणि तित्थु पंजरि ठियइं सुप्पहाइ जहिं राउ वणे ॥ १५ ॥

16

दुवई—तत्थ णियाइं दो[1] वि दाहिणमंदाणिलचलियदुमदलं ॥
दिट्ठं वणमणेयखयरावलिकलरवजणियकलयलं ॥ १ ॥

झरंतसच्छविच्छुलंभणिज्झरं भरंतरुंदकुंडकूवकंदरं ।
ललंतवेल्लिपल्लवोहकोमलं मिलंतपक्खिपं[2]क्खलक्खचित्तलं ।
सिणिद्धरुक्खपुप्फरेणुपिंजरं फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं ।
दिसाचरंतजक्खकिंकिणीसरं लयाहरत्थकीलमाणकिंणरं ।
वहूपलित्तगेयमोहिएणयं णहोयरंतदेवयाविमाणयं ।
सिलायलासणत्थसिद्धखेयरं गहीरपंकलोलमाणसूअरं ।
णरिंददंतिदंतभिण्णचंदणं पुरंधिचित्तहारदित्तवंदणं ।
पढंतकीररिच्छसद्दपेसलं मरालियाणुगामिवालपाडलं ।
तुसारफारफेणरासिसेयओ वणम्मि तम्मि राइणो णिकेयओ ।
घत्ता—तहो पंगणि मंडउ पडरइउ पंचवण्णु किंकिणिमुहलु ॥
तहिं अम्हइं पंजरएण सहुं ठवियइं णं जमम[3]ुंहकवलु ॥ १६ ॥

15. १. T सण्णएण. २. मम्मणे. ३. AT पीइएं गएं भयाइं. ४. AP एययाण. ५. AST add: णित्त (T णेत्त) रत्तधारएहिं (A adds after it णिट्ठुरापहारएहिं) चंचुघायघुम्मिरेहिं सेयतोयतिम्मिरेहिं, but P erased this by means of हरिताल. ६. T णिच्चं.

16. १. ST दोहिं वि. २. ST लक्खपक्ख. ३. ST जममुहि कवलु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

17

दुवई—तण्णियडम्मि रत्तपत्तंचिउ हयपरतावदुक्खउ ॥
सीयलु सोमु रम्मु णं णरवइ सहइ असोयरुक्खउ ॥ १ ॥

[1]दारियघोरचोरपरयारिं हिंसायारिं तेण तलारिं ।
तहो तलि [2]पविमलसिलहिं णिविट्ठउ झाणारूढउ मुणिवरु दिट्ठउ ।
दोआसावंधणपरि[3]चुंकउ रायदोस दोदोसहिं मुक्[4]कउ ।
धरियतिमुंड तिदंडविहंडणु छिण्णतिसल्लु तिलोयहु मंडणु ।
[5]हयगारवतिउ तिरयणभूसणु चउकसायसिप्पीरहुआसणु ।
चउसण्णाविसेसणिण्णासणु पंचस[6]मिदिसब्भावपयासणु ।
पंचासवदारहं कयसंवरु पंचमहव्वयभारधुरंधरु ।
पंचमीसु पंचमगइसामिउ पंचाचारमहापहगामिउ ।
थिरु छज्जीवणिकायदयावरु सत्तभेयभयतिमिरदिवायरु ।
अट्ठदुट्ठमयणिट्ठवणायरु अट्ठमपुहविवासजा[7]णायरु ।
अट्ठसिद्धगुणसंजोइयमणु णवविह[8]वंभचेरं जो वंभणु ।
दहविहु धम्मलाहु जिं लद्धउ दहपाणक्खउ जेण णिसिद्धउ ।

घत्ता—एयारह[9]पडिमउ सावयहं जेण वियारिवि उत्तियउ ॥
उद्धरिय जेण बारह वि तव तेरह चरिय विहत्तियउ ॥ १७ ॥

18

दुवई—जो मयमोहलोहकोहाइरिऊण रणम्मि दुम्महो ॥
जो तवचरणकरणजालावलिदड्ढधगत्तिवम्महो ॥ १ ॥

तं पिच्छिवि सो तलवरु रुट्ठउ चिंतइ दुट्ठु धिट्ठु पा[1]विट्ठउ ।
विट्टलु णग्गउ दुक्खें छित्तउ थत्ति महारी दूसिवि थक्कउ ।
दीसइ ताम जाम अव[2]सउणउं णिववणाइ णिद्धाडमि स[3]वणउं ।
कित्तिउ णियमणि दूमिउ अच्छमि कवडिं किं पि अपुच्छिउ पुच्छमि ।
जं जिह भासइ तं तिह दूसमि [4]करिवि णिरुत्तरु पच्छइ रूसमि ।

17. S वारिय. २. ST णिच्चल. ३. ST परिचुक्कउ. ४. ST चुक्कउ. ५. P कय. ६ A समिइ. ७ ST जायण-परु. ८. S वंभचेरि. ९. T पडिमा.

18. १ ST दप्पिट्ठउ. २. AP अवसवणउ. ३. A खवणउ. ४. ST करमि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किं पि अ[5]जुत्तु दुरुत्तु पवोल्लमि अ[6]वसवणउ णीसारिवि घल्लमि ।
इय सुमरंति मायावंतिं वंदिउ साहु णिरिक्कयंतिं ।
तहिं अवसरि तहु जोउ समत्तउ जाणंतेण वि पिसुणु अभत्तउ ।
आसीवाउ दिण्णु भयवंतिं धम्मबुद्धि तुह होउ भणंतिं ।
णि[7]यगुणु मोक्खु पयडु संपज्जउ सुहु संभवउ भंति तुह भज्जउ ।

घत्ता—णउ णिंदइ मच्छरु विच्छरइ ण पसंसइ वड्ढइ हरिसु ॥
समतणकंचणहं महारिसिहिं सत्तु वि मित्तु वि समसरिसु ॥ १८ ॥

19

दुवई—भणियं तलवरेण धणु धम्मु भणिज्जइ जोहसासणे ॥
गुणु तहो कोडिलग्ग मोक्खु वि रणे बाणहो रिउविणासणे ॥ १ ॥

अण्णु धम्मु गुणु मोक्खु ण याणमि हउं पंचिंदियसोक्खइं माणमि ।
तुहुं पुणु काइं मि दीसहि दुब्बलु णत्थि चीरु पंगुरणु ण कंबलु ।
अट्ठ वि अंगइं रीणइं झीणइं णयणइं गंपि क[1]वोलि णिलीणइं ।
गत्तु मलावलित्तु कि ण धोअहि रत्तिदिवसु णिमिसु वि कि ण सोवहि ।
मउलियणेत्तवत्तु किं झायहि अम्हारिसहं भंति उप्पायहि ।
ता मुणि भणइ सझाणु णिउंजिवि जीउ वि कम्मु वि दो वि विहंजिवि ।
जाहु स[2]मीहमि सासयठाणहो अजरामरहो परमणिव्वाणहो ।
पुरिसु महेली संढु वि हूवउ सोमु चंडु पुणु णं जमदूअउ ।
राउ पुणु वि पाइक्कु सुदीणउ रूववंतु पुणु रूवविहीणउ ।
मइलगोत्तु पुणु गोत्तसमुज्जलु बलविहीणु पुणु अतुलमहाबलु ।

घत्ता—हुउ अज्जु मेच्छु णरभवभवणे दालिद्दिउ पुणु दविणवइ ॥
सोत्तिउ होइवि चंडालु हुउ विसमी भ[3]वसंसारगइ ॥ १९ ॥

---

५. ST दुरुत्तु अजुत्तु. ६. ST अवसणु णीसारेप्पिणु. ७. ST omit this line and P gives it in second hand.

19. १. S कवालि. २. ST समीहपि. ३. A भड.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

20

दुवई—मासाहारु कूरु मिगुं[1] काणणि पुणु तणयरु वि जायउ ॥
पुणु रयणप्पहाइ णरएसु वि विसहियगरुयघायउ ॥ १ ॥

णारउ पुणु हुउ जलयरु थलयरु णहयरु पुणु तिरिक्खु बहुअहयरु ।
पुणु कुच्छिय सुरजम्मावत्तइ णिवडिउ परिचत्तइ रयणत्तइ ।
अण्णण्णइं अंगाइं धरंतहो अण्णण्णाइं ताइं मेल्लंतहो ।
एम बप्प जीवंतमरंतहो गयउ कालु दुक्खाइं सहंतहो ।
दुक्खु पावफलु हउं मणि मण्णमि तेणिंदियसुहाइं अवगण्णमि ।
भिक्ख चरमि अप्पउ आयासमि थोवउं भुंजमि णिज्जणि णिवसमि ।
धम्मु पयंपमि मोणिं अच्छमि मोहु ण इच्छमि णिद्दं[2] ण गच्छमि ।
कोहु[3] ण संचमि कवडु विलुंचमि माणु वि खंचमि लोहु विवंचमि ।
[4]जायइ देहदुक्खि उव्वेवउ कहिं मि करमि णउ मयणुम्मायउ ।
ण भयाउरु णउ सोपं भिज्जमि हिंसारंभु डंभु णावज्जमि ।

घत्ता—हउं अंधउ णारिणिहालणए बहिरउ गेयायण्णणइ ॥
पंगुलउ कुतित्थपंथगमाणि मूअउ विकहावण्णणइ ॥ २० ॥

21

दुवई—जो आहार देहु सो अण्णु जि मइं गहिओ अचेयणो ॥
सो सच्चेयणु व्व परिधावइ धवलणियड्ढिओ अणो ॥ १ ॥

विणु धवलेण सयडु किं हल्लइ विणु जीवेण देहु किं चेल्लइ[1] ।
अण्णु जीउ महु अण्णु कलेवरु तेण भद्द हउं हुवउ दियंबरु ।
परु ण दुगुंछमि मोक्खु समिच्छमि झाणालीणु[2] णिरुत्तरु अच्छमि ।
अट्ट रउद्द झाण णउ इच्छमि धम्मसुक्कझाणिं परु पेच्छमि ।
आहाकम्मुद्देसहिं चत्तउ पिंडु लेमि जिह केवलिवुत्तउ ।
पंचा[3]सवदारइं परिवज्जमि एम बप्प इंदियबलु णिज्जमि ।
भणइ[4] सुहडु गोसिंगु ण दुब्भइ विणु छत्तेणं छाहि किं लब्भइ ।

---

20. १. ST मृगु. २. ST णिद्द ण गच्छमि. ३. ST read this line: कोहु ण संचमि माणु विवंचमि कवडु विलुंचमि (T विलंघमि) लोहु वि खंचमि. ४. ST ण हसमि ण रममि णउ उव्वेयउ. ५. A विकहाकण्णणइ.
21. १. T हल्लइ. २. ST झाणारूढु. ३. S पावासवदारइं. ४. ST चवइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विणु जीवेण मोक्खु को पावइ तुम्हारिसु किं अप्पउ तावइ ।
छंडहि तउ करि मेरउं वुत्तउ जीउ वि देहु वि एक्कु णिरुत्तउ ।
जिह तरुकुसुमहो गंधु ण भिण्णउ तिह जीउ वि देहाउ ण छिण्णउ ।
फुल्लविणासिं गंधु जिह णासइ तिह तणुणासिं जीउ वि णासइ ।
तं णिसुणेवि मुणिवरु आघोसइ परमप्पयहो वयणु परिपोसइ ।
चंपयवासु वि लग्गउ तेल्लहो एम गंधु जिह छिण्णउ फुल्लहो ।
तिह देहहो जीवहो भिण्णत्तणु दिट्ठउ किंकर चवहि जडत्तणु ।
भणइ वीरु दिण्णइं पच्चुत्तरि इंतु ण दीसइ जीउ पइंतरि ।
घत्ता—पर दीसइ सोणियसुक्कधरु गब्भब्भंतरि वुड्ढिगउ ॥
तं णिसुणिवि संजमणियमणिहि कहइ भडारउ समियमउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—दूरा एंतु सद्दु णउ दीसइ परकण्णम्मि लग्गओ ॥
णज्जइ जेम तेम जगि जीउ वि बहुजोणीकुलं गओ ॥ १ ॥
णक्किं को वि ण रूवइं पेक्खइ कण्णिं को वि ण भक्खइं चक्खइ ।
अण्णगेज्झु अण्णें ण लइज्जइ रूवें रूववत्थु जाणिज्जइ ।
तं पि सविसयवग्गपडिबद्धउ अण्णु होइ अण्णुमाणिं सिद्धउ ।
सुहुमु णं थूलिं णाणिं छिप्पइ करिकरेण किं राई घिप्पइ ।
सुहुमु जीउ सुहुमेण जि णाणिं दीसइ जगि केवलअहिणाणिं ।
ता मुंडीरु भणइ किं णिज्जइ जोणिहिं केण जीउ आणिज्जइ ।
तं आयण्णिवि णवजलहरझुणि संसयहरु आहासइ तहो मुणि ।
अयसिरु छिंदिवि एक्कु महव्वइ जायउ अवरु वि तवभट्ठउ जइ ।
संभु वि वंभु वि कम्मायत्तउ कम्मविवाउ लोइ बलवंतउ ।
लोहु व कड्ढएण काड्ढिज्जइ जीउ सकम्मिं चउगइ णिज्जइ ।
घत्ता—वित्थारु वि संघारु वि करइ अट्ठकम्मपयडिहिं गहिउ ॥
जगि कुंथु हवेप्पिणु करि हवइ जीउ सरीरमाणु कहिउ ॥ २२ ॥

---

५. T फुल्लविणासें गंधु ण पावइ. ६. T परिघोसइ. ७. ST भिण्णउ. ८. A णियमविहि.
22. १. ST थूलणाणेण ण.२. ST संहारु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

23

दुवई—जइ धुउ लोयमाणु णिरु णिच्चलु किरियागुणविवज्जिओ ॥
तो तहो कम्मबंधु कह होसइ भीसणभवसमज्जिओ ॥ १ ॥

बंधि विणु कहिं गुरुसीसत्तणु घडइ बप्प अवरु वि तवसित्तणु ।
सुद्धहो रइ तमु अंगि ण लग्गइ सग्गु मोक्खु किं कारणु मग्गइ ।
विणु जीवेण फासु किं सयणइं परियाणइ उक्कोइयमयणइं ।
विणु जीवेण जीह किं लक्खइ रसविसेस णाणाविह चक्खइ ।
विणु जीविं पेच्छंति ण णेत्तइं अग्गइ थक्कइं वइरइं मित्तइं ।
विणु जीविं घुसिणाइं ण माणिउ घाणिं कत्थ वि गंधु ण याणिउं ।
विणु जीवेण कण्णु णायण्णइ सद्दु सुहासुहु किं पि ण मण्णइ ।
विणु जीवेण सुट्ठु णिच्चिट्ठइं पंच ताइं कुलगुरुणा सिट्ठइं ।
अयहरिहरईसरसिवणामइं फासाइयइं गुणगँहधामइं ।

घत्ता—णउ फासु ण रसु णउ रूउ तहो गंधु ण सद्दु वि वज्जियउं ॥
पर करणहिं पंचहिं पंचगुण जाणइ मइं आयण्णियउं ॥ २३ ॥

24

दुवई—सुरगुरु लोयणेहिं जं पिच्छइ इच्छइ तं समक्खयं ॥
जो ण णियइ घरम्मि चिरपुरिसणिहाणघडं पि णिक्खयं ॥ १ ॥

वायाकुंठु वंठु दप्पुब्भडु विसयकसायरायरसलंपडु ।
सो किं जाणइ दव्वइं फुरियइं वायरसुहुमइं दूरंतरियइं ।
गायइ वायइ णच्चइ खेल्लइ कामिणिघणथण हत्थि पेल्लइ ।
अरिबल हूलइ सूलइ फालइ खेत्तइं गामइं णयरइं जालइ ।
पावकम्मु किं सच्चउ पेक्खइ किं कारुणिं कासु वि अक्खइ ।
जइ सिद्धंतु अदेहिं कहियउ लइ तो मइं एउ जि सद्दहियउ ।
कुम्मरोमकंबलपंगुत्ति णहकुसुमंचिउ वंझहि पुत्तिं ।

घत्ता—णिक्कलुणइ जायइ णउ मरइ ण करइ ण धरइ णउ हरइ ॥
णिक्कलु अरूउ परमेट्ठि पहु भवसंसारि ण संसरइ ॥ २४ ॥

---

23. १. ST सिद्धहो. २. A भक्खइ. ३. ST गुणगणधामइं.
24. १. T णिक्खियं. २. S वायइ गायइ. ३. T लायइ. ४. T सूलइ. ५. T पावधम्मु. ६. T वंझापुत्तिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

25

दुवई—इंद[1]पडिंदचंदविसहरणरखेयरविरइयच्चणो ॥
अट्ठोत्तरसहासलक्खणधरु केवलणाणलोयणो ॥ १ ॥
अट्ठपाडिहेरामललंछणु   णं उदयायलि थिउ मयलंछणु ।
धम्मचक्किकयसणमलणिग्गमु   वीयराउ मुणि मुणिवरपुंगमु ।
एहउ होइ सयल परमप्पउ   तिं भासिउ हउं जाणमि अप्पउ ।
सो ण णिच्चु पज्जाएं वुच्चइ   दव्वत्थें पुणु णिच्चु जि सुव्वइ ।
णिच्चु भणंतहं ण मरइ ण हवइ   णिच्चु भणंतहं णं[2] रमइ ण चवइ ।
णिच्चु भणंतहं गयणसमाणउ   ठाइ जीउ गयकिरियाठाणउ ।
णाणाभेयँ[3] जीव जिणु भासइ   एक्कु जि जीउ भट्टु किं विरसइ ।
एक्कु हसइ अणेक्कु वि रोअइ   एक्कु चेट्ठइ अणेक्कु वि सोअइ ।
एक्कु जाइ अणेक्कु वि थक्कइ   भिडइ एक्कु अणेक्कु वि संकइ ।
एक्कु सीसु अणेक्कु वि गुरु णरु   एक्कु राउ अणेक्कु जि किंकरु ।
मणिजासवणहेउ किं दिज्जइ   रूवि किं अरूवि परु हिज्जइ[4] ।
असिवरेण गयणयलु ण छिज्जइ   एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।
णिम्मलु किं रंमइ[5] पररापं   भयवं भयवहो होउ विवापं ।
घत्ता—जगि णत्थि अणुट्ठइ तवचरणु पत्तवडियपलरसरसिउ ॥
विण्णाणखंभु पुरिसु वि भणइ बुद्धु भडारउ साहसिउ ॥ २५ ॥

26

दुवई—जइ तिल्लोक्कखंभु[1] विण्णाणु वि ता सुगयंतरंगए ॥
भंतिए भंति केम जाणिज्जइ साहिज्जइ जणग्गए ॥ १ ॥
खणि खणि अण्ण होइ जइ चेयण   ता को मुणइं[2] छमासीवेयण ।
वासणाइ जइ णाणु पयासइ   तो वासण खणि किं णउ णासइ ।
किं सा पंचहं खंधहं भिण्णी   जीवसिद्धि एमइं[3] पडिवण्णी ।

25. १. T फणिंद. २. ST ण धरइ ण करइ; A णरवइ ण चवइ. ३. A णाणाजीवभेय. ४. ST भिज्जइ ५. ST रप्पइ.

26. १. S तयलोक्कु भंतु; T तेल्लोकभंति. २. T मुयइ. ३. ST लइ मइं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो सिरसिहरि चडावियहत्थें मुणि वंदिउ भडेण परमत्थें ।
विसरिसकुसुमबाणविणिवारा भणु किं पेसणु करमि भडारा ।
भणइ भडारउ धम्मु लइँज्जइ धम्मिं सग्गु मोक्खु पाविज्जइ ।
धम्मिं होंति मणुय हरि हलहर चारणचक्कवट्टि विज्जाहर ।
पायँपोमपरिघुलिय पुरंदर ण्हाणसलिलपक्खालियमंदर ।
धम्में होंति जिणिंद णरिंद वि धम्में होंति सुरिंद फणिंद वि ।
ससहरवयणउ कुवलयणयणउ माणिक्कमयणउ उज्जलरयणउ ।
सुहमुहपवणउ भूसियभवणउ लीलागमणउ मुणिमणदमणउ ।
मम्मणभणियउ कोड्डावणियउ घणघणथणियउ णं सुरगणियउ ।
धम्में महिलउ होंति घरत्थहं परिहियविविहविहूसणवत्थहं ।

घत्ता—धम्मिं रयणंसुजालंधरइं जालगवक्खमणोहरइं ॥
सुविचित्तचित्तभाभासुरइं सँत्तपंचभोमइं घरइं ॥ २६ ॥

27

दुवई—धम्मिं होंति जाणजंपाणइं धयधवलायवत्तयं ॥
चामर रह तुरंग मायंग महाभड बलाइं भत्तयं ॥ १ ॥

पावेण महिलाउ जायंति मइलाउ जाराणुकूलाउ धणहरणलोलाउ ।
पिंगुद्धवालाउ लंबिरकवोलाउ दंट्टोट्टरुट्टाउ दूहवउ दुट्ठाउ ।
कुलमग्गभट्ठाउ कट्ठाउ धिट्ठाउ सुहणिट्ठणट्ठाउ णोलग्गकंठाउ ।
णिम्मुक्कणेहाउ दुग्गंधदेहाउ खयकाललीलाउ कलहेक्कसीलाउ ।
सोहाविहीणाउ दारिद्दरीणाउ खरफरुसभासिणिउ गेहम्मि गेहिणिउ ।
णिवसंति दुरिएण चिरजम्मचरिएण तिलपिंडखंडेसु तुसँविरसपिंडेसु ।
डिंभाइं लग्गंति रोअंति मग्गंति सीएण कंपंति उण्हेण तप्पंति ।
वाएण भिज्जंति भुक्खाइ छिज्जंति फट्टाइं णिवसणइं फुट्टाइं भायणइं ।

४. A रइज्जइ. ५. T पायपोम्म. ६. ST पडिंद. ७. ST सत्तपंचभउमइं.

27. १. T दुट्टोट्ट २. P omits सुहणिट्ठणट्ठाउ णोलग्गकंठाउ; ST read पावेक्कणिट्ठाउ for सुहणिट्ठणट्ठाउ. ३. ST तुसरइय. ४. AST adds afrer this दुग्गय (A दोहग्ग) कुडुंबियइं णियकयाविडंबियइं (A मयमह. विडंबियइं); but A adds this in second hand.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णीरसइं भोयणइं णिव्वंधुपरियणइं   बहुछिद्दजज्जरइं कुहियाइं कुडिहरइं ।
संजणियतावेण जीवस्स पावेण[5]   दुक्खाइं पसरंति सुक्खाइं ण हवंति[6] ।
घत्ता—इय जाणिवि तुहुं करि धम्मु तिह जिह जीववहणु ण वि संभवइ॥
तं णिसुणिवि मुणिवरिंदवयणु विहसिवि तलवरु[7] पडिलवइ ॥ २७ ॥

28

दुवई—जिम्मइ मासखंडु पसु हम्मइ गम्मइ सग्गवासहो ॥
एम भणंति देवगुरुवंभण णाणु ण जिणवरेसहो ॥ १ ॥
तं णिसुणिवि मुणिणाहिं[1] वुत्तउं   इंदियवज्जिउ णाणु णिरुत्तउं ।
जीवसहाउ ण अण्णायत्तउ   साहणकमपडिखलणिं चत्तउ ।
इंदियबुद्धिए काइं मि पिक्खइ   काइं मि पुणु जम्मि वि णो लक्खइ।
सुत्तहो मत्तहो मुच्छावण्णहो   सुणहुल्लउ मुहि सवइ विसण्णहो ।
तिं तिहुवणु तियालु संगायउ   भणु भणु वप्प केण विण्णायउ ।
वासिं भारहु सयलु वि दिट्ठउ   अणहोंतु जि[2] किह लोयहं सिट्ठउ ।
ठविय केम महि संख पयासहि   परमाणुअउं गणिउं परिहासहि ।
गहगहणुल्लउ केम पमाणिउ   गहणु केम गयणंगणि जाणिउ ।
घत्ता—सव्वण्हु अणिंदिउ णाणमउ जो मयमूढु[3] ण पत्तियइ ॥
सो णिंदिउ पंचिंदियणिरउ वइतरणिहि पाणिउं पियइ ॥ २८ ॥

29

दुवई—किं केण वि जयम्मि ण कयाउ[1] रियाउ भणंति णिद्दया ॥
ण हि सयमेव थंति पंतिए णहे मिलिऊण सद्दया ॥ १ ॥
अणुसंघट्टणि सद्दु विहावइ   उट्ठिउ खणि णहयलि परिधावइ ।
पसुहुं वि णिज्जीवहं वि अणक्खरु   सो संभवइ महुरु अवरु वि खरु ।
णरमुहवण्णठाणसंकेयहो   वुद्धिए णिज्जइ भासाभेयहो ।
वेउ सयंभु भणंतु ण लज्जइ   दियवरवरकइकित्तणि[2] पुज्जइ ।
विग्गहवंतु देउ णउ अक्खइ   पंडव सुरसुअ मुहियइ झंखइ ।

---

५. ST add after this पावेण दंडियइं धम्मेण छंडियइं ६. A लहंति. ७. AP णरवरु.

28. १. T रिसिणाहिं. २. A वि. ३. ST मइमूढु.

29. १. AST कियाउ. २. ST कित्तिण; A कित्तणु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंसु ण लब्भइ णिच्चणिरंसहो वासुएउ किह किउ रिउ कंसहो।
हिंसइ सग्गु मोक्खु सुयसंगमु अण्णु पुराणु अण्णु वेयागमु।
अण्णु देउ अण्णु जि पुज्जिज्जइ किं बोलिज्जइ हो हो पुज्जइ।
वयणु कुमारिलभट्टहो केरउ अइअसुद्धधम्महो विवरेरउ।
घत्ता--गेयइं वेयइं मइं जाणियइं हरिणहो मरणु पयासियउ॥
पक्कि णिरु णिक्किउ समरउलु अवरें दियउलु पोसियउ॥ २९॥

30

दुवई—मीण गिलंतु ण्हंतु जइ सुज्झइ ता कंको महामुणी॥
वंदिज्जइ चरंतु णइतीरिं किं किज्जइ परो मुणी॥ १॥
मिंढी हरिणी वि गाइ वि तणयरि पावि हूई सूअरि वणयरि।
जिणवरदिट्ठिहिं सव्व समाणी देवि भणिवि सुरवसहिसमाणी।
वंदइ गाइ पुणु वि जो मारइ अप्पउ भवसंसारहो तारइ।
गोसुअ जाणि धम्मि रइ माणइ सोयामणिहिं मज्झु वक्खाणइ।
हो तहो विप्पहो तत्ति ण किज्जइ रिसिहिं दिट्ठउ धम्मु लइज्जइ।
दुद्धरु होइ धम्मु अणगारउ लइ परिपालहि तुहुं सागारउ।
अणलियगिर जीवह दय किज्जइ परधणु परकलत्तु वंचिज्जइ।
अणिसाभोयणु पमियपरिग्गहु मणि ण णिहिप्पइ लोहमहागहु।
महुमइरामिसु पंचुंबरिफलु णउ चक्खिज्जइ कयदुक्कियमलु।
किज्जइ दसदिसपच्चक्खाणु वि भोउवभोयभुत्तिसंखाणु वि।
मईरक्खणु अवरु वि सुदसवणु वि पाउसकालि गमणवेरमणु वि।
जीवाहारु जीउ ण धरिज्जइ णियपहरणु ण वि कासु वि दिज्जइ।
घत्ता—अट्ठमिदिणि अवरु चउदसिहिं छिवंइ पुरंधि ण थण दुहडि॥
उववासु एक्कठाणु वि करहि एक्कभत्तु जिम णिव्वियडि॥ ३०॥

31

दुवई—जिम पुण कंजिएण भुंजेज्जसु झाइयधम्मझाणओ॥
णिवसिज्जसु कहिं पि जिणमंदिरि जणियमलावसाणओ॥ १॥

---

३. ST गेएं वेएं. ४. A दियबलु.

30. १. ST वंदइ पुणु वि गाय जो मारइ. २. AST गोसच. ३. ST लोहमहग्गहु. ४. A मयरक्खणु ५. ST पाउसि किं पि. ६. ST म च्छिव पुरंधिहिं थणदुहडि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पव्वि पव्वि तुहुं एम करिज्जसु सयलु वि कम्मु सहिंसु चएज्जसु।
अहमु पत्तु दंसणि जाणेज्जसु जीवदयावरेण होएज्जसु।
मज्झिमु घरवइ उत्तमु संजमि संठिउ समदमवयणियमुज्जमि।
अभयाहारोसहसुअदाणइं तिविहपत्तविरइयसंमाणइं।
दिण्णइं गरुयपुण्णसंताणइं पुरिसहं दिंति पंचकल्लाणइं।
दंसणु णाणु चरिउ चिंतिज्जइ किरियापुव्विं जिणु वंदिज्जइं।
रोसु तोसु हासु वि वंचिज्जइ समभावण भाविं भाविज्जइ।
इय सामाइउ भणिउ तियालइ घरपडिमग्गइ अहव जिणालइ।
अह पुणु उत्तरदिसि सवडंमुहु ठाइवि होइवि सुरवइदिसिमुहु।
मणिण णियच्छिउ जिणवरसिरिमुहुं कुगुरुकुदेवहं होवि परंमुहु।
अंतकालि सल्लेहणमरणिं अवसु मरेव्वउं णिज्जियकरणिं।

घत्ता—तं णिसुणिवि पभणइ पवरभडु अम्हहं कुलि मारणु पढमु॥
तं वज्जिवि सयलु परिग्गहिउ धम्महो केरउ कहिउ कमु॥ ३१॥

32

दुवई—हउं पुरवरतलारु पर मारमि दारमि भारभंडणे॥
महु वउ णत्थि देवमुणिपुंगवदुद्धरचोरमारणे॥ १॥

पियरपियामहकमसंचारिं महु कुलधम्मु वद्धु णरमारिं।
तं णउ मुअमि इयरु वउ लइयउ तं णिसुणिवि रिसिणा पुणु कहियउ।
एउ णियच्छहि अच्छइ णियडउ जिह भवि भमियउ कुक्कुडजुयलउ।
तिह भमिहीसि तुहुं मि संसारइ लग्गउ कउलधम्मवित्थारइ।
भासइ णरवरु कहहि चिराणउं तंबचूलजुयलस्स कहाणउं।
कहइ मुणीसरु मायापुत्तइं इह होंताइं लच्छिसंजुत्तइं।

घत्ता—अच्चंतकुसंगिं जायएण जायउ भाउ सकक्खडउ॥
मारिवि कुलदेविहि दिण्ण बलि पयहिं कित्तिमु कुक्कुडउ॥ ३२॥

31. १. S omits this line; T reads सयलु वि धम्मु अहिंस वरेज्जसु. २. ST omit this line, ३. A चरणु. ४. AS अंतयालि.

32. १. ST खंडणे. २. ST लवियउं. ३. T तुहुं जि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

33

दुवई--णियतणु धणु विणासिवि भयतुंगइं मरिवि छुहावसं गइं ॥
संजायाइं बे वि सिहिसाणइं पुणु पसवइं भुयंगइं ॥ १ ॥

पुणु झससुंसुमारभवयत्तणु पुणु अय आयय अयमहिसत्तणु।
संपइ जायउ पुणु वि णवल्लउ पेच्छसि रत्तसिहरमिहुणल्लउ ।
ता णरेण कुलधम्मु मुयप्पिणु लइयउ सावयवउ पणवेप्पिणु ।
अम्हइं बिण्णि वि णिसुणियजम्मइं मणि संगहियजीवदयधम्मइं ।
अइअउव्वलाहिं संतुट्ठइं लवियइं सुमहुरु कयंउक्कंठइं ।
णवरम्हारउ सद्दु सुणंतिं धणुगुण मग्गणि झत्ति कुणंतिं ।
भणिय देवि जसवइणरणाहिं मेहुणसण्णारुहणुच्छाहिं ।
पेच्छि देवि धणुवेउ अभग्गउ सद्दवेहु दक्खालमि लग्गउ ।
घत्ता—इय भासिवि राएं मुक्कु सरु वम्मइं तेण विलुक्काइं ॥
अम्हइं बिण्णि वि पंजरि ठियइं दहविहपाणिं मुक्काइं ॥ ३३ ॥

34

दुवई—बे वि मुयाइं कंडणिब्भिण्णइं सोणियकिमिणिहेलणे ॥
सुयपणइणिहि गब्भि संकमियइं कुसुमावलिहिं तक्खणे ॥ १ ॥

पावपरंपराइ णिरु वणियउ हउं सुण्हहे णियपुत्ति जणियउ ।
जा चिरु होंती माय महारी परमेसरि चंदमइ भडारी ।
सा णियकम्मि भववलि दिण्णी णत्तिहे णत्तिएण उप्पण्णी ।
गब्भट्ठिउ जुयलुल्लउ जइयहु मासाहारु ण रुच्चइ तइयहु ।
णवमासहि सुव कुमरहं जुवलउं संजणियउं सुहजोइं विमलउं ।
जणणिए हउं जणणेण वियाक्किउ अभयरुइ त्ति कुमारु पकोक्किउ ।
अभयमइ त्ति सत्ति णं कामहो[3] सस परिवड्ढइ कंति व सोमहो ।
बिण्णि वि सयलकलाणिउणियरइं जावइं णययाणंदियपियरइं ।
महु जुयरायपट्टु बज्झेसइ लोउ सभोउ भवणि भुंजेसइ ।
कज्जइं तेण मयामिससिद्धिहिं जसवइपहु पत्थिउ पारद्धिहिं ।

---

33. १. T कयउक्किहहि.

34. १. ST अइ. २. ST omit this line; AP add this in second hand. ३. STधम्महो; A वम्महो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्गइ काहलसद्दहो मिलियइं पंचसयइं सोणइयहुं चलियइं।
उववणि तरुवरतलि आसीणउ उग्गतत्ततवतावें खीणउ।
ता दिट्ठउ कुसुमसरवियारउ झाणारूढु सुदत्तु भडारउ।

घत्ता—पहु चिंतइ सिद्धिविणासयरु अवसवणउ कहिं आइयउ ॥
खलु खवणउ तइयइ बाहिरउ कहिं महु जाइ अघाइयउ ॥ ३४ ॥

35

दुवई—इय संचिंतिऊण मणि पिसुणिं णियसुणहउ विमुक्कओ ॥
णं चलु विज्जुपुंजु मणपवणजवालउ णं पिसक्कओ ॥ १ ॥

अणुमग्गें तहो पविणहरंकुर सोणइएहिं मुक्क णियकुक्कुर।
भसणहं ताहं सुतिक्खइं डसणइं णं रायहो मयमारणवसणइं।
वंकइं उज्जुयत्तु णइ पत्तइं पुंछइं णं पाविट्ठहो चित्तइं।
जीहइं णं हिंसातरुपल्लव णक्खइं णं तहो अंकुर णव णव।
सुणहा पावपुंजइं व दिट्ठा पारद्धिय ताइं वि णिकिट्ठा।
मयउलु दंति डसिउ वणि दिट्ठउ खद्धउ जेहिं सुणहं उच्चिट्ठउ।
ते जि सुणहं दारियसारंगइं अण्णु किं सुणहहं मत्थइ सिंगइं।
ते गुणवंत हसंति भसंति व आकोसंति खंति मारंति व।
मुणिवरतवसामत्थि णिरत्था संयल वि थियँ ओणावियमत्था।
सुणहँ णिएवि लेवि सइं असिवरु राउ पधायउ मारहुं मुणिवरु।
ताँ तहिं केण वणिंदिं बोल्लिउ वणि कल्लाणमित्तु अंतरि ठिउ।

घत्ता—विरएप्पिणु अंजलि वणिवरेण बोल्लिउ राउ जणत्तिहरु ॥
जइ मारहि जइवरु वयसहिय तो किं करइ विंझि समरु ॥ ३५ ॥

36

दुवई—पणवसु पवणवरुणवइसवणथुयं विसए विरत्तयं ॥
ता पडिच्चवइ णिवइ कोवारुणु पइं किं हो पउत्तयं ॥ १ ॥

---

35. १. T हरिणमंसु दंतावलिदिट्ठउ. २. ST सयल वि संठिय पणवियमत्था. ३. A ठिय. ४. ST ता तहिं अवसरि णं दइवें णिउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णग्गु अमंगलु [1]कज्जविणासणु जो मइं पावेव्वउ जमसासणु।
तहो पयजुइ पडंतु किं वुच्चमि वेयवंत दियवरहं ण रुच्चमि।
ता पभणइ वणि गंजोल्लियमणु णग्गउ रुद्दु धूलिधूसरतणु।
णग्गउ खेत्तवालु कत्तियकरु रणझणंतपयगयणेउरसरु।
लोहवलयकयकमखरवाहणि ण[2]ग्गी जोइणि मुंडपसाहणि।
भीमइं भक्खियमाणुसमासइं पयइं सव्वइं पिउवणवासइं।
हत्थगहियकंकालकवालइं मंगलाइं किह भणु हिंसालइं।
[3]संतु जीवदयवंतु सुणिम्मलु साहु भडारउ केम अमंगलु।
णग्गउ परमहंसु परु झायइ णग्गउ णग्गपहिं जणु जायइ।
तिर[4]यणभूसणु णग्गउ भावइ तो वि मुणिंदहु दो[5]सु जणु लावइ।
अण्णु वि पइं अण्हाणु किं दूसिउ णिंदावयणु मुणिंदहो भासिउ।
जणि अण्हाणु पउत्तु कुणंतहं किं पुणु रिसिहिं महातववंतहं।
[6]अयमलसलिलिं सुज्झइ कप्पडु देहु किं सुज्झइ दुक्कियलंपडु।
माणुसु पुणु थिप्पइ वसचोप्पडु लोहमोहमायामयसुकडु।
धुप्पइ धुप्पइ पुणु वि अचोक्खउ णयरोग्गसरपसरसारिक्खउ।
फुल्लमालचंदणधोयंबरु [9]ताम सुद्धु जा दूरि कलेवरु।

घत्ता—सव्वंगु पवित्तु महारिसिहिं पत्थिव दुद्धरतवधरहं॥
लालारसु लग्गउ तणुमलु वि हरइ रोउ रोयाउरहं॥ ३६॥

37

दुवई—जाणं[1]उं पायधूलिलेवेण वि णासइ पावपंकओ॥
ताणमिसीणमीसं[2] पणविज्जसु छड्डइ मच्छरोकओ॥ १॥

आमोसहि पवि[3]उलखेलोसहि जल्लोसहि विप्पोसहि णंसहि।
अहयमहाणसद्धि सव्वोसहि पयहो णउ डसंति अंगइं अहि।
[4]पयहो हरि करि पुणु वि ण लग्गहिं भिल्लपुलिंदइं णहलवलग्गहिं।

36. १. ST कज्जपणासणु. २. A णग्गउ. ३. ST सव्व. ४. ST तिणयणु णियतणु णग्गउ भावइ. ५. ST दोसइं लावइ ६. AP अयमयसलिलिं. ७. ST omit this line. ८. ST omit this line. ९. ST ता सुधुंय
37. १. ST जाणं; A ाजिणम. २. सीसु. ३. AST पविमल. ४. ST omit this line.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जइ रूसइ तो पाडइ सक्कु वि मेरुमहीहरु सउं तिल्लोक्कु वि ।
तेयरिद्धिपज्जलियसिट्ठिहि को किर थक्कइ पयहो दिट्ठिहि ।
पर किं बलि वि खलाहं ण रूसइ पणवंतहं सज्जणहं ण तूसइ ।
अइमज्झत्थु महत्थु महाजसु जीवियमरणि मुणिंदु समंजसु ।
पयहो अरिणरसत्थहिं घित्तइं लइ ताइं जि हवंति सयवत्तइं ।
इय पवड्ढहो कित्तिणिहाणहो करु पसारिज्जइ केम किवाणहो ।
सीहहं सद्दूलह वि अणुग्गहु जेण कियउ जिणधम्मपरिग्गहु ।
अहवा हउं किर बोल्लमि सावउ पेक्खु पेक्खु मुणिवरहं पहावउ ।
परमारणसीलइं लल्लक्कइं सुणहइं पंचसयइं पइं मुक्कइं ।
मुणिवरपायमूलि लोलंतइं चललंगूलदंडचालंतइं ।
पेक्खु पेक्खु मा मुज्झहि मोहिं वंदहि साहु म डज्झहि कोहिं ।

घत्ता—णामेण सुदत्तु गुणोहणिहि होंतउ राउ कलिंगवइ ॥
कुसुमालघरहु बंधहुं वहहु णिव्विण्णउ इहु हुवउ जइ ॥ ३७ ॥

38

दुवई—णियणायाहियारिथियदियवरणियरेण विणिउत्तओ ॥
तक्करपाणिपायसिरखंडणदंडणविहिविरत्तओ ॥ १ ॥

जीवधणासपास छिंदेविणु जुण्णउ तणु व सरज्जु मुएविणु ।
थिउ गिरिगहणे महरिसि होइवि भो भो जसवइ रोसु पमाइवि ।
पणवहि चरणजुयलु पयहो तुहुं कर मउलेवि अवलोहि रिसिमुहुं ।
इय कल्लाणमित्तवयणुल्लउं लग्गउ कण्णि णरिंदहो भल्लउं ।
वंदिउ गुरु गुरुआरए भत्तिए तेण वि सव्वजीवकयमित्तिए ।
धम्मलाहु होउ त्ति पघोसिउ वच्छल्लें महुरक्खरु भासिउ ।
चिंतइ णियहियवइ णिवसुंदरु अचलत्तेण धीरु गिरि मंदरु ।
गंभीरत्तणेण रयणायरु तेएं सइं पुणु चंदु दिवायरु ।
णं पुंजेप्पिणु ठवियउ संजमु मुणिवेसिं णं संठिउ उवसमु ।
णं माहप्पसारु तवसत्तिहि आवासउ णं जिणवरभत्तिहि ।

---

५. ST चंदधु वि सक्कु वि तेलुक्कु वि. ६. ST लग्गइं ताइं. ७. ST पच्चक्खु. ८. ST लोलंतइं. ९. ST बंधणवहेण.
38. १. A पउत्तउ. २. ST छिंदेप्पिणु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णं दयवेल्लिहि कीलागिरिवरु   खंतिपवरपोमिणियहि सरवरु ।
पइउ साहु साहु सुइ संतउ   मइं पाविं मारण आढत्तउ ।
घत्ता—पच्छित्तु करमि दुव्विलसियहो सीसु लुणेप्पिणु अप्पणउ ॥
णिव्वंचितिउ मुणिवि मुणीसरिण जंपिउ सवणसुहावणउ ॥ ३८ ॥

39

दुवई—हो हो हो णरिंद किं चिंतिउ अलिउलणीलकेसयं ॥
णिंदणगरुहणाइ तमु णासइ मा खंडहि ससीसयं ॥ १ ॥
ता पहु चवइ गुज्झु किह लक्खिउ   मणु वि महारउ मुणिणा अक्खिउ ।
हियउ मुणेवउं किं किर साहसु   भणइ सेट्ठि परमेट्ठि समंजसु ।
लोयालोयउ जं जि समिच्छहि   तं जि कहइ जइवरु परिपुच्छहि ।
पुणरवि जगरवि रिसिहि णवेप्पिणु   भणइ राउ महु ताउ मरेप्पिणु ।
जसहरु सहुं जणणिए कहिं जायउ   कहिं जसोहु जसपसरियछायउ ।
कहइ सूरि सियपलिउ णियच्छिवि   तुह जणणहो कुललच्छि पयच्छिवि ।
दुद्धरु तउ चरेवि भयमयवहु   गउ सुरहरहो जसोहु पियामहु ।
परियणसयणाणंदजणेरइ   पट्टबंधि णरणाह तुहारइ ।
कुलदेवयहि पुरउ परिवायवि   पिट्ठि विरइउ कुक्कुडु घाइवि ।
एत्थु जि णिद्दयइं मायापुत्तइं   गरलवसेण पत्त पंचत्तइं ।
णरवइ संजायइं सिहिसाणइं   एम जीउ पावहं फलु माणइ ।
सुणहिं मारिउ जो मोरुल्लउ   सो परियाणसु तुहुं जणणुल्लउ ।
पइं फलहिं हउ फोडियमच्छउ   सारमेउ जो महिपलहत्थउ ।
सो अज्जियहि जीउ जाणेज्जसु   एवहिं जीवहं जीविउ दिज्जसु ।
घत्ता—पुणु विसहरारि तुह पिउ हुवउ तहो मायरि भीयरु उरउ ॥
सो खद्धउ तेण भयंकरिण सइं पुणु मरिवि तरच्छहउ ॥ ३९ ॥

---

३. S दयदेविहि. ४. ST परम. ५. ST सत्तउ.

39. १. ST जइ तुहुं. २. A समप्पिवि. ३. A तवेवि. ४. T णयणाणंद. ५. S मारिवि. ६. ST एत्थुज्जेणिहिं मायापुत्तइं. ७. ST भवसायरि जायइं. ८. ST भीसणु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

40

दुवई—मुउ सिप्पाणईहि उप्पण्णउ खुज्जयणारिमारओ ॥
पइं मारियउ जणणजणणी चिरु दुद्धरु सुंसुमारओ ॥ १ ॥

वेपं भासिउ भट्टमरट्टह　　रोहियमच्छु दिण्णु जो भट्टह ।
तेरउ बप्पु पइं जि संताविउ　　सो कयपहरइं विहुरइं पाविउ ।
तहिं जणणीयहि अइयहि अइयउ　　हूवउ पावपडलसंछइयउ ।
जूहिंदे[1] सिंगग्गे भिण्णउ　　मायारूढउ तहिं जि विवण्णउ ।
जीविउ वीयबिंदुसंमाइउ　　अप्पउ अप्पएण मइं जाइउ ।
थिउ पुणु गब्भंतरि णियमायहि　　भंगुरअंगो णामियकायहिं ।
मयमाराणि पारद्धिण सिद्धी　　सा छाली पत्थिव पइं विद्धी ।
पियमायरिहि पोट्टु दोहाविउ　　छावउ जीवमाणु अवलोइउ ।
अप्पिउ धाणियहिं तेण जि रक्खिउ　　घरु आणिउं ता आमिसु भक्खिउ ।
पाउ लुणेवि दिण्णु णियमायहि　　पुव्वजम्मि तहु तणियहि जायहि ।
अयहयमय णिव तुह बाणग्गि　　कय पुणरवि सयत्त कयमग्गि ।
हूई सिंधुमहिसु खयरूवउ　　जाणसि किण तुरयजमदूअउ ।
उअरहो हेट्ठि अग्गि जालाविउ　　जो पइं विरसमाणु पउलाविउ ।
सो सेरिहु अज्जी य तुहारी　　अवसु ण चुक्कइ वाय महारी ।

घत्ता—सो छेलउ महिसु वि संभरहि अवरपक्खि जहिं जइयहुं ॥
पइं खंडिवि खंडिवि वंभणहं खाउ दिण्णु तहिं तइयहुं ॥ ४० ॥

41

दुवई—बे वि मुयाइं[1] ताइं पुण कुक्कुडपक्खिभवे पवण्णइं ॥
तित्थु सुणेवि सद्दु णंदणवणि पइं बाणेण भिण्णइं ॥ १ ॥

तहिं मरेवि णिरुवमलायण्णइं　　कुसुमावलिहिं गब्भि उप्पण्णइं ।
एम बप्प विसहियसंसारइं　　अभयमईअभयरुइकुमारइं ।
एवहिं पुण्णबंधपारंभइं[2]　　घरि अच्छंति तुज्झ पियडिंभइं

40. १. ST जूहेसें.

41. १. AST मयाइं. २. ST बद्धपुण्णपारंभइं.

स...१०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमियमइ त्ति देवि तुह मायरि मंसासिणि[3] णं भीमणिसायरि।
गुणगणवंत महारिसि णिंदिवि कुगुरुकुदेवहं चरणइं वंदिवि।
मीण जियंत जियंत तलेप्पिणु भोयणवेलइ विप्पहं देप्पिणु।
सइं भक्खेप्पिणु मज्जु पिएप्पिणु जारहो कारणि पइ मारेप्पिणु।
णिट्ठियट्ठि कुट्ठेण कुहेप्पिणु अइरउद्दझाणेण मरेप्पिणु।
पंचमणरयहो गय सा पाविणि जसहररायहो केरी भामिणि[4]।

घत्ता—दुक्कम्मि णिवडइ णरयबिले सुहिउ कहिउ अवगण्णइ॥
सिरिपुप्फयंतजिणवरवयणु मूढु लोउ णायण्णइ॥ ४१॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे
जसहरमणुयजम्मलाहो णाम तइउ परिच्छेउ समत्तो॥ ३॥

---

३. ST मासासिणि ४. ST भाविणि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

IV

*अश्रान्तदानपरितोषितबन्दिवृन्दो
दारिद्ररौद्रकरिकुंभविभेददक्षः ।
श्रीपुष्पदन्तकविकाव्यरसाभितृप्तः
श्रीमान्सदा जगति नन्दतु नन्ननामा ॥ १ ॥

1

णिसुणिवि दुहभरियइं मह्नु भवचरियइं जसवइणिवहियउं[1] चलिउ ॥
सोयरसु पघाइउ अंगि ण माइउ णयणंसुय धारहिं गलिउ ॥ ध्रुवकम् ॥

दुवई—मुणिकमकमलजुयले लोलंतु पघोसइ एमं[2] पत्थिओ ॥
हा हा मज्झु जणणु जिं मारिउ सो भुवणयलि णिक्किओ ॥ १ ॥

अज्जु जि संघारमि पाववेरि — लइ ण करमि केण वि समउ खेरि ।
पिट्ठमएं कुक्कुडएं हएण — मणि मण्णिएण दुरिएं कएण ।
गुरुयणु पत्तउ एवड्ड दुक्खु — डज्झउ माणुसु जं चम्मचक्खु[3] ।
बप्पु वि णो लक्खिउ जम्मि जम्मि — मइं माराविउ णिद्धम्मि धम्मि ।
जहिं दिसि गुरु जिणवरु णत्थि देउ — तहिं कुलि कहिं जीवह दयविवेउ ।
वाहिज्जइ जहिं वणयरहं सत्थु — तहिं बंधु वि हम्मइ परभवत्थु ।
जीवउलइं मइं णिहयाइं जाइं — को लक्खिवि सक्कइ ताइं[4] ताइं ।
जइचरणकमलसंणिहियचित्त — भो भो वणिवर कल्लाणमित्त ।

घत्ता—सीहासणछत्तइं[6] वरवाइत्तइं विविहइं चिंधइं चामरइं ॥
रहवर मायंगइं पवरतुरंगइं[5] भडसेण्णइं पंजलियरइं ॥ १ ॥

2

दुवई—लइ पत्थिवसुहाइं अणुहुंजउ अभयरुई कुमारओ ॥
मह्नु दिक्खहे पसाउ पडिवज्जउ भणु भणु तुहुं भडारओ ॥ १ ॥

---

*This verse is omitted in S and T.

1. १. ST णिवहियवउं; A णिवहु हियउं. २. ST एव. ३. A चम्मरुक्खु. ४. ST एत्थु ताइं. ५. S चवल. ६. S सिंहासण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कयलीकंदलसोमालगत्त अभयमइ कुमरि सिसुहरिणणेत्त ।
दिज्जउ कुमरहो रिउमद्दणासु अहिछत्ताहिवणिवणंदणासु ।
तहिं अवसरि पुरवरि [1]वॆत्त पत्त लइ चारुसिद्धपारद्धिजत्त ।
संजायउ रायहो धम्मलाहु तवचरणहो उवरि णिवद्धु गाहु ।
ता तहिं चवंति रायाणियाउ घणरम्मपेम्मसावियाणियाउ ।
क वि [2]भणइ हुवउ पियातिलयछेउ हो हो किं किज्जइ पत्तछेउ ।
वहु का वि भणइ किं लिहहि चित्तु पहु वट्टइ कामविरत्तचित्तु ।
क वि पभणइ किं [3]मुहँमंडणेण राणउ रंजिउ तवमंडणेण ।
वहु क वि पमेल्लइ पडहु पवरु [4]विहिवायँइ लग्गउ किं पि अवरु ।
क वि कुरुल करंति करंति थक्क लइ केसुप्पाडणविहिपढुक्क ।
पिय का वि लिहंति कवोलवत्तु [5]हा दइव काइं विवरीउ पत्तु ।
उट्ठिय क वि मुत्तियगुणि ण दिंति मुणिगुणणिच्चलु णियमणु ठवंति ।
क वि पभणइ म करहि तिक्ख णक्ख वरइत्तु लएसइ परमदिक्ख ।
क वि णिसुणिवि पियवत्ताइं [6]खीणँ देहइ कंचुलिय ण थाइ लीण ।
इय णाणाविह जंपंतियाउ पियविरहभएं कंपंतियाउ ।
पासेयबिंदुथिप्पंतियाउ कंचीकलाव गुप्पंतियाउ ।
[7]णँयणंजणंसुमलमइलियाउ मणिरसणाकिंकिणिमुहलियाउ ।
णेउरझंकारमणोहराउ उण्णयघणपीणपयोहराउ ।
[8]सयल वि अंतेउरराणियाउ जहिं राउ तहिं जि संपत्तियाउ ।

घत्ता—णहपहजियसुमणिहिं चलहारमणिहिं पत्थिउ रमाणिहिं पत्थियउ ॥
विणडिउ तवचरणिं सिरिसुहहरणिं तुहुं दइवेण गलत्थियउ ॥ २ ॥

3

दुवई—अम्हइं अच्छराउ तुहुं सुरवइ [1]सउहलयं विमाणयं ॥
पियसंजोग्गु सग्गु किं सग्गसिरे कुडिलं विसाणयं ॥ ६ ॥

2. १. ST पत्त वत्त. २. ST पभणइ हुउ. ३. ST महुं मंडणेण. ४. A विहिवायणलग्गउ. ५. ST हा दइयउ किं पि विवरीउ पत्तु. ६. ST झीण. ७. ST णयणंजण मुहुं मइलिंतियाउ. ८. S and T omit this line and A and P give it in second hand.

3. १. S सउहयलं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रइकरणालिंगणधुत्तियाउ [2]पणयंगणाउ कुलउत्तियाउ ।
इय पलवंतियउ ण इच्छियाउ सयलउ राएं णिब्भच्छियाउ ।
ढक्कारव[3]चल्लियगयवरेहिं हिलिहिलिसरेहि सियहयवरेहि ।
णग्गुग्गखग्गकरकिंकरेहिं मणचडुलतुरयणियरहवरेहिं ।
परिवाइयाइं सहयरणरेहिं विज्जिज्जंतइं चलचामरेहिं ।
सिग्गिरिणंदणवणसद्दलाइं छत्तावलिछाइयणहयलाइं ।
मरु[4]चलियघुलियणाणाधयाइं सिवियाजाणिं बिण्णि वि गयाइं ।

घत्ता—परिसेसियपरियरु [5]सधउ सचामरु चरियरयणउज्झियसयरु ॥
खोणियलि णिविट्ठउ दोहिं मि दिट्ठउ णरवइ णं सामण्णु णरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—ता मुणिवयणकमलणिग्गंतझुणीकहियं कहंतरं ॥
अम्हइं तंमि बिहिं मि तं चिय पुणु[1] संभरियं भवंतरं ॥ १ ॥

भउ सुमरिवि बिण्णि वि मुच्छियाइं लंजियहिं करेण पडिच्छियाइं ।
अहिसिंचियाइं सीयलजलेण आसासियाइं चमराणिलेण ।
परियाणियचिरभववेयणाइं कह कह व समागयचेयणाइं ।
मलिणाणणाइं पुणु उट्ठियाइं मुणिचरणजुयलि णिवडिवि ठियाइं ।
अम्हइं मुच्छइं मुच्छिय मयच्छि कुसुमावलि णिवकुलकमललच्छि ।
कोमलकरयलताडियउरेण सोइय सयलिं अंतेउरेण ।
वहु का वि भणइ सोहग्गथत्ति उट्ठहु माइ मणहरणसत्ति ।
[2]क वि भणइ ण तुंडु वि महु णिएइ पइं भणिउ णाहु तंबोलु लेइ ।
उट्ठहु देवि करि साहिलासु देवाविउ पइं महु ण्हाणवासु ।
दूहवियहि पइं महु किउ विलासु भूसिवि पेसिय णिय[3]पहाणिवासु ।
वहु का वि भणइ तुहुं ण वि सवत्ति महु माय बहिणि अविहिण्णमित्ति ।
उट्ठहु भद्दि कारुण्णु करहि वउ लिंतु जंतु णियकंतु धरहि ।

---

२. T पणियंगणाउ. ३. ST चलियसुगयवरेहिं. ४. ST अम्हइं विलुलियणाणाधयाइं, ५. ST अणउध अचामरु.

4. १. ST पुणो भरियं, २. ST उट्ठहु देवि लहु बोलु देइ. ३. ST हउं पियहु पासु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—ता मुच्छ पमाइवि अम्हइं जोइवि पयलियवाहजलोल्लियइं ॥
महएविहि णेत्तइं ओसासित्तइं णं सयवत्तइं डोल्लियइं ॥ ४ ॥

5

दुवई—चिंतइ रायघरिणि मुणिवरवाणीरवदिण्णकण्णइं ॥
एयइं डिंभयाइं किं बिण्णि वि मुच्छावसणि[1]सण्णइं ॥ १ ॥

इय चिंतिवि करसंजोइयाइं आलिंगिवि अंक[2]इं ढोइयाइं ।
मुणिणा णाणेण णियच्छियाइं तुम्हइं किं जाणह पुच्छियाइं ।
अम्[3]हइं संभरहं पउत्तु सव्वु किं रिसि भासंति असच्चु कव्वु ।
अम्हइं चंदमइजसोहराइं अम्हइं सिहिसाणइं थलयराइं ।
अम्हइं पण्णयरिउउरयराइं अम्हइं सिप्पाणइजलयराइं ।
अम्हइं अंय[4]अयमहिसय हुआइं अम्हइं खगाइं पुणु तुह सुआइं ।
जाणहि णियणंदणणेहतण्हि इहजम्ममाइ चिरजम्मसुण्हि ।
ता मुणिपयपोमइं पुंजियाइं अम्हइं राएण विसज्जियाइं ।
णियणयरि गंपि मंदिरि ठियाइं कल्लाणमित्तु जंपइ पियाइं ।
तुह पिउ पा[5]वज्जइ चलिउ अज्जु तुहुं परिपालहि सत्तंगु रज्जु ।
तं णिसुणिवि मइं पहसंतएण बोल्लिउ भव[6]भयसमसंतएण ।
घत्ता—सो महु पियणंदणु णयणाणंदणु इह मइं रज्जि परिट्ठविउ ॥
एवहिं तहो तणुरुहु हउं ससहरमुहु दइवि चंगउ सिक्खविउ ॥ १५ ॥

6

दुवई—एवहिं दिण्णलइयपरिवाडि वि लंघिवि जामि गिरिगुहं ॥
फेडमि मोहजालघणमुहवडु पेच्छमि तवसिरीमुहं ॥ ६ ॥
ता भणइ सेट्ठि गुणगणविसालु तवचरणहो अज्ज वि कवणु कालु ।
पहिलारीपहुणा अज्जणिज्ज [1]जाणेव्वी सयल वियारविज्ज ।
जि[2]णधम्माहम्मविही तइ त्ति वत्तवि अत्थाणत्थहं पवित्ति ।

---

5. १. S पसंगयं. २. S अंके पढोइयाइं. ३. ST अम्हहिं पउत्त संभरहु सव्वु. ४. S अम्हइं अयमहिसय भवि हुयाइं. ५. AST पव्वज्जहे. ६. S भवभवसमसंतएण.

6. १. S जाणेवि. २. AST जण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहिं भुवणि णयाणय ववहरंति　　सा दंडणीइ णिच्छउ कहंति ।
एयहिं वट्टइ जगि जोउँ खेमु　　संपज्जइ सुहुं धम्मत्थकामु ।
अणवरयभुत्तसंपुण्णभोउ　　एयासु परिट्ठिउ जियइँ लोउ ।
राणउ परिरक्खइ दंडधारि　　विज्जउ चत्तारि वि दोसहारि ।
विणु राएं जगि को करइ दंडु　　विणु दंडें जणवउ कम्मचंडु ।
परधणपररमणीहरणकामु　　लइ ण सहइ धम्महो तणउं णामु ।
घत्ता—खमदमसमसाचिं विउलसउचिं जीवदयाइ पवाण्णियउ ॥
सामण्णपँवण्णहं लिंगिहिं वण्णहं एहु धम्मु मइं मंण्णियउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—इंदफणिंदचंदविज्जाहरणरवरणियरपुज्जिओ ॥
णासइ एहु धम्मु जिणभासिउ णिवसासणविवज्जिओ ॥ १ ॥
ता मइं मायाभावेण रज्जु　　इच्छिउ पिउणा दिण्णउ अवज्जु ।
अहिसेयकलसजलखलहलंतु　　णाणारयणावलिपज्जलंतु ।
देवंगवत्थपल्लवललंतु　　कामिणिकरचामरचलवलंतु ।
पारद्धय उप्परि परिघुलंतु　　उत्तुंग मत्त गय गुलुगुलंतु ।
मणगमण तुरंगम हिलिहिलंतु　　मयणाहिगंध महमहमहंतु ।
कप्पूरफार महुयर मिलंतु　　भूवालविंदसेविउं महंतु ।
महु रज्जु देवि जसवइणरिंदु　　गउ मइं पुच्छिवि वंदिवि मुणिंदु ।
लइयउ तंउ सहुं अंतउरेण　　उत्तारियकंकणणेउरेण ।
णं किण्हणीललेसाविसेस　　उप्पाडिवि घल्लिय कुडिलकेस ।
णिवसणु वसणु वि परिहरिउ तुरिउ　　रिसिविंउ संखेविं तेण धरिउ ।
आढत्तु घोरु तवचरणु तेण　　जंम्माहिउ वाहिउ जंति जेण ।
मिल्लेवणु बिण्णि वि रायदोस　　माणावमाण हयकम्मपास ।
णिवसइ णिज्जणि काणणि मसाणि　　आहारु लेइ मासावसाणि ।

---

३. ST णयाणयवह वहंति. ४. ST जोयखेमु. ५. A सहुं धम्मत्थु कामु ST सुहुं धम्मत्थु केमु. ६. S जियउ. ७. AP पसण्णहं. ८. T माणियउ.

7. १. ST खलहलंतु. २. ST चलचलंतुं. ३. ST पालद्धिय. ४. ST अंबर. ५. ST करि. ६. ST ललियंग. ७. ST णिरु. ८. AP omit कप्पूरफारमहुयरमिलंतु. ९. ST वंदिउ. १०. A वउ. ११. ST जें परिहरिउ. १२. ST पडिवण्णउ तेण रिसिंदचरिउ. १३. ST जम्माइउ. १४. AT रोस.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—घरमोहु णिसुंभिवि णियमणु रुंभिवि तिण्णि वि सल्लइं खंडियइं ॥
गुणमणिचिंचइयइं पिउपावइयइं पंच वि करणइं दंडियइं ॥ ७ ॥

8

दुवई—ताम मए सवत्तितणयस्स णयस्स तणु व्व छड्डियं ॥
दिण्णं जसहरस्स मणिभवणघणं कुललच्छिमंडियं ॥ १ ॥

उवसमहरि णं परलोयकुहिणि हउं एह अवर महु लहुयवहिणि ।
बिण्णि वि तं चिय उववणु गयाइं णवियाइं साहुणाहहो पयाइं ।
संसारमहाभरभग्गएहिं दोहिं मि गुरुचरणालग्गएहिं ।
भासिउ मुणि दिक्खइ करि पसाउ ता भणइ भडारउ वीयराउ ।
तुम्हइं बालइं अइपत्तलाइं अज्ज वि कुवलयदलकोमलाइं ।
तवचरणकरण परिणइदुसज्झ पुत्तय डिंभहं णउ होइ गिज्झ ।
होएप्पिणु उत्तमसावयाइं गुरुसेवए सिक्खहं सुयपयाइं ।
परसमयारूढसढत्तणाइं लोइयवेइयमूढत्तणाइं ।
आसंक कंख वि दिगिंछ हणहं मा कहिं मि कुलिंगिचरित्तु थुणहं ।
मा कुणहं दिहीहर दप्पसंगु रक्खहं सुविसुद्धउ अंतरंगु ।
सासणहं पहावण करिवि णवहं पहभट्ठु वि पुणु जिणमग्गि ठवहं ।
आउंचहं उट्ठिउ हरिसु रोसु मा गिण्हहं सम्माइट्ठिदोसु ।
चउभेयहु संघहो करहु पणउ वच्छल्लु सुविज्जावच्छु विणउ ।
सुविसुद्धउ दंसणु एम होइ इयरहो पुणु सहसा खयहु जाइ ।

घत्ता—परणयविद्धंसणु सम्मदंसणु पहिलारउ थिरु मणि धरहं ॥
पुणु बज्झब्भंतरु भवसयमलहरु पच्छइ दुद्धरु तउ धरहं ॥ ८ ॥

9

दुवई—सेणिण विणु णिवेण सुरदुम्भियधयवडपंडुराहणं ॥
विणु सद्दंसणेण किं कीरइ तवचरणं पि दारुणं ॥ १ ॥

---

8. १. AP जसहणस्स. २. उवसमसुहरिणि. ३. ST उववणु पुणु गयाइं. ४. S अइवालइं पत्तलाइं. ५. S सुयवयाइं. ६. ST तप्पसंगु. ७. AT सुवेयावच्चु. ८. ST णियमणि. ९. भवकलिमल.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मा जंपह कासु वि कण्णसूलु वउ धरह अहिंसा सच्चमूलु ।
सामाइउ पालह जीवमित्ति गुरुदेवभत्ति [1]उज्झायभत्ति ।
सिद्धहं साहुहु वंदणविहत्ति पोसहु समेरभत्तहो णिवित्ति ।
सचित्तु म धंसह आउ वाउ महि जलणु वि अवरु वि हरियकाउ ।
वज्जह णिसिभोयणु जइ वि मिट्ठु मा जोयह थी पुरिसु वि सुइट्ठु ।
दिढु धरह विसुद्धउ वंभचेरु [2]आरंभु चयहं कयलोयवेरु ।
अब्भसह पयत्तिं अंग[3]चाउ मिच्छह अणु मणु मण्णेवि पाउ ।
णिद्दिट्ठु मुएवि भिक्खाइ अडह एयारहमइ गुणठाणि चडह ।
बंधणु ताडणु मारणु वि गणिउं पहरणधारणु वि रउद्दु भणिउं ।
तणुकट्ठाणिट्ठहं जायएण उप्पज्जइ इट्ठविओयणेण ।
रुद्दट्टु मुएविणु दुरियठाणु णिच्चं चिय झायह धम्मझाणु ।
घत्ता—हयवम्महतावउ कयसमभावउ दुग्गइगमणणिवारणिउ ॥
चिंतह अणुवेक्खउ जगगुरुसिक्खउ धम्मरुक्खजलसारणिउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—तणुलायण्णु वण्णु णवजोव्वणु रूवविलाससंपया ॥
सुरधणुमेहजालजलवुब्बुयसारिसा कस्स सासया ॥ १ ॥
[1]सिसुतणु णासइ णवजोव्वणेण जोव्वणु णासइ वुड्ढत्तणेण ।
वुड्ढत्तणु पाणिं चलियएण [2]पाणु वि खंधोहिं गलियएण ।
खंध वि सगुणोहिं परिणमंति बहुविह पज्जायहं परि[3]णवंति ।
परिगलइ राउ वइरायएण णीरोयत्तणु रोयत्तणेण ।
जीविउ पावइ पाणावसाणु सिरिवंतु होइ दालिद्दठाणु ।
गच्छंतु भाणु जीवंतु जीउ कालिं अत्थवणहो को ण णीउ ।
जइ वज्झइ रायहो आउगंठि ता किं किउ सोहणु जणियतुट्ठि ।
वरिसहं वरिसहं वरिसोणु ठाइ भववद्धउ आउपमाणु जाइ ।
[4]वॅलियइं कुडिलत्तणउज्जुयाइं अइदीहइं तिट्ठइं रज्जुयाइं ।
[5]णॉरीखुंटइ पसु पुरिसु बद्धु कालिं सदूलें झत्ति खद्धु ।

---

9. १. S उज्झायवत्ति. २. S सारंभु. ३. S संगचाउ.

10. १. ST सइसवु. २. ST स च्चिय. ३. ST परिभमंति. ४. ST अइवलियए कुडिलाणुज्जयाइं. ५. ST णारीखाणुए.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता—णरु सुक्खु समीहइ मरणहु बीहइ देवहं सरणु पईसरइ ॥
विज्जहो घरु गच्छइ मंतु पपुच्छइ खयकालहो णउ उव्वरइ ॥ १० ॥

11

दुवई—परिवारेण लच्छि भुंजिज्जइ रक्खिज्जइ महारणे ॥
धावइ सव्वु को वि ण[१]रणाहहो तंदुलपसइकारणे ॥ १ ॥

परियणु भुंजइ माहि विहउ रम्मु पक्कु जि णरवइ अणुहवइ कम्मु ।
च[२]उदसु भूयगामंतरेसु जिउ णि[३]वसइ सयलकलेवरेसु ।
णियपुण्णपावसंव[४]लइं लेवि पुणु अण्णभवहो पाहुणउ जाइ ।
पक्कु जि जं[५]गि जीउ सुदुण्णिरिक्खु हिंडइ चउरासीजोणिलक्खु ।
णयणइं अण्णण्णइं घाणु अण्णु जीवहो संफासणु को[६] विभिण्णु ।
अण्णण्ण कण्ण भवि भवि हवंति अण्णण्णउ जीहउ मुहि ललंति ।
अण्णण्णइं कम्मइं संगिलंति अण्णण्णइं विविहंगइं मिलंति ।
जीवहं सयरायरु सव्वु अण्णु जड मोहं[७]महादहि किं णिविण्णु ।
णारयतिरिक्खसुरणरभवेसु परिभमइ भावतमविब्भमेसु ।
सयलामलकेवलणाणसयणि वित्थिण्णि अणंताणंतगयणि ।

घत्ता—जगु ठियउ पहिल्लउ णावइ मल्लउ पल्हत्थिवि केण वि ठविउ ॥
मज्झिमु पविमज्झु व उवरिल्लउ णिव मुणसु मु[८]यंगु व मुणि चविउ ॥ ११ ॥

12

दुवई—ण किउ ण धरिउ बंभरुद्दाइहिं ण य कालिं विलीणउ ॥
ण हि ठिउ [१]पक्कखंभु तिल्लोक्कु वि चउदहरज्जुमाणउ ॥ १ ॥

जं तिहुयणु भासइ वड्ढमाणु तं चउदहरज्जुपरिप्पमाणु ।
तं फासवंतु तं वण्णवंतु तं गंधवंतु तं रूववंतु ।
तं सद्दवंतु भासइ अणंतु तं रसविसेससब्भाववंतु ।

---

11. १. A णरणाहु वि. २. ST चोद्दहसु. ३. ST हिंडइ. ४. A संवलउ. ५. S जणि. ३. S अण्णु. ७, ST महद्दहि. ८, S मइंगु.
12, १. ST एक्कखंधु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो खंधु भणिज्जइ णिरवसेसु तस्सद्धउ जिण पभणंति देसु।
अद्धस्स वि अद्धउ पुणु पएसु परमाणू अविहायउ असेसु।
तं पुग्गलु पेक्खिवि परिणवंतु सचेयणभावें सच्चवंतु।
अवयासु लहंतु अलद्धठाणु तं पिच्छिवि णहथलि गच्छमाणु।
भणु कारणु तं मइं दिट्ठु कज्जु तं भणइ महामुणि मह्नु मणोज्जु।
णिसुणहि सुअवट्टणलक्खणालु परिणामहो कारणु होइ कालु।
चेयण जीवहं कारणु कहंति अवयासहो आयासु जि भणंति।
ठाणहो अहम्मु गमणहो वि धम्मु गुरु भणइ मज्झु परिगलियछम्मु।
भावहं सव्वहं संघाउ लोउ एयहिं विवज्जिउ धुउ अलोउ।
घत्ता—जगि छाहहि कारणु उण्हणिवारणु आयवत्तु अहिणाणियउं॥
इय एहउ सीसइ जं णउ दीसइ तिं कज्जि परियाणियउं॥ १२॥

13

दुवई—पुग्गलु सावयासु परिणामिउं अवरु वि चेयणालउ॥
आलोयंतु जाइ णहि ठाइवि दीसइ कज्जमेलउ॥ १॥
इह कारणेण विणु कज्जु णत्थि करिमिहुणि विणु कहिं हवइ हत्थि।
विणु पुग्गलेण कहिं गुणरसाइं विणु जीविं कहिं चेयण विहाइ।
आयासिं विणु अवयासु लहहिं कहिं पुग्गल जीव मुणिंद कहहिं।
विणु कालें कहिं परिणवइ वत्थु विणु धम्माहम्में कहिं पयत्थु।
गइठाणु वि लहइ महाणुभाव एए लोयहं किर छह सहाव।
परिणवइ खंधु कालाउ भिण्णु सज्जीउ होइ जीवाउ छिण्णु।
लइ धम्माहम्मु ण होइ जइ वि गच्छइ अच्छइ सो बप्प तइ वि।
अण्णु वि णहि वाउ लहंतु कमइं तिजगब्भंतरि भुवणयलि भमइं।
तहिं ठाइ ण जाइ अलोयथत्ति जा तिल्लोकहो आधारसत्ति।
चलथिरलक्खणलक्खियविमुत्ति सा जाणसु धम्माहम्मजुत्ति।

२. ST णिबद्धठाउ; P notes णिबद्धठाणु इति वा पाठः and this reading is given in A. ३. ST चेयणहे जीउ. ४. AP भावहं छभाव.

13. १. S अण्णु वि. २. S णहे; P णहु. ३. ST वि आइ. ४. S and T omit this line; P gives it in second hand. ५. S णच्छइ. ६. S वयासु. ७. S तयलोक्कहो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमेट्ठि पियामहु सच्चसंधु पणवहु जिणवरु भव्वयणबंधु ।
भावहं छिंदइ व्व सव्वायरेण मा खज्जह मोहणिसायरेण ।

घत्ता—हड्डावलिविहियउ चम्मिं पिहियउ पूयगंधभीसावणउं ॥
माणुसहो कलेवरु चंडालहु घरु जिह तिह णिरु चिलिसावणउं ॥ १३ ॥

14

दुवई—वोक्कयरत्तपित्तमत्थिक्कंतावलिसुक्कसंगमं ॥
रयईणीरखीरसंमद्दसमुब्भवकद्दमोवमं ॥ १ ॥

इय सत्तधाउविट्टलु णरंगु कामिं दुद्दंतिं अंतरंगु ।
मणि वसइ कामु मज्जायमुक्कु कोहु वि परबंधणहणणढुक्कु ।
दप्पुब्भडु माणु अतुट्ठि लोहु मइरा इव मोहणसीलु मोहु ।
परवंचणयरु मायाकसाउ सोउ वि कयहाहारवणिणाउ ।
कुलवललच्छीमयफुट्टणेत्तु ण वि पेक्खइ विणु मज्जेण मत्तु ।
णेहेण णिबद्धु सलज्जभाउ णेहु वि अणत्थपत्थरणिहाउ ।
जइँ णिंद ण याणइ सहियहेउ तण्हइ मग्गइ पाणिउ अपेउ ।
णिद्दहिवि लेइ णीसेस देहु छुह पइसारइ चंडालगेहु ।
रमणीरूवेसु रमंति चक्खु जीहा वि समीहइ मिट्ठु भक्खु ।
घाणु वि सुहगंधहो जाइ झत्ति फासु वि मिउसयणहो करइ थत्ति ।
लहु धावइ गेयहो कण्णजुयलु मणु पुणु वणमक्कड जेम चवलु ।
अणुदिणु मुहि पइसइ अलियवाणि हिंसाकम्महो उवगरणु पाणि ।
पयजुयलु वि पावपहाणुकूलु कइ करइ कइत्तणु रायमूलु ।
पंडित्तु कुतक्कपलावभासि सुहडत्तणु जाणहं दुरियरासि ।

घत्ता—अण्णाणु सिसुत्तणु णवजोव्वणु पुणु हिंडइ पियविरहिं सुसिउ ॥
वुड्ढत्तु करालहो णियडउ कालहो मरणव्वसणसमूससिउ ॥ १४ ॥

---

८. A छद व्व.

14. १. A विरइय. २. A वंचण. ३. ST जड णिद. ४. ST तात्ति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15

दुवई—कंचुइ कामभोयमणिभूसणणिवसणम[1]इविहूइया ॥
रोयकयंतभिच्च मउलियमुह मुच्छामरणदूइया ॥ १ ॥

मिच्छत्तकसायासंजमेण आसवइ कम्मु करणुब्भवेण ।
सम्मत्तिं जीवदयागमेण इंदियरइसंगविणिग्गमेण ।
किज्जइ संवरु मुणिपुंगवेहिं दढवयभावणविरइयसमेहिं ।
णिज्जर पुणु बारहविहतवेण जाएं णिव्वेएं णवणवेण ।
अइखमवहेण अइदुसहेण अइमद्दवेण अइअज्जवेण ।
अइसच्चएण सुसउच्चएण परिचत्तपरिग्गहसं[2]गहेण ।
संभवइ धम्मु बंभव्वएण अज्जेव्वउ भावें भव्वएण ।
मग्गिज्जइ हयजरमरणवाहि जिणगुणसंपत्ति समाहि बोहि ।
मा गिण्हह लहुं[3] मुणिदिक्ख ताम अंगाइं समत्थइं होंति जाम ।
ता अम्हहिं लइयउ खुल्लयत्तु चत्तउ परिहणु आहरणु वित्तु ।
पंगुत्तउ पंडुरचीरखंडु मणु मुंडिवि पुणु मुंडियउ मुंडु ।
कोवीणु कमंडलु भिक्खपत्तु लइयउ वउ भवजलजाणवत्तु ।

घत्ता—जायउ संजइयउ णिज्जियमइयउ राणियाउ जसवइपियउ ॥
कयसुरणरसेविं गुरुणा देविं पुर[4]कंतियहे समप्पियउ ॥ १५ ॥

16

दुवई—जिणतवचरणकरणपरिणयमणविणिहयमारमारिहिं ॥
तणुघुलियाहिरायजांहादलाविलिहियघम्मवारिहिं ॥ १ ॥

परिदुस्सहणिट्ठाणिट्ठिएहि कडयडियसंधिबंधट्ठिएहिं ।
उ[1]रपुट्ठिवंसहड्डुब्भडेहिं सुविसमपासुलियापायडेहिं ।
कयघोरवीरतवतत्तएहिं जगजीवभयंकररूवएहिं ।

---

15. १. ST मय. २. ST संचएणं. ३. ST लहु. ४. A पुरु कंतियहे.

16. १. ST उवरट्ठि; A उरपिट्ठि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेमंतणिसो[2]हयणेहएहिं हिमपडलपं[3]डावियदेहएहिं ।
विसहियपा[4]उससजलझल्लिरेहिं गिंभम्मि स[5]हियरवियरझलेहिं ।
अट्ठविहफाससमभाविरेहिं सग्गापवग्गपहदाविरेहिं ।
हयसल्लिहिं णिज्जियवम्महेहिं तासियविद्धंसियमयगहेहिं ।
माणावमाणसमभावएहिं झाणासिएहिं तणुतावएहिं ।
घणुदंडमडयसिज्जासिएहिं कंदरमसाणगुहवासिएहिं ।
गोसुं[6]डयगोदुहआसणेहिं दिणपक्खमासकयपारणेहिं ।
दीहररोमावलिभासुरेहिं सुतिमुंडधरेहिं जडाधरेहिं ।
जल्लमलविलित्तसरीरएहिं मेइणिमंदरगिरिधीरएहिं ।
रुद्दट्टझाणणिग्गयमईहि सहुं महि भमंतु णि[7]म्मलजईहिं ।
इत्थाइउ जइवइ अप्पमत्तु अम्हारउ गुरु णामिं सुदत्तु ।
अवहत्थियपत्थिवसंपयाइं तिं सत्थि अम्हि समागयाइं ।
वंदेप्पिणु गुरुपयपंकयाइं भिक्खाणिमित्तु छुडु णिग्गयाइं ।

घत्ता—ता पंथि चरंतइं जिणु सुमरंतइं किंकरेहिं संदाणियइं ॥
बिण्णि वि सुहचरियइं करयलि धरियइं एउ देविघरु आणियइं ॥ १६ ॥

17

दुवई—आणिवि दंसियाइं तुह म[1]हिवइ पइं वइयरु पपुच्छिउ ॥
मइं तुह कहिउ ए[2]वं भवकद्दमि हउं हिंडंतु अच्छिउ ॥ १ ॥

इमं सव्वमायण्णिउं चंडमारी पहू मारिदत्तो वि जीवावहारी ।
विसण्णाइं चित्ते विरत्ताइं पावे विलग्गाइं धम्मे पराइण्णतावे ।
पबुद्धाइं दूरं वरं दोवि णाणं विचित्तं तिलोए पवित्तं पहाणं ।
सिसूणं जुयं णिम्मलं पुज्जणिज्जं ससीसच्छचूडामणीवंदणिज्जं ।
इमं चिंतिऊणं वसातुप्पगिल्लं रसोल्लं दिसाजंतकीला[3]लरेल्लं ।

---

२. ST हेमंतणिसासु अणेहएहिं. ३. ST पछाइय. ४. ST पाउसजलझल झलेहिं; A पाउसझलशलेहिं. ५. ST गहिय. ६. ST गयसुंडा; A गयमुंड. ७. ST णिम्ममजईहिं.

17. १. A णरवइ. २. A एउ. ३. ST कीलालरेज्जं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहहुं समुंडं सतुंडं सखंडं णिहित्तूण भूमीयले मज्झखंडं ।
घरं णिम्मियं णीलमाणिक्कबद्धं पखित्तं व मुत्ताहलोलीसणिद्धं ।
वणं विल्लिकंकेल्लिफुल्लुच्छलंतं दलारत्तसाहारसाहाललंतं ।
णहालग्गहिंतालतालीतमालं इलाजंतलीलामरालीमरालं ।
लयामंडवोइण्णजक्खिंदभद्दं सिलासीणसीमंतिणीगीयसद्दं ।
सरुप्फुल्लकंदोट्टरुंटंतभिंगं मरुद्धूयतिंगिच्छविच्छिड्डपिंगं ।
णहुब्भंतपुंकोइलारावरम्मं छुहापंडुरुब्भूयदीसंतहम्मं ।
सभत्तीइ भत्तीइ णाणागुणाए सउज्जाणमज्झे सवेउव्वणाए ।
ठवेऊण णाऊण णेउं महंतं मईदासणे खुल्लयाणं जुयं तं ।
पणट्ठुग्गवेसं जणाणंदभूअं पुणो चक्खुगम्मं पघेत्तूण रूवं ।
महावच्छवण्णं पसण्णं रवण्णं सुवण्णग्घवंतं सपुप्फंभपुण्णं ।
घरा णिग्गया देवया सोमभावा सपायंतघोलंतकंचीकलावा ।
असामण्णलायण्णसोहग्गसारा विलंबंतहारावलीतेयतारा ।
सयारूढणिव्वूढसिंगारभारा तुलाकोडिझंकारणच्चंतमोरा ।
घणापीणतुंगत्थणी मज्झखीणा जिणुत्तस्स गंथस्स पंथम्मि लीणा ।
दयालोइयासेसबंदीमयाए समेऊण सामीवयं देवयाए ।

घत्ता—खुड्डयगुरुपायहं णहसुच्छायहं णियसीसत्तु समिच्छियउ ॥
जलकमलकरंबिउ महुअरचुंबिउ अग्घवत्तु परहत्थियउ ॥ १७ ॥

18

दुवई—कारिमकुक्कुडेण णिहएण वि तुहुं भमिओ सि दुब्भवे ॥
कउलइं जीवरासि भक्खंति वि ण्हंवि वि लोहियण्णवे ॥ १ ॥

अणुकंपइ भासइ सुरपुरंधि अयमेसमहिसहयकंठसंधि ।
हउं पावयम्म पावेण जाम ण वि खज्जमि तुहुं परिताहि ताम ।
दे देहि देव तउ तिव्वु चरामि हिंसादुक्किउ णीसेसु हरामि ।

४. ST मुत्ताहलग्ली. ५. ST लयामंडवाइण्ण. ६. AP रुंदं, ७. AP णहुब्भंतयं कोइलारावरम्मं. ८. ST सभत्तीइ सत्तीइ. ९. ST घणुत्तुंगपीणत्थणी; A घणातुंगपीणत्थणी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता भणइ अभयरुइ पिहुलरमणि पाडलपेल्लय गयमंदगमणि।
सुरकामिणि सुणु उववायएसु कमवड्ढियकम्मविवायएसु।
णिम्मंसचम्मरोमट्ठिएसु णिप्पहयधाउतणुरुहरएसु।
सहजायमउडकुंडलधरेसु मंदारकुसुमरयपरिमलेसु।
वउ फासरूवरवकयरएसु मणपडियारप्पडियारएसु।
बहुघणकरिकणरमाणएसु उवरुवरिपवड्ढियमारएसु।
दससहसवरिसपल्लाउएसु सायरसमेसु चिरंजीविएसु।
तुह एक्कहि णउ तउ णत्थि एसु वासट्ठिविहेसु वि सुरवरेसु।

घत्ता—इलजलसिहिवायहं तणतरुकायहं संसारइ आहिंडियहं ॥
संठियचउपाणहं णिरु णिण्णाणहं णत्थि दिक्ख पइंदियहं ॥ १८ ॥

19

दुवई—खुब्भयसंखगोहंभमराइसु विमलेसु वि महाबले ॥
णत्थि तओ असण्णिसण्णीण तिरिक्खेसु वि सुकुंतले ॥ १ ॥

णरजम्मइ परवंचणपरेसु तुलकूडमाणकूडायरेसु।
ववहारकूडसक्खीयरेसु पसुमारणेसु मायामएसु।
जाएसु अम्मि बहुविहमएसु परियंचियरयणप्पहथलेसु।
उरचूरएसु माणियाबिलेसु अहिअजयरविसममहोरएसु।
सरदुंदुरसेहाणउलएसु एक्कखुरबेक्खुरकुंजरेसु।
मंडलचरणेसु चउप्पएसु ओल्लंघियणइजलणिहिजलेसु।
कच्छवमच्छाइसु चंचलेसु तउ णत्थि संखदीवाइएसु।
णाणाविहचंचूजीविएसु थीबालवुड्ढरिसिमारएसु।
परललणालालसजारएसु महुमज्जमंसरसलंपडेसु।
अणवरयकोवविहडप्फडेसु माणवभावि णिंदियजिणवरेसु।

---

18. १. AST पुण्ण. २. S णाणएसु; A माणएसु. ३. ST थिर.

19. १. A गोमि. २. AST असण्णिपंचक्खतिरिक्खेसु. ३. ST उरभुययरेसु. ४. ST अजयरविसाविसम ५. S मणमहियलतणुअसुरासुहेसु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माणियघम्माइवसुंधरेसु　　　मण[5]तणयसुहासुहआयरेसु ।
अण्णुण्णघायसयजज्जरेसु　　　भयघणुतिरयणे छंगुलमिएसु ।
पुणु दूणदूणदेहुण्णएसु ।

घत्ता—संगहियाहारइ धरणिविहारइ पसरहो होंतु अणंतु दुहु ॥
परमाणुयमेलणु णयणणिमीलणु कालु वि जेत्थु ण अत्थि सुहु ॥ १९ ॥

20

दुवई—गत्तं खंडिऊण चित्तं पि हु लग्गइ पहरवेवियं ॥
असिछिण्णेसु सूलभिण्णेसु वि णिवसइ जासु जीवियं ॥ १ ॥

सत्ताहोभूमिकयायरेसु　　　चउरासीलक्खविलोयरेसु ।
परजस्मवइ[1]रबलबुज्झिरेसु　　　अंगरुहमहाउहजुज्झिरेसु ।
णिच्चक्कमेक्कसंघारएसु　　　तउ णत्थि सत्तविहणारएसु ।
चिरभवकयसंजयभोयणेसु　　　ससहरमुहि मुहआलोयणेसु ।
जाणियसुरतरुफलसाइ[2]एसु　　　दुतिपल्लपक्कबद्धाउसेसु ।
तउ णत्थि भद्दि कीला[3]विसेसु　　　वरतीसभोयभूमाणुसेसु ।
उच्छालियपुण्णदेवीकएसु　　　उव्वरियपुण्णदेवीरएसु ।
अण्णेसु वि मुणि मिच्छामएसु　　　प[4]त्तेसु आसि तावसतवेसु ।
विरइयकुपत्तदाणुब्भवेसु　　　विवरीयकण्णमुहपल्लवेसु ।
छण्णवइकुभोयधराणरेसु　　　वसुसमसयपण्णासुत्तरेसु ।
तउ णत्थि मेच्छखंडंतरेसु ।
जंबूदीवइ पुणु धाइ[5]दीवि　　　पुक्खरवरद्धिदीवंत[6]जीवि ।
सत्तर सयगणियइं मुणि कहंति　　　इय अज्जमहिहि खंडाइं होंति ।

घत्ता—जो तेसु हवेप्पिणु गुरु पणवेप्पिणु लेइ धम्मु कवडेण विणु ॥
तउ करइ अगावें अकुडिलभावें पंचिंदियसुहु गणिवि तिणु ॥ २० ॥

---

५. S मणमहियलतणुअसुरासुहेसु.

20. १. ST वइरि. २. S साउएसु. ३ S कीलाएसु. ४. S भत्तेसु. ५. A धाइखंडि. ६. A दीवंतमंडि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

21

दुवई—दंसणणाणचरियरयणत्तयपरमाराहणाफलं ॥
सो दियहेहिं लहइ मणिपुंगउ केवलणाण[1] पविमलं ॥ १ ॥

सम्मत्तु होइ सुरणारएसु तवचरणु ण जम्मि वि ठाइ तेसु ।
अणुवयइं कहिं मि तिरियइं हवंति णर पंचमहव्वयभरु वहंति ।
तं णिसुणिवि णिहयणियावयाइ सम्मत्तु लइउ वणदेवयाइ ।
पुणु पुच्छिउ गुरु महुरइ गिराइ चरणारविंदपणवियसिराइ ।
चउगइ पायालगइं रउद्दि दुत्तारघोरभवजलसमुद्दि ।
णिवडंतहि पइं महु दिण्णु हत्थु तुहुं देउ को वि पवयणसमत्थु ।
तुहुं मज्झु सामि हउं तुज्झु दासि भणु किं दिज्जइ गुणरयणरासि ।
ता मेहविजयदुंदुहिसरेण पडिबोल्लिउ देसजईसरेण ।
णिव्वणि मच्छियउ ण भिणिहिणंति णिम्मोहदिण्णदाणइं ण लिंति ।
ता देविइ जंपिउ साहु साहु पुणु[2] पुणु पणविवि भावेण साहु ।
संभासिवि महिवइ पसुहुं घाउ मा दिज्जसु होज्जसु सोमभाउ ।
वणि उववणि चच्चरि एत्थु गेहि बहु छिंदिय भिंदिय पाणि देहि ।
सहजाइं बहुय[3] कित्तिमकियाइं परिहिमि पाणइं पाणप्पियाइं ।
महु उद्देसिवि जो देइ को वि सकुडुंबउ हउं खउ णेमि सो वि ।
इय भणिवि मणोहर तियसपत्ति अद्दंसणहूई[4] गय सथत्ति ।

घत्ता—ता मउलियलोयणु णिंदियणियगुणु हियइ सुद्धबुद्धिहि चडिउ ॥
दिग्गयवरगामिहि खुड्डयसामिहि मारिदत्तु पायहिं पडिउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—भणइ महीमहंत परमेसर कित्तिमचूलिमारणं ॥
काउं तं भवेसु भमिऊण दुहं पत्तो सि दारुणं ॥ १ ॥

---

21. १. ST केवलणाणमविचलं. २. ST पुणु पणवेवि सब्भावेण साहु. ३. ST अहव कित्तिमइं जाइं. ४. ST णिइंसणहूई.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मइं पुणु जीवउलइं जाइं जाइं णि[1]हयइं को लक्खइ ताइं ताइं ।
हउं णिवडी[2]समि रउरवतमालि णारयगणहणहणरवमालि ।
दे देहि देव पावहो णिविक्ति अवलंबमि मणि णिग्गंथविक्ति ।
भववासपासवेढणच्चुएण ता भासिउ कुसुमावलिसुएण ।
आवेहु जाहं जिणणाहसिक्ख गुरु देइ महारहु तुज्झु दिक्ख ।
वयणेण तेण विंभियउ राउ आणंदु मणोहरु तासु जाउ ।
हउं जणि महग्घु णरवंदणिज्जु सामंतमंतिमंडलियपुज्जु ।
मज्झु वि सुपुज्ज कुलदेवि आसि सा[3] संजाया खुल्लहहो दासि ।
खुल्लयहो वि जइ गुरु अत्थि अवरु तववंतहं जगि माहप्पु पवरु ।
जाणिवि संबोहिउ मारियत्तु पत्थंतरि आयउ गुरु सुदत्तु ।
अवहीसरु सुरणरवंदणिज्जु णिज्जियमयारि तिल्लोकपुज्जु ।
हयमोहु महासइ गुणसमिद्धु सत्तहिं मि पवररिद्धीहिं रिद्धु ।
जज्जरिउ जेण बहुभेयकम्मु तवि संठिउ दसविहु णाइ धम्मु ।
हल लाइवि जाणुयसिरभुएण गुरु वंदिउ कुसुमावलिसुएण ।
[4]राएण वि तहो पयपंकयाइं ण[5]वियइं उम्मूलियभवसयाइं ।

घत्ता—ता[6] जगपरमेसरु संघाइउ गुरु धम्मविद्धि सुपयच्छिय ॥
संतुट्ठमणेणं तेण णिवेणं णियसीसत्त समिच्छिय ॥ २२ ॥

23

पु[1]च्छइ मारियत्तु हरिसं गउ कहहि देव णियभवणामियं गउ ।
गोवद्धणसिट्ठीहि भवंतर महु भवाइं जं जेम णिरंतर ।
जोईसहु भइरवहु चिराणउं चंडमारिदेविहि सुपहाणउं ।

---

22. १. ST को लक्खिवि सक्कइ तित्तियाइं. २. ST णिवडिहीमि. ३. ST ताहि वि खुड्डउ गुणरयणरासि. ४ S and T have after this line: वंदियइं सुरासुरपुज्जियाइं । तहु पायमूलि पणमियसिरेण पावज्ज लइय राएण तेण. ५. Portion beginning with this line and ending with कडवक 30 line 15 is omitted in S and T. ६. A तहिं अवसरि गुरुणा गुणगणगुरुणा धम्मविद्धि सुपयच्छिय.

23. १. Both A and P omit the दुवई from this कडवक onwards; but P gives in second hand the following as दुवई:—आसियवाउ पडिच्छिय राएं तह मणि आणंदकित्ति णं (?)। गुरुएवउ मुणिवि को दीसइ सुहु मणसंसउहेडणं ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिवइजसोहहो जस[2]परिपुण्णहो चंदसिरीहि चंदमइ अण्णहो ।
जसहररायहो अवगुणभरियहि अभयमहापविहि अहचरियहि ।
जसवइणामहो [3]लच्छिसहायहो कुसुमावलिहि सुमंडियकायहो ।
माहिंदहो तुरयहो पुणु खुज्जहो [4]एयहं कह पयडेहि अणुज्जहो ।
अवहीसरु जंपइ सुपसिद्धउ अत्थि देसु गंधव्वु सुरिद्धउ ।
सालिछेत्तकणभरपूरियघरु पक्ककलमझंकारमहुरसरु ।
गंधजुत्तु गंधगिरि भणिज्जइ अइउत्तुंगु सिहरु तहो छज्जइ ।
गंधव्वायदणहिं परिसोहिउ गंधहरिणभसलेहिं णिरोहिउ ।
तहो सयासि घरसिरिअवरुंडिउ पुरु गंधव्वु धम्मघणमंडिउ ।
णिवसइ तहिं णिवमग्गसयाणिउ णिउ वइधव्वु णाम असमाणउ ।
चायभोयभोयंकियविग्गहु परदलबल[5]चट्टणु कयविग्गहु ।
तहो विंझसिरि भज्ज कलकोइल पइवय सच्चसील णावइ इल ।
आयए जणिउ थणद्धउ केहउ रूवें जो मयरद्धय जेहउ ।
मयरद्धयहो रूउ किं किज्जइ पयडु ण दीसइ उप्पम दिज्जइ ।
इहु गंधव्वसेणु जाणिज्जइ सयलहिं लोयहिं थुत्ति थुणिज्जइ ।
रायहो घरि कोमलतणुअंगी पुत्ति रूवलक्खण[6]रुइचंगी ।
ताहि णामु गंधव्वासिरी सिय अइलडहंग अंग विहिणा कय ।

घत्ता—णिय[7]पुत्तसमाणु पाविहियमाणु सज्जणकमलादिणेसरु ॥
दुज्जणगयसीहु दीहरजीहु भुंजइ रज्जु णरेसरु ॥ २३ ॥

24

तहो रायहो मंतणइ महल्लउ मंति रामु मंतेण अभुल्लउ ।
चंदलेहभज्जाइ अलंकिउ दोसुज्झिउ गयदप्पु असंकिउ ।
पुत्तुप्पण्णु रूवगुणभायणु जिणियसत्तु जियसत्तु परायणु ।
हुयउ कणिट्ठउ भीमु सहोयरु भीसावणु भीमु व्व अहोयरु ।
णरवइणा किउ पुत्तिहि कारणि बद्धमंचदिप्पंतइ तोरणि ।

---

२. A गुणपरिपुण्णहो. ३. A लच्छिहसणाहो. ४. A आयहं. ५. A अरिबलदलवट्टणु; P अरिदलदलवट्टणु. ६. A गुणचंगी. ७. A पियपुत्त.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाउ सयंवरमंडवि मेलउ रायउत्त साहरण सचेलउ ।
तहिं गंधव्वलच्छि पइसारिय पुप्फमाल करि कयसंचारिय ।
ताइ माल जियसत्तुहि उप्परि घल्लिय पुव्वरिसिणेहिं चप्परि ।
उच्छउ संखतूरभेरीसर कयउ विवाहु तुट्ठणारीणर ।
मंतिणिहेलणि कंत सइत्तिय थिय गंधव्वलच्छि जुइजुत्तिय ।
एत्थंतरि पारद्धि महीवइ गउ वणि दिट्ठउ तेत्थु मिगीवई ।
किउ संधाणु गहेवि सरासणु मुक्कु बाणु परपाणविणासणु ।
अंतरि हुइय हरिणि मिगु णट्ठउ भज्जिवि गयउ दूरि भयतट्ठउ ।
विद्ध कुरंगी तेण गुरुक्कि पडिय धरणि लुअ पाणपिसक्कि ।
पारद्धियहिं खंधि उच्चाइय वलिवि ताम हरिणेण पलोइय ।
आरडंतु मिगु संमुहु धायउ भुल्लउ कंदइ कलुणु वरायउ ।
दिसि दिसि भमइ सकंत णिहालइ मोहिं बद्धउ भज्ज ण भालइ ।
मोहंधु वि ण किं पि चिंतइ मणि चिंतइ सा पिय खणि खणि पुणु मणि ।
एम रडंतु दिट्ठु वइधव्वें करुणारसपूरेण अगव्वें ।
हुयउ विसायघत्थु हउं लुद्धउ हउं इंदियरसलंपडु मुद्धउ ।
एत्तिउ कालु ण किं पि वियाणिउं कयउ अहम्मु विसयसुहुं माणिउं ।
संवेयाउरु णियमणि झूरइ दिक्ख लेमि किं रज्जि पूरइ ।
संसारासारत्तु मुणेविणु लइय दिक्ख वइराउ करेप्पिणु ।
राय दोस बिण्णि वि संदाणिय तिव्वतवेण काय अवमाणिय ।
सो वइधव्वु दियंबरु जायउ एत्तहिं तासु पुत्तु गुणराइउ ।
रज्जि बइट्ठु महारिउमद्दणु हुउ गंधव्वसेणु घणसंदणु ।
रायरिद्धि पिउपट्टि णिसण्णउ हयगयरहवरपयपरिपुण्णउ ।
विंझसिरी हुय मासोवासिणि भयवंतायमभावपयासिणि ।

घत्ता—इक्कइया तेण गंधव्वेण णियखंधारहिं जुत्तउ ॥
कयजत्तपवित्तणिम्मलचित्तपिउरिसिपासि पहुत्तउ ॥ २४ ॥

---

24. १. A हुयउ. २. A तेण. ३. P omits this tine ४. A इक्कइया सो वि गंधव्वो वि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

25

संणासि परिट्ठिउ दिट्ठु साहु   पुत्तहो खंधारु णिएवि साहु ।
रिसिवयहो पहावें होइ सिद्धि   ता होउ मज्झु परिसिय रिद्धि ।
तुसकंडखंडु संगहिउ तेण   रयणोहु पमेल्लिउ णिग्गुणेण ।
मरिऊण तेत्थु उज्जेणि पत्तु   जसबंधुररायहो हुयउ पुत्तु ।
णामिं जसोहु जसपूरियासु   णिवपट्टु णिबद्धउ भालि तासु ।
जा विज्झसिरी भयवंतपाय   आराहिवि सोसिवि णियथकाय ।
कयण्हाण मरेविणु तत्थ आय   अजियंगरायघरि पुत्ति जाय ।
चंदमइ णाम अइमंदमेह   परिणिय जसोहुराएं सुणेह ।
तहो पुत्तुप्पण्णउ जसहरक्खु   परिवारहो पोसणु कप्पविक्खु ।
जसहरहो रज्जु देविणु जसोहु   किउ तउ बारसविहु चइवि मोहु ।
संणासु कियउ सुसमाहिजुत्तु   बंभोत्तरसग्गि जसोहु पत्तु ।
जा णिवसुय थिय मंतीहि सुण्ह   सा देवररत्तिय सुरयतण्ह ।
रइविंभल चप्परि रयइ जाम   णियदइएं दिट्ठिय दुट्ठ ताम ।
पिक्खेवि विरत्तउ णारिसंगि   गउ णिज्जणवणि जइवरह संगि ।
जिणदिक्ख लेवि जायउ णिसंगु   तवचरणु चरइ जियसत्तु चंगु ।
चारित्तु चरिवि चिरु छड्डि काउ   चंदमइहि गब्भि जियारि जाउ ।
हुउ जसहरु राउ जसोहतणउ   जणणिए जंपिउ जिं कियउ अणउ ।
णिवसुयविलसिउ सुणि रामु मंति   वउ बंभचेरु किउ णिसुणि कंति ।
किं किउं[1] कुकम्मु सुण्हाइ केम   ता चंदलेह वउ गहइ तेम ।
बंभव्वएण दिढ मरिवि ते वि   विज्जाहरगिरिउप्पण्ण बे वि ।
गंधव्वलच्छि कुविसिट्ठकम्मु   आयण्णिवि णिंदिवि तियहं जम्मु ।
गंधव्वसेणु गिण्हेवि दिक्ख   जिणमग्गहो केरी परमसिक्ख ।
अणसणु णिव्वाहिवि किउ णियाणु   तुहुं मारिदत्त सो अप्पु जाणु ।

घत्ता—णिसुणहि हो राय अण्णु कहंतरु जणंभरिय[2] ॥
मिहिलाउरि रम्म धणकणकणयसमावरिय ॥ २५ ॥

25. १. A किं कियउ कम्मु· २. A गुणभरिय·

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

26

ताहिं सेट्ठि अत्थि जिणपायभत्तु   सम्मत्तरयणवयसीलजुत्तु ।
दयदाणकज्जि सावउ सुदच्छु   जिणयत्तु णाम वणि दीहरच्छु ।
जलु गाहंतउ सो अस्सरयणु   महिसेण हयउ संपत्तु मरणु ।
तहो सेट्ठिहि सुरहीगब्भि जाउ   हुउ वच्छउ दिट्ठु संपुण्णकाउ ।
अण्णहि दिणि मरणावत्थपत्तु   वणिणा तहो कण्णि जवेइ मंतु ।
अरुहक्खराइं भावेण तेण   गिण्हिय भवभयसमसंतपण ।
तत्थाउ राय तुव कंत उअरि   संभवियउ रुप्पिणिगब्भि पवरि ।
होसइ घरवलइ पयावधारि   रिउमद्दणु कुलसंतोसयारि ।
जो भीमु मंतिसुउ दुव्विणीउ   सो खुज्जउ हुउ पाविट्ठु कीउ ।
गंधव्वसिरी अइकुडिलचित्त   किसु कियउ काउ संखीणगत्त ।
होएविणु गेहु धरेवि सज्ज   अमयमइ णाम सा खल अलज्ज ।
राएण विमलवाहणिण दिण्ण   जसहरु परिणाविउ पावकण्ण ।
जसु वइयरु णिसुणिउ मारिदत्त   अभयरुइमुहाहिंतो सुवत्त ।
खयरायलि जो गउ रासु मंति   ससिलेहासमउ दिणिंदकंति ।
अणुवय परिपालिवि बंभचेरु   केण वि सुहधम्मोदएण वीरु ।
सो जसवइ णियकुलकमलभाणु   जसहरहो पुत्तु जससेयभाणु ।
जा चंदलेह चिरु खयरकुले   सा हुय कुसुमावलि विज्जविउले ।
सहउयरि उवण्णी तुज्झु राय   णउ चुक्कइ बुज्झहि मज्झु वाय ।
घत्ता—सुहडहिं परिरक्खिअउ जाम णिरिक्खिउ रायतुरउ खरखुरचवलु ॥
रोसाइद्धेणं माहिंदेणं मारिउ सो पीयंतु जलु ॥ २६ ॥

27

किं कारणु जंपहि गुणसायर   महु मणसंसउ हरहि दयावर ।
कियउ कुपत्तदाणु अण्णहि भवि   खीणु करेवि काउ तावसतवि ।
मरिवि जसोहहो पत्ति गुणग्गल   हुई चंदलच्छि चंदुज्जल ।

---

26. १. A गुणगणविसालु सम्मत्तरयणपालणु गुणालु. २. A वयदाण. ३. A वणिवइ. ४. A घरवलय. ५. A खुज्जण. ६. A पावकिण्ण. ७. A अभयमइसुहहो जा सुय सवत्त.

27. १. A महु मणसंसउहरणदिवायर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंदमईहि सवत्तिविरोहउ घरिवि चित्ति घाइउ सो णिव हउ।
पुव्ववइरवसु जीवहं धावइ रोसाणलु हुइ तं जइ पावइ।
वच्छउ हुयउ सेट्ठिघरि हरिवइ कण्णि जाउ लद्धउ कियसुहमइ।
संपइ तुह भज्जहि उरि अच्छइ रज्जु करेसइ घर तुंह पच्छइ।
चिरु रायउरि राउं पयपालउ भयवह पयजलेण पक्खालिउ।
चित्तंगउ णामेण महाबलु छड्डि रज्जु तुह दिण्णु महीयलु।
अप्पुणु भगव दिक्ख पडिगाहिय सरिसरवरातित्थइं अवगाहिय।
धराणि भमंतु भमंतु परायउ णियपुरवरि देविहि मढि आयउ।
तहिं ठिउ तवइ सचित्तह वंछइ होउ मज्झु इच्छेवयसंपइ।
वंछिउ लद्धु मरेवि गुरुक्कउ चंडमारि देवय हुइ थक्कउ।
पुल्लिंगाउ फिरिवि तियालिंगउ वप्पु तुम्ह हुउ असुहवसंगउ।
जणणी तुज्झ सरूव सुलक्खण चित्तसेण णामेण वियक्खण।
उवसमगुणु परिपालिवि सुहरउ पाण चएवि जाउ सो भद्दरउ।
दंडपणामु जासु पइं विहियउ अच्छइ णेहिं जो माहिमाहियउ।
करुणारस पूरिवि णियविग्गहु कप्पणिवासी देउ होसइ इहु।
उज्जेणिहि णयरिहि जसवंधुरु राउ पसिद्धउ उण्णयकंधरु।
छद्दंसणभत्तउ मढ देउल अड दीहिय पोक्खरि पविउलंजल।
महियालहो आयदणु मणोहरु रयणजडिउ दिप्पंतउ सेहरु।
सरसाहारहिं पीणिवि तावस भयवजईसरबहुणिट्ठावस।
जिणचेईहर घयमंडियसिर उण्णइवंत सवित्थर अइथिर।
कारावेप्पिणु दाणु पयच्छिवि मिच्छभाउ भावेण समिच्छिवि।
वणकीलाबहुभोउ करेप्पिणु दीहु कालु णियपंउ भुंजेप्पिणु।
सुहभावणजुत्तीइ मरेप्पिणु इट्ठदेउ णियँहियइ धरेप्पिणु।
मयगयपउरु कलिंगाहिउ णिउ भयदत्तहो रायहो हउं सुउ।
णाँम सुदत्तु रायसिरिमंडिउ करमि रज्जु रिउबलहिं अखंडिउ।
इक्कइया कुसुमालु गहेप्पिणु तलवरेहिं दिढु दिउ बंधेप्पिणु।
महु जाणाविउ किं णिव किज्जइ कारागारिं तरसा णिज्जइ।

२. A घाइउ णिव हउ. ३. A तुव. ४. A राय. ५. A जलपविउल. ६. A णिवपउ. ७. A णियमणि झाएप्पिणु. ८. A णासु,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहिं दियवर जे दंड पउंजहिं ते व लेवि महु पुरउ पयंपहिं ।
आयहो कण्णणासकरछेयणु चलणच्छेउ किज्जइ सिरछेयणु ।
एहु सदोसउ एहु मारिज्जइ कस्स पाउ मइं वुत्तु ण किज्जइ ।
पाउ तुज्झ जइ इहु मारिज्जइ छड्डिज्जइ णिवयहु तुव जुज्जइ ।
एम सुणेविणु चित्तु विरत्तउ जुण्णतणु व्व रज्जु परिचत्तउ ।
जिणसिक्खा सीयरिवि भमंतउ पंचवार तुव पुरि संपत्तउ ।

घत्ता—एवहिं हउं एत्थु चउविहसंघसमावरिउ ॥
तउ तिव्वु तवंतु तणकंचणु सम मित्तु रिउ ॥ २७ ॥

28

उज्जेणिहि रायजसोहमंति गुणसिंधु जणविहियसंति ।
णियपइ ठवेवि सुउ णागदत्तु घरभारवहणु पिउपायभत्तु ।
अप्पुणु घरि संठिउ दंदचत्तु समभावणविरइयभावजुत्तु ।
सुहपरिणामिं तहिं चइवि काउ सिरिवइवणिवइघरि पुत्तु जाउ ।
णामिं गोवद्धणु गुणविसालु सम्मत्तवंतु दिप्पंतभालु ।
करुणायरु परमपरोवयारि जसवइरायहो संबोहयारि ।
अवलोयहि णिवइ णिसण्णु एहु महु संघाडइ तवलच्छिगेहु ।
णिसुणिवि भवाइं सयलइं णरिंदु आणंदसोयपूरियउ णंदु ।
ण तरमि हउं विणउ करेवि साहु संबोहिउ एहु किउ धम्मलाहु ।
सुपसण्णु होवि महु देहि दिक्ख तवचरणु चरमि पालेमि सिक्ख।
ता गुरुणा दिण्णु दियंबरत्तु थिउ मारिदत्तु णिवरिद्धिचत्तु ।
ता णरवइ णयणिज्जियकसायें पणतीसणिवइ णिग्गंथ जाय ।
भूसिउ दिक्खाइ पलोइ राउ जोईसरासु वइराउ जाउ ।
भइरउ पभणइ भो सामिसाल दिक्खापसाउ करि गुणविसाल ।
मुणि जंपइ दिक्ख ण तुज्झु अत्थि छंगुलउ जेण तुहुं अत्थि हत्थि ।

28. १. A णिय २. P adds after this in second hand in the damagad margin: दहलक्खण-धम्मु वितजि......त्तचारु......यभाव......य. The Hindi translation of this line. however, is not found. See page 300, lines 12–14 of the translation.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कइं[3] करमि देव तो भणइ साहु   अणसण परिपालहि करिवि गाहु ।
थोआउसु दीसइ तुज्झु देहि   सिग्घउ उवाउ भल्लउ करेहि ।
ता तेण कियँउ संणासु भव्वु   बावीस दिवस पालेवि सव्वु ।
चउविहआहारहि चत्तु काउ   सो भइरउ तीयइ सग्गि जाउ ।
अभपण[4] पमेल्लिउ खुल्लयत्तु   तहिं तक्खणि पडिवण्णउ रिसित्तु ।
मयरद्धयझाणपहायरुध्दु   णिवकण्णहि पुणु थणवट्ट बध्दु ।
अभयमईं[5] जाय विरत्तभाव   कुसुमावलि अज्जिय सुद्धभाव ।
तहि पायमूलि खुल्लियहि वित्तु   छड्डेवि घित्तु अज्जियचरित्तु ।
णिग्गंथमग्गु[6] णिम्मलु सरेवि   अभयरुइ जइहि[7] गुणगणु सरेवि ।
गय दोण्णि वि तहिं देवीवणम्मि   चउविहआराहण धरि मणम्मि ।
आराहिवि दंसणु णाणु चरिउ   तउ बारहविहु अवहरियदुरिउ ।
पंचदसदिणइं संणासु करिवि   सुसमाहिए दोण्णि वि पाण चइवि ।
ईसाणसग्गि ते दोण्णि देव   उप्पण्ण झत्ति सुरसयहिं सेव ।
सम्मत्तबलिं तियलिंगु छिण्णि   कीलहिं विमाणि सुर तेत्थु दोण्णि ।
वंदहिं जिणभवण अकिट्टिमाइं   पडिमामंडियइं जगुत्तमाइं ।
सम्मत्तिं लब्भइ सग्गु मोक्खु   सम्मत्तिं लब्भइ अचलु[8] सोक्खु ।

घत्ता—तत्थाउ मुणिंदु चउविहसंघिं परियरिउ ॥
सिद्धइरिहि णाम संपत्तउ जइवइ तुरिउ ॥ २८ ॥

29

तहिं ठिउं[1] चिंतइ भावण अणिच्च   संसारहो गइ णउ होइ णिच्च ।
आराहिवि आराहण सुसच्च   अवहिए परियाणिवि सत्ततच्च ।
संणासु कियउ सुसमाहिजुत्तु   सत्तमइ सग्गि पत्तउ सुदत्तु ।
सो[2] जसवइ सो कल्लाणमित्तु   सो मारिदत्तु जइवरु पवित्तु ।
वणिकुल[3]पंकयबोहणदिणेसु   सो गोवद्धणु गुणगणविसेसु ।

---

३. A किं. ४. A गहिउ. ५. This line and the following are given in S and T as part of कडवक. 22, after राएण वि तहो पयपंकयाइं. ६. A णिग्गंथु मग्गु. ७. A जाइहि. ८. A अचलसोक्खु.

29. १. A थिउ. २. ST give णिव जसवइ सो कल्लाणमित्तु सो अभयणाउ सो मारिदत्तु as part of कडवक 22, after कवडक 28, line 21 of the present edition. ३. ST omit वणिकुल......विसेसु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सा[4] कुसुमावलि पालियतिगुत्ति अज्जियगुणु जाणिय धम्मवित्ति ।
सव्वइं[5] दुण्णयणिण्णासणेण तउ चरिवि चारु संणासणेण ।
कालिं[6] जंति संणासजुत्त जिणधम्में ते सग्गग्ग पत्त ।

घत्ता—किउ उवरोहें जस्स कइयइ पउ भवंतरु ॥
तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ धरु ॥ २९ ॥

30

चिरु पट्टणेच्छंगे (?) साहुसाहु तहो सुउ खेलागुणवंतु साहु ।
तहो तणुरुहु वीसलु णाम साहु वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु ।
सोयारु सुणाणगुणगणसणाहु एक्कइया चिंतइ चित्ति लाहु ।
हो पंडियठक्कुर कण्हपुत्त उवयारिय वल्लहपरममित्त ।
कइ पुप्फयंति जसहरचरित्तु किउ सुट्ठु सद्दलक्खणविचित्तु ।
पेसहिं तहिं राउलु कउलु अंज्जु जसहरविवाहु तह जणियचोज्जु ।
सयलहं भवभमणभवंतराइं महु वंछिउ करहि णिरंतराइं ।
ता साहुसमीहिउ कियउ सव्वु राउलु विवाहु भवभमणु भव्वु ।
वक्खाणिउ पुरउ हवेइ जाम संतुट्ठउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु साहुहि घरे सुत्थियणहु घुट्ठु ।
पणसट्ठिसहियतेरहसयाइं णिवविक्कमसंवच्छर गयाइं ।
वइसाहपहिल्लइ पक्खि वीय रविवारि समित्थिउ मिस्सतीय ।
चिरु वत्थुबंधि कइकियउ जं जि पद्धडियबंधि मइं रइउ तं जि ।
गंधव्वें कण्हडणंदणेण आयहं भवाइं किय थिरमणेण ।
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कइउ कइवच्छराइं तं सुत्तु लइउ ।

घत्ता—जो जीवदयावरु णिप्पहरणकरु वंभयारि हयजरमरणु ॥
सो माणणिसुंभणु धम्मु णिरंजणु पुप्फयंतु जिणु महु सरणु ॥ ३० ॥

---

४. ST सा कुसुमावलि पालियतिगुत्ति सा अभयमइ त्ति णरिंदपुत्ति. ५. ST भव्वइं. ६. ST कालिं जंतिं सव्वइं मयाइं जिणधम्में सग्गग्गहो गयाइं. ७. Portion beginning with this line and ending with कवडक 30, line 13 is omitted in PST and also not rendered in Hindi. ८. B. एय.

30. १. B. सज्जु. २. B. अहिय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

31

पावणिसुंभणि मुद्धाथंभणि- उयरुप्पण्णें सामलवण्णें ।
कासवगोत्तिं केसवपुत्तिं जिणपयभत्तिं धम्मासत्तिं ।
वयसंजुत्तिं उत्तमसत्तिं वियलियसंकिं अहिमाणंकिं ।
पहसियतुंडिं कइणा खंडें रंजियबुहसह कयजसहरकह ।
जो आयण्णइ चंगउ मण्णइ लिहइ लिहावइ पढइ पढावइ ।
जो मणि भावइ सो णरु पावइ विहुणियघणरय सासयसंपय ।
जणवयणीरसि दुरियमलीमसि कइणिंदायरि दुसहे दुहयरि ।
पडियकवालइ णरकंकालइ बहुरंकालइ अइदुक्कालइ ।
पवरागारिं सरसाहारिं सण्हि चेलिं वरतंबोलिं ।
महु उवयारिउ पुण्णिं पेरिउ गुणभत्तिल्लउ णण्णु महल्लउ ।
होउ चिराउसु वरिसउ पाउसु तिप्पउ मेइणि घणकणदाइणि ।
विलसउ गोमिणि णच्चउ कामिणि घुम्मउ मंदलु पसरउ मंगलु ।
संति वियंभउ दुक्खु णिसुंभउ धम्मुच्छाहिं सहुं णरणाहिं ।
सुहु णंदउ पय जय परमप्पय जय जय जिणवर जय भयमयहर ।
विमलु[1] सु केवलु णाणु समुज्जलु महु उप्पज्जउ पत्तिउ दिज्जउ ।
मइं अमुणंतिं[2] कव्वु करंतिं जं हीणाहिउ काइं मि साहिउ ।

घत्ता—तं माय[3] महासइ देवि सरासइ[4] णिहयसयल[5]संदेहदुह[6] ॥
महु खमउ भडारी तिहुवणसारी पुप्फयंतजिणवयणकहँ[7] ॥ ३१ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंडमारिदेवयमारिदत्तरायधम्मलाहो णाम चउत्थो परिच्छेऊ समत्तो ॥ ४ ॥

31. १. ST पविमलु केवलु णाणु सुणिम्मलु. २. ST ण मुणंति. ३. AT माइ. ४. T सरस्सइ. ५. AP सयलसंदोह. ६. AP रुह. ७. S जसवइकल्लाणमित्तमारियत्तअभयमइसग्गगमणो णाम.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दकोशः

[In the following glossary of words occurring in the Jasaharacariu, pronouns and their derivatives are ignored altoghther, while in the case of verbs only roots, primitive and causal, are included, dropping the different forms of finite verbs, infinitives and absolutives.]

अअ–अज
अइ–अति
अइअड्ड–अतिविकट (अड्ड विकटार्थे देशी)
अइकूर–अतिक्रूर
अइकोमल–अतिकोमल
अइक्कमिअ–अतिक्रान्त
अइघण–अतिघन
अइदीह–अतिदीर्घ
अइदुम्मण–अतिदुर्मनस्
अइयक्क–अज (क-क)
अइविउल–अतिविपुल
अइसयवन्त–अतिशयवत्(ज्ञानादिमूलातिशय-चतुष्कसंपन्नः। चतुस्त्रिंशदतिशयोपेतः। निः-स्वेदत्वाद्यतिशयोपेत इति टिप्पणम्)
अइसुंदर–अतिसुन्दर
अउव्व–अपूर्व
अकज्ज–अकार्य
अकिट्टिम–अकृत्रिम
अक्खर–अक्षर (वर्णावलि)
अक्खा–आ+ख्या (धातुः)
अखंडिअ–अखण्डित
अगव्व–अगर्व
अगाव–अगर्व
अग्ग–अग्र
अग्गि–अग्नि
अग्गिजाला–अग्निज्वाला

अग्घवत्त–अर्घ्यपात्र
अचल–अचल
अचलत्तण–अचलत्व
अचेयण–अचेतन
अच्चण–अर्चन (पूजा)
अच्चंत–अत्यन्त
अचोक्खअ–अमृष्ट, अमार्जित (अशुचि)
अच्छ–आस् (धातुः)
अच्छरा–अप्सरस्
अच्छिअ–आसीन
अच्छि–अक्षि
अच्छिउड–अक्षिपुट
अच्छोडिय–आस्फोटित
अछम्म–अच्छद्म (कपटरहित)
अज–अज
अजयर–अजगर
अजर–अजर
अजरामर–अजरामर
अजिय–अजित (द्वितीयतीर्थंकरनाम)
अजियंग–अजिताङ्ग (राज्ञो नामविशेषः)
अजुत्त–अयुक्त
अज्ज–अद्य
अज्जमहि–आर्यमही
अज्जव–आर्जव (ऋजुता)
अज्जणिज्ज–अर्जनीय
अज्जिय–अर्जित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज्जु–अद्य
अट्ट–आर्त
अट्टहास–अट्टहास (विकटहास)
अट्ठ–अष्टन्
अट्ठगुणी–अष्टगुण (अष्टमहाप्रातिहार्ययुक्त इत्यर्थः)
अट्ठम–अष्टम
अट्ठमि–अष्टमी
अट्ठविह–अष्टविध
अट्ठसिद्धगुण–अष्टसिद्धगुण
अट्ठंग–अष्टाङ्ग (अष्ट शरीरावयवा इत्यर्थः)
अट्ठि–अस्थि
अट्ठोत्तरसहास–अष्टोत्तरसहस्र
अड–अट् (धातुः)
अड–अवट (कूप इत्यर्थः)
अण–अनस् (शकट)
अणअ–अनय
अणउंछिअ–अवाञ्छित
अणक्खर–अनक्षर
अणगार–अनगार
अणत्थ–अनर्थ
अणलिय–अन्+अलीक (सत्य)
अणवरय–अनवरत
अणसण–अनशन
अणंग–अनङ्ग
अणंत–अनन्त (चतुर्दशतीर्थंकरनाम)
अणंत–अनन्त
अणंताणंत–अनन्त+अनन्त (अतिशयेन अनन्तमित्यर्थः)
अणाइ–अनादि
अणाह–अनाथ
अणिच्च–अनित्य
अणिट्ठ–अनिष्ट
अणिट्ठिअ–अनिष्ठित (असमाप्त)
अणिसाभोयण–अनिशाभोजन
अणिहण–अनिधन (अनन्त इत्यर्थः)
अणिंद–अनिन्द्य
अणिंदिअ–अनिन्दित
अणु–अणु (परमाणुरित्यर्थः)
अणुकंप–अनु+कम्प् (धातुः)
अणुकूल–अनुकूल
अणुगय–अनुगत
अणुगामिणि–अनुगामिनी
अणुज्ज–अनवद्य (निर्दोष इत्यर्थः)
अणुज्जय–अनुद्यत
अणुट्ठा–अनु+स्था (धातुः)
अणुट्ठाण–अनुष्ठान
अणुदिणु–अनुदिनम्
अणुबंध–अनुबन्ध (क्रमः संततिर्वा)
अणुमग्ग–अनु+मार्ग
अणुमग्गयर–अनुमार्गचर (अनुचर इत्यर्थः)
अणुमाण–अनुमान
अणुवय–अणुव्रत
अणुवेक्ख–अनु+प्रेक्ष् (धातुः)
अणुसंघट्टण–अनुसंघट्टन
अणुहव–अनु+भू (धातुः)
अणुहुंज–अनु+भुज् (धातुः)
अणेय–अनेक
अण्ण–अन्य
अण्णण्ण–अन्य+अन्य
अण्णत्त–अन्यत्व
अण्णभव–अन्यभव
अण्णव–अर्णव
अण्णाण–अज्ञानिन्
अण्णाण–अज्ञान
अण्णायत्त–अन्यायत्त
अण्णासत्त–अन्यासक्त
अण्णुण्ण–अन्योन्य
अण्णेक्क–अनेक
अण्णोण्ण–अन्योन्य
अण्हाण–अस्नान
अतुट्ठि–अतुष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतुल–अतुल
अतुलसत्ति–अतुलशक्ति
अत्तावण–आतापन
अत्थ–अर्थ
अत्थ–अस्त (अस्तपर्वत इत्यर्थः)
अत्थवण–अस्तमन
अत्थाण–आस्थान (सभामन्दिरमित्यर्थः)
अत्थासिअ–अस्त+आसीन
अदुम्मइ–अदुर्मति
अद्दंसणहूअ–अदर्शनीभूत
अद्ध–अर्ध
अद्धद्ध–अर्ध+अर्ध
अपत्त–अपात्र (कुपात्रमित्यर्थः)
अपायड–अप्रकट
अपेअ–अपेत (गत इत्यर्थः)
अप्प–आत्मन्
अप्पमत्त–अप्रमत्त
अप्पवह–आत्मवध
अप्पिअ–अर्पित
अप्पुणु–आत्मना (स्वयमित्यर्थः)
अब्भंगिअ–अभ्यक्त
अब्भंतर–अभ्यन्तर
अब्भस–अभि+अस् अध्ययने (धातुः)
अब्भिड–संमुखगमने देशी (धातुः)
अब्भुय–अद्भुत
अभग्ग–अभग्न (यथावदिति टिप्पणम्)
अभयमहाएवी–अभयमहादेवी (राज्ञीनामविशेषः)
अभयरुइ–अभयरुचि (क्षुल्लकनाम)
अभंग–अभङ्ग
अभीअ–अभीत
अभुल्ल–अभ्रान्त इत्यर्थे देशी
अमणोज्ज–अमनोज्ञ
अमय–अमृत
अमयमइ–अमृतमति (राज्ञीनामविशेषः)
अमरणियर–अमरनिकर (देवसमूह)
अमरत्त–अमरत्व
अमल–अमल
अमलिय–अमलिन
अमंगल–अमङ्गल
अमाण–अमान (मानरहित इत्यर्थः)
अमित्त–अमित्र
अमुणंत–अजानत्
आमोसहि–आम+ओषधि
अम्म–अम्ब (संबोधने)
अम्माएवि–अम्बादेवी (मातेत्यर्थः)
अम्मि–अम्ब (संबोधने)
अय–अज
अयवइ–अजपति
अयसिर–अजशिरस् (अजो ब्रह्मेति टिप्पणम्)
अर–अर (अष्टादशतीर्थंकरनाम)
अरमाहर–अरमा (अलक्ष्मी) + हर (दारिद्र्यनाशक इत्यर्थः)
अरविंद–अरविन्द (कमलमित्यर्थः)
अरहंत–अर्हत्
अरहंतावलि–अर्हदावलि (जिननामावलिरित्यर्थः)
अरुण–अरुण
अरुणयर–अरुणकर (सूर्य इत्यर्थः)
अरुणायवत्त–अरुणातपत्र
अरुणिय–अरुणित
अरुहक्खर–अर्हत् (इति)+अक्षर
अरूअ–अरूप
अरूवि–अरूपिन् (अरूप इत्यर्थः)
अलक्खण–अलक्षण
अलज्ज–अलज्ज
अलंकिअ–अलंकृत
अलाउ–अलाबु
अलि–अलि (भ्रमर इत्यर्थः)
अलिउल–अलिकुल
अलिय–अलीक
अलिंग–अलिङ्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलोय–अलोक
अवगण–अव+गण् (धातुः)
अवगण्ण–अव+गण् (धातुः)
अवगाहिय–अवगाहित
अवगुण–अवगुण
अवज्ज–अवद्य
अवत्थ–अवस्था
अवमाणिय–अवमानित
अवयपुण्ण–अवयवपूर्ण
अवयास–अवकाश
अवर–अपर
अवरअ–अपर(क)
अवरपक्ख–अपरपक्ष
अवरुंडण–आलिङ्गने देशी
अवरुंडिय–आलिङ्गिते देशी
अवरोप्पर–परस्पर
अवलंबमाण–अवलम्बमान
अवलित्त–अवलिप्त
अवलोय–अव+लोकय् (धातुः)
अवसर–अवसर
अवसवण–अपस्वप्न, अपशकुन
अवसाण–अवसान (अन्तः, समाप्तिः)
अवसिं–अवश्यम्
अवसु–अवश्यम्
अवहत्थिय–अपहस्तित
अवहरिय–अपहृत
अवहीसर–अवधीश्वर (अवधिज्ञानवानित्यर्थः)
अवंतिराअ -अवन्तिराज
अवंती–अवन्ति (जनपदनाम)
अविणीय–अविनीत
अवियड्ढ–अविदग्ध
अवियाणअ–अविजानत्
अविलासवंक–अ+विलास+वक्र
(स्वभावसुन्दर इत्यर्थः)
अविवंक–अ+वि+वक्र (अतिसरल इत्यर्थः)
अविहंग–स्वभावतः इत्यर्थे देशी
अविहाअ–अविभाग
अविहिण्ण–अविहीन
अस–अस् (धातुः) अत्थि, अस्ति इत्यादि
असइ–असकृत्
असइ–अ+सती
असच्च–असत्य
असज्झ–असाध्य
असण्णि–अ+संज्ञिन् (अचेतन इत्यर्थः)
असमाण–असमान
असमाहिल्ल–अ+समाधि+इल्ल (मत्वर्थीयः)
असामण्ण–असामान्य
असारत्त–असारत्व
असि–असि (खड्ग)
असिधेणुय–असि+धेनुका (क्षुरिकेत्यर्थः)
असुइरस–अशुचिरस
असुहरण–असु+हरण
असेस–अशेष
असोय–अशोक (वृक्षविशेषः)
असंक–अशङ्क
असंकिअ–अशङ्कित
असंग–असङ्ग
असुंदर–असुन्दर
अस्स–अश्व
अहचरिय–अधश्चरित (नीचवृत्त इत्यर्थः)
अहम–अधम
अहमं–अहमित्यर्थे
अहम्म–अधर्म
अहयर–अधश्चर
अहर–अधर
अहरुल्ल–अधर+उल्ल (स्वार्थे)
अहि–अहि (सर्प इत्यर्थः)
अहिछत्त–अहिच्छत्र (नगरनामविशेषः)
अहिणंदन–अभिनन्दन (चतुर्थतीर्थकरनाम)
अहिणाण–अभिज्ञान
अहिणाणिय–अभिज्ञानिक (अभिज्ञान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिमाण–अभिमान
अहिमाणमेरु–अभिमानमेरु (पुष्पदन्तकवेर्बिरुदेष्वन्यतमम्)
अहिमाणंक–अभिमानाङ्क(पुष्पदन्तकवेर्बिरुदम्)
अहिमाणिक्क–अभिमान+एक (अभिमानपर इत्यर्थः)
अहियारिय–आधिकारिक
अहिराय–अहिराज
अहिव–अधिप
अहिसिंचिय–अभिषिक्त
अहिसेय–अभिषेक
अहिहाण–अभिधान
अहिंस–अहिंसा
अहिंसाधम्म–अहिंसाधर्म
अहु–अथ
अहोगइ–अधोगति
अहोगइण–अधोगगन (!)
अहोभूमि–अधोभूमि
अंकिअ–अङ्कित
अंकुस–अङ्कुश
अंग–अङ्ग
अंगअ–अङ्गक
अंगचाअ–अङ्गत्याग (कायोत्सर्ग इत्यर्थः)
अंगय–अङ्गज
अंगराअ–अङ्गराग
अंगहार–अङ्गभार
अंगारय–अङ्गारक (चोरनाम)
अंगुल–अङ्गुलि
अंगुलि–अङ्गुलि
अंगुलियअ–अङ्गुलि (क-क)
अंचिय–अञ्चित
अंत–अन्त्र
अंतरंग–अन्तरङ्ग
अंतावलि–अन्त्र+आवलि
अंतेउर–अन्तःपुर
अंदोयण–आन्दोलन

अंध–अन्ध
अंधयार–अन्धकार
अंधार–अन्धकार
अंबर–अम्बर (वस्त्र)
अंभ–अम्भस्
अंसु–अंशु
अंसु–अश्रु
अंसुवाह–अश्रु+वाह (अश्रुप्रवाह इत्यर्थः)

आइ–आदि
आइअ–आगत
आइद्ध–आविद्ध
आउ–अप्
आउक्खय–आयुःक्षय
आउगंठि–आयुर्ग्रन्थि
आउपमाण–आयुःप्रमाण
आउस–आयुष्
आउंच–आ+कुञ्च् (धातुः)
आउंचिय–आकुञ्चित
आएस–आदेश (आज्ञेत्यर्थः)
आकोस–आ+क्रुश् (धातुः)
आगम–आगम (शास्त्रमित्यर्थः)
आघोस–आ+घुष् (धातुः)
आढत्त–आदृत, आज्ञप्त
आणण–आनन (मुख अथवा द्वार)
आणंद–आनन्द
आणंदिअ–आनन्दित
आणंदिय–आनन्दित
आणंदिर–आनन्द+इर (शीलार्थे प्रत्ययः)
आणा–आज्ञा
आणाकारिणी–आज्ञाकारिणी
आणाविअ–आज्ञापित
आणिय–आनीत
आणी–आ+नी (धातुः)
आपीण–आपीन
आमइसरिस–आमयसदृश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आमंतियअ–आमन्त्रित (क)
आमिस–आमिष
आमिसगासिर–आमिष+ग्रसनशील
आमोय–आमोद
आयअ–आगत
आयण्ण–आ+कर्णय् (धातुः)
आयण्णण–आकर्णन
आयदृण–आयतन
आयम–आगम
आयर–आचार
आयर–आदर
आयवत्त–आतपत्र (छत्रमित्यर्थः)
आयंब–आताम्र
आयार–आचार
आयावण–आतापन (व्रतविशेषः)
आयास–आ+यस् (धातुः)
आयास–आकाश
आरडंत–आरटत्
आरडिय–आरटित
आरत्त–आरक्त
आरंभ–आरम्भ
आराम–आराम (उपवनमित्यर्थः)
आराहण–आराधन
आरुह–आ+रुह् (धातुः)
आरुहण–आरोहण
आरूढ–आरूढ
आलग्ग–आलग्न
आलिद्ध–आश्लिष्ट
आलिंगण–आलिङ्गन
आलुंखिय–आरूक्षित (आस्वादित इत्यर्थः)
आलोइय–आलोचित
आलोयण–आलोचन
आलोयंत–आलोकयत्
आव–आ+इ आगमने (धातुः)
आवडिय–आपतित
आवज्ज–आ+पद् (धातुः)

आवडिअ–आपतित
आवत्त–आवर्त (अम्भसां भ्रमः)
आवया–आपद्
आवलि–आवलि (पङ्क्तिरित्यर्थः)
आविद्ध–आविद्ध (आबद्ध, खचित)
आस–आस् (धातुः)
आसण–आसन
आसण्णवय–आसन्नपद
आसत्त–आसक्त
आसत्ती–आसक्ति
आसव–आ+स्रु (धातुः)
आसंका–आशङ्का
आसंघ–आ+श्रि इत्यर्थे देशी
आसाऊरिय–आशापूरित
आसाय–आस्वाद
आसायण–आस्वादन
आसासिय–आश्वासित
आसिअ–आश्रित
आसीण–आसीन
आसीवाअ–आशीर्वाद
आसीसिय–आशीषित ! (आशीर्दत्ता इत्यर्थः)
आहय–आहत
आहरण–आभरण
आहव–आहव (युद्ध)
आहाकम्म–आधाकर्मन् (हिंसा)
आहार–आधार
आहार–आहार
आहास–आ+भास् (धातुः)
आहिंड–आ+हिण्ड् (धातुः)

इक्कइया–एकदा
इट्ठ–इष्ट
इच्छिय–इच्छित
इच्छेवय–एष्टव्य
इत्तिय–इत्वर (चपल इत्यर्थः)
इत्तिय–एतावत्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्थ–अत्र
इय–इति (वाक्यादावेव)
इयर–इतर
इयरह–इतरथा (अन्यथा)
इल–इला (पृथ्वी)
इला–इला (पृथ्वी)
इसि–ऋषि
इह–इह
इहु–इह
इहलोय–इहलोक
इंगाल–अङ्गार
इंत–यत् (इधातोः शत्रन्तम्)
इंती–यन्ती
इंद–इन्द्र
इंदणील–इन्द्रनील (मणिविशेषः)
इंदिय–इन्द्रिय
इंदियबल–इन्द्रियबल
इंदियसुह–इन्द्रियसुख
इंदु–इन्दु (चन्द्र)
ईरिअ–ईरित (प्रेरित)
ईसर–ईश्वर
ईसाण–ईशान (स्वर्गनाम)
ईसासिहि–ईर्ष्या+शिखिन् (अग्नि)

उअर–उदर
उक्कलिय–उत्कलिक (उत्कण्ठित इत्यर्थः)
उक्कंठ–उत्कण्ठ
उक्कुरड–उत्करसमूहस्थाने देशी (मराठी-उकिरडा)
उक्कोइय–उत्पादित इत्यर्थे देशी
उक्खय–उत्खात
उग्ग–उग्र
उग्गअ–उद्गत
उग्गमिअ–उद्गत
उग्गय–उद्गत
उग्गिण्ण–उद्गीर्ण
उच्चाइय–उच्चीकृत
उच्चासण–उच्चासन
उच्चिट्ठ–उच्छिष्ट
उच्चिट्ठय–उच्छिष्टक
उच्चोलिय–उपानह्
उच्छअ–उत्सव
उच्छल–उद्+क्षिप्धात्वर्थे
उच्छलंत–उच्छलत्
उच्छल्ल–उत्क्षुब्ध (देशी)
उच्छव–उत्सव
उच्छाइय–उत्सादित
उच्छाह–उत्साह
उच्छुवण–इक्षुवन
उज्जल–उज्ज्वल
उज्जालिय–उज्ज्वलित
उज्जाण–उद्यान
उज्जुय–ऋजु(क)
उज्जुयत्त–ऋजुकत्व
उज्जुवा–ऋजुका
उज्जेणि–उज्जयिनी
उज्झा–अयोध्या
उज्झाअ–उपाध्याय
उज्झाय–उपाध्याय
उज्झाहिअ–अयोध्या+अधिप
उट्ठ–उत्तिष्ठ
उट्ठंत–उत्तिष्ठत्
उट्ठंतपडंत–उत्तिष्ठत्+पतत्
उट्ठा–उद्+स्था (धातु)
उट्ठावियअ–उत्थापित (क)
उट्ठिय–उत्थित
उडु–उडु (नक्षत्र)
उडुवइ–उडुपति (नक्षत्रराट्, चन्द्र इत्यर्थः)
उड्ड–उद्+डी (धातुः)
उड्डणसील–उड्डनशील
उड्डाविय–उड्डित
उड्डिय–उड्डित (ऊर्ध्वीकृत इत्यर्थे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उड्डिर–उड्डुनशील
उण्णइवंत–उन्नतिमत्
उण्णय–उन्नत
उण्णयकंधर–उन्नतकंधर
उण्ह–उष्ण
उत्त–उक्त
उत्तम–उत्तम
उत्तर–उद्+तृ (धातुः)
उत्तार–उद्+तारय् (धातुः)
उत्तिय–उक्त
उत्तिम–उत्तम
उत्तुंग–उत्तुङ्ग
उदयायल–उदयाचल
उद्देस–उद्+देशय् (धातुः)
उद्देस–उद्देश
उद्ध–उर्ध्व
उद्धर–उद्+धृ (धातुः)
उद्धरिय–उद्धृत
उद्धहत्थ–उर्ध्वहस्त
उद्धूलिय–उद्धूलित
उप्पज्ज–उद्+पद् (धातुः)
उप्पण्ण–उत्पन्न
उप्पम–उपमा
उप्परि–उपरि
उप्पाड–उद्+पाटय् (धातुः)
उप्पाडण–उत्पाटन
उप्पाय–उत्पात
उप्पेल्लिय–उत्प्रेरित
उप्फाल–आ+स्फालय्, अथवा, उद्+पाटय् (धातुः)
उप्फुल–उत्फुल्ल
उब्भड–उद्भृत
उब्भमिय–उद्भ्रमित (उद्भ्रान्त)
उब्भव–उद्भव
उब्भंत–उद्भ्रान्त
उब्भि–उद्+भृ (धातुः)
उब्भिय–ऊर्ध्वीकृत
उब्भुब्भ–ऊर्ध्व+ऊर्ध्व
उब्भूय–उद्भूत
उम्मुच्छिअ–उन्मूर्छित
उम्मूलिय–उन्मूलित
उयर–उदर
उर–उरस्
उरअ–उरग
उरचूर–उरश्चर (उरगजातिः)
उरयर–उरश्चर
उरयल–उरस्तल
उल–कुल (उत्तरपदे एव)
उल्लल–उद्+लल् (शोभायां धातुः)
उल्ललण–उल्ललन
उल्ललिय–उल्ललित (विकीर्ण इत्यर्थः)
उल्लिय–आर्द्रित (आर्द्र इत्यर्थः)
उल्लोवय–उल्लोच(क) (वितानमित्यर्थः)
उवएस–उपदेश
उवगरण–उपकरण
उवमा–उपमा
उवयंठएस–उपकण्ठदेश (समीपप्रदेशः)
उवयार–उपकार
उवयार–उपचार
उवयारिअ–उपकारिन्
उवरि–उपरि
उवरिल्ल–उपरितन
उवरुवरि–उपर्युपरि
उवरोह–उपरोध
उवलक्खिय–उपलक्षित
उववण–उपवन
उववाय–उपपाद
उववास–उपवास
उवसम–उप+शम् (धातुः)
उवसम–उपशम
उवसंत–उपशान्त
उवाअ–उपाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उविंद–उपेन्द्र (विष्णुः)
उव्वर–उर्वर् इत्यधिकार्थे (धातुः)
उव्वरिय–उर्वरित
उव्वेविर–उद्+वेपनशील
उंजिय–ऊर्जित
उंजु–ऋजु
उंदुर–उन्दुर (मूषक इत्यर्थः)

ऊसर–ऊषर

एइंदिय–एकेन्द्रिय
एक्क–एक
एक्कइया–एकदा
एक्कखंभ–एकस्तम्भ
एक्कखुर–एकखुर
एक्कठाण–एकस्थान
एक्कभत्त–एकभक्त
एक्कमेक्क–एकैक
एत्तहिं–एतावति (काले)
एत्थंतरि–अत्रान्तरे
एत्थु–अत्र
एत्तिअ–एतावत्
एम–एवम्
एयारह–एकादशन्
एयारहमअ–एकादशमय
एयारिस–एतादृश
एरिस–ईदृश
एवड–एतावत्
एवहिं–एवम्
एवं–एवम्
एहावत्थ–एषा+अवस्था

ओइण्ण–अवतीर्ण
ओट्ठ–ओष्ठ
ओणाविय–अवनामित
ओल–आर्द्र
ओली–आवलि
ओल्लंघिय–उल्लंघित
ओसह–औषध
ओसारिअ–अपसारित
ओसासित्त–अवश्याय+सिक्त
ओह–ओघ

क–क (उदक)
क–क (मस्तक) १-१४-६
कइ–कवि
कइत्तण–कवित्व
कइमइ–कविमति
कइयइ–कविपति
कइयण–कविजन
कइया–कदा
कइराअ–कविराज
कइवइ–कविपति
कइवय–कतिपय
कउल–कौल (कापालिकः कुलाचार्य इत्यर्थः)
कउलउल–कौलकुल (कापालिकादिदुष्टधार्मिक-समूह इत्यर्थः)
कक्कस–कर्कश
कक्खड–कक्ष (लतावृक्षादिगुल्मः)
कक्ख–कर्कश
कचोल–पात्रविशेषे देशी (मराठी–कचोळें)
कच्छव–कच्छप
कज्ज–कार्य
कज्जाणुराअ–कार्यानुराग
कट्ठ–कष्ट, कष्टम्
कट्ठ–काष्ठ
कट्ठकम्म–काष्ठकर्मन्
कडक्ख–कटाक्ष
कडयडिय–कडकडित (विद्युच्छब्दानुकारः)
कडाह–कटाह
कडि–कटि
कडिल्ल–कटी+इल्ल (मत्वर्थीयः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कडिसुत्तय–कटिसूत्रक (मेखला)
कडुयसर–कटुक+स्वर
कड्ढ–कृष्धात्वर्थे देशी
कड्ढिय–कृष्ट (आकृष्ट)
कड्ढिय–कृष्ट
कढ–कथ् (धातुः)
कढिण–कठिन
कण–कण् (धातुः)
कण–कण
कणभर–कणभर (धान्यभार)
कणय–कनक
कणयमय–कनकमय
कणिस–कणिश
कण्ण–कर्ण (श्रोत्रेन्द्रिय)
कण्ण–कर्ण (कुन्तीसुत)
कण्णसूल–कर्णशूल
कण्णंत–कर्णान्त
कण्णा–कन्या
कण्हडणंदण–कृष्ण+नन्दन
कण्हपुत्त–कृष्णपुत्र
कत्तार–कर्तृ
कत्ति–कृत्ति (व्याघ्रादिचर्मेत्यर्थः)
कत्तिय–कर्तित (भिन्न)
कथकेस–क्रथकैशिक (जनपदनाम)
कद्दम–कर्दम
कप्प–कल्प (युग)
कप्पड–कर्पट (वस्त्र)
कप्पधारि–कल्पधारिन्
कप्पविक्ख–कल्पवृक्ष
कप्पंघिव–कल्पाङ्घ्रिप (कल्पवृक्ष)
कप्पूर–कर्पूर
कप्पूरफार–कर्पूरस्फार
कम–क्रम् (धातुः)
कम–क्रम (चरणमित्यर्थः)
कमंडलु–कमण्डलु
कम्म–कर्मन्
कम्मचंड–कर्मचण्ड
कम्मपास–कर्मपाश
कम्मबंध–कर्मबन्ध
कम्ममल–कर्ममल
कम्मविवाय–कर्मविपाक
कम्मायत्त–कर्मायत्त
कय–कृत
कयणिच्छय–कृतनिश्चय
कयपारण–कृतपारण
कयपुलय–कृतपुलक (कृतरोमाञ्चकञ्चुकं यथा स्यात्तथेति टिप्पणम्)
कयरअ–कतर (क)
कयली–कदली
कयसंचारिय–कृतसंचारिका
कयसंवर–कृतसंवर
कयंजलि–कृताञ्जलि
कयंत–कृतान्त
कयायर–कृतादर
कर–कृ (धातुः)
कर–कर (किरण)
कर–कर (हस्त)
करग्ग–कराग्र
करग्ग–कर ग्र (अङ्गुलि)
करड–कठिन इत्यर्थे देशी
करण–करण
करयरंत–करकरत् (शब्दानुकरणे देशी)
करयल–करतल
करवत्त–करपत्र (शस्त्रविशेषः)
करवंद–करमर्द (फलविशेषः)
करसंजोइअ–कर+संयोजित
करह–करभ
करहाड–करहाकट(कऱ्हाड)
करंड–करण्ड (क)
करंत–कुर्वत्
करंति–कुर्वती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करंबिअ–करम्बित
कराल–कडार (कपिल, चित्रवर्ण)
कराल–कराल (भीषण इत्यर्थे)
करावलि–करावलि (किरणजाल)
करि–करिन्
करिकर–करिकर (शुण्डा)
करिकरसमोरु–करिकरसम+ऊरु
करिणि–करिणी (हस्तिनी)
करितासण–करिन्+त्रासन
करिमिहुण–करिमिथुन
करिंद–करीन्द्र
करुण–करुणा
कलकलाअ–कलाकलाप (कलासमूह)
कलकोइल–कलकोकिल
कलत्त–कलत्र
कलभ–कलभ
कलयल–कलकल
कलयल–कलकलं कृ (धातुः)
कलरव–कल+रव
कलस–कलश
कलहेक्कसील–कलहैकशील
कलाव–कलाप
कलि–कलि (युगविशेषः)
कलिया–कलिका
कलिंगवइ–कलिङ्गपति
कलिंगाहिअ–कलिङ्गाधिप
कलुण–करुण
कलुसभाव–कलुष+भाव
कलेवर–कलेवर
कलोह–कला+ओघ (कलासमूह)
कल्लाण–कल्याण
कल्लाल–मद्यविक्रयिन् इत्यर्थे देशी
कल्लोल–कल्लोल
कवण–कोऽपि (कः पुनः)
कवल–कवल (ग्रास)
कवलिय–कवलित
कवाड–कपाट
कवाल–कपाल (मृद्भाजनखण्डः)
कवि–कवि
कविल–कुक्कुर इति टिप्पणम्
कविल–कपिल
कवोल–कपोल
कवोलवत्त–कपोलपत्र
कव्व–काव्य
कव्वत्थ–काव्यार्थ
कसण–कृष्ण (वर्णे)
कसमसत्ति–कृश+शक्ति (दुर्बल इत्यर्थः)
कसाय–कषाय
कह–कथय् (धातुः)
कह–कथा
कहकहंत–शब्दानुकरणे देशी
कहा–कथा
कहाणअ–कथानक
कहिअ–कथित
कहिय–कथित
कहं–कथम्
कहंतर–कथान्तर
कंक–कङ्क (पक्षिविशेषः)
कंकण–कङ्कण
कंकाल–कङ्काल (शरीरास्थि)
कंकेल्लि–कंकेल्लि (अशोकवृक्षः)
कंख–काङ्क्ष् (धातुः)
कंख–काङ्क्षा
कंखिर–काङ्क्षा+इर (शीलार्थः)
कंचण–काञ्चन
कंचाइणि–कात्यायनी (चण्डमारिदेवता)
कंची–काञ्ची
कंचीकलाव–काञ्चीकलाप
कंचुइ–कञ्चुक (स्त्रीणामुत्तरीयम्)
कंचुइ–कञ्चुकिन् (अन्तःपुरवृद्ध इति टिप्पणम्)
कंचुलिय–कञ्चुकविशेष (मराठी-कांचोळी)
कंजिअ–काञ्जिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कंटय–कण्टक
कंटयतरु–कण्टकतरु
कंड–काण्ड (बाण इत्यर्थः)
कंड–काण्ड (धनुर्दण्ड इत्यर्थः)
कंडू–कण्डू
कंडोहिय–मथित इत्यर्थे देशी (मराठी–कांड-लेलें)
कंत–कान्त (पतिः)
कंता–कान्ता
कंतार–कान्तार
कंति–कान्ति
कंती–कान्ति
कंद–क्रन्द् (धातुः)
कंदअ–क्रन्द (क)
कंदर–कन्दर
कंदल–कन्द+ल (स्वार्थे)
कंदुल्ल–कन्द+उल्ल (मत्वर्थीयः)
कंदोट्ट–नीलोत्पल इत्यर्थे देशी
कंप–कम्प् (धातु)
कंपंत–कम्पमान
कंपंति–कम्पमाना
कंपिय–कम्पित
कंवल–कम्बल
कंस–कंस (नामविशेषः)
काउरिस–किम्+पुरुष (निन्द्य इत्यर्थः)
काउल–काक
काण–काण (अक्षिविकलः)
काणण–कानन
काणि–काणी (अक्षिविकला)
काणीण–कानीन (कन्यकाजातः)
काम–काम (मदन)
कामग्गह–काम+ग्रह
कामजर–कामज्वर
कामाउर–कामातुर
कामालस–काम+अलस
कामिणि–कामिनी
कामिणिया–कामिनि(का)
कामी–कामिन्
कामुअ–कामुक
काय–काय
कायउल–काककुल
कारण–कारण
कारंड–कारण्ड (चक्रवाक)
कारागार–कारा+अगार
कारावय–कारय् (धातुः)
कारिम–कृत्रिम
कारुण्ण–कारुण्य
काल–काल
कालगोयर–कालगोचर (यमगोचर इत्यर्थः)
कालाणल–कालानल
कालावेक्खा–कालापेक्षा (कालावेक्खइ समये समये इत्यर्थः)
कासवगोत्त–काश्यपगोत्र
कासायपड–काषायपट
काहल–काहल (वाद्यविशेषः)
काहलियवंस–काहिलो गोपः तेन वाद्यमानः वंशः इति टिप्पणम्
किअ–कृत
किज्ज–कृधातोः कर्मणि
किण्ह–कृष्ण
कित्तण–कीर्तन
कित्ति–कीर्ति
कित्तिम–कृत्रिम
किमं–किम्+इमं=किमिदम्
किमि–क्रिमि
किमिउल–क्रिमिकुल
किय–कृत
किर–किल
किरण–किरण
किरणोह–किरणौघ (किरणसमूह)
किरिया–क्रिया
किलिकिलि–किलि इति शब्दानुकरणम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किलेस–क्लेश
किवाण–कृपाण (खड्ग)
किस–कृश
किसलय–किसलय
किह–कुत्र
किंकर–किंकर
किंकिणि–किङ्किणी
किंणर–किन्नर
कीर–कीर (शुक)
कीर–कृधातोः कर्मणि
कील–क्रीड् (धातु)
कील–क्रीडा
कीलण–क्रीडन (क्रीडा)
कीलंत–क्रीडत्
कीला–क्रीडा
कीलाल–कीलाल (रक्त)
कुकइत्तण–कुकवित्व
कुकम्म–कुकर्मन्
कुकलत्त–कुकलत्र
कुक्क–कुक्क इति शब्दानुकरणे (धातुः)
कुक्कुर–कू इति शब्दं कृ (धातुः)
कुक्कुड–कुक्कुट
कुक्कुडअ–कुक्कुट(क)
कुक्कुडिया–कुक्कुटि(का)
कुक्कुरी–कुक्कुरी (शुनी)
कुगुरु–कुगुरु
कुच्छि–कुक्षि
कुजम्म–कुजन्मन्
कुट्टण–कुट्टन
कुट्ठ–कुष्ठ
कुडिल–कुटिल
कुडिलत्तण–कुटिलत्व
कुडिहर–कुटीगृह
कुडुंगण–लतागृहमित्यर्थे देशी
कुडुंब–कुटुम्ब
कुण–कृ (धातुः)

कुणंत–कुर्वत्
कुतक्क–कुतर्क
कुत्थिय–कुत्थित (दुष्ट)
कुदेव–कुदेव
कुपत्त–कुपात्र
कुप्पर–कूर्पर
कुमग्ग–कुमार्ग
कुमरी–कुमारी
कुमार–कुमार
कुमारिलभट्ट–कुमारिलभट्ट (नामविशेषः)
कुम्म–कूर्म
कुरंग–कुरङ्ग
कुरंगी–कुरङ्गी
कुरर–कुरर (पक्षिविशेषः)
कुरुल–अलक (रचनाविशेषः)
कुल–कुल
कुलउत्ती–कुलपुत्री
कुलउत्तिया–कुलपुत्रिका
कुलगुरु–कुलगुरु
कुलदेवय–कुलदेवता
कुलदेवी–कुलदेवी
कुलमग्ग–कुलमार्ग
कुलमग्गचारि–कुलमार्गचारिन्
कुलयर–कुलकर
कुलिंग–कुलिङ्ग (दुष्टतापसादिः)
कुलीर–कुलीर (जन्तुविशेषः)
कुवलय–कुवलय
कुवाइ–कुवादिन् (अन्यान्यदर्शनप्रवर्तक इत्यर्थः)
कुविवेय–कुविवेक
कुसल–कुशल
कुसलत्त–कुशलत्व (कुशलवृत्त)
कुसंग–कुसङ्ग
कुसुम–कुसुम
कुसुमसर–कुसुमशर (मदन)
कुसुमावलि–कुसुमावलि (राज्ञीनामविशेषः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुसुमिय–कुसुमित
कुसुमोह–कुसुम+ओघ (समूह)
कुह–कुध् (धातुः)
कुहर–कुहर
कुहिणी–मार्ग इत्यर्थे देशी
कुहिय–क्रुद्ध
कुहिय–क्षुभित (व्याधिदूषित इत्यर्थः)
कुंकुम–कुङ्कुम
कुंकुमपिंड–कुङ्कुमपिण्ड
कुंचण–कुञ्चन (आकुञ्चन)
कुंजर–कुञ्जर
कुंट–कुब्ज
कुंठ–कुण्ठ
कुंड–कुण्ड
कुंडल–कुण्डल
कुंत–कुन्त (भल्ल)
कुंतल–कुन्तल (केश)
कुंथु–कुन्थु (सप्तदशतीर्थंकरनाम)
कुंथु–कुन्थु (अतिसूक्ष्मशरीरः प्राणिविशेषः)
कुंथुपहुअंगि–कुन्थुप्रभृत्यङ्गे(कुन्थुप्रभृतिप्राणेषु)
कूआरव–कू इति रव
कूडायर–कूट+आदर
कूर–क्रूर
कूर–ओदनार्थे देशी
कूल–कूल (तीर)
कूव–कूप
केउ–केतु (चिह्नं ध्वजो वा)
केक्कार–केङ्कार (पक्षिणां शब्दविशेषः)
केयइ–केतकी
केयार–केदार
केर–तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
केरअ–तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
केरी–तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
केलिदण्ड–केलिदण्ड
केवट्ट–कैवर्त
केवल–केवल (ज्ञानविशेषः)
केवलणाण–केवलज्ञान
केस–केश
केसरि–केसरिन् (सिंह इत्यर्थः)
केसव–केशव
केसुब्भड–केश+उद्भट (भयंकर इत्यर्थः)
कोअंड–कोदण्ड (धनुः)
कोऊहल–कौतूहल
कोक्कंत–को इतिशब्द कुर्वत्
कोडि–कोटि
कोडि–कुक्कुट (मराठी–कोंबडी)
कोड्ड–कौतुक इत्यर्थे देशी
कोड्डावण–कौतुककरण इत्यर्थे देशी
कोड्डावणिय–कौतुककारक इत्यर्थे देशी
कोढि–कोटि
कोढिणि–कुष्ठवती (कुष्ठरोगदूषिता)
कोमल–कोमला
कोल–कोल (वराह)
कोलाहल–कोलाहल
कोव–कोप
कोवग्गि–कोपाग्नि
कोवारुण–कोपारुण
कोवीण–कौपीन
कोसियकिमि–कोशित (कोशस्थित) + क्रिमि
कोह–क्रोध
कोंडिल्ल–कौण्डिण्य (गोत्रविशेषः)

खअ–क्षय
खगविज्जा–खगविद्या (आकाशसंचारसामर्थ्यमित्यर्थः)
खगिंद–खगेंद्र (गरुड)
खग्ग–खड्ग
खच्चेल–प्राणिविशेष [!]
खज्ज–खाद्धातोः कर्मणि
खण–खन् (धातुः)
खण–क्षण (कालविशेषः)
खणद्ध–क्षणार्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खणंतर–क्षणान्तर
खण्णु–खननशील [!]
खत्तधम्म–क्षत्रधर्म
खत्तधर–क्षत्रधर (दोषेभ्यो निवर्तको राजा धर्म-धरो वा क्षत्रजातिरिति टिप्पणम्)
खद्ध–खादित
खप्पर–कर्पर (कपालखण्ड)
खम–क्षम् (धातुः)
खम–क्षमा
खमवह–क्षमावह, क्षमापथ
खय–खग
खय–क्षय
खयकाल–क्षयकाल
खयर–खचर
खयरकुल–खचरकुल
खयरूव–क्षयरूप
खयंकर–क्षयंकर
खर–खर (तीक्ष्ण)
खर–क्षर
खरकिरण–खरकिरण (सूर्य)
खल–खल
खलहल–खलखल इति जलप्रवाहशब्दानुकरणे (धातुः)
खलि–खले (संबोधनेऽव्ययम्)
खलिअ–स्खलित
खवण–क्षपण
खविअ–क्षपित
खविय–क्षपित (पीडित इत्यर्थः)
खंचण–खंचन (खचित)
खंड–खण्ड् (धातुः)
खंड–खण्ड (पुष्पदन्तकवेर्नामान्तरम्)
खंडिअ–खण्डित
खंडिर–खण्डनशील
खंत–क्षान्त
खंति–क्षान्ति
खंध–स्कन्ध
खंधार–स्कन्धावार
खंधोह–स्कन्ध+ओघ
खंभ–स्तम्भ
खा–खाद् (धातुः)
खाअ–खाद् (धातुः)
खार–क्षार
खाणी–खनि
खित्त–क्षिप्त
खीण–क्षीण
खीर–क्षीर
खुड्डुय–क्षुल्लक
खुज्ज–कुब्ज
खुज्जय–कुब्ज(क)
खुज्जिया–कुब्जिका (दासीत्यर्थः)
खुज्जुल्लिय–कुब्जा+उल्ल+क (स्वार्थे)
खुद्द–क्षुद्र
खुब्भ–क्षुब्ध
खुर–खुर
खुरुप्प–शस्त्रविशेष (मराठी–खुरपें)
खुल्ल–क्षुल्ल
खुल्लय–क्षुल्लक (मुनिजातिविशेषः)
खुंट–स्तम्भ इत्यर्थे देशी
खुंद–क्षुद् (धातुः)
खेत्त–क्षेत्र
खेत्तवाल–क्षेत्रपाल
खेम–क्षेम (लब्धस्य रक्षणम्)
खेयरत्त–खेचरत्व (आकाशगमनसामर्थ्य-मित्यर्थः)
खेयरियसत्ति–खेचरिक+शक्ति
खेरि–वैरिन् इत्यर्थः [!]
खेला–खेला (पुरुषनामविशेषः)
खेलिर–क्रीडनशील
खेलोसहि–खेल (क्ष्वेड)+ओषधि
खोणियल–क्षोणीतल
खोणी–क्षोणी (भूमिरित्यर्थः)
खोल्ल–गम्भीर इत्यर्थे देशी (मराठी-खोल)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गअ–गत
गइ–गति
गइठाण–गतिस्थान
गउरविय–गौरवित
गग्गिरगिर–गद्गद+गिर्
गच्छ–गम् (गच्छ्)(धातुः)
गच्छमाण–गच्छत्
गच्छंत–गच्छत्
गण–गणय् (धातुः)
गण–गण (समूह)
गत्त–गात्र
गद्दभ–गर्दभ
गब्भ–गर्भ
गब्भासअ–गर्भाशय
गमण–गमन
गमिअ–गमित, गत
गय–गत
गय–गज
गयकाल–गतकाल
गयण–गगन
गयणयल–गगनतल
गयणयलवडिअ–गगनतलपतित
गयणंगण–गगनाङ्गण
गयदप्प–गतदर्प
गयमंदगमण–गजमन्दगमन
गयवर–गजवर
गरल–गरल
गरलुल्ल–गरल+उल्ल (स्वार्थे)
गरह–गर्ह् (धातुः)
गरुय–गुरु (क)
गरुयपवास–गुरुप्रवास (दीर्घप्रवास)
गरुहण–गर्हण
गल–गल
गलकंदल–गलकन्दल
गलच्छिय–पीडित इत्यर्थे देशी; (कदर्थित ?)
गलय–गल(क) (कण्ठ)
गलिअ–गलित
गलियअ–गलित(क)
गव्व–गर्व
गह–ग्रह् (धातुः)
गह–ग्रह (ग्रहण, निरोध)
गहचक्का–ग्रहचक्रा (प्रासादभूमिनामविशेषः)
गहवइ–गृहपति
गहण–गहन
गहण–ग्रहण
गहणुल्लअ–ग्रहण+उल्लअ (स्वार्थे)
गहिअ–गृहीत
गहिर–गभीर
गहीर–गभीर
गंजोल्लिय–क्षुब्ध इत्यर्थे देशी (मराठी-गांजलेले)
गंड–गण्ड (कपोलदेशः)
गंडय–गण्ड (जलमहिष, मराठी–गेंडा)
गंथ–ग्रन्थ
गंध–गन्ध
गंधजुत्त–गन्धयुक्त
गंधवंत–गन्धवत्
गंधव्व–गन्धर्व (कविनाम)
गंधव्वलच्छी–गन्धर्वलक्ष्मी
गंधव्वसेन–गन्धर्वसेन (नामविशेषः)
गंधविसय–गन्धविषय (त्वगिन्द्रिय) (गन्धो विषयो यस्येन्द्रियस्येति टिप्पणम्)
गंधहरिण–गन्धहरिण (कस्तूरिकामृग)
गंभीर–गम्भीर
गाइज्जंत–गीयमान
गाढ–गाढ
गाम–ग्राम
गामंतर–ग्रामान्तर
गाय–गै (धातुः)
गायण–गायन
गारव–गौरव
गास–ग्रास
गाह–गाह् (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाह–ग्राह
गाह–ग्राह (स्नेहार्थे)
गाहंत–गाहमान
गिण्ह–ग्रह् (धातुः)
गिज्ज–गैधातोः कर्मणि
गिज्ज–गेय
गिज्झ–ग्राह्य
गिरा–गिर्
गिरि–गिरि
गिल–गिल् (धातुः)
गिलण–गिलन (ग्रसन)
गिलंत–गिलन
गिल्लगंड–गिल्ल (शिबिकार्थे देशी) + गण्ड (शिबिकावाहक इत्यर्थः)
गिंभ–ग्रीष्म
गिंभारि–ग्रीष्म + अरि (वर्षर्तुरित्यर्थः)
गीअ–गीत
गीय–गीत
गीयसद्द–गीतशब्द
गुज्झ–गुह्य
गुण–गुण
गुणग्गल–गुणार्गला
गुणठाण–गुणस्थान
गुणमेलअ–गुणमेलन (गुणसमूह)
गुणमोयण–गुणमोचन
गुणवंत–गुणवत्
गुणसायर–गुणसागर
गुणसिंधु–गुणसिन्धु
गुणसेढि–गुणश्रेणि (अण० मिच्छ मीस इत्यादीनि क्षपकश्रेण्युक्तानि गुणस्थानानीत्यर्थः)
गुणहणणि–गुणहननी (गुणघातिकेत्यर्थः)
गुणिय–गुणित (अभ्यस्त)
गुत्तिय–सक्त इत्यर्थे देशी (मराठी–गुंतलेली)
गुप्प–गुप् (धातुः)
गुरु–गुरु
गुरुकमारूढ–गुरुक्रमारूढ (गुरुपरंपराप्राप्त इत्यर्थः)
गुरुक्क–गुरु(क), (महदित्यर्थे)
गुरुयण–गुरुजन
गुलगुल–गजशब्दानुकरणे (धातुः)
गुह–गुहा
गुंछ–गुच्छ
गुंजा–गुञ्जा (फल)
गुंफ–गुल्फ
गूढ–गूढ
गेय–गेय (गीत)
गेह–गेह
गो–गो
गोउर–गोपुर
गोउल–गोकुल
गोत्त–गोत्र
गोदाण–गोदान
गोदुह–गोदोह
गोमिणि–गोमिनी
गोवइय–गोपति (क)
गोवड्ढण–गोवर्धन (श्रेष्ठिनाम)
गोवाल–गोपाल
गोवि–गोपी
गोविट्ठिणिविट्ठ–गोविष्टिनिविष्ट (गोष्ठीनिविष्ट ?)
गोसिंग–गोशृङ्ग
गोसुय–गोसुत
गोसुंड–गो+शुण्डा
गोह–पुरुष इत्यर्थे देशी
गोह–गोधा (प्राणिविशेषः)
गोहय–गोधा
गोहण–गोधन

घग्घरा–किङ्किणीशब्दार्थे देशी(मराठी-घागऱ्या)
घग्घरोली–घग्घर+ओली (किङ्किणीपङ्क्तिः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घट्टण–घट्टन (संसर्ग)
घट्ठ–घृष्ट
घट–घटय् (धातुः)
घड–घट
घडिअ–घटित
घण–घन (निबिड)
घण–घन–(मेघ)
घम्मवारि–घर्मवारि (स्वेदजलमित्यर्थः)
घय–घृत
घर–गृह
घरत्थ–गृहस्थ
घरदार–गृह+दार (कलत्र)
घरदासि–गृहदासी
घरभार–गृहभार
घरलंजिया–गृहदासीत्यर्थे देशी
घरवइ–गृहपति
घरिणी–गृहिणी
घल्ल–प्र+क्षिप् इत्यर्थे देशी (धातुः)
घल्लिअ–क्षिप्त इत्यर्थे देशी
घवघव–गन्धप्रसरणे देशी (धातुः)
घंघल–कलहार्थे देशी
घाअ–घात
घाइअ–घातित
घाण–घ्राण
घार–गृध्रजातीयः पक्षिविशेषः
घित्त–क्षिप्त, गृहीत इत्यर्थे देशी
घित्तअ–क्षिप्त (क)
घिप्प–ग्रहधात्वर्थे देशी
घिव–क्षिप् इत्यर्थे देशी (धातुः)
घुग्घुस–घू घू इति शब्दकरणशील
घुट्ट–घुट् इति पानशब्दानुकरणे (धातुः)
घुट्ठ–घुष्ट
घुम्म–धूनने देशी (धातुः) (मराठी·घुमणें)
घुरुहुरंत–घुरुघुरुशब्दं कुर्वत्
घुलिय–घुलित (चञ्चल इत्यर्थः)
घुसिण–घुसृण
घूय–घूक
घोड–घोट (अश्व इत्यर्थः । मराठी–घोडा)
घोणस–गोनस (सरीसृपविशेषः)
घोर–घोर
घोलंत–घोलत् (भ्रमन्नित्यर्थः)
घोलिर–घोलनशील (लुण्टनशील इत्यर्थः)
घोस–गुच्छार्थे देशी (मराठी–घोस)
घोस–घोष (शब्द)

चउ–चतुर्
चउकसाय–चतुष्कषाय
चउगइ–चतुर्गति
चउत्थी–चतुर्थी
चउद्दस–चतुर्दशन्
चउदार–चतुर्द्वार
चउप्पअ–चतुष्पद
चउप्पय–चतुष्पद
चउपास–चतुष्पाश
चउभेय–चतुर्भेद
चउरय–चक्रप (चक्रवाक ?)
चउरासी–चतुरशीति
चउरि–लग्नमण्डप इत्यर्थे देशी (गुजराथी–चोरी)
चउविह–चतुर्विध
चउसण्णा–चतुःसंज्ञा
चक्क–चक्र
चक्कणाह–चक्रनाथ
चक्कवट्टि–चक्रवर्तिन्
चक्ख–आस्वादने देशी (धातुः)
चक्खु–चक्षुष्
चक्खुगम्म–चक्षुर्गम्य
चच्चंकिय–चर्चित
चच्चर–चत्वर (चतुष्पथ)
चच्चिअ–चर्चित
चच्चिक्किय–चर्चित (लिप्त इत्यर्थः)
चच्चिय–चर्चित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चट्टण–नाशक (भक्षक) इत्यर्थे देशी
चट्टय–उत्पूत इत्यर्थे देशी (!)
चट्टुय–यष्टी इत्यर्थे देशी
चट्टुयफल–यष्ट्यग्रनिहितलोहमयाङ्कुश इत्यर्थः
चड–आ+रुह् इत्यर्थे देशी (धातुः)
चडाविय–आरोहित इत्यर्थे देशी
चडिर–आरोहणशील
चत्त–त्यक्त
चत्तअ–त्यक्त (क)
चत्तारि–चतुर्
चप्प–पीडने देशी (धातुः)
चप्पड–तैलाभ्यङ्गे देशी (धातुः)
चप्परि–सत्वरम्
चमक्क–चमत्कार
चमर–चमर (पुच्छ)
चमर–चामर
चमराणिल–चामरानिल
चम्म–चर्मन्
चम्मचक्खु–चर्मचक्षुष्
चम्मट्ठिसेस–चर्मास्थिशेष
चय–त्यज् (धातुः)
चयारि–चत्वारि
चर–चर् (धातुः)
चरण–चरण (पद)
चरण–चरण (व्रताद्यनुष्ठानम्)
चरणजुयल–चरणयुगल
चरंत–चरत्
चरित्त–चरित, चारित्र
चरिय–चारित्र, चरित
चरु–चरु
चरुअ–चरु (क) (नैवेद्य इत्यर्थः)
चल–चल् (धातुः)
चल–चल
चलचामर–चलच्चामर
चलण–चरण (पद)
चलवल–धूनने (धातुः)
चलिअ–चलित
चलिय–चलित
चलियअ–चलित (क)
चल्ल–चल् (धातुः)
चल्लिय–चलित
चव–वच्‌धात्वर्थे देशी
चवल–चपल
चविअ–उक्त, जल्पित
चंग–सुन्दरार्थे देशी
चंचल–चञ्चल
चंचु–चञ्चू
चंचूजीविअ–चञ्चूजीविक (पक्षीत्यर्थः)
चंड–चण्ड
चंडमारी–चण्डमारी (कात्यायनी)
चंडयम्म–चण्डकर्मन् (राजपुरुषनामविशेषः)
चंडाल–चाण्डाल
चंडियसमाण–चण्डीसमान (देवीतुल्य)
चंद–चन्द्र
चंदण–चन्दन
चंदप्पह–चन्द्रप्रभ (अष्टमतीर्थंकरनाम)
चंदमइ–चन्द्रवती, अथवा, चन्द्रमति (यशोधरजननीनाम)
चंदमुही–चन्द्रमुखी
चंदसिरि–चन्द्रश्री
चंदायण–चान्द्रायण (तपोविशेषः)
चंदावहत्त–चन्द्राभवक्त्र (पूर्णिमाचन्द्रसदृशवदनयुक्तः। अथवा, चन्द्रः अधोवृत्तो यस्य; अष्टमतीर्थंकरस्य चन्द्रचिह्नत्वात्)
चंदुज्जल–चन्द्रोज्ज्वल
चंप–पीडने देशी (धातुः)
चंपय–चम्पक
चाअ–त्याग (औदार्य)
चामर–चामर
चामीयर–चामीकर
चामुंडचंड–चामुण्डचण्ड (भयंकर इत्यर्थः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाय–त्याग
चायय–चातक (पक्षिविशेषः)
चारण–चारण
चारित्त–चारित्र
चारु–चारु
चालुय–चालन्या शोधित इत्यर्थे देशी (मराठी–चाळलेलें)
चालण–चालन
चास–चाष (पक्षिविशेषः)
चि–चित् (अवधारणे एवार्थेऽव्ययम्)
चिक्कम–चंक्रम् (धातुः)
चिक्खिल्ल–कर्दमार्थे देशी
चिच्चि–अग्निशब्दार्थे देशी
चिण्ण–चीर्ण
चित्त–चित्र (आश्चर्येऽव्ययम्)
चित्त–चित्त
चित्तय–व्याघ्रजातिविशेषः (मराठी–चित्ता)
चित्तल–चित्रल (चित्रित इत्यर्थः)
चित्तसेण–चित्रसेन
चित्तंगअ–चित्रंगत
चित्तुवलक्ख–चित्त+उपलक्ष
चिया–चिता
चिर–चिरम्
चिरजीविन्–चिरजीविन्
चिरजीविअ–चिरजीवित
चिरणर–चिरनर (पुराणपुरुष इत्यर्थः)
चिराउस–चिरायुष्
चिराण–चिरंतन
चिरु–चिरम्
चिलाय–किरात
चिलिसावण–जुगुप्साकर इत्यर्थे देशी (मराठी–चिळसवाणें)
चिहुर–चिकुर (केश)
चिहुरभार–चिकुरभार
चिंचइय–चर्चित (भूषित इत्यर्थः)
चिंत–चिन्तय् (धातुः)
चिंध–चिह्न (केतुः ध्वजादिकं वा)
चिंध–वस्त्रखण्डमित्यर्थे देशी (मराठी–चिंधी)
चीर–चीर (वस्त्र)
चीरखंड–चीरखण्ड
चीरिया–चीरिका (मराठी–चिरडी)
चीवर–चीवर
चुअ–च्युत
चुक्क–भ्रंश् इत्यर्थे देशी (धातुः)
चुण–भक्षणे देशी (धातुः) (पक्षिणां भक्षणे एव युज्यते)
चुमुचुम–कीरशब्दानुकरणे (धातुः)
चुंब–चुम्ब् (धातुः)
चुंबण–चुम्बन
चुंबंत–चुम्बत्
चुंबिअ–चुम्बित
चूडामणि–चूडामणि
चूडारयण–चूडारत्न
चूय–चूत
चूरिय–चूर्ण
चूलि–कुक्कटी
चे–मृ इत्यर्थे देशी (धातुः) (चेइवि=मृत्वा)
चेईहर–चैत्यगृह
चेयण–चेतन
चेयणाल–चेतना+आल (मत्वर्थीयः)
चेल–चेल (वस्त्र)
चेलिय–चेटी
चेली–चीरी (वस्त्र)
चोज्ज–कौतूहलार्थे देशी
चोप्पड–म्रक्षणे देशी (धातुः)
चोर–चोर
चोरउल–चोरकुल

छ–षट्
छइय–छादित, शोभित
छज्ज–शोभायां देशी (धातुः)
छज्जीवणिकाय–षड्जीवनिकाय (पृथिव्यते-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवायुत्रसवनस्पतिकायाः)
छट्ठ–षष्ठ
छडय–उपलेप इत्यर्थे देशी (गोमयादिभिः प्राङ्गणादिकस्योपलेपः । मराठी–सडा)
छडया–छटा
छड्ड–त्यज्धात्वर्थे देशी
छण–क्षण
छणयंद–क्षण+चन्द्र (पूर्णिमाचन्द्र इत्यर्थः)
छण्ण–छन्न (आच्छादित)
छत्त–छत्र
छत्तछाय–छत्र+छाया
छद्दंसण–षड्दर्शन (सांख्ययोगन्यायवैशेषिकपूर्वोत्तरमीमांसारूपाणि)
छप्पय–षट्पद (मधुकरो धूर्तश्चेति टिप्पणम्)
छम्म–छद्म
छल–छल (मिष)
छंगुलिमिअ–षडङ्गुलिमित
छंड–त्यज्धात्वर्थे देशी
छंद–छन्द (अभिप्रायविशेषः)
छंद–छन्दः(शास्त्र)
छाइअ–छादित
छाइय–छादित
छाय–छादय् (धातुः)
छार–क्षार (भस्मेत्यर्थः)
छाली–छागी (अजा)
छाव–शाव (वत्स)
छाहा–छाया
छाही–छाया
छिज्ज–छिद्धातोः कर्मणि
छिज्जंतर–छेद्यान्तर (कलास्वन्यतमा)
छिण्ण–छिन्न
छिण्णंगुलि–छिन्नाङ्गुलि
छित्त–क्षेत्र
छित्त–स्पृष्ट (छिव्धातोर्निष्ठान्तम् !)
छिद्द–छिद्र
छिप–स्पृश्धात्वर्थे देशी
छिव–स्पृश्धात्वर्थे देशी
छिंद्–छिद् (धातुः)
छिंदण–छेदन
छुड्ड–क्षिप्रमित्यर्थेऽव्ययम् (देशी)
छुरिय–छुरित
छुह–क्षुध्
छुह–सुधा (चूर्ण)
छुहा–सुधा (चूर्ण)
छुहावस–क्षुद्वश
छूढ–क्षिप्त
छेअ–छेद
छेत्त–क्षेत्र
छेयण–छेदन
छेल–छाग (अज)
छेवि–छित्त्वा
छोक्करण–छूत्कार (उड्डापनशब्द इति टिप्पणम्)
छोहिय–क्षोभित

जइ–यदि
जइ–यति
जइयहु–यदा
जइवइ–यतिपति
जइवर–यतिवर
जक्ख–यक्ष
जक्खिंद–यक्षेन्द्र
जक्खी–यक्षी (यक्षिणी)
जग–जगत्
जगजीव–जगज्जीव
जगपरमेसर–जगत्परमेश्वर
जगमंडव–जगन्मण्डप
जगुत्तम–जगदुत्तम
जगरवि–जगद्रवि
जच्चंध–जात्यन्ध
जज्जर–जर्जर
जज्जरिय–जर्जरित
जड–जटा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जड–जड
जडत्तण–जडत्व
जडा–जटा
जडिय–जडित (युक्त इत्यर्थः)
जढराणल–जठर+अनल
जण–जन
जणण–जनन
जणणी–जननी
जणुल्ल–जनन+उल्ल (स्वार्थे)
जणात्तिहर–जनार्तिहर
जणवअ–जनपद
जणवय–जनपद
जणु–इवार्थेऽव्ययम्
जण्ण–यज्ञ
जत्त–यात्रा
जत्ता–यात्रा
जत्थ–यत्र
जम–यम (नियम)
जम–यम (मृत्युदेव)
जमदूअ–यमदूत
जमसासण–यमशासन
जम्म–जन्मन्
जय–जगत्
जय–जयकारशब्द
जय–जि (धातुः)
जयकारिअ–जयकारित
जयलच्छि–जयलक्ष्मी
जयसिरी–जयश्री
जर–जरा
जरदासी–जरा (एव) दासी
जरमरण–जरामरण
जरसरि–जरा (एव) सरित्
जल–जल
जल–ज्वल् (धातुः)
जलण–ज्वलन
जलणिहि–जलनिधि
जलयर–जलचर
जलवइ–जलपति (मकर इत्यर्थः)
जलहर–जलधर
जलहि–जलधि
जालिय–ज्वलित
जलोह–जल+ओघ (जलसमूह)
जल्ल–मल इत्यर्थे देशी
जल्लोसहि–जल्ल (एव) औषधि
जव–जप् (धातुः)
जवालअ–जव+आलअ (मत्वर्थीयः)
जस–यशस्
जसपूरियास–यशःपूरिताश (दिगन्तव्यापि-यशाः इत्यर्थः)
जसबंधुर–यशोबन्धुर (राज्ञो नामविशेषः)
जसमइ–यशोमति (यशोधरपुत्रस्य नाम)
जसवइ–यशोमति (यशोधरपुत्रस्य नामान्तरम्)
जससेस–यशःशेष (सकलमपि भुवनस्थं यश इत्यर्थः)
जसहर–यशोधर
जसहरक्ख–यशोधराख्य
जसोह–यशोर्ह, यशोर्घ, यशओघ इति वा (यशोधरपितुर्नाम)
जह–यथा
जहिं–यत्र
जंगल–जाङ्गल (मांस)
जंगलय–जाङ्गल (क)
जंघा–जङ्घा
जंघाबल–जङ्घाबल
जंत–यात्
जंप–जल्प् (धातुः)
जंपंति–जल्पन्ती
जंपाण–यानविशेषे देशी
जंबुदीव–जम्बूद्वीप
जंबूणय–जाम्बूनद (सुवर्ण)
जा–या (धातुः)
जाअ–जात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाइ–जाति
जाण–ज्ञा (धातुः)
जाण–यान
जाणवत्त–यानपात्र
जाणिय–ज्ञात (प्रसिद्ध इत्यर्थः)
जाणु–जानु
जाणुय–जानु(क)
जाम–यावत्
जायअ–याचक
जार–जार (उपपति)
जारासत्त–जारासक्त
जाल–जाल
जाल–जाल (समूहार्थे समासान्ते एव)
जाल–ज्वालय् (धातुः)
जाल–ज्वाला
जालगवक्ख–जालगवाक्ष
जालंधर–जालंधर (धीवर इत्यर्थः)
जाव–यावत्
जि–चित् (अवधारणे एवार्थेऽव्ययम्)
जिअ–जीव
जिज्ज–याधातोः कर्मणि (यायते, याप्यते इत्यर्थे)
जिण–जिन
जिणदिक्खा–जिनदीक्षा
जिणधम्म–जिनधर्म
जिणमग्ग–जिनमार्ग
जिणमंदिर–जिनमन्दिर
जिणयत्त–जिनदत्त
जिणवयण–जिनवचन
जिणवर–जिनवर
जिणसुत्त–जिनसूक्त, जिनसूत्र (जिनभाषित-मित्यर्थः)
जिणियसत्तु–जितशत्रु
जिणुत्त–जिनोक्त
जिप्प–जिधातोः कर्मणि
जिमिअ–जेमित (भुक्त)
जिमिय–जेमित (भुक्त)
जिम्म–भुज्धात्वर्थे देशी
जिय–जित
जिय–जीव् (धातुः)
जियसत्तु–जितशत्रु
जियारि–जितारि
जिह–यत्र
जीअ–जीव
जीर–जीरक (मराठी–जिरें)
जीरवण–जीरण (पाचन इत्यर्थे)
जीव–जीव
जीवउल–जीवकुल
जीवकए–जीवकृते
जीवदया–जीवदया
जीवंत–जीवत्
जीवमित्ती–जीवमैत्री
जीवरासि–जीवराशि
जीवसहाअ–जीवस्वभाव
जीवहिंस–जीवहिंसा
जीवावहारी–जीवापहारिन्
जीवाहार–जीवाहार
जीविअ–जीवित
जीह–जिह्वा
जीहादल–जिह्वादल
जुअ–युत
जुइजुत्तिय–द्युतियुक्त
जुज्ज–युज्धातोः कर्मणि
जुज्झिर–योधनशील
जुत्त–युक्त
जुत्ति–युक्ति
जुण्ण–जीर्ण
जुय–युग
जुयल–युगल
जुयलुल्ल–युगल+उल्ल (स्वार्थे)
जुव–युग
जुवई–युवति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुवरायपट्ट–युवराजपट्ट
जुवाण–युवन्
जुहिट्ठिल–युधिष्ठिर
जूरिअ–खेदित इत्यर्थे देशी
जूह–यूथ
जूहाहिअ–यूथाधिप
जूहिंद–यूथेन्द्र
जूहेस–यूथेश
जेत्तहिं–यत्र, यावति
जेत्थ–यत्र
जेत्थु–यत्र
जेम–यथा
जेवणवेल–जेमन (भोजन)+वेला
जोअ–योग (अलब्धस्य लाभ इत्यर्थः)
जोइ–योगिन्
जोइणि–योगिनी
जोइणिपुज्ज–योगिनीपूजा
जोइणिपुर–योगिनीपुर (नगरनाम)
जोइस–ज्यौतिष (शास्त्र)
जोईस–योगीश
जोईसर–योगीश्वर
जोगवट्ट–योगपट्ट
जोग्ग–योग्य
जोणी–योनि (प्रभव)
जोण्ह–ज्योत्स्ना
जोण्हा–ज्योत्स्ना
जोय–अवलोकने देशी (धातुः)
जोव्वण–यौवन
जोह–योध
जोहेयअ–यौधेय(क) (जनपदनामविशेषः)

झडत्ति–झटिति
झडप्पण–आक्रमणार्थे देशी (मराठी–झडप)
झड–विद्रावणे देशी (धातुः)
झत्ति–झटिति
झरंत–क्षरत

झल–उष्मा इत्यर्थे देशी (मराठी–झळ)
झल्लिर–धारायुक्त इत्यर्थे देशी
झस–झष (मत्स्य)
झस–झष (आयुधविशेष)
झळक्क–कथ्धात्वर्थे देशी
झंकार–झङ्कार
झंख–आच्छादने देशी (धातुः)
झंप–आच्छादने देशी (धातुः)
झंपडिय–मुक्तविरल इत्यर्थे देशी (मुक्तविरल इति टिप्पणम्)
झा–ध्यै (धातुः)
झाइय–ध्यात
झाण–ध्यान
झाणारूढ–ध्यानारूढ
झाय–ध्यै (धातुः)
झिल्लिरि–झिल्लिरी (प्राणिविशेष)
झीण–क्षीण
झुण–ध्वन् (धातु)
झुणि–ध्वनि
झुलंत–वेपमान इत्यर्थे देशी (मराठी–झुलणें)
झूर–खेदे देशी (धातुः) (मराठी–झुरणें)

टिविल–वाद्यविशेष
टोप्पी–शिरआच्छादने देशी (मराठी–टोपी)

ठक्कुर–ठक्कुर (वंशनाम)
ठव–स्थापय् (धातुः)
ठा–स्था (धातुः)
ठाण–स्थान
ठिअ–स्थित
ठिय–स्थित

डज्झ–दह् (धातुः)
डर–भये देशी (धातुः)
डस्–दश् (धातुः)
डसण–दशन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डह्–दह् (धातुः)
डह–दहर (बाल इत्यर्थः)
डंभ–दम्भ
डंभधारि–दम्भधारिन्
डंस–दश्(धातुः)
डाइणि–डाकिनी (प्रेतपिशाचादिस्त्रीविशेषः)
डिंडिम–डिण्डिम (वाद्यविशेषः)
डिंभ–डिम्भ (शिशु, बालक)
डिंभय–डिम्भ (क)
डुल्ल–धूनने देशी (धातुः)
डोर–सूत्र इत्यर्थे देशी (मराठी–दोर)
डोल्ल–धूनने देशी
डोंब–चाण्डालजातिविशेष

ढक्का–ढक्का (वाद्यविशेष)
ढड्ढर–राक्षसप्रेतपिशाचादय इति टिप्पणम्
ढुंख–शुष्क इत्यर्थे देशी (पत्रपुष्पफलादि-रहित इत्यर्थे)
ढिड्ढिस–पिष्ट (धान्यादीनां पिष्टमिति टिप्पणम्)
ढुक्क–ढौकित (प्रस्तुत इत्यर्थे देशी)
ढेक्कार–वृषभशब्दानुकारशब्दः (मराठी–ढेकर)
ढोअ–ढौकय् (धातुः)
ढोइय–ढौकित

ण–न (निषेधेऽव्ययम्)
णअ–नय
णइ–नदी
णइतीर–नदीतीर
णइवाह–नदीप्रवाह
णउल–नकुल
णक्क–नासाशब्दार्थे देशी (मराठी–नाक)
णक्ख–नख
णग्ग–नग्न
णग्गी–नग्न
णग्गुडि–चारणादिबन्दिवर्ग इत्यर्थे देशी (भट्ट-भाट ! इति टिप्पणम्) १–२७–१.
णग्गोह–न्यग्रोध
णच्च–नृत् (धातुः)
णच्चण–नर्तन
णच्चंत–नृत्यत्
णच्चावय–नर्तय् (धातुः)
णच्चिय–नर्तित
णज्ज–ज्ञा (धातुः)
णट्ट–नाट्य
णट्ठ–नष्ट
णड–नट
णडिअ–वञ्चित इत्यर्थे देशी
णण्ण–नन्न (नन्द !) (भरतमहामन्त्रिणः पुत्रः)
णण्ण–न+अन्य
णत्ति–नप्त्री
णत्थि–न + अस्ति
णमि–नमि (एकविंशतीर्थंकरनाम)
णमिय–नमित
णय–नत
णय–नय (नीतिशास्त्र)
णय–नय (राजपुत्रनामाविशेषः)
णयण–नयन
णयणंजण–नयनाञ्जन
णयणंसु–नयन + अश्रु
णयणिट्ठ–नयन + इष्ट
णयणुल्ल–नयन + उल्ल (स्वार्थे)
णयर–नगर
णयरी–नगरी
णयरोह–नय + रोध (दुर्नय इत्यर्थः)
णयाणय–नय + अनय
णर–नर
णरअ–नरक
णरजम्म–नरजन्मन्
णरणाह–नरनाथ
णरत्थ–नर + अर्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णरय–नरक
णरयबिल–नरकबिल (छिद्र)
णरवइ–नरपति
णरवर–नरवर
णरवरिंद–नरवरेन्द्र
णरिंद–नरेन्द्र
णल–नल
णरंग–नराङ्ग
णव–नम् (धातुः)
णव–नव
णवकमल–नव + कमल
णवखंड–नव + खण्ड
णवपल्लव–नवपल्लव
णवयारिवि–नमस्कृत्य, १-२७-१०.
णवल्ल–नव + ल्ल (स्वार्थे)
णवविह–नवविध
णविअ–नत
णविय–नत
णह–नख
णह–नभस्
णहयर–नभश्चर
णहंत–नभस् + अन्त
णहयल–नभस्तल
णहर–नखर (नख)
णहसिरि–नभःश्री
णहुस–नहुष
णहोयरंत–नभस् + अवतरत्
णं–ननु
णंद–नन्द् (धातुः)
णंद–नन्द (आनन्द)
णंदण–नन्दन
णंदणवण–नन्दनवन
णंदंत–नन्दत्
णंदिणि–नन्दिनी (धेनुः)
णंदिय–नन्दित
णा–ज्ञा (धातुः)
णाअ–न्याय
णाइ–ननु इत्यर्थे (उत्प्रेक्षायाम् अव्ययम्)
णाइणि–नागिनी
णाइंद–नागेन्द्र
णागदत्त–नागदत्त (नामविशेषः)
णागय–न + आगत
णाडिवह–नाडीपथ
णाण–ज्ञान
णाणमअ–ज्ञानमय
णाणा–नाना
णाणागुण–नानागुण
णाणाविह–नानाविध
णाम–नामन्
णारय–नारक (नरकोद्भव इत्यर्थः)
णारिसंग–नारीसंग
णारी–नारी
णारीरूव–नारीरूप
णावइ–उपमार्थे उत्प्रेक्षार्थे वाव्ययम्
णावइ–न + आगच्छति
णाव–न + आप् (धातुः)
णास–नश् (धातुः)
णास–नाश
णास–नाशय् (धातुः)
णासा–नासा
णासउडि–नासापुटी
णाह–नाथ
णाहल–अरण्यचाण्डाल इत्यर्थे देशी
णाहि–नाभि
णिउत्त–नियुक्त
णिउणयर–निपुणतर
णिउंजिय–नियुक्त
णिए–अवलोकने देशी (धातुः)
णिकाय–निकाय (समूह)
णिकेय–निकेत (गृह)
णिक्कल–निष्कल (निःशरीर इति टिप्पणम्)
णिक्कलुण–निष्करुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिक्काम–निष्काम
णिक्किअ–निष्कृप
णिक्किट्ठ–निकृष्ट (नीच)
णिक्किट्ठअ–निकृष्ट(क)
णिक्खिय–निखात
णिक्खिय–निक्षिप्त
णिग्गम–निर्गम
णिग्गमण–निर्गमन
णिग्गयमइ–निर्गतमति
णिग्गह–निग्रह
णिग्गह–नि + ग्रह् (धातुः)
णिग्गंत–निर्गच्छत्
णिग्गंथवित्ति–निर्ग्रन्थवृत्ति
णिग्गुण–निर्गुण
णिग्घिण–निर्घृण
णिच्च–नित्य
णिच्चं–नित्यम् (अव्ययम्)
निच्चल–निश्चल
णिच्चलमइ–निश्चलमति
णिच्चिट्ठ–निश्चेष्ट
णिच्चेयण–निश्चेतन
णिच्चोरमारि–निस्+चोर+मारी (जनपदोद्ध्वंसनो रोगादिः)
णिच्छअ–निश्चय
णिच्छवि–निश्छवि (निस्तेजस्)
णिज्ज–नीधातोः कर्मणि
णिज्जण–निर्जन
णिज्जर–निर्जर
णिज्जिय–निर्जित
णिज्जियमइय–निर्जितमति(क)
णिज्जीव–निर्जीव
णिज्झर–निर्झर
णिट्ठा–निष्ठा
णिट्ठावस–निष्ठावश
णिट्ठिय–निष्ठित (समाप्त, मृत)
णिट्ठुर–निष्ठुर
णिड्डह–निर्दह् (धातुः)
णिणद्द–निनाद
णिणाअ–निनाद
णिणाइय–निनादित
णिण्णाण–निर्ज्ञान (अज्ञान)
णिण्णाम–निर्नाम (अज्ञातनामा)
णिण्णासण–निर्नाशन
णिण्णेह–निःस्नेह
णित्त–नीत, (प्राप्त) (नीधातोर्निष्ठान्तम्)
णित्तेय–निस्तेजस्
णित्थाम–निःस्थामन्
णिद्द–निद्रा
णिद्दय–निर्दय
णिद्दलिय–निर्दलित
णिद्दिट्ठ–निर्दिष्ट
णिद्ध–स्निग्ध
णिद्धण–निर्धन
णिद्धम्म–निर्धर्म
णिद्धाड–प्रेरणे देशी (धातुः)
णिद्धाम–निर्धामन्
णिप्पहरण–निष्प्रहरण
णिप्पाण–निष्प्राण
णिप्पेय–निष्पेय
णिप्फल–निष्फल
णिबद्ध–निबद्ध
णिबद्धी–निबद्धा (विरचितेत्यर्थः)
णिबंध–निबन्ध (निबन्धन)
णिब्बंधु–निर्बन्धु
णिब्बुड–निस्+मस्ज्धात्वर्थे देशी
णिब्भच्छिय–निर्भर्त्सित
णिब्भिण्ण–निर्भिन्न
णिब्भोइल्ल–निर्+भोग+इल्ल (मत्वर्थीयः)
णिमीलण–निमीलन
णिमेस–निमेष
णिम्मल–निर्मल
णिम्मलय–निर्मल (क)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिम्मंस–निर्मांस
णिम्महण–निमथन
णिम्मा–निर्+मा (धातुः)
णिम्मुक्क–निर्मुक्त
णिम्मुक्कताण–निर्मुक्तत्राण
णिम्मोह–निर्मोह
णिय–अवलोकने देशी (धातुः)
णिय–निज
णिय–नीत
णियघर–निजगृह
णियच्छ–दृश्धात्वर्थे देशी
णियच्छिय–निरीक्षित
णियडअ–निकट(क)
णियड्डिय–निकर्षित
णियम–नियम
णियमण–निजमनस्
णियय–निज(क)
णिययसिरि–निजक+श्री
णियर–निकर
णियाण–निदान
णिरअ–निरत
णिरलंकार–निरलंकार
णिरवसेस–निरवशेष
णिरस–नीरस
णिरसिय–निरसित (परित्यक्त)
णिरत्थ–निरर्थ (व्यर्थ)
णिरत्थ–निरस्त
णिरंजण–निरञ्जन
णिरंतर–निरन्तर
णिरंस–निरंश (अखण्ड इत्यर्थः)
णिरिक्खिअ–निरीक्षित
णिरु–नितराम्
णिरुत्त–निरुक्त
णिरुवम–निरुपम
णिरुविय–निरूपित
णिरोहिअ–निरुद्ध
णिलअ–निलय (गृह)
णिलाड–ललाट
णिलीण–निलीन
णिल्लुणण–निर्लवन (छेद इत्यर्थः)
णिल्लुत्त–निर्लुप्त
णिव–नृप
णिवइ–नृपति
णिवड–नि+पत् (धातुः)
णिवडिय–निपतित
णिवस–नि+वस् (धातुः)
णिवसण–निवसन
णिवसुया–नृपसुता
णिवह–निवह
णिवारण–निवारण
णिवारणिअ–निवारणीय
णिवास–निवास
णिविट्ठ–निविष्ट
णिविड–निबिड
णिविडत्थवंत–निबिड+अर्थवत्
णिवित्ति–निवृत्ति
णिव्वट्टिअ–निर्वर्तित
णिव्वण–निर्वन
णिव्वाइअ–प्रसारित इति टिप्पणम्
णिव्वाण–निर्वाण
णिव्वियड–निर्विकट
णिव्वियप्प–निर्विकल्प
णिव्वूढ–निर्व्यूढ
णिव्वेअ–निर्वेद
णिस–निशा
णिसण्ण–निषण्ण
णिसंग–निःसंग
णिसा–निशा
णिसायर–निशाचर
णिसायरि–निशाचरी
णिसिचार–निशिचार (निशि वृत्तमित्यर्थे)
णिसिद्ध–निषिद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिसिभोयण–निशाभोजन
णिसियग्ग–निशिताग्र
णिसियर–निशिचर (भूतप्रेतपिशाचादि)
णिसुण–नि+श्रु (धातुः)
णिसुंभ–नि+शृम्भ् (धातुः)
णिसुंभ–निश्रब्ध (निःस्तब्ध इत्यर्थः)
णिस्संक–निःशङ्क
णिहअ–निभ(क) (सदृशार्थे)
णिहण–निधन
णिहय–निहत
णिहाण–निधान
णिहाल–नि+भालय् दर्शने (धातुः)
णिहालण–निभालन (प्रेक्षण)
णिहालिय–निभालित (दृष्ट)
णिहि–निधि
णिहित्त–निहित
णिहिप्प–नि+धा (धातुः)
णिहुय–निभृत (शान्त इत्यर्थः)
णिहेलण–निहेलन (गृहमित्यर्थे)
णिंद–निन्द् (धातुः)
णिंद–निन्दा
णिंदण–निन्दन
णिंदमग्ग–निन्द्य+मार्ग
णी–नी (धातुः)
णीअ–नीत
णीणिय–निर्णीत
णीयरय–नीच+रत
णीर–नीर
णीरस–नीरस
णीरोयत्तण–नीरोगत्व
णील–नील
णीलय–नीलक
णीसण–निःस्वन
णीसरिअ–निःसृत
णीसेस–निःशेष
णेउर–नूपुर
णेत्त–नेत्र
णेमि–नेमि (द्वाविंशतीर्थंकरनाम)
णेमि–नेमि (रथचक्रधारेति टिप्पणम्)
णेयार–नेतृ
णेवाविअ–नायित (नीधातोर्णिजन्तान्निष्ठान्तम्)
णेह–स्नेह
ण्हविअ–स्नापित
ण्हा–स्ना (धातुः)
ण्हाअ–स्नात
ण्हाण–स्नान

तइ–तदा
तइ–त्रयी
तइय–तदा
तइय–तृतीय
तइयाच्छि–तृतीय+अक्षि
तइयहु–तदा
तउ–तपस्
तक्कर–तस्कर
तक्खण–तत्क्षण
तज्जिय–तर्जित
तट्ठ–त्रस्त
तट्ठअ–धृष्टशब्दार्थे देशी (मराठी–ताठ)
तड–तट
तड–तड् (आरुह इत्यर्थे देशी, धातुः)
तडतड–शब्दानुकरणे
तण–तृण
तणअ–तस्येदमित्यर्थे देशी प्रत्ययः
तणअ–तनय
तणय–तनय
तणयर–तृणचर
तणयरी–तृणचरी
तण्णियड–तद्+निकट
तणु–तनु (शरीर)
तणुअंगि–तन्वङ्गी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तणुतावअ–तनुतापक
तणुफंस–तनुस्पर्श
तणुरुह–तनुरुह
तणुल्लय–तनुलता
तण्हा–तृष्णा
तत्त–तप्त
तत्तिय–तृप्त
तत्थ–तत्र
तप्प–तप्‌धातोः कर्मणि
तम–तमस्
तमतमपह–तमस्तमःप्रभ (सप्तमनरकनाम)
तमपह–तमःप्रभ (षष्ठनरकनाम)
तमाल–तमाल
तमोह–तमस्+ओघ
तर–शक्‌धात्वर्थे देशी
तर–तृ (धातुः)
तरच्छ–तरक्षु (प्राणिविशेषः) (मराठी–तरस)
तरणि–तरणि (सूर्य)
तरसा–तरसा (वेगेनेत्यर्थः)
तरंग–तरङ्ग
तरंगिणि–तरङ्गिणी
तरु–तरु
तरुकाय–तरुकाय (वनस्पतिकाय इत्यर्थः)
तरुण–तरुण
तरुणी–तरुणी (युवति)
तरुणीवस–तरुणी+वश
तरुवेल्लीहल–तरु+वल्ली+फल
तरुसाहागय–तरु+शाखा+गत
तरुसाहार–तरु+सहकार
तल–तैलादिभर्जने (धातुः)
तलण–तलन
तलवर–ग्रामरक्षको राजपुरुष इत्यर्थे देशी
तलारअ–तलवर (क)
तलिय–तलित
तव–तप् (धातुः)
तव–तपस्
तवपहाअ–तपःप्रभाव
तवमंडण–तपोमण्डन
तवयरण–तपश्चरण
तवलच्छी–तपोलक्ष्मी
तववंत–तपस्+वत् (मत्वर्थीयः)
तवसत्ति–तपःशक्ति
तवसित्तण–तपस्वित्व
तवंग–उपरितनो भागः (उच्चप्रदेश इति टिप्पणम्। मराठी–तवंग !)
तवंत–तप्यमान
तविअ–तप्त
तस–त्रस् (धातुः)
तहिं–तत्र
तहु–तदा, तत्र, तस्य
तंणयर–तद्+नगर
तंत–तन्त्र
तंति–तन्त्री
तंतु–तन्तु
तंदुल–तण्डुल
तंब–ताम्र
तंबचूल–ताम्रचूड (कुक्कुट)
तंबोल–ताम्बूल
तंबोललग्ग–ताम्बूल+लग्न
तंवार–तंवार (नरकनाम)
ता–तावत्
ताडण–ताडन
ताडिय–ताडित
ताम–तदा
तामस–तामस (पापमित्यर्थः)
तार–तार (शुभ्र)
ताराणियर–तारानिकर
तारावलि–तारा+आवलि
ताल–ताल
तालिअ–ताडित
ताव–ताप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तावस–तापस
तासिय–त्रासित
ति–त्रि
तिक्ख–तीक्ष्ण
तिक्ख–तिक्त
तिंगिच्छ–पद्मरज इत्यर्थे देशी
तिगुत्ति–त्रिगुप्ति (कायवाङ्मनोगुप्तिः)
तिजगब्भंतर–त्रिजगदभ्यन्तर
तिह्रा–तृष्णा
तिण–तृण
तित्थ–तीर्थ
तित्थयर–तीर्थंकर (शास्त्रप्रवर्तक इत्यर्थः)
तित्थु–तत्र
तिदंड–त्रिदण्ड
तिप्प–तृप् (धातुः)
तिम्मण–तेमन (मर्दन)
तिमिर–तिमिर
तिमुंड–त्रिमुण्ड
तिय–स्त्री
तियचित्त–स्त्रीचित्त
तियडुय–त्रिकटुक (शुण्ठी मरिचं पिप्पलीति त्रयाणां चूर्णम्)
तियमइ–स्त्रीमति
तियसपत्ति–त्रिदशपत्नी (देवीत्यर्थः)
तियाल–त्रिकाल
तिरयण–त्रिरत्न (ज्ञानदर्शनचारित्राणि)
तिरिय–तिर्यंच्
तिरिक्ख–तिर्यंच्
तिरियलोअ–तिर्यग्लोक (मनुष्यलोक इति टिप्पणम्)
तिलअ–तिलक
तिलपिंड–तिल+पिण्ड (पिण्याक) (मराठी–पेंड)
तिलयछेअ–तिल(क)+छेद (स्नेहाभाव इति टिप्पणम्)
तिलिंग–स्त्रीलिङ्ग
तिल्लोअ–त्रैलोक्य
तिल्लोक्क–त्रैलोक्य
तिल्लोय–त्रैलोक्य
तिव्व–तीव्र
तिविह–त्रिविध
तिसल्ल–त्रिशल्य
तिसूल–त्रिशूल
तिसूलिणि–त्रिशूलिनी (कात्यायनी)
तिह–तत्र
तिहुयण–त्रिभुवन
तिहुवण–त्रिभुवन
तीय–तृतीया
तीस–त्रिंशत्
तुच्छोअरिल्ल–तुच्छ+उदर+इल्ल (मत्वर्थीयः)
तुट्ठ–तुष्ट
तुट्ठि–तुष्टि
तुडिय–त्रुटित
तुप्प–घृतशब्दार्थे देशी
तुम्हारिस–युष्मादृश
तुरअ–तुरग
तुरयणिहणयारि–तुरगनिधनकारिन्
तुरंग–तुरङ्ग
तुरंत–त्वरमाण
तुरिउ–त्वरितम् (अव्ययम्)
तुलकूड–तुलाकूट (वञ्चनार्थे प्रयुक्तानि न्यूनातिरिक्तानि मानोन्मानानीत्यर्थः)
तुलाकोडि–तुलाकोटि (पादाङ्गुदम्)
तुस–तुष् (धातुः)
तुस–तुष (धान्यादीनां तुषम्)
तुसार–तुषार
तुहार–त्वदीय
तुंग–तुङ्ग (उच्च)
तुंगत्थणि–तुङ्गस्तनी
तुंड–मुखशब्दार्थे देशी
तूर–तूर्य (वाद्यविशेषः)
तेअ–तेजस्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेत्तहि–तत्र
तेत्थ–तत्र
तेत्थु–तत्र
तेय–तेजस्
तेयाविद्धी–तेजस्+आविद्धा
तेरह–त्रयोदश
तेरहसय–त्रयोदशशत
तेल्ल–तैल
तोडिअ–त्रुटित
तोमर–तोमर (आयुधविशेषः)
तोरण–तोरण
तोस–तोष
तोसिअ–तोषित

थक्क–स्था (धातुः)
थक्क–स्तब्ध, स्थित इत्यर्थे देशी
थत्ति–स्थान इत्यर्थे देशी
थण–स्तन
थणवट्ट–स्तनपट्ट, स्तनवर्त (वर्तुल)
थणाल–स्तन+आल (मत्वर्थीयः)
थरहर–कम्पने देशी (धातुः)
थल–स्थल
थलयर–स्थलचर
थंभ–स्तम्भय् (धातुः)
था–स्था (धातुः)
थाणु–स्थाणु
थाल–स्थाली
थिअ–स्थित
थिप्प–गलने देशी (धातुः)
थिय–स्थित
थिर–स्थिर
थिरमण–स्थिरमनस्
थी–स्त्री
थीयण–स्त्रीजन
थुइवयण–स्तुतिवचन
थुण–स्तु (धातुः)
थुत्ति–स्तुति
थुय–स्तुत
थूण–अश्वशब्दार्थे देशी
थूल–स्थूल
थेरि–स्थविरा
थोअ–स्तोक
थोट्ट–छिन्नहस्त इत्यर्थे देशी (मराठी–थोटा)
थोर–स्थूल
थोरंसुय–स्थूल+अश्रु (क)
थोव–स्तोक

दइच्च–दैत्य
दइय–दयित
दइव–दैव
दक्खविय–दर्शित
दक्खालय–दर्शय् (धातुः)
दट्ठ–दष्ठ
दड्ढ–दग्ध
दढयर–दृढतर
दप्प–दर्प
दप्पसंग–दर्पसंग
दप्पिट्ठ–दर्पिष्ठ
दप्पुब्भड–दर्पोद्भट
दब्भ–दर्भ
दम–दम् (धातुः)
दम–दम
दमण–दमन
दमिय–दमित
दय–दया
दयविवेअ–दयाविवेक (दयायाः विवेकः भावः, दयाबुद्धिरित्यर्थः)
दयवेल्लि–दयावल्ली
दया–दया
दयावर–दयापर
दल–दल (पत्रमित्यर्थः)
दलण–दलन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दव–दव (दवानल इत्यर्थे)
दविण–द्रविण
दविणवइ–द्रविणपति (कुबेर)
दव्व–द्रव्य
दस–दशन्
दससहस–दशसहस्र
दह–दशन्
दह–ह्रद
दहंत–ह्रदान्त (ह्रदमध्य इत्यर्थः)
दहि–दधि
दंड–दण्ड
दंडणीइ–दण्डनीति
दंडधारि–दण्डधारिन्
दंडपणाम–दण्ड(वत्)+प्रणाम
दंडय–दण्ड (क)
दंडिय–दण्डित
दंडी–दण्डिन् (यम इत्यर्थः)
दंत–दन्त
दंत–दान्त
दंतग्ग–दन्ताग्र
दंतपंति–दन्तपङ्क्ति
दंति–दन्तिन्
दंतुर–दन्तुर
दंद–द्वन्द्व
दंसण–दर्शन
दंसिय–दर्शित
दंसिर–दृश्+इर (शीलार्थे प्रत्ययः) (दर्शनशील इत्यर्थः)
दा–दा (धातुः)
दाइणी–दायिनी (उत्तरपदे एव)
दाढा–दंष्ट्राशब्दार्थे देशी
दाढाकराल–दंष्ट्राकराल
दाढाल–दंष्ट्रा+आल (मत्वर्थीयः)
दाण–दान
दाणोल्लिय–दान+आर्द्र (मदजलार्द्र इत्यर्थः)
दाम–दामन्
दार–दार (स्त्री)
दार–द्वार
दारिअ–दारित
दारिद्द–दारिद्र्य
दारिय–दारित
दारुण–दारुण
दालि–दालि (शिम्बीधान्यादिदलमित्यर्थे देशी)
दालिद्दठाण–दारिद्र्यस्थान
दालिद्दिअ–दरिद्रित
दाविअ–दर्शित
दाविर–दर्शनशील
दासिसुअ–दासीसुत
दासी–दासी
दाह–दाह
दाहिण–दक्षिण
दाहिणुल्लिय–दक्षिण+उल्लिय (स्वार्थे)
दिक्ख–दीक्षा
दिक्खा–दीक्षा
दिक्खिअ–दीक्षित
दिक्खपत्त–दीक्षाप्राप्त (दीक्षित)
दिगिंछा–जुगुप्सा
दिग्गय–दिग्गज
दिज्ज–दाधातोः कर्मणि
दिट्ठ–दृष्ट
दिट्ठपरंपर–दृष्ट+परंपरा
दिट्ठि–दृष्टि
दिढ–दृढ
दिण–दिन
दिणयर–दिनकर (सूर्य)
दिणिंद–दिनेन्द्र (सूर्य)
दिणेसर–दिनेश्वर (सूर्य)
दिण्ण–दत्त
दित्त–दीप्त
दिप्पंत–दीप्यमान
दिय–दत्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दियउल—द्विजकुल
दियगुरु—द्विजगुरु
दियवर—द्विजवर
दियह—दिवस
दियंवर—दिगम्बर
दिवस—दिवस
दिवायर—दिवाकर
दिव्व—दिव्य
दिसा—दिश्
दिसि—दिश्
दिसिणारि—दिश्+नारी
दिहि—धृति
दिहियर—धृतिकर
दिहीहर—धृतिहर
दीव—द्वीप
दीवय—द्वीप(क)
दीवयजुइल्ल—दीपकद्युति + इल्ल (मत्वर्थीयः)
दीवंत—दीप्यमान
दीस—दृश्धातोः कर्मणि
दीह—दीर्घ
दीहर—दीर्घ
दीहरच्छ—दीहर (दीर्घ) + अक्षि (दीर्घाक्ष इत्यर्थः)
दीहिय—दीर्घिका
दु—द्वि
दुक्काल—दुष्काल
दुक्किय—दुष्कृत
दुक्कियणिवह—दुष्कृतनिवह
दुक्ख—दुःख
दुक्खावण—दुःख + आपण (प्रापण) (दुःखदायीत्यर्थः)
दुक्खिय—दुक्खित
दुगुंछ—गुप् (जुगुप्सार्थे धातुः)
दुग्ग—दुर्ग (दुर्गम)
दुग्गअ—दुर्गत (दुर्ग्राह्य इत्यर्थे)
दुग्गइ—दुर्गति
दुग्गंध—दुर्गन्ध
दुग्घर—दुर्गृह
दुचित्त—दुश्चित्त (दुष्टाभिप्राय इत्यर्थः)
दुचार—दुश्चार (दुराचार)
दुज्जण—दुर्जन
दुज्जोहण—दुर्योधन
दुट्ठ—दुष्ट
दुण्णय—दुर्नय
दुण्णयगारी—दुर्नयकारिन्
दुण्णिरिक्ख—दुर्निरीक्ष्य
दुतीस—द्वात्रिंशत्
दुत्तर—दुस्तर
दुत्तार—दुस्तार
दुत्थिय—दुःस्थित
दुद्दम—दुर्दम
दुद्दस्सिण—दुर्दर्शिन्
दुद्दंत—दुर्दान्त
दुद्ध—दुग्ध
दुद्धर—दुर्धर
दुप्पेच्छ—दुष्प्रेक्ष्य
दुब्बल—दुर्बल
दुब्भ—द्रुह् (धातुः)
दुब्भव—दुर्भव (कुजन्म)
दुम—द्रुम
दुमणि—द्युमणि (सूर्य)
दुमसाहा—द्रुमशाखा
दुम्मण—दुर्मनस्
दुम्मह—दुर्मथ (अभङ्ग इति टिप्पणम्)
दुरग्गह—दुराग्रह
दुरिअ—दुरित (पाप)
दुरिय—दुरित (पाप)
दुरियठाण—दुरितस्थान
दुरियरासि—दुरितराशि
दुरुत्त—दुरुक्त
दुवार—दार
दुविह—द्विविध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुव्वार–दुर्वार
दुव्वासा–दूर्वा+आशा
दुव्विणीअ–दुर्विनीत
दुव्विलसिय–दुर्विलसित
दुसह–दुःसह
दुसज्झ–दुःसाध्य
दुस्सह–दुःसह
दुह–दुःख
दुहडि–द्वि+घटी (कालमात्रा)
दुहणिहाअ–दुःख+निघात (समूह)
दुहपोट्टलअ–दुःख+पोट्टल
दुहयर–दुःखकर
दुहरीण–दुःख+रीण (खिन्नार्थे देशी)
दुहिअ–दुःखित
दुहोहखणि–दुःख+ओघ+खनि
दुंदुभि–दुन्दुभि (वाद्यविशेषः)
दुंदुहि–दुन्दुभि
दूइया–दूतिका
दूण–दून
दूमिअ–दून
दूरं–दूरम् (अव्ययम्)
दूरंतरिय–दूरान्तरित
दूवाखंड–दूर्वाखण्ड (दूर्वावनमित्यर्थः)
दूसह–दुःसह
दूसिअ–दूषित
दूसिय–दूषित
दूसियअ–दूषित(क)
दूहवअ–दुर्भग(क)
दूहविय–दुःखित
देअ–देव
देउल–देवकुल
देव–देव
देवउल–देवकुल
देवया–देवता
देवर–देवर
देवरइ–देवरति (नामविशेषः)
देवंगअ–देव+अङ्ग (क)
देवायरिअ–देव+आचार्य
देवालअ–देवालय
देवाविअ–दापित
देवि–देवी
देविघर–देवीगृह
देविया–देवी
देवी–देवी (विमलवाहनराज्ञीनाम)
देस–देश
देसिअ–देशिक (वैदेशिक)
देह–देह
देहि–देहिन्
देहुण्णअ–देह+ऊन(क)
दोआसा–द्वि+पार्श्व, अथवा, द्वि+आशा
दोखंडीभूय–द्विखण्डीभूत
दोफालिय–द्वि+पाटित
दोर–तन्तुशब्दार्थे देशी (मराठी–दोर)
दोवास–द्विपार्श्व
दोसहारी–दोषहारिन्
दोसायर–दोष+आकर
दोसुज्झिअ–दोषोज्झित (उज्झितदोष इत्यर्थः)
दोहाविअ–द्विधाकृत
दोहीयरण–द्वैधीकरण (संशय इत्यर्थः)

धगत्ति–अग्निज्वलनशब्दानुकरणे
धगधग–अग्निज्वलनशब्दानुकरणे (धातुः)
धण–धन
धणधण्ण–धन+धान्य
धणहीण–धनहीन
धणिय–धनिक
धणु–धनुष्
धणुवेअ–धनुर्वेद
धम्म–धर्म
धम्म–धर्म (पञ्चदशतीर्थिकरनाम)
धम्मचक्कि–धर्मचक्रिन्
धम्मझाण–धर्मध्यान (ध्यानप्रकारः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मत्थकाम–धर्मार्थकाम
धम्मलाह–धर्मलाभ
धम्मवाइ–धर्मवादिन्
धम्मविज्ज–धर्मविद्या
धम्मंघिव–धर्माङ्घ्रिप (धर्मवृक्ष इत्यर्थः)
धम्मक्खाण–धर्माख्यान
धम्मासत्त–धर्मासक्त
धम्माहम्म–धर्माधर्म
धम्मिल्ल–धम्मिल्ल (केशपाशः)
धम्मुच्छाह–धर्मोत्साह
धय–ध्वज
धर–धृ (धातुः)
धर–धरा (पृथ्वी)
धरणि–धरणि
धरणिणाह–धरणीनाथ
धरणियल–धरणीतल
धरपडिय–धरापतित
धरवीढ–धरापीठ
धरायल–धरातल
धरिअ–धृत
धरिय–धृत
धरिसमाणि–धरासमाना
धवल–धवल
धवल–धवल (शुक्लवर्ण, सुधावर्ण)
धवलच्छि–धवलाक्षी
धंस–ध्वंस् (धातुः)
धा–तृप्तौ (धातुः)
धाइदीव–धातकीद्वीप
धाउ–धातु
धाउ–धातु (गैरिकादि)
धाम–धामन्
धायअ–धावित
धार–धारा
धारिणी–धारिणी (उत्तरपदे एव)
धारिय–धारित
धाव–धाव् (धातुः)
धावंत–धावत् (सृधातोः शत्रन्तम्)
धाविय–धावित
धाहावंत–धा, हा इति शोकशब्दं कुर्वन्
धाहाविअ–शोकयुक्त इत्यर्थे
धिट्ठ–धृष्ट
धीवर–धीवर
धुअ–धुत (कम्पित)
धुउ–ध्रुवम् (अव्ययम्)
धुत्त–धूर्त
धुत्तिय–धूर्तित
धुप–धूप् (धातुः)
धुरंधर–धुरंधर
धुव–ध्रुव
धूमकेउ–धूमकेतु
धूमगंध–धूमगन्ध
धूमप्पह–धूमप्रभ (पञ्चमनरकनाम)
धूया–दुहितृ
धूली–धूली
धूलिर–धूलियुक्त
धूसर–धूसर
धूसरिय–धूसरित
धोय–धौत
धोयअ–धौत(क)
धोरणिकिअ–धोरणिकृत

पअ–पद
पइज्ज–पच्धातोः कर्मणि
पइट्ठ–प्रविष्ट
पइपत्त–पति+पात्र
पइवय–पतिव्रता
पइसर–प्रति+सृ (धातुः)
पइहर–प्रतिगृह (अन्तर्गृहमित्यर्थे)
पईसर–प्रति+सृ (धातुः)
पउ–पयस्
पउत्त–प्रवृत्त, प्रोक्त
पउत्त–पौत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पउत्थ–प्र+उषित
पउमा–पद्मा (लक्ष्मी)
पउमप्पह–पद्मप्रभ (षष्ठतीर्थंकरनाम)
पउमराय–पद्मराग (मणिविशेषः)
पउमिणी–पद्मिनी
पउर–पौर (पौरजन, पुरसंबन्धि)
पउर–प्रचुर
पउलण–प्रेरण
पउलाविय–पाचित
पउंज–प्र+युज् (धातुः)
पएस–प्रदेश
पओय–प्रजौघ (?) (प्रजासमूह इति हिन्दी भाषानुवादः)
पओहर–पयोधर (स्तन)
पकोक्किअ–आहूत इत्यर्थे देशी
पक्क–पक्व
पक्कल–समर्थ इत्यर्थे देशी (समर्थ इति टिप्पणम्)
पक्ख–पक्ष
पक्खालिय–प्रक्षालित
पक्खवाअ–पक्षपात
पक्खि–पक्षिन्
पखित्त–प्रक्षिप्त
पघे–प्र+ग्रह् (धातुः)
पघोस–प्र+घुष् (धातुः)
पच्चक्ख–प्रत्यक्ष
पच्चंत–प्रत्यन्त (सीमा)
पच्चुत्तर–प्रत्युत्तर
पच्छइ–पश्चात्
पच्छाहोंत–पश्चाद्भवत् (पश्चात्स्थित इत्यर्थः)
पच्छिअ–पथ्ययुक्त
पच्छित्त–प्रायश्चित्त
पच्छिम–पश्चिम
पजल–प्र+ज्वल् (धातुः)
पज्जत्त–पर्याप्त (पज्जत्तउ इत्यलमर्थेऽव्ययम्)
पज्जल–प्र+ज्वल् (धातुः)
पज्जलिय–प्रज्वलित
पज्जाअ–पर्याय
पट्ट–पट्ट (चिह्न)
पट्टण–पत्तन
पट्टबंध–पट्टबन्ध
पट्ठविय–प्रस्थापित
पड–पत् (धातुः)
पडपिहियासण–पट+पिहित+आसन
पडरइअ–पटरचित
पडल–पटल
पडह–पटह (वाद्यविशेषः)
पडाविय–पटित, पटयुक्त (आच्छादित)
पडिअ–पतित
पडिआवंत–प्रत्यावर्तमान
पडिकूल–प्रतिकूल
पडिक्खणं–प्रतिक्षणम्
पडिखलण–परि+स्खलन
पडिखलिय–परिस्खलित
पडिगह–प्रति+ग्रह् (धातुः)
पडिच्छ–प्रति+इष् (धातुः)
पडिजंपिय–प्रतिजल्पित
पडिबिंब–प्रतिबिम्ब
पडिबिंबिअ–प्रतिबिम्बित
पडिबुद्ध–प्रतिबुद्ध
पडिबोल्लिअ–प्रत्युक्त
पडिम–प्रतिमा
पडिय–पतित
पडियार–प्रतिकार
पडियावय–प्रतियापक (?) प्रत्याख्यात
पडिलव–प्रति+लप् (धातुः)
पडिवज्ज–प्रति+पद् (धातुः)
पडिवण्ण–प्रतिपन्न (प्रतिपादनं कथनमित्यर्थः)
पडिवण्णी–प्रतिपन्ना
पडिवयण–प्रतिवचन
पडिवहु–प्रतिवधू (सपत्नीत्यर्थः)
पडिसवण–प्रति+स्वप्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिसिविण–प्रतिस्वप्न
पडिहार–प्रतिहार
पडिहारिय–प्रतिहारी
पडिंद–प्रति+इन्द्र
पडु–पटु
पढ–पठ् (धातुः)
पढम–प्रथम
पढमिल्ल–प्रथम+इल्ल (स्वार्थे)
पढमुज्जल–प्रथम+उज्ज्वल
पढंत–पठत्
पढाव–पाठय् (धातुः)
पढुक्क–प्रवृत्त इत्यर्थे देशी
पणइणी–प्रणयिनी
पणच्चिर–प्र+नृत्+इर (शीलार्थे)
पणविज्ज–प्र+नम् धातोः कर्मणि
पणट्ठ–प्रनष्ट
पणयभंग–प्रणयभङ्ग
पणयंगणा–पण्याङ्गना (वेश्येत्यर्थः)
पणव–प्र+नम् (धातुः)
पणविय–प्रणत
पणसट्ठि–पञ्चषष्टि
पणालिया–प्रणालिका
पण्णयरिउ–पन्नगरिपु
पणिवाअ–प्रणिपात
पत्त–पत्र (अश्वादिवाहनम्)
पत्त–पात्र
पत्त–प्राप्त
पत्तछेअ–पत्रच्छेद (अगुरुकुङ्कुमादिभिर्विरचितः शरीरे शोभाविशेषः)
पत्तल–कृश इत्यर्थ देशी
पत्तल–यवीयस् इत्यर्थे देशी
पत्तालिया–कृशा इत्यर्थे देशी
पत्तवडिय–पात्रपतित
पत्तिय–प्रति+इ (धातुः)
पत्ति–पत्नी
पत्थ–प्रस्थ (धान्यादिपरिमाणविशेषः)
पत्थर–प्रस्तर
पत्थिअ–प्रार्थित
पत्थियअ–प्रार्थित(क)
पत्थिव–पार्थिव
पथिप्पिर–प्र+गलत् इत्यर्थे देशी
पद्धडिय–पद्धटिका, पज्झटिका (वृत्तनाम)
पधाइअ–प्रधावित (प्रसृत इत्यर्थः)
पपुच्छ–प्र+प्रच्छ् (धातुः)
पप्फुल्लवयण–प्रफुल्लवदन
पबुद्ध–प्रबुद्ध
पबोल्ल–प्र+वद् धात्वर्थे देशी
पभट्ठ–प्रभ्रष्ट
पभण–प्र+भण् (धातुः)
पभाल–प्रभा+आल (मत्वर्थीयः)
पमाण–प्रमाण
पमाणिअ–प्रमाणित (प्रमाणीकृत)
पमियपडिग्गह–प्रमितपरिग्रह
पमुच्–प्र+मुच् (धातुः)
पमेल्ल–प्र+मुच् इत्यर्थे देशी (धातुः)
पय–पद
पय–पद (पदातिरित्यर्थः)
पयच्छ–प्र+दा (धातुः)
पयक्ख–प्रत्यक्ष
पयजुअ–पदयुग
पयजुयल–पदयूगल
पयट्ट–प्र+वृत् (धातुः)
पयड–प्रकटय् (धातुः)
पयड–प्रकट
पयत्त–प्रयत्न
पयत्थ–पदार्थ
पयपंकय–पदपङ्कज
पयपालण–प्रजापालन
पयलिय–प्रचलित
पयवडिय–पदपतित
पयंड–प्रचण्ड
पयंप–प्र+जल्प् (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पया–प्रजा
पयाव–प्रताप
पयाविअ–पाचित
पयास–प्रकाशय् (धातुः)
पयास–प्रकाश
पयासिअ–प्रकाशित
पयासिर–प्रकाश् + इर (शीलार्थे)
पयोहर–पयोधर
पर–पर (अतीतानागत)
परड–वनकुक्कुट
परत्त–परत्र
परभवत्थ–परभवस्थ
परमत्थ–परमार्थ
परमधम्म–परमधर्म
परमपर–परमपर (परमा गणधरदेवादयस्ते-भ्योऽपि पर उत्कृष्ट इति टिप्पणम्)
परमप्प–परमात्मन्
परमप्पअ–परमपद
परममित्त–परममित्र
परमहंस–परमहंस
परमागम–परम + आगम (जिनशासन-मित्यर्थः)
परमाणु–परमाणु
परमेट्ठि–परमेष्ठिन्
परमेसर–परमेश्वर
परमेसरि–परमेश्वरी
परमोवएस–परमोपदेश
परमंडलिय–पर + माण्डलिक
परयार–परकार
परलोय–परलोक
परवंचणयर–परवञ्चनकर
परव्वस–परवश
परसप्पर–परस्परम्
परहिय–परहित
परंपर–परंपरा
परंमुह–पराङ्मुख
पराइण्ण–परा + दा (निष्ठान्दम्)
परायण–परायण
परिअंच–परि + अञ्च् (भ्रमणे धातुः)
परिकरिय–परिकरित
परिक्खा–परीक्षा
परिक्खिअ–परीक्षित
परिगण–परि + गण् (धातुः)
परिगल–परि + गल् (धातुः)
परिग्गहिअ–परि + गृहीत
परिघुल–परि + घुल् (धातुः)
परिघोलिर–परिघोलनशील
परिचत्त–परित्यक्त
परिचुक्किअ–परिभ्रष्ट इत्यर्थे देशी
परिट्ठविअ–प्रतिष्ठापित
परिट्ठा–प्रति + स्था (धातुः)
परिट्ठिअ–प्रतिष्ठित
परिणइ–परिणति
परिणम–परि + नम् (धातुः)
परिणय–परिणत
परिणाव–परि + नायय् (नीधातोर्णिजन्तम्)
परिणिय–परिणीत, परिणायित
परितत्त–परितप्त
परिता–परि + त्रै (धातुः)
परिपक्क–परिपक्व
परिपुण्ण–परिपूर्ण
परिपोस–परि + पुष् (धातुः)
परिभम–परि + भ्रम् (धातुः)
परिभमिअ–परिभ्रान्त
परिमट्ठ–परिमृष्ट
परिमल–परिमल
परिमाण–परिमाण
परियत्त–परित्यक्त
परियत्तण–परिवर्तन
परियण–परिजन
परियर–परिचर
परियरिअ–परिचरित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परियल–परितल (भाजनमित्यर्थे)
परियलिअ–परिगलित
परियंच–परि + अञ्च् (धातुः)
परियंचिअ–पर्यञ्चित
परियाण–परि + ज्ञा (धातुः)
पणियाणिय–परिज्ञात
परियाणियअ–परिज्ञात(क)
परिरक्ख–परि + रक्षा
परिरक्खिअ–परिरक्षित
परिवारअ–परि + उक्त (?)
परिवाइय–प्रतिपादित
परिवाडी–परिपाटी
परिवार–परिवार
परिवारे–परि + वारय् (धातुः)
परिवेढिय–परिवेष्टित
परिसेस–परि+शिष् (धातुः)
परिसेसिय–परिशेषित (त्यक्त इत्यर्थः)
परिसोहिय–परिशोधित
परिहण–परिधान
परिहर–परि+हृ (धातुः)
परिहा–परिखा
परिहाण–परिधान
परिहास–प्रति+भाष् (धातुः)
परोवयारि–परोपकारिन्
पल–पल (मांस)
पलट्टिय–प्र+श्लक्ष्णित
पलवंति–प्र+लपन्ती
पलंब–प्रलम्ब
पलाव–प्रलाप
पलिअ–पलित
पलित्त–प्रलाप (इति टिप्पणम्)
पलोइय–प्रलोकित
पलोट्ट–प्रलोटित (प्रक्षिप्त)
पल्ल–पल्य (संख्याशब्दः आयुःप्रमाणवाची)
पल्लव–पल्लव (वस्त्रादीनामञ्चल इत्यर्थे)
पल्लवोह–पल्लव+ओघ (पल्लवसमूह इत्यर्थः)
पल्हत्थ–पर्यस्त
पल्हत्थिअ–पर्यस्तित (आवर्जित इत्यर्थः)
पवण–पवन
पवणवस–पवनवश
पवणुद्धय–पवनोद्धत (पवनप्रकम्पित इत्यर्थः)
पवड्डिय–प्रवर्धित
पवण्ण–प्रपन्न (प्राप्त इत्यर्थः)
पवण्णिय–प्रवर्णित
पवपालिया–प्रपापालिका
पवयण–प्रवचन
पवर–प्रवर
पवसिय–प्रोषित
पवसियपिय–प्रोषितप्रिय (प्रोषितभर्तृकेत्यर्थः)
पवसियपियाली–प्रोषितप्रियालि (प्रोषितभर्तृकापङ्क्तिरित्यर्थः)
पवास–प्रवास
पवासिअ–प्रवासिन्
पवाह–प्रवाह
पवि–पवि (वज्रमित्यर्थः)
पविउल–प्रविपुल
पवित्त–पवित्र
पवित्ति–प्रवृत्ति
पविमल–प्रविमल
पविहिय–प्रविहित
पव्व–पर्वन् (अमावास्यादि)
पव्वइअ–प्रव्राजित
पसइ–प्रसृति
पसण्ण–प्रसन्न
पसत्थ–प्रशस्त
पसाप्पिय–प्रसृत, प्रसारित
पसम–प्र+शम् (धातुः)
पसमंत–प्र+शाम्यत्
पसर–प्र+सृ (धातुः)
पसर–प्रसर
पसरिय–प्रसृत
पसंगय–प्रसक्त(क)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पसविअ–नकुल इत्यर्थे देशी
पसवी–नकुलस्त्री
पसंगय–प्रसक्त
पसंस–प्र+शंस् (धातुः)
पसाअ–प्रसाद
पसार–प्र+सारय् (धातुः)
पसाह–प्र+श्रावय् (कथनार्थे धातुः)
पसाहिय–प्रसाधित, प्रकथित
पसिद्ध–प्रसिद्ध
पसु–पशु
पसुय–पशु(क)
पसुमारण–पशुमारण
पह–पथिन्
पहट्ठ–प्रभ्रष्ट
पहत्थ–प्रहस्त
पहभट्ठ–पथिन्+भ्रष्ट (भ्रष्टपथ इत्यर्थः)
पहर–प्र+हृ (धातुः)
पहर–प्रहार
पहरण–प्रहरण
पहरवेविय–प्रहारवेपित
पहराल–प्रहारशील
पहरिअ–प्रहृत
पहस–प्र+हस् (धातुः)
पहसिय–प्रहसित
पहंतर–पथान्तर
पहा–प्रभा
पहाण–प्रधान
पहाय–प्रभाव
पहार–प्रहार
पहाव–प्रभाव
पहावण–प्रभावना
पहिअ–पथिक
पहियविंद–पथिकवृन्द
पहिलार–प्रथम+आर (स्वार्थे)
पहिल्ल–प्रथम
पहिल्लिय–प्रथम+इय (स्वार्थे)

पहिसियतुंड–प्रहसिततुण्ड
पहु–प्र+भू (धातुः)
पहु–प्रभु
पहुत्त–प्राप्त
पंक–पङ्क
पंकय–पङ्कज
पंकप्पह–पङ्कप्रभ (चतुर्थनरकनाम)
पंकिय–पङ्कित (पङ्कयुक्त इत्यर्थः)
पंगण–प्राङ्गण
पंगु–पङ्गु
पंगुत्त–प्रावृत इत्यर्थे देशी
पंगुरुण–प्रावरण इत्यर्थे देशी
(मराठी–पांघरूण)
पंगुल–पङ्गु+ल (स्वार्थे)
पंगुलणिमित्त–पङ्गु+निमित्त
पंच–पञ्चन्
पंचकल्लाण–पञ्चकल्याण
पंचत्त–पञ्चत्व
पंचदश–पञ्चदशन्
पंचम–पञ्चम
पंचमगइ–पञ्चमगति (मोक्ष इत्यर्थः)
पंचमहव्वय–पञ्चमहाव्रत
पंचवण्ण–पञ्चवर्ण
पंचवार–पञ्चवारम्
पंचसमिति–पञ्चसमिति (ईर्या भाषा-एषणा–दान–उत्सर्गाः)
पंचाचार–पञ्चाचार
पंचास–पञ्चास्य (सिंह इत्यर्थः)
पंचासव–पञ्चासव
पंचिंदिय–पञ्चेन्द्रिय
पंचुंबरि–पञ्च+उदुम्बर
पंजर–पञ्जर
पंजलियर–प्राञ्जलि+कर
पंजली–प्राञ्जलि
पंडव–पाण्डव
पंडिअ–पण्डित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंडिय–पण्डित
पंडुर–पाण्डुर
पंथ–पथिन्
पंथिय–पान्थ, पथिक
पाअ–पाद (किरण इत्यर्थे)
पाअ–पाद (चरण इत्यर्थे)
पाअ–पाप
पाइक्क–पादिक, पादचारिन् (सेवक इत्यर्थे)
पाउडियजुम्म–(पादयोरलंकारयुग्मामित्यर्थे । हिन्दी–पावडी)
पाउय–खनित्रविशेषे देशी (मराठी–पावडें)
पाउस–प्रावृष्
पाउसकाल–प्रावृट्काल
पाडीण–पाठीन (मत्स्यविशेषः)
पाडल–पाडल
पाण–प्राण (स च दशप्रकार इति टिप्पणे)
पाणक्खअ–प्राणक्षय
पाणचंडाल–अरण्यचाण्डाल इति टिप्पणम्
पाणप्पिय–प्राणप्रिय
पाणविणासण–प्राणविनाशन
पाणावसाण–प्राण+अवसान (अन्त)
पाणि–प्राणिन्
पाणियल–पाणितल
पाणिवह–प्राणिवध
पाय–पाद
पायग्ग–पादाग्र
पायड–प्रकट
पायडिय–प्रकटित
पायपोम–पादपद्म
पायंत–पादान्त
पायार–प्राकार
पायाल–पाताल
पारद्ध–प्रारब्ध
पारद्धिय–व्याध इत्यर्थे देशी (मराठी-पारधी)
पारंभ–प्रारम्भ
पारावअ–पारावत
पारोह–प्ररोह
पाल–पाधातोर्णिजन्तम्
पालण–पालन (पालक–उत्तरपदे एव)
पालिय–पालित
पाव–प्र+आप् (धातुः)
पाव–पाद
पाव–पाप
पावइय–प्रापित, प्रव्रज्या
पावग्गह–पापग्रह
पावज्ज–प्रव्रज्या
पावपर–पापपर
पावफल–पापफल
पावमल–पापमल
पावयम्म–पापकर्मन्
पाववेरि–पापवैरिन्
पाविअ–प्रापित
पाविट्ठ–पापिष्ठ
पास–पाश (पाश इव पाशः, कर्मबन्ध इति टिप्पणम्)
पास–पार्श्व (त्रयोविंशतीर्थंकरनाम)
पासगाम–पार्श्वग्राम
पासत्थ–पार्श्वस्थ (समीपस्थ इत्यर्थः)
पासय–प्रास (क) (कुन्तविशेषः)
पासिय–पाशित (पाशबद्ध)
पासुलिय–पांशुल
पासेय–प्रस्वेद
पाहुड–प्राभृत (उपायन)
पाहुणअ–प्राघूर्णक
पिआ–पितृ
पिउपट्ट–पितृपट्ट (पितृसिंहासन)
पिउवण–पितृवन (श्मशान)
पिक्क–पक्व
पिक्ख–प्र+ईक्ष् (धातुः)
पिच्छ–प्र+ईक्ष् (धातुः)
पिज्ज–पाधातोः कर्मणि
पिट्ठ–पिष्ट (चूर्ण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिट्ठमअ–पिष्टमय
पित्त–पित्त
पिम्म–प्रेमन्
पिय–प्रिय
पिय–प्रिया
पियपत्ती–प्रिय+पत्नी
पिययम–प्रियतम
पियर–पितृ
पियरवग्ग–पितृवर्ग
पियविरह–प्रियाविरह
पियसंजोग्ग–प्रियासंयोग
पिया–प्रिया
पियामह–पितामह
पिल्ल–डिम्भ इत्यर्थे देशी (मराठी-पिल्लूं)
पिसक्क–पिशाच इत्यर्थे देशी
पिसक्क–पृषत्क (बाण इत्यर्थः)
पिसुण–पिशुन
पिसुणिय–पिशुनित (सूचित)
पिहिय–पिहित
पिहुल–पृथुल
पिंग–पिङ्ग
पिंगल–पिङ्गल
पिंछ–पिच्छ
पिंछाल–पिच्छ+आल (मत्वर्थीयः)
पिंछोह–पिच्छ+ओघ (समूह)
पिंजर–पिञ्जर
पिंड–पिण्ड
पिंडदाण–पिण्डदान
पीडकर–पीडाकर
पीढ–पीठ
पीण–प्री (धातुः)
पीण–पीन
पीणभुअ–पीनभुज
पीणिय–प्रीत
पित्तल–पित्तल (धातुविशेषः, मराठी-पितळ)
पीय–पीत
पीयंत–पिबत्
पीययंगणंभय–पीत+अङ्गण+अम्भस्
पील–पीड् (धातुः)
पीलण–पीडन
पुक्खर–पुष्कर
पुग्गल–पुद्गल
पुच्छ–प्रच्छ् (धातुः)
पुच्छ–पुच्छ
पुच्छिय–पृष्ट
पुज्ज–पूज्य
पुज्ज–पृधातोः कर्मणि
पुज्जणिज्ज–पूजनीय
पुज्जाणुपुज्ज–पूज्यानां पूज्यः (पूज्यानां गणधर-देवादीनामपि पूज्यः आराध्य इति टिप्पणम्)
पुज्जिअ–पूजित
पुट्ठि–पुष्टि
पुट्ठि–पृष्ठ
पुट्ठिपलट्ठियंग–पुष्टि + पल + अस्थि + अङ्ग (पुष्टया उपचितं पलं मांसं अस्थीनि अङ्गानि च यस्य)
पुट्ठिवंस–पृष्ठवंश
पुणु–पुनर्
पुणो–पुनर्
पुण्ण–पुण्य
पुण्ण–पूर्ण
पुण्णपुंज–पुण्यपुञ्ज
पुण्णालि–पुंश्चलीत्यर्थे देशी
पुण्णाहिलास–पूर्णाभिलाष
पुत्त–पुत्र
पुत्ति–पुत्री
पुप्फ+पुष्प
पुप्फमाल–पुष्पमाला
पुप्फयंत–पुष्पदन्त (चन्द्रसूर्यौ; कवेर्नाम)
पुप्फयंत–पुष्पदन्त (नवमतीर्थंकरनाम)
पुर–पुर
पुरवर–पुरवर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरउ–पुरतः
पुरवहि–पुरावधि (पुरमुद्दिश्येत्यर्थः)
पुरंदर–पुरंदर
पुरारि–पुरारि (शिवः)
पुरिस–पुरुष
पुरुएअ–पुरुदेव (इन्द्रादयो देवा इति टिप्पणम्
पुरुहुंत–पुरोभवत्
पुलिंद–पुलिन्द
पुल्लि–शबरजातिविशेषे देशी
पुलिंग–पुंलिङ्ग
पुव्वयाल–पूर्वकाल
पुव्वसिणेह–पूर्वस्नेह
पुहवि–पृथ्वी
पुंकोइल–पुंस्कोकिल
पुंछ–पुच्छ
पुंज–पुञ्ज
पुंजिअ–पुञ्जित
पुंजिय–पूजित
पुंजीकय–पुञ्जीकृत
पुंड–पुण्ड्र (इक्षुजातिविशेषः)
पूइवाअ–पूतिवात
पूय–पूत
पूरय–पूरय् (धातुः)
पूरिय–पूरित
पूस–प्रच्छधात्वर्थे देशी
पूसकोइल–पुंस्कोकिल
पेच्छ–प्र+ईक्ष् (धातुः)
पेट्ट–उदर इत्यर्थे देशी (हिन्दी–पेट)
पेम्म–प्रेमन्
पेय–प्रेत
पेयंतावलि–प्रेत+अन्त्र+आवलि
पेरिअ–प्रेरित
पेरिय–प्रेरित
पेल्लण–प्रेरण
पेल्लय–पेलव
पेल्लिय–प्रेरित
पेस–प्रेषय् (धातुः)
पेसण–प्रेषण
पेसल–पेशल
पेसिय–प्रेषित
पेहुणय–पिच्छशद्वार्थे देशी
पोक्खर–पुष्कर
पोट्ट–उदर इत्यर्थे देशी (मराठी–पोट)
पोट्टलअ–ग्रन्थिशद्वार्थे देशी (मराठी-पोटळी)
पोट्टुल्ल–पोट्ट+उल्ल (स्वार्थे)
पोढ–प्रौढ
पोढत्तण–प्रौढत्व
पोत्थयवायण–पुस्तकवाचन
पोम–पद्म
पोमराय–पद्मराग
पोमाइय–अवलोकित इत्यर्थे
पोमिणि–पद्मिनी
पोमिणिय–पद्मिनी
पोसण–पोषण
पोसह–उपवासदिन इत्यर्थे
पोसिअ–पोषित
पोसिय–पोषित

फट्ट–विदीर्ण इत्यर्थे देशी (मराठी-फाटणें)
फडा–फटा
फणि–फणिन् (सर्प)
फणिंद–फणीन्द्र (शेषः)
फरुस–परुष
फरुसभासिणि–परुषभाषिणी
फल–फल
फलभोयण–फलभोजन
फलिय–फलित
फलिह–स्फटिक
फलोह–फल+ओघ (समूह)
फंफावय–बन्दिचारणादय इत्यर्थे देशी
फंफावयसर–बन्दिन्+स्वर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फंस–स्पर्श
फंस–स्पृश् (धातुः)
फंसण–स्पर्शन
फाडिअ–पाटित
फार–प्रचुर इत्यर्थे देशी (मराठी—फार)
फार–स्फार, स्फीत (अतिशयार्थे)
फाल–पाटय् (धातुः)
फालिय–पाटित
फास–स्पर्श
फासवंत–स्पर्शवत्
फासाइय–स्पर्शादिक (विषयः)
फासुअ–प्राशुक (प्रशस्त इत्यर्थे)
फिर–परावर्तने देशी (धातुः) (मराठी–फिरणें)
फुट्ट–स्फुटित
फुट्ट–भिन्न इत्यर्थे देशी (मराठी-फुटणें)
फुट्टपाय–स्फुटित+पाद्
फुडवत्ति–स्फुट+वृत्ति
फुप्फुव–फूत्कृ (धातुः)
फुर–स्फुर् (धातुः)
फुरिअ–स्फुरित (दीप्त)
फुरिय–स्फुरित
फुलिंग–स्फुलिङ्ग
फुल्ल–पुष्प (मराठी–फूल)
फुल्ल–फुल्ल
फुल्लोह–पुष्प+ओघ (समूह)
फेड–मुच्धात्वर्थे देशी
फेण–फेन
फेणरासि–फेनराशि
फोडिय–स्फोटित

बइट्ठ–उपविष्ट इत्यर्थे देशी
बइसावय–उपवेशय् इत्यर्थे देशी (धातुः)
बज्झ–बन्ध्धातोः कर्मणि
बज्झावयास–बाह्य + अवकाश (बाह्यप्रदेश इत्यर्थः)
बज्झ–बाह्य
बद्ध–बद्ध
बद्धाउस–बद्धायुष्
बप्प–पितृशब्दार्थे देशी
बप्प–चातक
बरिहण–बर्हिन् (मयूरः)
बल–बल
बलखीण–बलक्षीण
बलवंत–बलवत्
बलसणाह–बलसनाथ
बलि–बलि
बलिय–बलिन्
बलिविहाण–बलिविधान (पूजाविधिः)
बहल–बहल
बहिणी–भगिनी
बहिणुल्ली–भगिनिका (यवीयसी भगिनीत्यर्थः)
बहिर–बधिर
बहिरअ–बधिर (क)
बहिरंध–बधिर+अन्ध
बहु–बहु
बहुदुक्खाउर–बहुदुःखातुर
बहुभेय–बहुभेद
बहुरोयहर–बहुरोगहर
बहुवण्णभेय–बहुवर्णभेद
बहुविह–बहुविध
बंदियण–बन्दीजन
बंदी–बन्दी
बंध–बन्ध
बंधण–बन्धन
बंधु–बन्धु
बंबुल–बब्बुल (वृक्षनाम । मराठी–बाभूळ)
बंभ–ब्रह्मन् (ब्रह्मदेव)
बंभण–ब्राह्मण
बंभणव्वअ–ब्राह्मणव्रत
बंभणी–ब्राह्मणी
बंभयारि–ब्रह्मचारिन्
बंभव्वअ–ब्रह्मव्रत (ब्रह्मचर्यमित्यर्थः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंभोत्तर–ब्रह्मोत्तर (स्वर्गनाम)
बायर–बादर (बदरप्रमाण इत्यर्थः)
बार–द्वार
बारह–द्वादश
बारहविह–द्वादशविध
बाल–बाल
बालय–बालक
बावीस–द्वाविंशति
बाहा–बाहु
बाहु–बाहु
बि–द्वि
बिण्णि–द्वौ, द्वे
बिल–बिल
बिंदु–बिन्दु
बिंबाहर–बिम्बाधर
बिंबीहलाह–बिम्बीफलाभ
बीय–द्वितीय
बीय–बीज
बीयंद–द्वितीयाचन्द्र
बीह–भी (धातुः)
बुज्झ–बुध् (धातुः)
बुज्झिर–बोधनशील
बुद्ध–बुद्ध
बुद्ध–बुद्ध(तथागत)
बुद्धि–बुद्धि
बुब्बुअ–बुद्बुद
बुब्बुय–बुद्बुद
बुह–बुध
बुहयण–बुधजन
बे–द्वि
बेक्खुर–द्विखुर
बोकड–अज इत्यर्थे देशी (मराठी-बोकड)
बोल्लिअ–कथित इत्यर्थे देशी
बोहि–बोधि

भअ–भय
भअ–भव
भइरअ–भैरव
भइरव–भैरव
भइरवाणंद–भैरवानन्द (कापालिकनामविशेष)
भउहा–भ्रुकुटि
भक्ख–भक्ष् (धातुः)
भक्ख–भक्ष्य
भग्ग–भग्न (वशीकृत इति टिप्पणम्)
भज्ज–भर्ज् (धातुः)
भज्ज–भार्या
भज्ज–भञ्ज्धातोः कर्मणि
भट्ट–भट्ट
भट्ठ–भ्रष्ट
भड–भट
भडारअ–भट्टारक, भगवत्
भडारिआ–भट्टारिका, भगवती
भडारी–भट्टारिका
भडिय–पक्व इति टिप्पणम् (मराठी-भरित)
भण–भण् (धातुः)
भणिअ–भणित
भणिज्ज–भण्धातोः कर्मणि
भत्ति–भक्ति
भत्तिभर–भक्तिभर
भत्तिल्ल–भक्तियुक्त
भद्द–भद्र
भद्दी–भद्रा
भप्पर–भस्म इत्यर्थे देशी
भम–भ्रम् (धातुः)
भमर–भ्रमर
भमरोह–भ्रमर+ओघ (समूह)
भमंत–भ्रमत्
भमाड–भ्रम् (धातुः)
भमाडिअ–भ्रामित
भमिअ–भ्रमित
भमिय–भ्रमित
भमिर–भ्रमणशील

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भय–भय
भयउल–भयाकुल
भयगारी–भयकारिन्
भयदाइणि–भयदायिनी
भयधातु–सप्तधनुर्मित इति टिप्पणम्
भयवइ–भगवती
भयवंत–भगवत्
भयंकर–भयंकर
भयाउर–भयातुर
भयाउल–भयाकुल (भयावह इत्यर्थे !)
भर–भर (भार)
भरह–भरत (वर्षनाम)
भरह–भृत (आच्छादित इति टिप्पणम्)
भरिअ–भृत, भरित
भरिय–भरित
भल्ल–भद्र
भल्ल–शुनक इति टिप्पणम्
भल्लुय–भल्लूक (प्राणिविशेषः)
भल्लू–भल्लूक
भव–भव (संसारगति)
भवकद्दम–भवकर्दम
भवचरिय–भवचरित
भवण–भवन
भवबद्ध–भवबद्ध
भवंतर–भवान्तर
भव्व–भव्य
भव्वयण–भव्यजन
भस–भष् (धातुः)
भसण–भषक (मनसा दुष्ट इति टिप्पणम्)
भसण–भषक (शुनक इत्यर्थः)
भसल–भृङ्गशब्दार्थे देशी
भसलउल–भ्रमरकुल
भंगाल–भृङ्ग+आल (मत्वर्थीयः) (सभृङ्ग इत्यर्थः)
भंगुर–भङ्गुर
भंड–भाण्ड
भंडण–भण्डन (कलह इत्यर्थः)
भंति–भ्रान्ति
भंतिअ–भ्रान्त
भंभा–भम्भा (वाद्यविशेषः)
भाण–भाजन
भाणिअ–भाणित (कथित)
भाणु–भानु
भायण–भाजन
भार–भार
भारह–भारत (महाभारत इति टिप्पणम्)
भाल–भालय् अवलोकने (धातुः)
भाल–भाल (ललाट)
भाव–भाव
भाव–भावय् (धातुः)
भावण–भावना
भाविप्फुरंत–भा+विस्फुरत्
भाविर–भाव+इर (मत्वर्थीयः)
भास–भाष् (धातुः)
भास–भास (पक्षिविशेषः)
भासा–भाषा
भासिय–भाषित
भासुर–भासुर
भिउडि–भ्रुकुटि
भिक्ख–भिक्षा
भिक्खयर–भिक्षाचर
भिक्खपत्त–भिक्षापात्र
भिक्खा–भिक्षा
भिक्खाणिमित्त–भिक्षानिमित्त
भिच्च–भृत्य
भिच्चउल–भृत्यकुल
भिज्ज–भिद्धातोः कर्मणि
भिड–अभिगमने देशी (धातुः)
भिण्ण–भिन्न
भिणिहिण–भ्रमरादिशब्दानुकरणे धातुः (मराठी–भिणभिण)
भिण्णी–भिन्ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भित्ति–भित्ति
भिल्ल–भिल्ल (शबरजातिविशेषे देशी)
भिस–बिस
भिंग–भृङ्ग
भिंगार–भृङ्गार (पात्रविशेषः)
भिंद–भिद् (धातुः)
भीअ–भीत
भीम–भीम
भीयर–भीकर (भीजनकमित्यर्थः)
भीस–भीष्म (भीषण)
भीसण–भीषण
भीसावण–भेषण
भुअ–भुज
भुक्खा–बुभुक्षा
भुक्खिया–बुभुक्षिता
भुत्त–भुक्त
भुत्तुव्वरिअ–भुक्त+उर्वरित(भुक्तशेष इत्यर्थः)
भुय–भुज
भुयग्ग–भुजाग्र
भुयंग–भुजङ्ग (सर्पो विटश्चेति टिप्पणम्)
भुल्लअ–भ्रान्त इत्यर्थे देशी
भुवण–भुवन
भुवणयल–भुवनतल
भुंज–भुज् (धातुः)
भुंजाविय–भोजित
भू–भ्रू
भूदाण–भू+दान
भूमी–भूमि
भूमीयल–भूमितल
भूमीस–भूमीश (नृप इत्यर्थः)
भूय–भूत
भूरि–भूरि
भूवाल–भूपाल
भूसण–भूषण
भूस–भूष् (धातुः)
भूसिय–भूषित

भेय–भेद
भेरी–भेरी (वाद्यविशेषः)
भो–भो (संबोधनेऽव्ययम्)
भोअ–भोग
भोउवभोय–भोग+उपभोग
भोज्ज–भोज्य
भोम–भौम (भूमिसंबन्धि)
भोयण–भोजन
भोयणवेल–भोजनवेला

म–मा (निषेधेऽव्ययम्)
मअ–मद
मअ–मृग
मअ–मृत
मइ–मति
मइभंस–मतिभ्रंश
मइरक्खण–मतिरक्षण
मइरंग–मदिर+अङ्ग (मदजललिप्तशरीर इत्यर्थः)
मइरा–मदिरा
मइल–मलिन
मइलणिय–मलिनित
मइलिय–मलिनित
मइंदासण–मृगेन्द्र+आसन (सिंहासन)
मई–मति
मउ–मृदु
मउअ–मृदुक (प्रियंवदः कोमलश्चेति टिप्पणम)
मउड–मुकुट
मउडग्गकोडि–मुकुट+अग्र+कोटि
मउल–मुकुल
मउल–मौल (मौलिः=शिरस्) १ २३-६
मउलिय–मुकुलित
मऊरी–मयूरी
मओयर–मृतोदर
मग्ग–मार्गय् (याच्) (धातुः)
मग्ग–मार्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मग्गण–मार्गण (बाण)
मग्गिज्ज–मार्गय्धातोः कर्मणि
मच्छ–मत्स्य
मच्छर–मत्स्य
मच्छर–मत्सर
मच्छंधि–मत्स्यधर
मच्छंधिणीवाल–मत्स्यधरबाल
मच्छियअ–मत्स्य(क)
मज्झ–मध्य
मज्झत्थ–मध्यस्थ
मज्झखीणा–मध्येक्षीणा
मज्झिम–मध्यम
मज्ज–मद्य
मज्ज–मस्ज् (धातुः)
मज्ज–मज्जा (शरीरधातुविशेषः)
मज्जखंड–मज्जाखण्ड
मज्जमाण–मज्जत्
मज्जाय–मर्यादा
मडय–मृत (क)
मढ–मठ
मण–मन् (धातुः)
मण–मनस्
मणगमण–मनोगमन (मनोजव इत्यर्थः)
मणचडुल–मनश्चटुल (मनोवचटुल)
मणतणय–मानसिक
मणरावअ–मनोरञ्जक
मणहर–मनोहर
मणहरण–मनोहरण
मण्ण–मन् (धातुः)
मणिअ–मणित (रतिकूजितमित्यर्थः)
मणिजासवणहेउ–मणि+जपा+हेतु (मणिजपादृष्टान्तः। स्फटिकमणिर्यथा जपापुष्पसांनिध्यादतिरक्तो दृश्यते तथा शुद्धोऽप्यात्मा संसारिणां योगे तादृशो भवति, अरूपित्वात् इति टिप्पणम्)
मणिमय–मणिमय
मणिमुद्दी–मणिमुद्रिका
मणुअ–मनुज
मणुय–मनुज
मणुस–मनुष्य
मणोज्ज–मनोज्ञ
मणोरह–मनोरथ
मणोहर–मनोहर
मण्णिअ–मानित
मत्त–मत्त
मत्थअ–मस्तक
मत्थिक्क–मस्तिष्क
मद्द–मृद् (धातुः)
मद्दण–मर्दन
मद्दल–मर्दल (वाद्यविशेषः)
मद्दव–मार्दव
मम्मण–मम्मण (कामोद्रेककारिवचनम्)
मय–मद
मय–मृग
मय–मृत
मयउल–मृगकुल
मयगह–मदग्रह
मयचक्क–मदचक्र (अष्टविधमदसमूह इत्यर्थः)
मयच्छि–मृगाक्षी
मयण–मदन
मयणाहि–मृगनाभि
मयणुम्मायअ–मदनोन्मादक
मयर–मकर
मयरद्धय–मकरध्वज
मयलंछण–मृगलाञ्छन
मयवह–मृगवध
मयवंत–मदवत्
मयंक–मृगाङ्क
मयारि–मद+अरि
मर–मृ (धातुः)
मरगय–मरकत
मरट्ट–गर्व इत्यर्थे देशी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मरण—मरण
मराल—हंस
मरालिया—मरालिका (हंसवधूः)
मरिय—मरिच (मराठी—मिरें)
मरु—मरुत्
मरुद्धूय—मरुदुद्धत्
मरुहय—मरुद्+हत
मल—मल
मलण—मलन
मलहेउ—मलहेतु
मल्ल—मल्ल
मलिण—मलिन
मलीमस—मलीमस
मल्लि—मल्ली (एकोनविंशतीर्थंकरनाम)
मल्लिया—मल्लिका (कुसुमविशेषः)
मसाण—श्मशान
मसि—मषी
मसिण—मसृण
महएवी—महादेवी
महएविणिकेय—महादेवी+निकेत
महग्घ—महार्घ, अथवा, महार्ह
महण्णव—महार्णव
महत्थ—महार्थ
महमह—गन्धोद्दाने देशी (धातुः)
महयर—महत्तर
महयाल—महाकाल (उज्जयिनीस्थशिवनाम)
महरिसि—महर्षि
महल्ल—महत् (वृद्ध इत्यर्थः)
महव्वय—महाव्रत
महंत—महत्
महाउह—महायुध
महाएवी—महादेवी
महागह—महाग्रह
महाजइ—महायति
महाजस—महायशस्
महाणुभाव—महानुभाव
महापयत्थ—महापदार्थ
महापसाअ—महाप्रसाद
महापह—महापथ
महाबल—महाबल
महामइ—महामति
महामुणि—महामुनि
महारह—महारथ
महारुंद—पूर्ण इत्यर्थे देशी, अथवा, महस् (तेजः) + रुंद (विस्तीर्ण) १·१८·१ (तेजसा विस्तीर्ण इत्यर्थः)
महावच्छ—महावक्ष
महासइ—महासती
महि—मही (पृथ्वी)
महिअ—महित (पूजित)
महिच्छिया—मही+इच्छा (मही+ईप्सा इति टिप्पणम्)
महिणाह—महीनाथ
महिमहिय—मही+महित
महिमहिल—मही+महिला (स्त्री)
महियाल—महीपाल
महिल—महिला (स्त्री)
महिला—महिला (स्त्री)
महिवइ—महीपति
महिबल—मही+बल
महिवलअ—मही + वलय (भूमण्डलमित्यर्थः)
महिवहु—मही+वधू
महिस—महिष
महिसासुर—महिषासुर
महिसी—महिषी (महिषस्त्री)
मही—मही
महीमहंत—मही+महत् (पूज्य)
महीयल—महीतल
महीहर—महीधर
महु—मधु
महुमह—मधुमथ(न), (विष्णुरित्यर्थः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महुयर–मधुकर
महुयल––मधुकर
महुयला–मधुलता
महुर–मधुर
महुरक्खर–मधुराक्षर
महेली–महिला
महोरअ–महोरग
मंगल–मङ्गल
मंच–मञ्च
मंजर–मार्जार
मंजरिया–मञ्जरी
मंजीरय–मञ्जीर (पादभूषणविशेषः)
मंठ–मन्द (मराठी–मठ्ठ)
मंठ–मृष्ट
मंठुवयंठ–मृष्ट+उपकण्ठ (समीप-
स्थप्रदेशः)
मंडअ–मण्डप
मंडण–मण्डन
मंडय–मण्डक (खाद्यविशेषः ।
मराठी–मांडा)
मंडलचरण–मण्डलचरण (सरीसृप-
विशेषः)
मंडलिय–मण्डलित (वर्तुल)
मंडलिय–माण्डलिक (मण्डलवर्तिनृपसमूहः)
मंडलिल्ल–मण्डल+इल्ल (मत्वर्थीयः)
मंडव–मण्डप
मंडिअ–मण्डित
मंडिय–मण्डित
मंत–मन्त्र
मंतगुंफ–मन्त्र+गुम्फ, अथवा, मन्त्र·गुप्त
(गुप्तमन्त्र इत्यर्थः)
मंतण–मन्त्रण
मंति–मन्त्रिन्
मंतिअ–मन्त्रित
मंतिमहल्ल–मन्त्रिन्+महत्
मंतिसुअ–मन्त्रिसुत

मंथर–मन्थर (मन्द)
मंद–मन्द
मंदरगिरि–मन्दरगिरि
मंदल–मर्दल (वाद्यविशेषः)
मंदार–मन्दार (वृक्षविशेषः)
मंदिर–मन्दिर
मंधाय–मांधातृ (नृपविशेषः)
मंस–मांस
मंसासिण–मांसाशिन्
मा–मा (प्रतिषेधेऽव्ययम्)
माइ–मातृ
माइअ–मात (माधातोर्निष्ठान्तम्)
माउच्छिआ–मातृष्वसृ
माउपण्णअ–मातृ+पन्नग
माऊर–मायूर (मयूरसंबन्धि)
माण–मान
माणअ–मानव
माणवभव–मानवभव
माणावमाण–मानापमान
माणिक्क–माणिक्य
माणिणि–मानिनी
माणुस–मनुष्य
माय–मातृ
मायरि–मातृ
मायंग–मातङ्ग (हस्ती)
मायंगणर–मातङ्गनर (चाण्डाल)
मायाकसाअ–मायाकषाय
मायापियरुल्लअ–मातापितृ+उल्लअ (स्वार्थे)
मायाभाव–मातृभाव
मायामअ–मायामय
मायार–माया+आचार
मायासुअ–मातृ+सुत
मार–मार (मदन)
मारण–मारण
मारणसील–मारणशील
मारय–मारय् (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माराव–मारय् (धातुः)
माराविअ–मारित
मारि–मारी (हननशीलदेवताविशेषः)
मारिअ–मारित
मारिदत्त–मारिदत्त (राज्ञो नामविशेषः)
मारियत्त–मारिदत्त (राज्ञोनामविशेषः)
मारी–मारी (कात्यायनी)
माल–माला
मालइ–मालती (लताविशेषः)
माला–माला
मास–मांस
मासावसाण–मास+अवसान
मासाहार–मांसाहार
माहप्प–माहात्म्य
माहिंद–माहेन्द्र
मि–अपि (अनुस्वारानुनासिकयोः परे एव)
मिउ–मृदु
मिग–मृग
मिगीवइ–मृगीपति
मिच्छत्त–मिथ्यात्व
मिच्छभाअ–मिथ्याभाव
मिच्छमअ–मिथ्यामद, मिथ्यामत
मिच्छ–मा+इच्छ
मिच्छामअ– मिथ्यामद
मिट्ठ–मिष्ट
मिट्ठ–मृष्ट
मिट्ठ–मेण्ठ (हस्तिपाल)
मित्त–मित्र (सुहृद्)
मित्त–मित्र (सूर्य)
मिल–मिल् (धातुः)
मिलिय–मिलित
मिस–आमिष
मिहिलाउर–मिथिलापुर
मिहुण–मिथुन
मिहुणल्ल–मिथुन+अल्ल (स्वार्थे)
मिहुणुल्ल–मिथुन+उल्ल (स्वार्थे)

मिंढय–मेषशब्दार्थे देशी (मराठी–मेंढा)
मिंढी–मेषस्त्री इत्यर्थे देशी (मराठी–मेंढी)
मीणधर–मीनधर (धीवर)
मीणी–मीनी (मत्स्यस्त्री)
मुअ–मुच् (धातुः)
मुअ–मृत
मुक्क–मुक्त
मुक्ख–मूर्ख
मुग्गस–नकुल इत्यर्थे देशी (मराठी–मुंगुस)
मुच्छ–मूर्च्छ् (धातुः)
मुच्छ–मुर्च्छा
मुच्छा–मूर्च्छा (यमदूतीति टिप्पणम्)
मुच्छावण्ण–मूर्च्छा + आपन्न
मुच्छावस–मूर्च्छावश
मुच्छिज्ज–मूर्छधातोः कर्मणि
मुच्छिय–मूर्छित
मुज्झ–मुह् (धातुः)
मुट्ठिगाहिअ–मुष्टिग्रहीत
मुडियट्ठि–मोटित (भग्न)+अस्थि
मुण–मन् चिन्तायाम् (धातुः)
मुण–ज्ञा इत्यर्थे (धातुः)
मुणि–मुनि
मुणिज्ज– ज्ञाधातोः कर्मणि
मुणिदिक्ख–मुनिदीक्षा
मुणिपुंगव–मुनिपुंगव
मुणिंद–मुनीन्द्र
मुणी–मुनि
मुणीसर–मुनीश्वर
मुत्ताहल–मुक्ताफल
मुत्ति–मुक्ति
मुत्ति–मूर्ति (शरीर)
मुत्तिय–मौक्तिक
मुद्दा–मुद्रा (अङ्गविक्षेपप्रकारः)
मुद्ध–मुग्ध
मुद्ध–मुग्धा
मुय–मृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुयंग–मृताङ्ग
मुररिउ–मुररिपु (विष्णुः)
मुरारि–मुरारि (विष्णुः)
मुसावाय–मृषावाद
मुह–मुह् (धातुः)
मुह–मुख
मुहर–मुखर
मुहरत्त–मुखरक्त (शुको विटश्च)
मुहल–मुखर
मुहलिय–मुखरित
मुहवड–मुखपट
मुहामुक्क–मुखामुक्त
मुहावट्टिय–मुखावर्तित
मुंड–मुण्ड् (धातुः)
मुंड–मुण्ड (मूर्धन्)
मुंडपसाहणि—मुण्ड + प्रसाधना (मुण्डालंकृतेत्यर्थः)
मुंडिय–मुण्डित
मूअ–मूक
मूढ–मूढ
मूढत्तण–मूढत्व
मूढमइ–मूढमति
मूल–मूल
मेहणी–मेदिनी (भूमिः)
मेकरंत–मे इति मेषशब्दं कुर्वत्
मेच्छ–म्लेच्छ
मेमण—मेइतिशब्दाविशेषः
मेम्मायंत–मेमे इतिशद्वं कुर्वत्
मेर–मर्यादा इत्यर्थे देशी
मेरु–मेरु (पर्वतनाम)
मेलअ–मेलन
मेलण–मीलन
मेल्ल–मुच् इत्यर्थे देशी (धातुः)
मेल्लाविअ–(मेलित)
मेल्लिअ–मुक्त इत्यर्थे देशी
मेस–मेष
मेसउल–मेषकुल
मेसय–मेष (क)
मेह–मेघ
मेहजाल–मेघजाल
मेहा–मेधा
मेहुण–मैथुन
मोक्ख–मोक्ष
मोडिय–मोटित (भग्न)
मोण–मौन
मोत्तिय–मौक्तिक
मोयय–मोदक
मोर–मयूर
मोरुल्ल–मयूर+उल्ल (स्वार्थे)
मोरय–मयूर
मोल्ल–मूल्य
मोसिअ–मोषित, मुषित
मोह–मोह
मोहणसील–मोहनशील
मोहरयंध–मोहरजस्+अन्ध
मोहंध–मोहान्ध
मोहिअ–मोहित

य–च (स्वरात्परे एव)
या–ज्ञा (धातुः)
याण–ज्ञा (धातुः)
युत्त–युक्त

रइ–रति
रइअ–रचित
रइय–रचित
रइरमण–रतिरमण (मदन)
रइलालस–रतिलालस
रइविंभल–रतिविह्वल
रउद्द–रौद्र
रउरव–रौरव
रक्ख–रक्ष् (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्खस–राक्षस
रक्खसी–राक्षसी
रक्खिअ–रक्षित
रज्ज–राज्य
रज्ज–रञ्ज्धातोः कर्मणि
रज्जंग–राज्याङ्ग
रज्जु–रज्जू (प्रमाणविशेषः)
रज्जुया–रज्जुका
रड–रट् (धातुः) (रोदनेऽपि दृश्यते)
रडंत–रटत्, रुदत्
रण–रण
रणझणंत–रणझणशब्दं कुर्वत्
रण्ण–अरण्य
रत्त–रक्त (रक्तवर्ण)
रत्त–रक्त (आसक्त)
रत्तच्छ–रक्ताक्ष
रत्तत्त–रक्त+अक्त (रक्तरञ्जित इत्यर्थः)
रत्तपत्तंचिअ–रक्तपत्राञ्चित
रत्तसिहर–रक्तशिखर (कुक्कुट)
रत्तिदिवसु–रात्रिंदिवसम्
रत्तुप्पल–रक्तोत्पल
रम–रम् (धातुः)
रमण–रमण (वल्लभ)
रमण–रमण (रतिः, क्रीडा)
रमणिज्ज–रमणीय
रमणी–रमणी
रमंत–रममाण
रम्म–रम्य
रमिअ–रत
रय–रजस्
रयई–रजकी
रयण–रत्न
रयणत्त–रत्नत्व
रयणत्तय–रत्नत्रय (ज्ञानदर्शनचारित्राणि)
रयणप्पह–रत्नप्रभ (प्रथमनरकनाम)
रयणायर–रत्नाकर
रयणि–रजनि
रयणी–रजनी
रयणीयर–रजनीकर (चन्द्र)
रयणुज्जल–रत्नोज्ज्वल
रयणोह–रत्नौघ
रव–रव
रवण्ण–रमणीय इत्यर्थे देशी
रवि–रवि
रवियर–रविकर (रविकिरण)
रविवार–रविवासर
रस–रस
रस–रस (रक्तादिधातवः) १·१६·९.
रसणा–रशना
रसय–रस (क)
रसयारी–रसकारिन् (सुखजनक इति टिप्पणम्)
रसवस–रसवश
रसविण्णास—रस + विजिज्ञासा
रसत–रसत्
रसिय–रसित (शब्द इत्यर्थः)
रसोई–रस + इल्ल (मत्वर्थीयः) (पाकइत्यर्थः)
रसिल्ल–रसवती (ओदनादिपाक इत्यर्थः)
रसोल्ल–रस + उल्ल (मत्वर्थीयः)
रह–रथ
रहवर–रथवर
रहस–रभस
रहसजुत्त–रभसयुक्त
रहसिर–रभस + इर (शीलार्थे प्रत्ययः)
रहसिल्ल–रभस + इल्ल (मत्वर्थीयः)
राहिअ–रहित
रहुवइ–रघुपति
रंग–रङ्ग
रंगंत–रङ्गत् (मराठी–रांगणें)
रंगावलि–रङ्गावलि (प्राङ्गणादिषु विविधवर्णचूर्णैः क्रियमाणो विच्छित्तिविशेषः। मराठी–रांगोळी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रंगिर–रङ्ग + इर (रङ्गयुक्त)
रंजिअ–रञ्जित
रंजिय–रञ्जित
रंध–रन्ध्र
राअ–राग
राअ–राजन्
राई–राजि (धान्यविशेषः । मराठी–मोहरी)
राउ–राजन्
राउल–राजकुल
राणअ–राजन्
राणासण–राजासन
राणिया–राज्ञी
राम–राम (रामचन्द्र)
राम–राम (मन्त्रिनाम)
राय–राग
राय–राजन्
रायउत्त–राजपुत्र
रायउर–राजपुर
रायघरिणि–राजगृहिणी
रायगेह–राजगेह
रायट्ठाण–राजस्थान (राजसभेत्यर्थः)
रायतुरअ–राजतुरग
रायपुरिस–राजपुरुष
रायमग्ग–राजमार्ग
रायराएस–राजराजेश
रायसिरी–राजश्री
रायसोवाण–राजसोपान
रायाणिया–राज्ञी
रायाहिराय–राजाधिराज
राव–रव (शब्द)
रावण–रावण
रासह–रासभ
रासि–राशि
राहा–शोभा इति टिप्पणम्
रिउ–रिपु
रिउपहरण–रिपुप्रहरण

रिच्छ–ऋक्ष
रिण–ऋण
रिद्ध–ऋद्ध
रिद्धि–ऋद्धि
रिया–ऋच् (वेदपङ्क्तयः)
रिसह–ऋषभ (प्रथमतीर्थंकरनाम)
रिसि–ऋषि
रिसित्त–ऋषित्व
रिसिवअ–ऋषिव्रत
रिसीसर–ऋषीश्वर
रिंछोलि–श्रेणिशब्दार्थे देशी
रीण–दीन, श्रान्त इत्यर्थे देशी
रुइ–रुचि
रुइरहियक्क–रुचिरहितार्क (रुच्या दीप्त्या प्रच्छादितादित्य इति टिप्पणम्)
रुक्ख–वृक्ष
रुक्खिअ–रूक्षित
रुज्झ–रुध्धातोः कर्मणि
रुट्ठ–रुष्ट
रुण्ण–रुदित
रुद्द–रुद्र
रुद्द–रौद्र
रुद्ध–रुद्ध
रुप्प–रौप्य
रुप्पिणी–रुक्मिणी
रुवंत–रुदत्
रुसा–रोषेण
रुह–रुह् (धातुः)
रुहिर–रुधिर
रूढत्थल–रूढ+स्थल
रुहिरंचाइणि–रुधिर+अर्चिता
रुहिरावलि–रुधिरावलि
रुहिरोलवोल–रुधिर+ओल + वोल (रुधिरेण आर्द्रार्द्र इत्यर्थः)
रुंजिय–रुञ्जित
रुंट–गुञ्ज्इत्यर्थे देशी (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुंड–रुण्ड (कबन्ध)
रुंद–विस्तीर्ण इत्यर्थे देशी
रुंधण–रोधन
रुंभ–रुध् (धातुः)
रूव–रूप
रूववंत–रूपवत्
रूस–रुष् (धातुः)
रेणु–रेणु
रेल्ल–शुभ् धात्वर्थे देशी
रेल्लिय–भाष् धात्वर्थे देशी
रेहा–रेखा
रेहातियंक–रेखा+त्रिक+अङ्क
रोअ–रुद् (धातुः)
रोझ–रोझ (प्राणिविशेषः)
रोमंचिय–रोमाञ्चित
रोमंथण–रोमन्थ
रोमावलि–रोमावलि
रोयत्तण–रोगित्व
रोयाउर–रोगातुर
रोर–दरिद्र इत्यर्थे देशी
रोरत्तण–दारिद्य
रोस–रोष (क्रोध)
रोसह–! रोषेणान्योन्यं घ्नन्तीति टिप्पणम् ।
रोसिर–रोषशील
रोहय–रोहित (मत्स्याविशेषः)
रोहिय–रोहित (मत्स्यविशेषः)

लइ–अतिशयार्थेऽव्ययम् (देशी); लोकोक्ताविति तु हेमचन्द्रः ।
लइ–शीघ्रम्
लइअ–गृहीत
लइय–गृहीत (व्याप्त इत्यर्थः)
लक्ख- लक्षय् (धातुः)
लक्ख–लक्ष (संख्या)
लक्खण–लक्षण
लक्खणालु–लक्षण+आलु (मत्वर्थीयः)
लग्ग–लग् (धातुः)
लग्ग–लग्न
लग्ग–लग्न (योगविशेषः)
लच्छि–लक्ष्मी
लच्छिसहि–लक्ष्मी+सखी
लच्छीपियल्ल–लक्ष्मीप्रिय+ल्ल (स्वार्थे)
लज्ज–लज्जा
लज्जा–लज्जा
लडह–सुन्दर इत्यर्थे देशी
लट्ठि–यष्टि
लड्डुय–लड्डुक (मोदकादि)
लण्ह–श्लक्ष्ण
लद्ध–लब्ध
लद्धी–लब्धि (प्राप्ति)
लब्भ–लभ्धातोः कर्मणि
लयामंडव–लतामण्डप
लयाहर–लतागृह
लल–लल् (धातुः)
ललणा–ललना
लललिय–चञ्चल इत्यर्थे देशी
ललंत–ललत्
लल्ल–अस्पष्टभाषीत्यर्थे देशी
लल्लक–रौद्र इत्यर्थे देशी
ललिय–ललिता
ललिया–ललिता
लवण–लवण
लविय–लपित (उक्त)
लह–लभ् (धातुः)
लहंत–लभमान
लहु–लघु
लहुय–लघुक
लंगूल–लाङ्गूल
लंघ–लङ्घ् (धातुः)
लंघिय–लङ्घित
लंछण–लाञ्छन
लंजिया–दासीशब्दार्थे देशी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लंपड–लम्पट
लंब–लम्ब् (धातुः)
लंबंत–लम्बत्
लंबिय–लम्बित
लंबिर–लम्बनशील
लाइअ–लात (गृहीत इत्यर्थः)
लायण्ण–लावण्य
लाल–लाला
लालस–लालस
लालारस–लाला+रस
लावण्ण–लावण्य
लाह–लाभ
लाहालाह–लाभालाभ
लित्त–लिप्त
लियअ–लात (गृहीत)
लिह–लिख् (धातुः)
लिहाव–लेखय् (धातुः)
लिहिय–लीढ, लिखित
लिंग–लिङ्ग (चिह्न)
लिंगि–लिङ्गिन् (ब्रह्मचारीत्यर्थः)
लिंत–लात् (लाधातोः शत्रन्तम्)
लीण–लीन
लीला–लीला
लुअ–लून
लुट्टण–लुट्टन
लुण–लू (धातुः)
लुद्ध–लुब्ध
लुद्धअ–लुब्धक (व्याध इत्यर्थः)
लुलक्क–यमदूत इत्यर्थे (?)
लुंचण–लुञ्चन
ले–ला (धातुः)
लेप–लेप (कलास्वन्यतमा)
लेप्प–लेप (वर्णादिः)
लेव–लेप
लेसा–लेश्या
लोअ–लोक
लोइय–लोचित
लोण–लावण्य
लोय–लोक
लोयण–लोचन
लोयत्तय–लोकत्रय
लोयालोय–लोकालोक
लोल–लोल
लोलंत–लोलत्
लोलिर–लोलनशील
लोहवलय–लोहवलय
लोहिय–लोहित
लोहियलुद्ध–लोहितलुब्ध

वइतरणि–वैतरणी (नरकनदीनाम)
वइधव्व–वैधव्य
वइयर–व्यतिकर
वइर–वैर
वइराअ–वैराग्य
वइराड–वैराट
वइरि–वैरिन्
वइरिमारि–वैरिमारिणी
वइसवण–वैश्रवण (कुबेर)
वइसाह–वैशाख
वउ–व्रत
वउत्थ–व्रतस्थ
वक्खाण–व्याख्यान
वग्ग–वर्ग (समूह)
वग्गुरिया–वागुरा (मृगबन्धनी रज्जुः)
वग्घ–व्याघ्र
वच्छ–वत्स
वच्छ–वक्षस्
वच्छराअ–वत्सराज (पूर्वकवेर्नाम)
वच्छल–वत्सल
वच्छल्ल–वात्सल्य
वज्ज–वज्र
वज्ज–वर्जय् (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वज्ज–वाद्य
वज्जअ–वाद्य(क)
वज्जणिहाअ–वज्रनिघात
वज्जमाण–वाद्यमान
वज्जर–कथ् इत्यर्थे देशी (धातुः)
वज्जावय–वादय् (धातुः)
वट्ट–वृत् (धातुः)
वट्टण–वर्तन
वज्झावयास–वाह्य+अवकाश (नगरबाह्यप्रदेश इति टिप्पणम्)
वट्टिय–वर्तित (आवर्तित, अभ्यस्त इत्यर्थः) १. १७. १०
वड्ढ–वृध् (धातुः)
वड्ढमाण–वर्धमान (चतुर्विंशतीर्थंकरनाम)
वड्ढमाण–वर्धमान
वड्ढिअ–वर्धित
वड्ढिय–वर्धित
वण–वन
वण–व्रण
वणदेवया–वनदेवता
वणमक्कड–वनमर्कट
वणयर–वनचर
वणयरि–वनचरी
वणलच्छी–वनलक्ष्मी
वणवाल–वनपाल
वणि–वणिक्
वणिअ–कदर्थित इति टिप्पणम्
वणिय–व्रणित (जर्जरित इत्यर्थः)
वणिवइ–वणिक्पति
वणिवर–वणिग्वर
वण्ण–वर्णय् (धातुः)
वण्ण–वर्ण
वण्णण–वर्णन
वण्णवंत–वर्णवत्
वण्णुक्कड–वर्णोत्कट
वत्त–वृत्त
वत्त–वक्त्र
वत्त–वार्ता
वत्त–वार्ता (कृषिवाणिज्यपशुपालनं वार्ता इति टिप्पणम्)
वत्थ–वस्त्र
वत्थु–वस्तु
वत्थुबंध–वस्तुबन्ध
वम्म–वर्मन्, मर्मन्
वम्मह–मन्मथ
वम्मीसर–मदन इत्यर्थे देशी
वम्मुल्लूरिय–वर्मोल्लूरित (मर्मणि विद्ध इत्यर्थः)
वयण–वचन
वयण–वदन
वयणभंग–वचनभङ्ग (स्यादस्ति स्यान्नास्तीत्यादिसप्तभङ्गीप्रतिपादकवचनप्रकार इति टिप्पणम्)
वयणुल्ल–वदन + उल्ल (स्वार्थे)
वर–वर (श्रेष्ठ)
वरइत्त–वरीता (पतिरित्यर्थः)
वरचेल–वर + चेल (वस्त्र)
वराई–वराकी
वराय–वराक
वरिट्ठ–वरिष्ठ
वरिस–वर्ष् (धातुः)
वरिस–वर्ष (संवत्सर इत्यर्थे)
वरिसोण–वर्ष + ऊन
वल–वल् चलने (धातुः)
वल–युक्त इत्यर्थे २-२-११.
वलय–वलाका
वल्लह–वल्लभ
वल्लह–वल्लभ (राष्ट्रकूटनरेन्द्राणां विरुदेष्वन्यतमम् । कृष्णमहाराजस्य नामान्तरमिति टिप्पणम्)
वल्ली–वल्ली
ववहर–वि + अव + हृ (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ववहारकूड–व्यवहारकूड (कूटव्यवहार इत्यर्थः)
ववियं–उत
वस–वश
वस–वस् (धातुः)
वस–वसा (रसादिशरीरधातूनामन्यतमा १-१६-९.)
वसकद्दम–वसा + कर्दम
वसचोप्पड–वसावलिप्त इत्यर्थे देशी
वसण–व्यसन
वसह–वृषभ
वसहि–वसति
वसा–वसा
वसातुप्पगिल्ल-वसाघृतभक्षक
वसुह–वसुधा
वसुहाहिअ–वसुधा + अधिप
वसुंधर–वसुंधरा (पृथ्वी)
वह–वध् (धातुः)
वह–वह् (धातुः)
वहु–वधू
वंक–वक्र
वंच–वञ्च् (धातुः)
वंचण–वञ्चन
वंचणपर–वञ्चनपर
वंछ–वाञ्छ् (धातुः)
वंछिअ–वाञ्छित
वंझ–वन्ध्या
वंठ–शुष्कवृक्ष इत्यर्थे देशी (मराठी-वठलेला)
वंदण–वन्दन
वंदणिज्ज–वन्दनीय
वंदिय–वन्दित
वंभचेर–ब्रह्मचर्य
वंस–वंश (कुल)
वा–वा (धातुः)
वा–इवार्थेऽव्ययम्
वाअ–वात
वाइत्त–वादित
वाउ–वायु
वाएसरि–वागीश्वरी
वाड–वाट (वसतिस्थानम् । मराठी-वाडा)
वाणर–वानर
वाणी–वाणी
वाय–वात
वायडउल–शुककुल इत्यर्थे देशी
वायरण–व्याकरण
वाय–वाचय् (धातुः)
वाया–वाच्
वारण–वारण
वारवार–वारंवारम्
वारिअ–वारित
वारीयर–वारिचर (जलचर)
वाल–वाल (केश)
वाल–व्याल
वालपूलोलि–वालपूलाः केशपुञ्जास्तेषामोलिः पङ्क्तिरिति टिप्पणम्
वालुयपह–वालुकाप्रभ (तृतीयनरकनाम)
वावग–वामन
वावर–वि+आ+पृ (धातुः)
वावरिअ–व्यापार
वावार–व्यापार
वावी–वापी
वास–व्यास
वास–वास (वसतिः)
वासअ–वर्षर्तुसंबन्धि (दूर्वादिकम्)
वासट्ठिविह–द्विषष्टिविध
वासणा–वासना
वासर–वासर (दिनम्)
वासवसेण–वासवसेन (कविनामविशेषः)
वासिअ–वासित
वासुएअ–वासुदेव
वासुपुज्ज–वासुपूज्य (द्वादशतीर्थंकरनाम)
वाह–बाष्प
वाह–वाहय् (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाह–व्याध
वाहण–वाहन
वाहायर–बाधाकर
वाहि–व्याधि
वाहिज्ज–वध्धातोर्णिजन्तात् कर्मणि
वाहिय–वाहित
वाहियालि–वाह्यालि (वाह्यमार्गः; वाहनानामश्वगजादीनां शिक्षार्थे परिकल्पितः प्रदेशविशेषः । बाष्पधारेत्यर्थान्तरम्)
वाहिल्ल–व्याधि+इल्ल (मत्वर्थीयः)
वि–अपि (स्वरात्परे एव)
विइण्ण–वितीर्ण
विउल–विपुल
विउस–विद्वस्
विउससह–विद्वत्सभा
विओय–वियोग
विओयण–वियोजन (वियोग)
विक्कमसंवच्छर–विक्रमसंवत्सर
विकिर–वि+कृ (क्षरणे धातुः)
विक्खित्त–विक्षिप्त (विहित)
विगव्व–विगर्व
विग्गह–विग्रह
विग्गहवंत–विग्रहवत्
विग्घमहाणइ–विघ्नमहानदी
विचित्त–विचित्र
विच्च–वर्त्मनीत्यर्थे देशी
विच्छड्ड–विच्छर्द
विच्छाय–विच्छाय (निस्तेजा इत्यर्थः)
विच्छिण्ण–वि+छिन्न
विच्छुल–विच्छुर
विच्छुलिय–विच्छुरित
विच्छोह–विक्षोभ
विजयं–विजय
विज्ज–विद्या
विज्ज–वैद्य
विज्जविउल–विद्याविपुल
विज्जावच्च–वैयापृत्य (व्यापारः सेवादिकं वेत्यर्थः)
विज्जाहर–विद्याधर
विज्जिज्जंत–वीज्यमान
विज्जु–विद्युत्
विज्जुपुंज–विद्युत्पुञ्ज
विज्जुलिय–विद्युत्
विज्जुविराइय–विद्युद्विराजित
विट्टल–अपवित्रार्थे, अस्पृश्यसंसर्गे वा देशी
विट्टलअ–अपवित्रार्थे देशी
विट्ठर–विष्टर (आसन)
विड–विट
विणअ–विनत
विणअ–विनय
विणडिअ–वञ्चित इत्यर्थे देशी
विणविय–विज्ञप्त
विणास–विनाश
विणासयर–विनाशकर
विणिउत्त–विनियुक्त
विणिग्गम–वि+निर्गम
विणिग्गय–विनिर्गत
विणिवारिय–विनिवारित
विणिवेइय–विनिवेदित
विणिहय–विनिहत
विणु–विना
विण्णाण–विज्ञान
विण्हु–विष्णु
विणोअ–विनोद
विणोय–विनोद
वित्त–वित्त
वित्त–वृत्त
वित्थर–वि+स्तृ (धातुः)
वित्थरिअ–विस्तृत
वित्थार–विस्तार
वित्थरिअ–विस्तारित
वित्थिण्ण–विस्तीर्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्दुम–विद्रुम
विद्ध–विद्ध
विद्धंसण–विध्वंसन
विद्धंसिय–विध्वस्त
विद्धि–वृद्धि
विद्धी–विद्धा
विप्प–विप्र
विप्पागम–विप्र+आगम (वेद इत्यर्थः)
विप्पिअ–वि+प्रिय (हिंसादिकर्म)
विप्पिय–विप्रिय
विप्पोसहि–विप्रौषधि (!) योगिनां प्रभाव–विशेषेण मूत्रविष्ठादिभ्यो निष्पाद्यमाना–न्यौषधानि)
विप्फुर–वि+स्फुर् (धातुः)
विब्भम–विभ्रम
विब्भयंत–विभावयत्
विभिण्ण–विभिन्न
विमद्द–विमर्द
विमल–विमल (त्रयोदशतीर्थंकरनाम)
विमल–विमल
विमलवाहण–विमलवाहन (राज्ञो नामविशेषः)
विमाण–विमान (रथादिकम्)
विमाणय–विमानक (गृहं प्रासादो वा)
विमीस–वि+मिश्र
विमुक्क–विमुक्त
वियक्किअ–वितर्कित
वियक्खण–विचक्षण
वियड्ड–विकट
वियर–वि+चर् (धातुः)
वियर+वि+तृ दाने (धातुः)
वियराल–विकराल
वियल–वि+गल् (धातुः)
वियलिय–विगलित
वियलियसंक–विगलिशतङ्क
वियस–वि+कस् विकसने (धातुः)
वियंभ–वि+जृम्भ् (धातुः)
वियार–विकार
वियारणक्खम–विदारणक्षम
वियारभग्ग–विकारभग्न (व्याधित इत्यर्थः)
वियारविज्ज–विचारविद्या (आन्वीक्षिका)
वियारिअ–विचारित
वियारिअ–विदारित
विरइय–विरचित
विरइयकण्णिय–विरचित + कर्णिका (कुन्ता-दीनामग्रभागः)
विरत्त–विरक्त
विरत्त–विशेषेण रक्त १-१४-३
विरज्जइअ–विरञ्जित
विरम–विराम
विराहिअ–विरहित
विरल–विरल
विरस–वि+रस् शब्दे (धातुः)
विरस–विरस
विरह–विरह
विराम–विराम (नाश)
विलअ–विलय (विनाश)
विलआ–वनिता इत्यर्थे देशी १-१४-१०
विलग्ग–विलग्न
विलस–वि+लस् (धातुः)
विलसिअ–विलसित
विलंबंत–विलम्बमान
विलास–विलास
विलित्त–विलिप्त
विलिहिय–विलिखित
विलिहिय–विलीढ
विल्लि–वल्ली
विलीण–विलीन
विलुक्क–विलुप्त (!)
विलुलिय–विलुलित
विलुंच–वि+लुञ्च् (धातुः)
विलोल–विलोल (चञ्चल)
विलोहिय–विलोभित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विव–इवार्थेऽव्ययम्
विवज्जिअ–विवर्जित
विवणम्मण–विमनस्क (!)
विवण्ण–विपन्न
विवरीअ–विपरीत
विवरीय–विपरीत
विवरेर–विपरीत
विवरेर–विवरणकार
विवंच–वि+मुच् धात्वर्थे
विवाय–विपाक
विवाह–विवाह
विविह–विविध
विविहासण–विविध + आसन
विस–विष
विसअ–विषय (देशः भोगादिर्वा)
विसज्जिय–विसर्जित
विसण्ण–विषण्ण
विसदंस–विषदंश (सर्प इत्यर्थः)
विसमी–विषमा
विसय–विषय
विसयम्म–विश्वकर्मन्
विसयासत्त–विषयासक्त
विसरिस–विसदृश
विसवेअ–विषवेग
विससत्ति–विषशक्ति
विसहर–विषधर (सर्प)
विसहरारि–विषधरारि (नकुल इत्यर्थः)
विसहिय–विषह्य, विसोढ
विसाणय–विषाण (क)
विसायघत्थ–विश्वासघातिन्
विसाल–विशाल
विसुद्धि–विशुद्धि
विसेस–विशेष
विसेसिय–विशेषित
विहअ–विभव
विहट्टिय–विघट्टित
विहडप्फड–विस्फुरित इत्यर्थे देशी
विहत्ति–विभक्ति
विहत्तिय–विभक्ति (क)
विहलंघल–विह्वल इत्यर्थे देशी (अचेतन इति तु टिप्पणम्)
विहव–विभव
विहवत्तण–विभव
विहंग–विहङ्ग
विहंज–वि + भञ्ज् (धातुः)
विहंडण–विखण्डन
विहंडिर–विभण्ड+इर (शीलार्थे) (कलहशील इत्यर्थः)
विहा–वि + भा (धातुः)
विहाण–विधान
विहार–विहार
विहाव–वि + भावय् (धातुः)
विहावरि–विभावरी
विहाविअ–विभावित (कथित इति टिप्पणम्)
विहि–विधि
विहिअ–विहित
विहिय–विहित
विहियछाय–विहितच्छाय (विहितप्रसाद इत्यर्थः)
विहिवसभग्ग–विधिवशभग्न (कर्मवशात्प्रेरित-मिति टिप्पणम्)
विहीण–विहीन
विहुणिय–विधूत, विधूनित
विहुर–विधुर (विकल इत्यर्थे)
विहुर–विधुर (दुःख इत्यर्थे)
विहुरवडण–विधुरपतन (दुःखपतन)
विहूई–विभूति
विहूसण–विभूषण
विहूसिय–विभूषित
विंझ–विन्ध्य
विंझसिरि–विन्ध्यश्री
विंद–वृन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विंभल–विह्वल
विंभिय–विस्मित
वीणंत–वीणयत् (वादयन् इत्यर्थे)
वीणा–वीणा
वीणारव–वीणारव
वीयराअ–वीतराग
वीर–वीर
वीरवइ–वीरवती (स्त्रीनामविशेषः)
वीसरिय–विस्मृत
वीसल–वीसल (पुरुषनामविशेषः)
वीसास–विश्वास
वुक्करंत–भू भू इति श्वशब्दं कुर्वत्
वुड्ढ–वृद्ध
वुड्ढत्तण–वृद्धत्व
वुड्ढहूव–वृद्ध + भूप
वुत्त–उक्त
वूह–व्यूह
वेअ–वेद
वेइय–वेदित (निवेदित)
वेउव्वणा–विकुर्वणा (विकार)
वेढण–वेष्टन
वेढिअ–वेष्टित
वेण–वेन (नृपविशेषः)
वेणु–वेणु (वंश)
वेयण–वेदना
वेयमूढ–वेदमूढ
वेयवंत–वेदवत्
वेयागम–वेद + आगम
वेयालअ–वेताल (क)
वेयालकाल–विकाल + काल (संध्यासमयः । वेतालादिभ्रमणकाल इति तु टिप्पणम्)
वेयालिय–वैतालिक
वेर–वैर
वेरमण–विरमण (विराम)
वेल–वेला
वेलपडिच्छिअ–वेला + प्रतीष्ट
वेल्लि–वल्ली
वेल्ली–वल्ली
वेव–वेप् (धातुः)
वेविर–वेपनशील
वेस–वेष
वेहविअ–विह्वलित (रोषितोऽनुरञ्जितो वेति टिप्पणम्)
वेहाविय–वि + भावित
वोक्कय–वृक्क (शरीरभागः)
वोल–आर्द्र इत्यर्थे देशी
वोलीण–व्यतिक्रान्त इत्यर्थे देशी
वोल्लिअ–आर्द्रीकृत (अभ्यक्त)
व्व–इवार्थेऽव्ययम् (ह्रस्वात्स्वरादुत्तरमेव प्रयुज्यते)

सइ–सती
सइं–स्वयम्
सइरिणि–स्वैरिणी
सउच्च–शौच
सउण–शकुन
सउण्ण–सपुण्य, १-२५-१०
सउहयल–सौधतल
सउहलय–सौधतल
सकलत्त–स्व + कलत्र
सकहंतर–स्व + कथान्तर
सकंत–स्व + कान्ता
सक्क–शक् (धातुः)
सक्क–शक्र
सक्कर–शर्करा
सक्करपह–शर्कराप्रभ (द्वितीयनरकनाम)
सकुंतलिय–स + कुन्तल (सुकेशीत्यर्थः)
सक्कोह–सक्रोध
सखंड–स + खण्ड
सक्खीयर–साक्षिचर
सग्ग–स्वर्ग
सग्गत्थ–स्वर्गस्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सग्गसिर—स्वर्गशिरस्
सग्गापवग्ग—स्वर्गापवर्ग
सगुण—स + गुण
सगुण—स्व + गुण
सगुणोह—सद्गुणौघ
सच्च—सत्य
सच्चमूल—सत्यमूल
सच्चवंत—सत्यवत्
सच्चविअ—साक्षात्कृत, दृष्ट
सच्चसंध—सत्यसंघ
सच्चित्त—सच्चित्त (सचेतन इत्यर्थः)
सचेयण—सचेतन
सचेलअ—सचेल (क)
सच्चेयण—सचेतन
सच्छ—स्वच्छ
सच्छाय—सच्छाय
सच्छिकर—साक्षीकृ दर्शने (धातुः)
सज्ज—सज्ज (सद्यः !)
सज्जण—सज्जन
सज्जिअ—सज्जित
सज्जीअ—सजीव
सजोह—सयोध
सझाण—स्व+ध्यान
सड—शातय् (धातुः)
सडंग—षडङ्ग
सडिय—शातित
सढ—शठ
सढत्तण—शठत्व
सणाह—सनाथ
सणिउं—शनैः
सणिद्ध—स्निग्ध
सण्ण—संज्ञा
सण्णा—संज्ञा
सण्णि—संज्ञिन् (सचेतन इत्यर्थः)
सण्ह—श्लक्ष्ण
सत्त—सत्तन्
सत्ततच्च—सत्य+तथ्य
सत्तभेय—सप्तभेद
सत्तभोम—सप्तभौम (सप्तभूमिबद्ध)
सत्तम—सप्तम
सत्तमअ—सप्तम (क)
सत्तर—सप्तति
सत्तविह—सप्तविध
सच्चसील—सत्यशील
सत्तंग सप्ताङ्ग(स्वाम्यमात्यादिराज्याङ्गानीत्यर्थः)
सत्थ—शास्त्र
सत्थ—सार्थ
सतामस—सतामस (अज्ञान इति टिप्पणम्)
सत्ति—शक्ति
सत्तितय—शक्तित्रय (प्रभावोत्साहमन्त्ररूपा राज्ञस्तिस्रः शक्तयः)
सतुंड—सतुण्ड
सत्तु—शत्रु
सथत्ति—स्व+स्थान
सदय—सदय
सदल—उदल (सपत्र)
सद्द—शब्द
सद्दय—शब्द (क)
सद्दल—सदल (नीलपत्रयुक्त इति टिप्पणम्)
सद्दवंत—शब्दवत्
सद्दवेह—शब्दवेध
सद्दहिय—शब्दित
सद्दंसण—सद्दर्शन
सद्दूल—शार्दूल
सधअ—सध्वज
सपरिग्गह—सपरिग्रह
सप्प—सर्प
सब्भाव—सद्भाव
सब्भावपयासण—सद्भावप्रकाशन
सम—शम
सम—सम
समअ—सममित्यर्थेऽव्ययम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समक्खयं–समक्ष (कं)
समग्ग–समग्र (संपूर्ण)
समच्चिय–सम् + अर्चित
समज्जिय–सम् + अर्जित
समतणकंचण–समतृणकाञ्चन
समत्त–समस्त
समत्थ–समर्थ
समप्पिय–समर्पित
समब्भासिअ–सम् + अभ्यस्त
समभावण–समभावना
समय–समय (व्यवस्थेत्यर्थः)
समर–शबर २-२९-६.
समरउल–शबरकुल
समरट्ट–स+मरट्ट (सगर्व इत्यर्थे देशी)
समल–स + मल (पापयुक्त)
समवयस–समवयस्
समसरिस–सम + सदृश
समंजस–समञ्जस
समाइट्ठ–समादिष्ट
समागय–समागत
समागयचेयण–समागतचेतन (लब्धचेतन इत्यर्थः)
समाण–समान (सममित्यर्थे)
समाणत्त–सम्+आज्ञप्त
समाया–सम्+आगता
समाया–स+माया (मायायुक्ता)
समावरिय–समावृत
समाहि–समाधि
समिउ–सम
समियमअ–शमितमद
समिच्छ–सम्+इष् (धातुः)
समिच्छिय–सम्+इष्
समिद्ध–समृद्ध
समिय–शमित
समीर–समीर
समीरण–समीरण
समीह–सम्+ईह् (धातुः)
समीहिअ–समीहित
समुग्घायंत–सम्+उद्+जिघ्रत्
समुज्जल–सम्+उज्ज्वल
समुद्द–समुद्र
समुद्द–स+मुद्रा (लक्षणधर इत्यर्थः)
समुद्धरिअ–सम्+उद्+धृत
समुब्भव–समुद्भव
समुंड–समुण्ड
समूससिअ–समुच्छ्वसित
समूह–समूह
समोड–सम् + मोटय् (धातुः)
सम्मत्त–सम्यक्त्व
सम्मदंसण–सम्यग्दर्शन
सम्मय–साम्य, सम्यक्त्व
सय–शत
सयगुणिय–शतगुणित
सयज्ज–स्व + कार्य
सयड–शकट
सयण–शयन (गृहमिति टिप्पणम्)
सयण–स्वजन
सयणु–स्वतनु
सयणोअर–शयन + उदर (शय्यामध्य इत्यर्थः)
सयदल–शतदल (पद्म इत्यर्थः)
सयमह–शतमख (इन्द्र)
सयर–स्वकर
सयरायर–सचराचर
सयल–सकल
सयवत्त–शतपत्र
सयासि–सकाशे
सयंभु–स्वयंभू
सयंभुअ–स्व + भुज
सयंवरमंडव–स्वयंवरमण्डप
सया–सदा
सर–सृ (धातुः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर–स्वर
सर–शर
सर–सरस्
सरज्ज–स्व + राज्य
सरढ–सरठ (सरीसृपविशेषः (मराठी सरडा)
सरण–शरण
सरण–शरण (रक्षितृ इत्यर्थे)
सरणि–सरणि (मार्ग)
सरय–सरजस्
सरल–सरल
सरलामल–सरल + अमल
सरवर–सरोवर
सरस–सरस (रसयुक्त)
सरस–सरस (स्निग्ध इति टिप्पणम्)
सरसइणिलय–सरस्वतीनिलय (पुष्पदन्तकवेर्बिरुदेष्वन्यतमम्)
सरह–शरभ (अष्टापदः प्राणिविशेषः)
सरहंस–सरोहंस
सरंतगव्व–सरद्गर्व (!) (गर्वयुक्त इत्यर्थः)
सरास–कथ् इत्यर्थे देशी
सरासइ–सरस्वती
सरासण–शरासन (धनुः)
सरि–सरित्
सरिगमपधणी–गीतस्थस्वरश्रेणि
सरिविवर–सरिद्विवर
सरीर–शरीर
सरूअ–स्वरूप
सलह–श्लाघ् (धातुः)
सलहण–श्लाघन, श्लाघा
सलिल–सलिल
सलीलगइ–सलीलगति
सल्ल–शल्य
सल्लेहण–संलेखन (तपोविशेषः)
सल्लेहणय–संलेखन(क) (तपोविशेषः)
सव–स्तु (धातुः)
सवडंमुह–संमुख इत्यर्थे देशी
सवण–श्रवण (कर्ण)
सवत्ति–सपत्नी
सवत्तिविरोह–सपत्नीविरोध
सविणय–सविनय
सवित्तोपउत्त–स्व+वृत्त+उपयुक्त (स्ववृत्तान्तसहितमित्यर्थः)
सवित्थर–सविस्तर
सविब्भम–सविभ्रम (सावर्तानि, अथवा, सह वीनां पक्षिणां भ्रमैः भ्रमणैः वर्तमानानि इति टिप्पणम्)
सविब्भम–सविभ्रम (कामोद्रेकजनितभ्रूयुगादिभ्रमणमिति टिप्पणम्)
सवियाणिया–स+विजानती (विज्ञानवतीत्यर्थः)
सवियार–सविकार (विकृत इत्यर्थः)
सविस–सविष
सविसाण–स्वविषाण
सविसेस–सविशेष
सव्व–सर्व
सव्वगासि–सर्वग्रासिन्
सव्वण्ण–सर्वज्ञ
सव्वंग–सर्वाङ्ग
सव्वोसहि–सर्वौषधि
सस–स्वसृ
ससय–शशक
ससहर–शशधर (चन्द्र)
ससहरमुही–शशधरमुखी (चन्द्रमुखी)
ससंघ–ससंघ (संघसहित)
ससि–शशिन्
ससिमुह–शशिमुख
ससिर–स्वशिरस्
ससिलग्ग–शशिलग्न
ससी–शशिन्
सह–शोभायां देशी (धातुः)
सह–सह् (धातुः)
सह–सभा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सह–सह (अव्ययम्)
सहउयरी–सहोदरी
सहज–सहज
सहड्डु–स+अस्थि
सहमज्झ–सभामध्य
सहमंडव–सभामण्डप
सहयर–सहचर
सहंत–सहमान
सहाय–सहाय
सहाव–स्वभाव
सहास–सहस्र
सहास–सहास, स + भास् (सशोभ इत्यर्थः)
सहिअ–सहित
सहिय–सह्य
सहिय–सहित
सही–सखी
सहुं–सह (अव्ययम्)
संक–शङ्क् (धातुः)
संकड–संकट
संकडिल्ल–संकट + इल्ल (स्वार्थे) (व्याप्त इत्यर्थे)
संकमिय–संक्रान्त
संका–शङ्का
संकाराविय–संस्कारित
संकास–संकाश
संकुल–संकुल
संकेयत्थ–संकेतस्थ
संख–शंख
संखदीव–शंखद्वीप
संखल–शृंखला
संखला -शृंखला
संखाण–संख्यान
संखीणगत्त–संक्षीणगात्र
संखेव–संक्षेप
संखोहिय–संक्षोभित
संग–संग
संगम–संगम
संगर–संगर (युद्ध)
संगह–सम् + ग्रह् (धातुः)
संगहण–संग्रहण
संगहिय–सम् + गृहीत
संगामरंग–संग्रामरङ्ग
संगिल–सम् + गॄ (धातुः)
संघ–संघ (जैनधर्मानुयायिनां वर्गः)
संघट्ट–संघट्ट
संघट्टण–संघट्टन
संघाअ–संघात
संघाय–संघात (गात्रमित्यर्थः)
संघार–सम् + हृधातोर्णिजन्तम्
संघारअ–संहारक
संघारिअ–संहारित (मारित इत्यर्थः)
संचलिअ–संचलित
संचार–संचार
संचि–सम् + चि (धातुः)
संचिय–संचित
संचिंतिय–संचिन्तित
संछइअ–संछन्न
संजइअ–संयतिक
संजम–संयम
संजाय–संजात
संजायअ–संजात (क)
संजुअ–संयुत
संजुत्त–संयुक्त
संजोइय–संयोजित
संजोयभेअ–संयोगभेद
संझ–संध्या
संझा–संध्या
संठव–सम् + स्थापय् (धातुः)
संठिय–संस्थित
संड -षण्ड (वृन्द)
संढ–षण्ढ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संणास–संन्यास
संणिसण्ण–संनिषण्ण
संणिह–संनिभ
संणिहिय–संनिहित
संत–शान्त
संत–सत् (अस्धातोः शत्रन्तम्)
संतअ–संतत
संतत्त–संतप्त
संताण–संतान
संताव–संताप
संताविअ–संतापित
संति–शान्ति (षोडशतीर्थंकरनाम)
संति–शान्ति
संतियरि–शान्तिकरी
संतुट्ठमण–संतुष्टमनस
संतोस–संतोष
संथुअ–संस्तुत
संदाणिअ–संदानित (बद्ध इत्यर्थः)
संदाणियं–संदानित
संदेह–संदेह
संधाण–संधान
संधि–संधि
संपइ–संपद्
संपइ–संप्रति
संपज्ज–सम् + पद् (धातुः)
संपत्त–संप्राप्त
संपत्तिअ–संप्राप्त
संपया–संपद्
संपासिअ–संप्राशित
संपिच्छ–सम् + प्र + ईक्ष् (धातुः)
संपुण्ण–संपूर्ण
संपुण्णकाअ–संपूर्णकाय
संफास–संस्पर्श
संबोहयारी–संबोधकारी
संबोहिअ–संबोधित
संभरिय–संस्मृत
संभव–संभव (तृतीयतीर्थंकरनाम)
संभव–संभव (संसार इति टिप्पणम्)
संभव–सम्+भू (धातुः)
संभाल–सम् + भालय् निरीक्षणे (धातु):
संभविअ–संभूत
संभासण–संभाषण
संभु–शंभु
संम–श्रम
संमद्द–संमर्द
संमद्दण–संमर्दन
संमुह–संमुख
संवर–संवर
संवर–शंवर (पशुविशेषः)
संवरवेउल्ल–संवरवेगवत्
संवेयायर–संवेगकर
संसअ–संशय
संसयार–संस्कार
संसर–सम् + सृ (धातुः)
संसार–संसार
संसारसरणि–संसार + सरणि (मार्गः)
संसिद्धी–संसिद्धि
संसिंचिय–संसिञ्चित
संसेविय–संसेवित
सा–सा (लक्ष्मी)
साअ–स्वाद ३·३६·९.
साइअ–स्वादित
साइणि–शाकिनी (प्रेतपिशाचादिस्त्रीविशेषः)
सागार–स + अगार
साडी–शाटी (मराठी साडी)
साण–श्वन्
साणंदभाअ–सानन्दभाज् (सानन्द इत्यर्थः)
साम–श्याम (वर्ण)
सामण्ण–सामान्य
सामत्थ–सामर्थ्य
सामरि–शाल्मली (वृक्षनाम)
सामल–श्यामल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामलिया–श्यामला
सामन्त–सामन्त
सामाइय–सामयिक (आचारविशेषः)
सामि–स्वामिन्
सामिणी–स्वामिनी
सामी–स्वामिन्
सामीवय–सामीप्य
सामुद्द–सामुद्रिक (लक्षणशास्त्र)
सायर–सागर
सायरसम–सागरोपम (आयुःप्रमाणम्)
सार–सार (स्थिरांश)
सार-सार (श्रेष्ठ)
सारणि–(सरणि) (प्रवाह इत्यर्थे)
सारमेअ–सारमेय
सारस–सारस (जलचारिपक्षिविशेषः)
सारंग–सारङ्ग
सारिच्छ–सदृक्ष
सारिच्छचक्खु–सदृक्षचक्षुष्
सारिस–सदृश
साल–श्याल
सालंकारवह–स+अलंकार+पथिन् (सालंकारेत्यर्थः)
सालि–स+अलि (सभृङ्गमित्यर्थः)
सालि–शालि (धान्यविशेषः)
सालिछेत्त–शालिक्षेत्र
सालूर–शालूर (भेक)
सावअ–श्रावक
सावय–श्रावक
सावयवअ–श्रावकव्रत
सावयवइ–श्रावकपति (साधुरित्यर्थः)
सावयास–सावकाश
सास–श्वास
सासण–शासन
सासय–शाश्वत
साह–श्रावय् (कथ्धात्वर्थे देशी धातुः)
साहण–साधन
साहस–साहस
साहरण–स + आभरण
साहसिअ–साहसिक
साहा–शाखा
साहामय–शाखामृग (वानर इत्यर्थः)
साहार–स+आधार
साहार–सहकार (आम्रवृक्ष)
साहिअ–श्रावित (कथित)
साहिणाण–स+अभिज्ञान
साहिलास–साभिलाष
साहु–साधु
सिक्ख–शिक्ष् (धातुः)
सिक्ख–शिक्षा (उपदेशः)
सिक्खा–शिक्षा (दीक्षा)
सिक्खिअ–शिक्षित
सिग्गिरि–नीलवर्ण इत्यर्थे देशी (!)
सिग्घ–शीघ्र
सिज्जमाण–पच्यमान इत्यर्थे देशी (मराठी–शिजणारा)
सिज्जंत–पच्यमान
सिट्ठ–शिष्ट
सिट्ठि–श्रेष्ठिन्
सिट्ठि–सृष्टि
सिट्ठिसंहारकारि–सृष्टिसंहारकारिन्
सिढिल–शिथिल
सिणिद्ध–स्निग्ध
सिण्ह–पक्व
सित्त–सिक्त
सिद्ध–सिद्ध
सिद्धइरि–सिद्धगिरि (क्षेत्रनाम)
सिद्धंत–सिद्धान्त
सिद्धि–सिद्धि
सिप्पा–शिप्रा (नदीनाम)
सिप्पिउड–शुक्तिपुट
सिप्पिसंपुड–शुक्तिसंपुट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिप्पीर–धान्यादीनां तुषमित्यर्थे देशी (पलाल इति टिप्पणम्)
सिमिसिम–कथनशब्दानुकरणे देशी (धातुः)
सिय–सित (शुक्लवर्ण)
सियछत्त–सितच्छत्र
सियसेविआ–श्रीसेविता (सश्रीका, सुन्दरेत्यर्थः)
सियाल–शृगाल
सिर–शिरस्
सिरि–श्री
सिरिकलस–श्रीकलश
सिरिपोमिणी–श्रीपद्मिनी (शोभायुक्तं कमल-सर इत्यर्थः)
सिरिमंत–श्रीमत्
सिरिवइ श्रीपति (वणिजो नामविशेषः)
सिरिवंत–श्रीमत्
सिल–शिला
सिलणाव–शिला+नौ
सिला–शिला
सिलायल–शिलातल
सिलोह–शिला+ओघ (समूह)
सिव–शिव
सिव–शिवा (शृगालस्त्री)
सिवसत्थवस–शिवशास्त्रवश
सिविणअ–स्वप्न (क)
सिविणयसमान–स्वप्नसमान
सिविया–शिबिका (यानविशेषः)
सिसु–शिशु
सिसुत्तण–शिशुत्व
सिसुससि–शिशुशशिन् (प्रतिपचन्द्रः)
सिह–शिखा
सिहर–शिखर
सिहि–शिखिन् (अग्निः)
सिहि–शिखिन् (मयूरः)
सिहिधूमोलि–शिखिधूमावलि
सिहिसाण–शिखिन्+श्वन्
सिहिसिह–शिखिशिखा (अग्निज्वाला)
सिंग–शृङ्ग
सिंगग्ग–शृङ्गाग्र (नरकपालदेशः)
सिंगार–शृङ्गार
सिंगि–शृङ्गिन्
सिंचिअ–सिक्त
सिंदूर–सिन्दूर
सिंधु–सिन्धु (देशनाम)
सिंधुविसय–सिन्धुविषय (देश)
सिंभ–श्लेष्मन्
सीमंतिणी–सीमन्तिनी
सीमावड–सीमा+वट
सीय–सीता
सीयर–स्वी+कृ (धातुः)
सीयल–शीतल
सीयल–शीतल (दशमतीर्थंकरनाम)
सीयल–शीतल
सीयलिय–शीतलित (संसारदुःखस्फोटनकर इति टिप्पणम्)
सीयार–सीत्कार
सील–शील
सीस–शास्धातोः कर्मणि
सीस–शिष्य
सीसत्त–शिष्यत्व
सीह–सिंह
सीहसदूल–सिंह+शार्दूल
सीहासण–सिंहासन
सु–श्रु (धातुः)
सु–सु (सुष्ठु इत्यर्थे)
सुअ–श्रुत
सुअ–सुत
सुअ–सूप
सुअवट्टण–श्रुतवर्तन
सुअव्वत्त- सु+अव्यक्त (गूढ इत्यर्थः)
सुइ–शुचि
सुइ–श्रुति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइट्ठ–सु+इष्ट
सुइरु–सु+चिरम्
सुकइकह–सुकवि + कथा
सुकय–सुकृत
सुकुंतल–सु+कुन्तल (केश)
सुकियहल–सुकृत।ल
सुक्क–शुक्र
सुक्क–शुक्ल
सुक्कड–शुष्क इत्यर्थे देशी
सुक्कलेस–शुक्ललेश्यायुक्त
सुक्ख–शुष्क
सुक्ख–सौख्य
सुक्खणिहि–सौख्यनिधि
सुखंचिय–सु+खचित
सुगय–सुगत
सुच्छाय–सुच्छाय
सुज्ज–सूर्य
सुज्झ–शुध् (धातुः)
सुट्ठु–सुष्ठु
सुढिय–दुःखित इत्यर्थे देशी
सुण–श्रु (धातुः)
सुण–श्वन्
सुणह–शुनक
सुणहुल्लअ–शुनक+उल्लअ (स्वार्थे)
सुणिय–श्रुत
सुणेह–सुस्नेह
सुण्ण–शून्य
सुण्ह–स्नुषा
सुण्हा–स्नुषा
सुत्त–सुप्त
सुत्त–सूत्र
सुत्थिय–सुस्थित
सुद–श्रुत
सुदच्छ–सुदक्ष
सुदत्त–सुदत्त (मुनिनाम)
सुदलिल्ल–सुदल+इल्ल (मत्वर्थीयः)
सुदीण–सु+दीन
सुदुण्णिरिक्ख–सुदुर्निरीक्ष्य
सुद्ध–शुद्ध
सुद्धोयण–शुद्धौदन
सुद्धभाअ–शुद्धभाव
सुद्धमइ–शुद्धगति
सुद्धसई–शुद्धसती
सुपसण्ण–सुप्रसन्न
सुपसत्थ–सुप्रशस्त
सुपसिद्ध–सुप्रसिद्ध
सुपहाण–सुप्रधान
सुपहाय–सुप्रभात
सुपास–सुपार्श्व (सप्तमतीर्थंकरनाम)
सुपासगत्त–सुपार्श्वगात्र (शोभने पार्श्वे गात्रं च यस्येति टिप्पणम्)
सुपुज्ज–सुपूज्य
सुपुसिय–सु+पुसिय (मार्जित इत्यर्थे देशी। मराठी–पुसणें)
सुप्पहाअ–सुप्रभात
सुमइ–सुमति (पञ्चमतीर्थंकरनाम)
सुमइ–सुमति
सुमण–सुमनस्
सुमर–स्मृ (धातुः)
सुमरण–स्मरण
सुय–शुक
सुय–श्रुत
सुय–सुत
सुयण–सुजन
सुयपय–श्रुतपद
सुया–सुता
सुर–सुर
सुरकामिणी–सुरकामिनी
सुरगणिया–सुर+गणिका (अप्सरेत्यर्थः)
सुरधणु–सुरधनुष्
सुरपुरंधि–सुरपुरन्ध्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरय–सुरत
सुरवइ–सुरपति
सुरवइदिसि–सुरपतिदिश् (प्राचीत्यर्थः)
सुरसरि–सुरसरित् (गङ्गा)
सुरसुअ–सुरसुत
सुरहर–सुरगृह (देवालय)
सुरहि–सुरभि
सुरहिय–सुरभित
सुरही–सुरभि (धेनुरित्यर्थः)
सुरहुब्भिय–सुरथ+ऊर्ध्वीकृत
सुरावलि–सुरावलि (देवसमूह)
सुरिंद–सुरेन्द्र
सुरेसर–सुरेश्वर
सुरेसरि–सुरेश्वरी (देवी)
सुलक्खण–सुलक्षण
सुललिय–सुललित
सुवण्ण–सुवर्ण
सुवत्त–सुवृत्त
सुवाय–सुवाच्
सुविउल–सुविपुल
सुविरत्त–सुविरक्त
सुविसम–सुविषम
सुविसुद्ध–सुविशुद्ध
सुविहाण–सु+वि+भान (सुप्रभात इत्यर्थः)
सुवेल–सुवेल (पर्वतविशेषः)
सुव्वय–सुव्रत (विंशतीर्थंकरनाम)
सुव्वय–सुव्रत
सुसउच्च–सु+शौच
सुसच्च–सुसत्य
सुसमत्थ–सुसमर्थ
सुसाल–सु+शाला
सुसिअ–शोषित
सुसेव–सुसेव्य
सुसीम–सुसीमन् (वृतियुक्तमित्यर्थः)
सुह–सुख
सुह–श्वन्
सुहकम्म–शुभकर्मन्
सुहचरिय–शुभचरित
सुहजोअ–शुभयोग (कालविशेषः)
सुहजोइ–शुभज्योतिष्
सुहड–सुभट
सुहद्द–सुभद्र
सुहधम्मोदअ–शुभधर्मोदय
सुहम–सूक्ष्म
सुहयत्तण–सुभगत्व
सुहयर–सुखकर
सुहरअ–शुभरत
सुहकर–सुखकर
सुहाइ–सु+भाति १. २०. १२
सुहावअ–सुखावह
सुहावण–सुख+आपण (प्रापण)
सुहासुह–शुभ+अशुभ
सुहि–सुहृद्
सुहिअ–सुखित
सुंघिअ–आघ्रात इत्यर्थे देशी
सुंड–शुण्डा
सुंडीर–शौण्डीर
सुंदर–सुन्दर
सुंसुयार–शिशुमार (मकर इत्यर्थः)
सुंसुवार–शिशुमार (मकर इत्यर्थः)
सुंसुवारिआ–शिशुमारिका
सूअर–सूकर
सूअरि–सूकरी
सूआर–सूपकार
सूणार–सूना (वध्यस्थानं वधो वा) + कर्तृ
सूयर–सूकर
सूयारय–सूपकार (क)
सूर–सूर्य
सूल–शूल
सूलच्छ–शूलाक्ष
सूलभिण्ण–शूलभिन्न
सूलारूढ–शूलारूढ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूवार–सूपकार
सेट्ठि–श्रेष्ठिन्
सेट्ठी–श्रेष्ठिन्
सेढि–श्रेणि
सेणी–श्रेणि
सेण्ण–सैन्य
सेय–श्रेयस् (एकादशतीर्थंकरनाम)
सेय–श्वेत
सेय–स्वेद
सेयभाणु–श्वेतभानु (चन्द्रः)
सेयवह–स्वेद+पथिन्
सेरिह–सैरिभ (महिष)
सेल्ल–शैल
सेव–सेव् (धातुः)
सेवय–सेवक
सेविअ–सेवित
सेविज्जंत-सेव्यमान
सेस–शेष
सेहा–सेधा (प्राणिविशेषः)
सोअ–शुच् (धातुः)
सोअ–शोक
सोइय–सोचित
सोक्ख–सौक्ख
सोणइय–श्वपालक, सौनिक
सोणिय–शोणित
सोत्तिय–श्रोत्रिय
सोत्तियवाअ–श्रोत्रियवाद
सोदामणि–सौदामिनी
सोम–सौम्य
सोमभाअ––सौम्यभाव
सोमभावा–सौम्यभावा
सोमाल–सुकुमार
सोयण–शोचन
सोयरस–शोकरस
सोयामणि–सौत्रामणि (यज्ञविशेषः)
सोयार–श्रोतृ

सोयारवयण–सूपकार+वचन
सोवहि–स+उपधि
सोसिय–शोषित
सोह–शुभ् (धातुः)
सोह–शोभा
सोहग्ग–सौभाग्य
सोहग्गथत्ति–सौभाग्यस्थान
सोहण–शोभन
सोहा–शोभा
सोहिय–शोभित

ह–अहम् (हं इत्यस्य स्थाने)
हअ–हत
हडाविय–दूरोत्सारित इत्यर्थे देशी (मराठी–हटविलेलें)
हडि–अभ्यस्त इत्यर्थे देशी
हड्ड–अस्थिशब्दार्थे देशी
हड्डाल–अस्थियुक्त इत्यर्थे देशी
हड्डावलि–हड्ड+आवलि
हण–हन् (धातुः)
हणण–हनन
हणहण–हणहण इतिशब्दः
हत्थ–हस्त
हत्थगिज्झ–हस्तग्राह्य
हत्थि–हस्तिन्
हम्म–हर्म्य
हम्म–हन्धातोः कर्मणि
हय–हत
हय–हय (अश्व)
हयदइव–हत+दैव
हयमोह–हतमोह
हयसल्ल–हतशल्य
हयारि–हय+अरि (महिष इति टिप्पणम्)
हर–हृ (धातुः)
हरण–हरण
हरि–हरि (सिंह)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरि–हरि
हरि–हरि (विष्णोर्नामविशेषः)
हरिकिडि–हरि+किटि (वराह)
हरिण–हरिण
हरिणणेत्त–हरिणनेत्रा (स्त्री)
हरियकाअ–हरितकाय
हरिवइ–हरिपति
हरिस–हर्ष
हरिहुल्लि–हरि+हुल्लि (बालकार्थे देशी, सिंह-बालक इत्यर्थः)
हलहर–हलधर (बलदेव)
हलि–हले (संबोधने)
हल्ल–नृत् इत्यर्थ देशी (धातुः)
हलिणि–हालिनी (कर्षकस्त्री)
हव्वकव्व–हव्य+कव्य
हस्–हस् (धातुः)
हसिअ–हसित
हंस–हंस
हंसगइ–हंसगति
हंसी–हंसी
हा–हा (खेदेऽव्ययम्)
हाणि–हानि
हाणी–हानि
हार–हार
हारावलि–हारावलि
हावभाव–हावभाव
हास–हास
हासअ–हास्य
हाहाकार–हाहाकार
हाहारव–हाहारव
हिमपडल–हिमपटल
हिय–हित (निहित, दत्त)
हियअ–हृदय
हियउल्ल–हृदय+उल्ल (स्वार्थे)
हियय–हृदय
हिययहर–हृदयहर
हियव–हृदय
हिरी–ह्री
हिलिहिलि–अश्वशब्दानुकरणे (धातुः)
हिलिहिलिसर–हिलिहिलि इत्यश्वशब्दानुकारी स्वरः
हिंड–हिण्ड् (धातुः)
हिंडोल–हिन्दोल् (धातुः)
हिंस–हिंस् (धातुः)
हिंस–हिंसा
हिंसहियय–हिंसाहृदय
हिंसा–हिंसा
हिंसाकम्म–हिंसाकर्मन्
हिंसाजीव–हिंसा+आजीव
हिंसायार–हिंसाचार
हिंसारंभ–हिंसारम्भ
हिंसावासर–हिंसावासर
हिंसाहिणंद–हिंसाभिनन्द
हिंसाहिवत्तार–हिंसा+अभिवक्तृ
हीणाहिअ–हीनाधिक
हू–भू (धातुः)
हु–हु होमे (धातुः)
हुआसण–हुताशन
हुण–हु (धातुः)
हुयवह–हुतवह
हुयासण–हुताशन
हुंकारकारि–हुंकारकारिन्
हू–भू (धातुः)
हूलण–शूलाद्यारोपणे देशी
हेउ–हेतु (दृष्टान्त)
हेट्ठि–अधस्
हेमंत–हेमन्त
हो–भू (धातुः)
हो–हो (संबोधनेऽव्ययम्)
होंती–भवन्ती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

NOTES

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[*N. B.—The Notes supplement the glossary. Knowledge of technical terms of Jain philosophy is presumed in the Reader. The first figure indicates the kaḍavaka and the second the line.*

I

1. The poet, after saluting the Jina, says that he was staying in the house of his patron Nanna, the favourite of the Vallabha king, Kṛṣṇarāja III, and thought of writing upon a pious theme rather than a theme relating to wealth and women.

1. 7–8. It is only in the fifteen bhūmis, five Bharatas, five Airāvatas and five Vidarbhas that Dharma is born or proclaimed, and out of these fifteen bhūmis, it is constant or perpetual in five Vidarbhas only, while it has a fluctuating existence in the remaining ten bhūmis. This Dharma was first proclaimed by Ṛṣabha in this Jambudvīpa, while the remaining Tīrthaṃkaras repeated the same when occasion arose.

3. Description of the Yaudheya country. 3. 17. The poet fancies that the flags and banners on the lofty palaces of the city of Rājapura were scratching the sky as if by their arms.

4. Description of the city of Rājapura. 4. 6. The city was surrounded by a wall on which the weapons such as tomara, Jhṣa etc. of the enemies were baffled, *paḍikhaliya.*

5. Description of king Māridatta. 5. 10. The poet says wherever there is pride of youth and pride of wealth, there is naturally all darkness. How can in such a place be found the right path (*suhamagga*), so long as there are no rays of light from wise men? 5. 19. The king performed his duties according to his own whim (*chanda*), and could not find the right path in the absence of wise men.

6. Description of Bhairavānanda. 6. 8. Bhairavānanda himself proclaimed his own greatness and even though nobody asked him (*aṇauṃchiu*) he praised his own self. 6. 23. *Āsīsiu* seems to be used in the sense of " was blessed ", "was given blessings".

8. 1. The word *camakku* is used in the sense of camatkāra, āścarya. 8. 14. The poet says that those who live on himsā fall into the saṃsāra, while abstinence from it forms the solid base of śubha karman. 8. 15. For this line see Introduction.

9. Description of Caṇḍamārī, goddess Kālī of the town. 9. 1. *Taṃṇayara* stands for tat + nagara, and means 'of that town'. 9. 9. *Viyārabhagga* are the decrepits by diseases, vikāra.

10. List of pairs of different animals. 10. 9–10 The poet says that it is only a fool who desires to live by killing the lives of others.

11. 6–9. When Māridatta found that his servants did not procure a human pair, he got angry and asked Caṇḍakarman, one of his officers, to procure a good human pair

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

which he would kill first. His servants accordingly searched the region in the neighbeurhood of the city (*ṇayarabajjhūvayāsa*).

12. A fine description of the pleasure garden of the king. 12. 16. The Kolhapur MS. reads "*aham intīe*" which is superior to the one in the text as *ahamaṃ* in the sense of *aham* does not seem to be a recognised form of asmad.

13. Description of the burning ground. 13. 12-13. The pupils of Sudatta asked permission of their teacher in the usual terms if they could go out for begging alms, and then the teacher allowed them to do so.

14. 4 *Guruṇā mukku* means permitted by their teacher, Sudatta. 14. 5. *Puravahi ḍhukka*, proceeded towards the city. 14. 6. *Laviyaṃ samalaṃ*, they talked a wicked talk that this pair of Kṣullakas is a good one to be offered as victims. 14. 11. *Sayaṇukiraṇamālāphuriu*, bright in the cluster of rays of their own body.

15. 9. *Jai ṇa muṇī* etc. The meaning of the passage seems to be that though the kṣuallakas may not reach a higher stage of asceticism in this life if they are killed, they will at least be born as gods possessing eight guṇas. 15. 20. *Jamalullakka*, frightening like the god of death.

16. Description of the temple of goddess Caṇḍamārī.

17. 16. The pair had on their persons auspicious signs, *samudda*, Ṣk. Sāmudra as mentioned in the Sāmudrikaśāstra, which indicated that they were fit to enjoy the kingdom of the whole earth.

19. 9 *Matthai sūlaho*, to one who bears on his forehead the mark of trident indicating his faith in the Kāpālika tenets.

20. 7. *Leppi vihiu*, as if made of plaster. 20. 12. *Suhāi*, su + bhāti

21. Description of the Avanti country. 21. 12–14. The idea is that the elephant mistook the dark-green rays of the emerald-pavements for green dūrvā grass and therefore was reluctant to leave it. The conductor of the elephant drove it away with great difficulty. The reading *duvvāsae* Sk. dūrvāśayā, of ST is to be preferred to the one in the text.

22. 3. The young woman of dark complexion was detected by her sparkling smiles in the Indranīla houses of the city.

23. 2. Prince Jasoha is here described as kṣatradharma in a human garb.

24. 8. Abhayaruci says that in his former life as prince Jasahara he had his body in youth well-developed in flesh, bones, and limbs by good nourishment, *puṭṭhipalaṭṭhiyaṃga*.

25. This kaḍavaka describes how the princess of Krathakaiśika was offered to Jasahara in marriage. A minister of Krathakaiśika came to the court of Jasahara's father and said that his master proposed to offer his daughter Amayamahādevi, i. e., Amṛtamati to prince Jasahara. The king agreed and the marriage was celebrated as described in the following Kaḍavakas. Note roughness of language of the passage.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

28. Description of the effects of old age on the body. 28. 10. The ten constituent parts of the Jain dharma are kṣamā. mārdava etc.

29. 4 *Mai muṇiu etc* I controlled myself by the first lore (ānvīkṣikī) which is capable of conquerring the senses: *vijailliya* of ST is a better reading. 29. 5. *Cauvaṇṇu*, the four castes. 29. 6. The seven dangers of kingship are gambling etc. 29. 7. The king enjoyed pleasures of senses, not out of attachment, but only as a diversion, vinodamātra.

II

1. King Jasahara describes his attachment to Amṛitamati. 1. 18. There is a pun on the word *attha* which means the setting mountain as well as money.

2. Description of the evening. 2. 3. *Ahogaiṇam*, under the dome of the sky, i. e., set. 2. 11–12. The sky is compared to a threshing ground of the field with twelve heaps of corn. There is a dark spot on the moon which is kept there as a sign that prevents bad omens spoiling the harvest.

3. The king proceeds to the palace of queen Amṛtamati on a moon-light night.

4 Description of the eight quadrangles of the queen's palace.

6. 1-5. The king enjoys pleasures of the company of the queen. 6. 9. The queen went to a hump-back who never attempted, *aṇujjaya*, any good deeds of the human life, i. e., he was low. 6. 17. *Siyasevie*, the queen who was adorned by beauty, *siya*, Sk. Śrī.

7. 12–13. Amṛtamati says to her paramour: "If Jasahara dies (goes to the house of Yama, I shall dance (with delight), and shall myself worship the goddess Kātyāyanī in the month of Caitra with an offering of cooked rice (*carugāsa*, Sk. carūgrāsa)." An offering in the month of Caitra to the goddess is considered as specially auspicious.

8. 9-10. The king is pained to see that his queen in dallying with the humpback did not pay any regard to her family, her status or even her royal husband. 8. 11-12. A creeper (*velli*) climbs up and then stands suspended from a mango tree which is a (fitting) supporting tree for it; but the same creeper (sometimes) kisses a wretched (*ṇihīṇa*) and harsh thorny plant.

9. 5. *Sihidhūmoli* is a heap of soot from the burning fire which gives a dark tinge to the whitewash of the house. 9. 6. The king compares the crooked mind of a woman (*tiyamai*) to the course of the river which is always nīcarata (attached to a low-born person : with the river,–flowing on the slope). 9. 8–19. This passage tells us two stories of wicked women ; of these the first was named Gopavatī, whose husband. being disgusted with her want of chastity, married another lady. Now one day Gopavatī cut off the head of her rival and kept it at some secret place. The husband returned home after having attended to the funeral of the headless trunk of his young wife, and while he sat for meals, Gopavatī placed on his plate the head of her rival saying 'eat it'. Horrified at this conduct of his wife, the husband began to run away when Gopavatī stabbed him to death. The second story tells us the wicked conduct of Vīravatī who was the wife of

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Sudatta or Datta, but was in criminal intimacy with a thief called Aṅgāraka. Now this Aṅgāraka was one day found to be guilty by the king of the place and was ordered to be impaled in the burning ground. On learning this news Vīravatī left her husband's bed at night and went to meet Aṅgāraka who, before dying, kissed her and while kissing, cut off her lower lip. Now Vīravatī returned home covering her face, and raised a cry that her husband cut off her lip. The king thereupon ordered him to be killed, but a traveller who had watched the conduct of Vīravatī the previous night, saved him by revealing to the king and the people the wicked conduct of the woman, and convincing the people by showing to them the piece of the lower lip of the lady inside the the mouth of the impaled thief. 9. 17. *Sāhiṇāṇa*, Sk. Sābhijñāna.

9. 18 19. It appears that the thief cut off with his sword the fingers of the lady which were lying under the tree, while the lower lip remained in his mouth.

10. 1-2. These two lines refer to the story of queen Raktā who, for the sake of her lame lover, threw her husband Devarati, king of Ayodhyā, into the stream of the river. This queen Raktā, as the story goes, was attached to a lame gardener. Finding the king a nuisance, she got a garland woven by means of a fine iron thread, put this garland on the neck of Devarati, strangled him and threw him into the river. 10. 3-17. Abhayaruci lectures on the worthlessness of the pleasures of senses. 10. 13. The *Īsāsihi* is the fire of jealousy.

11. A lecture on the nature of human body which is here said to be a bundle of misery and impurities and diseases. 11. 11. *Pacchiu* Sk. pathya means wholesome food and drink. The line means that human body is subject to the attack of leprosy even if man takes wholesome food and drink.

12. Jasahara was disgusted with the conduct of his queeen and also with the worldly life, and thinks he should become an ascetic, but in the morning he felt he should not do so immediately as his resolve to become an ascetic would be regarded by people as due to some disagreeable things in the harem; so he took to normal life for the time being.

13. The king declared his intention in the court to his mother to place his son Jasamai or Jasavai on the throne in order to respect, as he said, a bad dream which he saw the previous night

14. Jasahara's mother proposes to him that the effects of an evil dream can be nullified by offering living beings as victims to the goddess; but he shows his disapproval of killing a living being.

17. 10-11. The king says to his mother :—"If by killing animals as victims merit is obtained, then one should salute a hunter or a butcher in preference to a monk.".

19. 4. The king dragged his sword in order to cut off his own head, as the thought he was not able to persuade his mother, but the mother, immediately came round and suggested that an inanimate victim should be offered to the goddess to which Jasahara gave his consent by silence. The mother thereupon asked the statue-maker to bring a cock made of flour.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

22. 9-10. Queen Amṛtamati says to Jasahara that in case she does not accompany him to the forest, people will ridicule her by pointing their fingers to her youth and therefore she would like even death in his company.

24. The king describes several articles of food prepared by the queen as suggesting an approaching death.

25. and **26.** These kaḍavakas describe the wailings of Jasahara's son and wives. In the latter part of **26**, it is mentioned that several obsequious rites were performed by his son in order that Jasahara might get good life ofter death. But, as the fate would have it, Jasahara was born as a peacock in the forest.

28. 4 *Pakkhiṇi-pakkhavāu* is an uncertain expression; the line may mean that the young peacock could not at first walk and therefore sought the support of the wings of its mother. (The marginal note in one of the MSS. is: 'pādacāritvāt pakṣapāte dhṛtaḥ.) **28.** 10. Note the word *lai* which means 'much' and is still preserved in the Marathi language of the lower class people of Mahārāṣṭra in this sense, while Hemacandra explains it as '*lai iti lokoktau*'.

29. The hunter brought the young peacock and its mother home, but offered the hen to the police-officer and kept only the young one for himself. At this the hunter's wife got angry. The hunter thereupon sold the young peacock to the police-officer who brought it up in a cage.

30. The police-officer offers the peacock, when grown up, to Jasavai. Candramati, Jasahara's mother, who was also poisoned by Amṛtamati, was born in Ujjayini as a bitch and was presented to Jasavai.

32. 10-11. A fine fancy that the row of clouds is likened to a young maid, linghtning as her kañcukī and the rainbow as her cloak, *uppariyaṇa*, Sk. uparitana, upper garment.

33. The peacock saw here Amṛtamati dallying with the hump-back and out of jealousy of the pervious life attacked them both. Amṛtamati struck it with her girdle and thus broke its leg. **33.** 9-10. The peacock remarks:—When I was king, I did not strike the hump-back and the woman who were not my equal, but now as a young and low peacock, I caught the hand of the woman as this time it was not objectionable.

34. Maids of Amṛtamati soon arrived on the scene and attacked the peacock with whatever weapon they could catch hold of. On hearing this din and cry of the maids, the bitch, the peacock's mother in the previous life, came there, and caught it in the neck.

35. Jasavai held the bitch fast with the chain, but when it could not let go the peacock, he struck the bitch with the iron end of the sped, so that both the peacock and the bitch died. Jasavai bewailed the loss of both.

36. In his next birth Jasahara was born as a mangoose, and as its mother could not sfficiently feed it on her milk, the young mangoose began its career by devouring snakes. Candramati also was born in her next life as a snake in the same forest. One

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

day while the snake was entering into its hole, the mangoose caught its tail. 36. 9. *Lihi sāu* Sk., svādaṃ labdhvā, forming taste (for the blood of the snake).

37. When the mangoose was eating the snake, it was itself caught from behind by a wild animal *taracchu*, Sk. tarakṣu. 37. 11–12. Abhayaruci winds up the second pariccheda by appealing to Māridatta that if he understood the significance of the narrative, he should give up doing injury to creatures and should resort to the doctrine of Puṣpadanta, the ninth Tīrthaṃkara (or the words of the poet Puṣpadanta).

III

1. The first six kaḍavakas of this pariccheda describe the next birth of Candramati who was born as a crocodile and of Jasahara who was born as a big fish in the river Śiprā near Ujjayini. The first kaḍavaka gives a fine description of the river in Duvaī metre rounded off by the usual Ghattā. In fact the kaḍavakas in this pariccheda open with a Duvaī and close with a Ghattā. 1. 13. *maṇṭhuvayaṇṭha* is a clean bank adjoining the river which was resorted to by ascetics.

2. 12. *Daiyaviyaṃbhiyau.* Sk. daivavijṛmbhita, the wonderful working of destiny.

3. 3. Gominī etc., are the names of maids.

4. The great fish was caught and was shown to king Jasavai who got it examined by Brahmins. They said the fish belonged to that species from which the Matsyāvatāra of Viṣṇu came; 4. 6. *Thoṭṭa* is either sthūla or samartha according to marginal notes ; 4–9. *dhammaṇiddhāḍai*, from which dharma has disappeared.

5. Jasavai took the fish to his mother Amṛtamati who cooked, fried and seasoned it.

6. 7–12. In the next birth Candramati was born a she-goat. Jasahara became her child; while in youth he began to enjoy sexual pleasures with the mother-she-goat when he was killed by his father-goat.

7. Jasahara was again born into the womb of his mother she-goat. King Jasavai caught the pregnant she-goat one day as he did not get any other chase, and when he cut the she-goat into two, he found the child alive and handed it over to the shepherd. 7. 10. Kusumāvali, the name of Jasavai's queen.

8. One day Jasavai made a promise to the goddess that he would offer as victim a buffalo if he would find good chase in the forest. 8. 14. *Parivāevi* after having offered the flesh of the buffalo to the goddess in a particular way. This act of parivāraṇa is usually expressed by uttāraṇa and consists of raising the offering from the ground, showing it to the deity and then again placing it on the ground.

9. One day Jasavai performed the annual śrāddha of his father. For this various articles of food were prepared, and were offered to Brahmins, friends and relatives. Amṛtamati did not figure amongst these as she was suffering from leprosy and maids were openly talking of this. 9. 13. *Aṅgu vāi*, the body of Amṛtamati is giving out this bad smell.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10. Condition of the body of Amṛtamati is described here. **10. 12–14.** Amṛta mati did not like the flesh of buffalo and asked for some other kind of meat.

11. Amṛtamati asked the cook to have the meat of a deer or of a pork, but king Jasavai said that the meat of the goat would do well. He therefore asked the cook to cut the hinder leg of the goat for the queen-mother. **11. 10.** *Veyadhammavehāviya-māṇasu*, one whose mind is deluded (*vehāviya*) by the law proclaimed in the Veda. The soul of Candramati in the mean-while was born as a buffalo in Sind,

12. This buffalo was used to carry goods for a merchant, and once came to Ujjayini. There the buffalo met, while enjoying the bath in the river Śiprā, the royal horse attended by its keepers. The buffalo attacked the horse and killed it. Immediately the keepers caught hold of the buffalo and brought it before the king. The king ordered it to be killed with all possible cruelty. The goat also was killed on the same day.

13. 11. Candramati and Jasahara in their next birth were born as young ones of a hen. and from this line onwards right upto the end of kaḍavaka 33, we get the happenings in their life as young ones of hen.

15. These young ones of hen were in due course presented to the king who wanted to see a cock-fight and asked the keeper to bring them up well.

16-17. The next morning they were taken to a specially erected tent and were placed under the Aśoka tree. The king's officer saw a Jain monk seated under the tree in a meditating posture.

18.–33. Then follows a long conversation between the monk and the officer on the religious views of Jains and Cārvākas, and when the monk mentioned that the young ones of hen by his side were formerly king Jasahara and his mother Candramati, the officer accepted the vows of a Śrāvaka. The young ones of the hen also recollected their previous births, in mind decided to observe the vows, and in delight cried aloud. But Jasavai, who was in the company of his queen Kusumāvali, wanted to show his skill in archery by sound to his queen, discharged an arrow at them, and both the young ones were killed. They were born as twins into the womb of the queen.

34. 17. The king on seeing monk Sudatta thought it to be a bad omen and says:—" How can this monk (*khavaṇau*) if he is other than the three gods, Brahmā Viṣṇu and Maheśa (*taiya*, Sk. trika) go away (from here) without being killed by me ?

35. 15. *Jaivara vayasahiya*, a great monk observing the (five great) vows.

36. The king gets angry when asked by the merchant to fall at the feet of the monk, and says that he would not do so as the monk was very dirty. **36.** 17. *Nayaroghasarapasara*, like tha stream of the dirty guttar-water of the town.

37. 2. The merchant says : Even the dirt of these monks is capable of curing diseases and therefore, O king (*īśa*), bow down to such monks. Why this hatred ? **37.** 4. *Ahayamahāṇasaddhi* is a doubtful expression. The marginal note gives its equivalent as akṣīṇamahānasa; in the light of this we can say that the monks possess the power of making the kitchen inexhaustible and prosperous. To me it appears that the correct reading might be *ahayamāṇasaddhi*, Sk. ahatamānasardhi, inexhaustible or

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

full possession of mental powers. 37. 17-18. The merchant tells Jasavai that the monk is no other than the king of the Kaliṅga Country and that he took to the life of an ascetic because, by having wrongly punished a person charged with theft, he got disgusted with his kingship.

40. 17 *Avarapakkha* is the second and dark half of Bhādrapada during which a mahālaya śrāddha is offered to the manes. 40. 18. *Khāu*, Sk. khāditum.

IV.

1. 5. *Kheri* is a deśī word meaning vaira or vairin; here it is used in the former sense.

2. The king says to Sudatta that he would place his son Abhayaruci on the throne and like to be a monk.

3. Ladies of the king's harem try to persuade him by saying that he would not get anything better in heaven by practising penance. For, they say, they are as good as nymphs, the king Indra and the palaces heavenly abodes; thus the possession of (union with) what is good constitutes Svarga. Is there on the head of Svarga (conceived as a being) a crooked horn ? *Kiṃ saggasire kuḍilaṃ visāṇayaṃ* has a corresponding phrase in the current Marathi language. 3. 8. *Siggiri* is a word of uncertain meaning, does it mean nīlavarṇa ?

4. Both Abhayaruci and Abhayamati recollected their previous births on hearing this narrative from Sudatta and fainted. Kusumāvali also fainted on seeing her children in that condition. Other ladies of the harem came to her help and she and the children soon recovered. 4. 16. *Mahaevī* of course is queen Kusumāvali.

5. 14–15. Abhayaruci, on recollecting that he was in one of his former life the father of Jasavai, says:—' He was formely my dear son, so delightful to my eyes, and I myself placed him on the throne ; but now I am (born) as his son with a moonlike face ; destiny has taught me a fine (*cangau*) lesson ! "

6. 1. *Diṇṇalaiyaparivādi*, one, who by turn has given and taken the same position, one who was the father of Jasavai and placed him on the throne has become the son of the same Jasavai, who now thinks of placing him on the throne. 6. 2. *Muhavaḍu*, mukhapataḥ, cover for the face.

7. 17. *Guṇamaṇicincaiya*, decked (*cincaiya*) by the gems of guṇa, the vows of Jain ascetics ; *Pāvaiya* is pravrajyā, taking to the life of an ascetic.

8. 1 Abhayaruci handed over the kingdom to his step-brother, Naya. 8. 2. *Kuhiṇi* the path.

9. 1. *Surahubbhiya*, erected on a good chariot. The sense of the passage is that mere penance without right faith is like a banner on the top of the chariot, without soldiers. 9. 10. *Angacāu*, Sk. aṅgatyāga, i. e., kāyotsarga posture. 9. 15. *Aṇuvekkhau*, the twelve anuprekṣās, impermanence (adhrura) etc.

15. 12. *Khullayattu*, the stage of kṣullaka consists of complete renunciation of worldly things, wearing only one white garment and a loin-cloth, the gourd, the beg-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. ... omai... zed by Sarayu Trust/eGangotri

ging boul and tonsuring the head. 15. 16. *Purakantiyā* is the nun Kusumāvali who alongwith Jasavai, became a Gaṇinī.

17. 15. *Saveuvvaṇāe*, by the supernatural power of creation (*vikurvaṇa*).

18 Caṇḍamāri requests the kṣullaka to initiate her and teach her the rules of penance. The kṣullaka thereupon says that there is no penance for gods of sixty-two types.

19-20 These two kaḍavakas give the list of persons who cannot practise penance.

23. King Māridatta asks Sudatta to tell him the various previous births of the Govardhana Merchant, Goddess Caṇḍamārī, Bhairavānanda and of himself. It has been explained in the Introduction that the portion beginning with this kaḍavaka down to kaḍavaka 30, line 15 is added by Gandharva.

28. 3. *Dandcatta*, free from pairs (of pleasant and unpleasant things). 28. 33 *Siddhairi*. Sk Siddhagiri, name of a holy place.

29. 9-10 For the interpretation of these lines and the following kaḍavaka see Introduction.

31. 4. *Kaiṇā Khaṇḍeṃ*, Puṣpadanta was also known by this name Khaṇḍa as could be seen from some of the verses at the opening of saṃdhis in the Mahāpurāṇa MSS.

मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गनां न भरतः शौचाम्बुधिर्वाञ्छति ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In... Sarayu Trust/eGangotri

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page,	Kadavaka,	Line	For	Read
२	१	१०	पुरुएउ सामि	पुरुदेवसामि
४	२	१३	परिहवि	परिहि वि
५	४	४	च्चि क्कमंति	च्चिक्कमंति
५	४	१२	कहिमि	कहिं मि
६	५	८	तरुणसरंत	तरुण सरंत
६	५	१४	पउहर	पओहर
६	६	१	तीह	तहि
६	६	६	पाउडियजम्मु	पाउडियजुम्मु
७	६	९	जुयचयारि	जुय चयारिं
८	८	४	पुरेहु	पूरेहु
१०	१०	७	गो या	गोहया
१०	११	९	णयरि वहावयासि	णयरिवज्झावयासि
११	१२	२	कहिमि	कहिं मि
११	१२	१६	अहमं तीए	अहमिंतीए
१२	१४	६	लवियंसमलं	लवियं समलं
१२	१४	११	सयणु किरण	सयणुकिरण
१३	१५	१	णिल्लणण	णिल्लुणण
१३	१५	९	जइण	जइ ण
१५	१८	७	कहिमि	कहिं मि
१५	१८	९	तिणाणं	तिणा णं
१५	१८	११	सरज्जाय भड्डो	सरज्जा पभड्डो
१७	२१	१४	विणाडिउ वासइं	विणडिउ दुव्वासए
१७	२१	note	कसिण	काणिस
१८	२३	९	चंदमइदेवितह	चंदमइ देवि तहु
२०	२५	२१	पइंमि	पइं मि
२१	२६	१८	दोहिमि	दोहिं मि
२१	२७	६	ता सुपत्ति	तासु पत्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१	२७	१०	णवयारि वि	णवयारिवि
२२	२८	६	चि क्कमंति	चिक्कमंति
२४	१	७	पुत्तं	युत्तं
२५	२	४	संझावेल्लि वणीसरिय	संझा वेल्लि व णीसरिय
२८	७	९	अवरइमि	अवरइं मि
२९	८	१२	वेल्लिणिहीणु	वेल्लि णिहीणु
३०	१०	१७	सवइ	सेवइ
३१	१२	१८	विसुहिउ	वि सुहिउ
३४	१७	३	णिच्छाम	णित्थाम
३४	१७	८	दणलाइं	दलणाइं
३४	१७	१०	हिसइ	हिंसइ
४४	३३	४	पडिंउ	पडिउ
४९	३	७	भीसावेण	भीसावणे
४९	४	९	धम्म णिद्धाडइ	धम्मणिद्धाडइ
५१	७	३	णिवसणेचली	णिवसण चेली
५१	७	१०	लंहंतिं	लहंतिं
५३	९	१२	बाइ	वाइ
५३	९	१३	अंगुवाइ	अंगु वाइ
५४	१२	१	वणि भंडभारु	वणिभंडभारु
५५	१२	१७	पच्छिमहारिं	पच्छिमदारिं
६१	२२	५	अण्णुमाणिं	अणुमाणिं
७०	३७	२	मच्छरोकओ	मच्छरो कओ
७४	४१	१४	णायगणइ	णायण्णइ
८२	११	७	विभिण्णु	वि भिण्णु
८५	१६	४	हड्डुब्भडेहिं	हड्डुब्भडेहिं
८९	२०	१५	सयगणियइं	सयगुणियइं
९९	३०	१	पट्टणेच्छंगे (!)	पट्टणे छंगे
९९	३०	१	खेलागुणवंतु	खेला गुणवंतु
१००	३१	१३	णिसूंभउ	णिसुंभउ
१००	३१	१६	सयेंल	सयॅल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. rayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Gangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CARIU

FORTHCOMING VOLUMES
OF THE
KARANJA JAIN SERIES

2. KARAKANḌUCARIU OF KANAKĀMARA IN APABHRAṂŚA,
BY PROF. HIRALAL JAIN

3. SUDAṂSAṆACARIU OF NAYANANDI IN APABHRAṂŚA,
BY PROF. HIRALAL JAIN

4. MAHĀPURĀṆA OR TISAṬṬHIMAHĀPURISAGUṆĀLAṂKĀRA OF PUṢPADANTA IN APABHRAṂŚA
BY DR P. L. VAIDYA

5. APABHRAṂŚAKATHĀSAṂGRAHA
BY PROF. HIRALAL JAIN

For Copies apply to—

THE SECRETARY
KARANJA JAIN PUBLICATION SOCIETY
KARANJA, BERAR, INDIA

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi